Buchra Ki Beti

...की बेटी

...क रोमाञ्चकारी उपन्यास]

लेखक

...ण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

P. Vagan Sharma

प्रकाशक

...ी हिन्दी पुस्तकालय

...रघोष लेन

...कत्ता

...न रुपये

Buchva Ki Beti

...की बेटी

[...क रोमाञ्चकारी उपन्यास]

लेखक

...ण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

P. Vagon Sharma

प्रकाशक

...मन्दी पुस्तकालय

...घोष लेन

...कत्ता

...तीन रुपये

Buchva Ki Beti

[...क रोमाञ्चकारी उपन्यास]

लेखक

...ण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

P. Vagan sharma

प्रकाशक

...न्दी पुस्तकालय

...रघोष लेन

...कत्ता

...य तीन रुपये

प्रकाशक—
महादेवप्रसाद सेठ
३९६, शङ्करघोष लेन,
कलकत्ता।
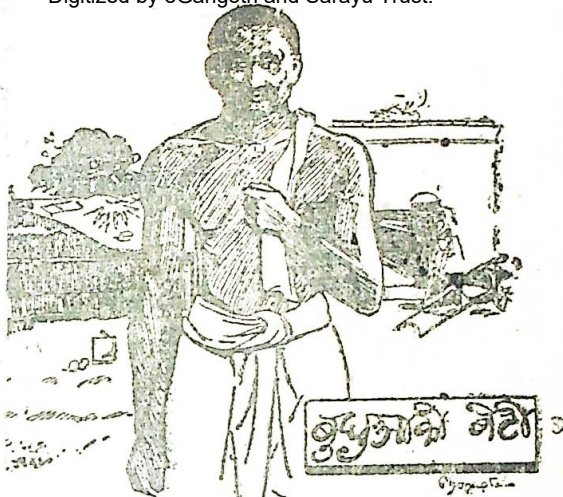
रधिया कौन है ?

"हो हो हो ! तुम रधियाको नहीं जानते ?" ...न्हने चेहरेसे घोर आश्चर्य बरसाते हुए कहा— ...मने ज़मानेको ख़ाक जाना । अजी वह जान ... इस मुहल्लेकी । न जाने परमात्माने वहाँका ...समुद्र उसके ऊपर उँडेल दिया है । भंगिनकी ...न्दे टुकड़ों पर जीनेवालोंकी सन्तान और ...ऐसी कि शाहज़ादियाँ, राजकुमारियाँ ;—मैं ...परियाँ—उसके आगे पानी भरें ।"

रधिया कौन है ?

। हो हो हो ! तुम रधियाको नहीं जानते ?"
न्होंने चेहरेसे घोर आश्चर्य बरसाते हुए कहा—
नने ज़मानेको ख़ाक जाना। अजी वह जान
। इस मुहल्लेकी। न जाने परमात्माने वहाँका
मुद्र उसके ऊपर उँडेल दिया है। भंगिनकी
न्हे टुकड़ों पर जीनेवालोंकी सन्तान और
ऐसी कि शाहज़ादियाँ, राजकुमारियाँ ;—मैं
परियाँ—उसके आगे पानी भरें।"

"चुप भी रहो ; चुप भी रहो !" गुलाबके मुँहपर अपना हाथ रखते हुए घनश्यामजीने कहा—"तुम भी अजीब गन्दे आदमी हो। जब सोचोगे तब गन्दी ही बात सोचोगे। यार मेरे ! दुनिया पड़ी है। जब पास में पैसे हों, तब थर्डक्लासकी बुत-परस्तीके मैं ख़िलाफ़ हूं ; क़तई ख़िलाफ़। छोड़ो रधिया भंगिनको। किसी अच्छी चीज़की चर्चा चलाओ !"

"अच्छी चीज़ !" गुलाबचन्दने कहा—"अजी रधिया अच्छी चीज़ तो ऐसी है कि अगर सूरज अपने हाथमें चिराग़ लेकर अपनी ज़िन्दगी भर तमाम दुनियामें ढूंढ़ा करे तब भी उसे ऐसी अच्छी चीज़ कहीं नसीब न हो। तुमने उसे देखा ही नहीं। मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि तुम्हारे ऐसा चटोर—ओ, माफ़ करना—बुत-परस्त ; अगर एकबार उसे देख ले, तो, फिर नोन-सत्तू बाँधकर उसके पीछे पड़ जाय। देख लोगे तो यह हेंकड़ी कि—'गन्दी है, मलिन है'—तुम्हारे दिमाग़से हवा हो जायगी। मैं कहता हूं, मेरे कहनेसे एकबार उसे देखो और ज़रूर देखो। अभी

बिलकुल उठती हुई जवानी है। शुद्ध चंपई रंग, एकहरा बदन, नीली आंखें, बीस जगहसे बल खाये हुए चमकते, काले बाल, उपमाओंकी पहुंचके बाहर सुन्दर ओष्ठाधर—क्या बतलाऊं भाई साहब! न जानें कहांसे वह घुघुआके घरमें पैदा हो गयी। राजा-रईस, ब्राह्मण-क्षत्री, ईसाई-मुसलमान कोई भी रधिया-सी सुन्दरी लड़की अपने घरमें देखकर मारे गर्व और प्रसन्नताके फूल उठता।"

"अच्छा एक बात बताओ; तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि इस शहरमें कहीं रधिया भङ्गिन भी रहती है?" घनश्यामजीने रधिया-विवादमें अधिक अनुराग दिखाते हुए गुलाबचन्दसे दरियाफ़्त किया—"अभी कल तक संभवतः तुम्हारी नज़रोंमें वह नहीं गड़ी थी। कल तक तुम किसी-न-किसी 'दालमण्डी' वाली की तारीफ़ किया करते थे। आज यह नयी रागिनी तुम्हें कहां और किसने सिखायी?"

"मेरे भाग्यने मुझे रधियाका परिचय दिया। मैं तो इसे अपना भाग्य ही मानूंगा। बिना क़िस्मतके

ऐसी नायाब चीज़ किसीकी आंखोंके आगे नहीं आती।"

"ज़्यादा बनो न। साफ़-साफ़ बताओ; कल तक तो तुम्हारा भाग्य इतना बढ़िया नहीं था। फिर आज यह बात कहाँसे पैदा हो गयी?"

"मेरे मुहल्लेमें वह कमाने जाती है।"

"शिवालेमें! किसके यहाँ?"

"बरकतुल्लाके......।"

"अरे! बरकतके यहाँ वह जाती है? उसने तो मुझसे कभी उसके बारेमें कुछ नहीं कहा!"

"वह खुद उसपर मरता है। असलमें उसके घर कमानेवाली भङ्गिन कोई दूसरी ही है। रधियाको तो उसने इधर एक महीनासे अपने यहां रखा है। सो भी, केवल आँगन और कमरे साफ़ करनेके लिये। साफ़ करना-कराना तो एक बहाना भर है, वह धीरे-धीरे उसे अपने चंगपर चढ़ाना चाहता है। केवल झाड़ू लिये देनेके उसने उसे पाँच रुपये महीने देनेको कहा है।"

"वह बराबर बरकतके घरपर जाती है?"

"हाँ जी, जायगी क्यों नहीं?"

"कुछ रुख-उख देती है? बरकतने उसे छेड़ा तो ज़रूर होगा। मैं उसको खूब जानता हूं, सिरसे पैर तक पाजी है।"

"मगर बरकत मुझसे कहता था कि रधिया मामूली चिड़िया नहीं है कि फ़ौरन जालमें आ फँसेगी। एक दिन उसने उसे ज़रा-सा छेड़ा और बस! सँभाल कर झाड़ू खड़ी हो गयी। कहने लगी—'मैं तुम्हारे यहां झाड़ू देनेके लिये नौकर हूं, इज़्ज़त देनेके लिये नहीं। ख़बरदार जो कभी फिर इस तरहकी इशारेबाज़ी की। मैं चारों ओर हो-हल्ला मचाकर दम लूंगी।' ऐसी है रधिया।"

"मगर इतने पर भी वह बरकतके यहाँ जाती है। जाती है न?"

"हाँ जाती तो है। अभी कल ही गयी थी। कल ही बरकतने उसे मुझको दिखाया भी था।"

"तब पाजी है—बदमाश है। कोई शरीफ़ औरत

किसी आदमीको बदमाश जानकर उससे कोई रिश्ता नहीं रख सकती। ज़रूर पाजी है।"

"अरे सुनो भी"—गुलाबचन्दने कहा,—"बस अपनी ही खिचड़ी पकाते चले जा रहे हो। जिस दिन बरकतने रधियाको छेड़ा था उसके बाद दो-दिनोंतक वह उसके घर नहीं आयी। दो दिनों तक मियाँ बरकतुल्ला, कलेजेपर हाथ रखे, रधियापर अरमानोंके पुल बाँधते रहे। जब तीसरे दिन भी उसके आनेका वक्त टल गया तब उससे न रहा गया और वह खुद ही सपकन-पाजामेंसे लैस होकर रधियाके घरपर जा धमका। उसे अलग बुलाकर हाथ जोड़े, मिन्नतें कीं। कहा—'ख़ता हो गयी, माफ़ करो; मगर, आना-जाना न रोको—ख़ुदाकी क़सम, अब कभी तुम्हें नाराज़ न करूंगा।' समझे, इतनी लीलाएं होनेके बाद रधिया पुनः बरकतके यहाँ जाने लगी। वह पाजी नहीं है। चेहरेसे भी नहीं मालूम पड़ती। मगर यार, आफ़त है, ग़ज़ब है, सितम है, क़हर है, क़यामत है।"

"सच!" गुलाबचन्दके किञ्चित सन्निकट हो घनश्यामजीने पूछा।

"सच भाई साहब! तुम्हारी क़सम, अपनी क़सम। चलो न आज शामको तुम्हें उसे दिखा ही दूँ। हो सकेगा तो उसी वक्त उसके बाबा बुधुआसे मिलकर उसे तुम्हारे घर झाड़ू देनेके लिये ठीक भी करा दूंगा।"

"ना, ना!" सिर हिलाते हुए घनश्यामने कहा—"मेरे घर नहीं, अपने घर। रखिया ऐसी भॅंड्डिनको नौकर रखनेपर बाबूजी मुझे जीने न देंगे। तुम जानते ही हो वह मेरे मौजी-मिज़ाजके कितने ख़िलाफ़ हैं। रोज़ ही घण्टा-दो-घण्टा लेक्चर झाड़ते हैं।"

"अजी बाबूजीके लेक्चरोंको कहांतक झंखोगे, बड़े-बूढ़ोंके हज़ार रोगोंमें एक रोग अपनेसे छोटोंके आगे लेक्चर झाड़ना भी है।"

"यह रोग नहीं, रोगोंका बाप है। आजकलके बड़े-बूढ़े इस बातको भूल ही जाते हैं कि कभी वे भी जवान थे। कभी उनके दिमाग़ोंमें भी उबाल आते

थे। कभी उन्होंने भी उन हरकतोंको गले लगाया था जिन्हें हमारे आगे वे 'बदमाशियाँ' कहकर पुकारते हैं। मेरे ही घरकी बात लो। भला इस शहरमें कौन नहीं जानता कि मेरे दादा मरते-मरते तक किसी न किसी खूब-रू पर मरते रहे। उनके मुंह कोई नहीं आता था; उन्हें कोई नहीं उपदेश देता था कि ऐसी हरकतोंको हम 'बदमाशियाँ' कहकर पुकारते हैं। उनसे लोगोंको दूर रहनेका उपदेश देते हैं। उनके आगे सभी दुम हिलाते थे। झूठ नहीं कहता। अच्छे-अच्छे ज़िम्मेदार लोग भी, उन्हें अच्छी तरहसे जानकर भी, उनके आगे चुप ही रहे। अपने भावोंको ढोंगके परदेमें छिपाते ही रहे। क्यों? जानते हो? इसलिये कि उनकी गद्दीके नीचे पचीसों लाख रुपये थे—इसलिये कि उनके बाल पके हुए थे—इसलिये कि उनकी इच्छाके विरुद्ध लेक्चर देनेसे लेक्चरबाज़ोंकी स्वार्थ-साधनामें बाधा पड़ती।"

"अजी मारो गोली; अपना तो सिद्धान्त है कि अपनी मौजोंके सामने दुनिया और दुनियाके रूखे-

लेक्चरबाज़ोंको तृण भी न समझना। भूकना इनका पेशा है, ये भूका करें। अपने रास्ते मचलते हुये चलते जाना अपना काम है।—हम किसीके लेक्चरकी क्यों परवा करें। ख़ैर; तो शामको चलोगे रधियाके घर?"

"तुम क्या कहते हो, चलूं?"

"हाँ जी; इसमें पूछनेकी गुञ्जायश ही नहीं है, ज़रूर चलो।"

"कितने बजे?"

"साढ़े छः।"

"तुम यहां आओगे?"

"हां—मगर, पैदल आऊंगा।"

"मैं अपनी गाड़ी जुतवा रखूंगा।"

"उह; भङ्गीके घर, और सो भी भदैनीसे दुर्गाकुण्ड, गाड़ी पर क्या चलोगे। टहलते चला जायगा। जिसमें कोई कुछ भाँप भी न सके। अच्छा तो साढ़े छः-बजे—तयार रहना, भला! मैं चला। जै रामजी की।"

२

बेचारा बुधुआ

चालीस वर्षकी अवस्थामें भी बुधुआ पूरा जवान मालूम पड़ता था। वह नाटे क़दका, ख़ूब गठीला और मज़बूत आदमी था। उन दिनों वह बनारसके विक्टोरिया पार्कके एक कोने पर, कूड़ाख़ाने और जन-साधारणके लिये बने हुए म्युनिसिपैलटीके पाख़ानेके पास अपने दूसरे साथी मेहतरोंके साथ रहा करता था। उसकी एक छोटी-सी ताड़के पत्तों, फूसों और कहीं-कहीं पुराने खपड़ोंसे छाई-बनाई झोपड़ी थी।

उस झोपड़ीका निर्माण स्वयं बुधुआने किया था और तब किया था जब उसकी पहली स्त्री उसे मिल गयी। मिल गयी इस लिये कहते हैं कि ग़रीब और महा-पतित बुधुआके जगतमें उस तरह व्याह नहीं होते जैसे उसकी रोज़ी-दाताओंके घरोंमें। उसकी

बे-पर्द दुनियामें तो भङ्गी-कुमार और भङ्गी-कुमारिनें आपसमें एक दूसरेको पसन्द कर लेते थे या उनके जननी-जनक उनके लिये किसी वर-कन्याको चुन देते थे। शहरके किसी "छूना-मत"-पण्डितसे ब्याह-योग्य दिन पूछा जाता था जिसे पण्डित महाराज गङ्गाजलसे धुले हुए कुछ पैसे लेकर और दस-पांच बार "दूर रह! दूर रह!!" कह कर बता देते थे। निश्चित दिन पर लड़कीवाला भङ्गी लड़के वाले भङ्गीके लिये और उसके दो-चार चुनिन्दे दोस्तोंके लिये क़लिया और दारूका इन्तज़ाम करता था। क़लिया दो पैसेके कडुवा तेलमें उबाली हुई और दारू वही मामूली ठर्रा अथवा कई दिनोंकी सड़ी ताड़ी। बीचमें ज़मीन लीप दी जाती थी और उसकी चारों ओर बन्धु-बान्धवके सहित वर और कन्या-पक्षके भंगी बैठ जाते थे। कन्या अपने पक्षके बीचमें बैठती थी—कोरा और मोटे मारकोनकी हल्दीसे रँगी हुई धोती पहन कर, और सरमें ज़रूरतसे कहीं ज़्यादा तेल चुपड़ कर। वर भी अपने दलके मध्यमें बैठता था

अपनी अच्छी-से-अच्छी पोशाक पहन कर। वह पोशाक किसी साहबकी उतारी हुई कमीज़ या कोट अथवा सात जोड़ोंका कोई कुरता होता था। कोई बूढ़ी भंगिन आगे बढ़ती थी। वह अनेक भूतों, प्रेतों और शैतानोंका नाम ले-लेकर वर-कन्यामें प्रेम बना रहनेके लिये प्रार्थना करती थी। एक टुकड़ा गोश्त और कुछ बूंदें शराब लिपी ज़मीन पर शैतानोंके लिये गिरा दी जाती थी। फिर वर, कन्याके माथेमें सिन्दूर देता था और उसे अपनी बग़लमें बैठाकर अपने हाथसे शराब पिलाता था। इसके बाद सभी उसी दारू-कलिया-पूजनमें सहयोग करने लगते थे। धीरे-धीरे नशेका उन्मादकारी हाथ दोनों दलोंके सिर पर पड़ता था। मस्तियों और बहकी बातों और गालियों की धारा बहने लगती थी। कोई क़ै करने लगता था, कोई ज़मीन सूंघने और कोई लत्तम-जुत्तम करने! बस, यही बुधुआकी जातिका सर्व-श्रेष्ठ विवाह-संस्कार था!

मगर, उसके भाग्यमें तो इतना भी नहीं लिखा

था। उसकी सास बहुत बूढ़ी और जुल्जुल थी, जिसका सर्वस्व उसकी लड़की मात्र थी। मरनेसे पहले उसने बुधुआको बुलाकर बड़ी आजिज़ीसे कहा—"देख बुधुआ, यह अपनी बेटी मैं तेरे सिपुर्द किये जाती हूं। तू ही इसके लिये बहुत अच्छा ख़सम है, यह मैंने बहुत दिनोंसे सोच रखा है। देख बेटा, तुझे पीपलके पीर और बरगद्के बीरकी दोहाई, इसे मारना मत ; घरसे निकालना भी मत। पकड़ इसके हाथको—पकड़ न। हाँ। अब ज़िन्दगी भर निबाह देना भैया, ग़ाज़ी मियाँ और शहीद बाबा और जाड़का जिन्द तेरा भला करेंगे।" इस तरह, बिना किसी साज-सामान और सायत-पूजाके बुधुआकी पहली शादी हुई। अपनी उसी स्त्रीके लिये उसने बड़े परिश्रमसे वह झोपड़ी तैयार की थी।

मगर, उसकी वह स्त्री अधिक दिनों तक उस झोपड़ीका सुख न भोग सकी। सम्बन्ध होनेके तीसरे साल ही उसने उसे वीरान कर दिया। एक दिन काम-धन्धेसे लौटने पर बुधुआने देखा उसकी स्त्री

क़ै और मलमें भींगी बेहोश पड़ी थी। पूछने पर पड़ोसी भंगियोंने बताया कि वह घण्टोंसे हैज़ेका शिकार है। उन्होंने यह भी कहा कि बुधुआ जल्द ही कुछ दवा-दारूका इन्तज़ाम करे, नहीं तो, उसकी जोरूका बचना कठिन है।

उन दिनों बुधुआ परिश्रमीसे ज़्यादा ख़र्चीच था। अपनी और अपनी स्त्रीकी सारी कमायी दारू और क़लिया, गांजा और सिगरेट-बीड़ीमें उड़ा देता था। उसे जो कुछ म्युनिसिपैलिटी या गृहस्थोंके घरसे तनख़ाह मिलती उससे उसका काम कभी नहीं चलता था। वह हमेशा ख़ाली ही रहा करता था। दवा-दरपनकी तलाशमें जब वह शहरके वैद्य-डाक्टरोंके दरवाज़ों पर पहुंचा तब उसे मालूम हुआ कि अगर आज कुछ पैसे बचे रहते तो ये ऊंच जातिके फ़रिश्ते जल्द उसकी बातें सुनते। वैद्योंने तो उसे अपनी ड्योढ़ी पर चढ़ने ही नहीं दिया। किसीने साफ़ दुतकार दिया और किसीने किसी घास-पातका नाम बताकर कहा कि वह उसे ख़रीद कर अपनी लुगाईको खिलाये—ईश्वर

चाहेगा तो अच्छी हो जायगी। मगर बुधुआको वैद्योंकी बातोंसे सन्तोष नहीं हुआ। क्योंकि वह जानता था कि उसकी स्त्रीकी हालत बहुत ख़राब है—रोग भी साधारण नहीं था। वह चाहता था कि कोई उसके यहाँ चलकर उसकी औरतको देख आवे। मगर, सनातन-धर्मके स्तम्भ वैद्योंसे ऐसी आशा करना, पत्थरसे तेल निकालना था।

डाक्टरोंके यहाँ भी बुधुआको कोई ऐसा भला-आदमी नहीं मिला जो सहानुभूतिसे उसकी कहानी सुनता और उसे सहायता देता। भला भंगीकी औरतका इलाज कौन भला डाक्टर कर सकता है। वह नीच और दरिद्र, डाक्टरों
टुकड़ोंकी तादाद कहाँसे बढ़ा
कहा—.फुरसत नहीं; भाग!
साले पागल, सरकारी अस्प
जाता? बुधुआ बोला—सरका
नहीं कि वह उठ कर अस्पता
बोले—तो मरने दे, तूभी मर

मैंने कुछ दुनिया भरके नीचोंकी जानका ठेका नहीं ले रखा है। एक डाक्टर कुछ अधिक भले-आदमी थे। उन्होंने कहा—मैं जा तो नहीं सकता, हाँ अगर तू दो रुपये ले आ, तो, मैं दवा बनाकर दे सकता हूं। मगर, बुधुआके पास रुपये कहाँ थे। लाचार, अभागा अपनी क़िस्मतको कोसता हुआ उलटे पांव घर लौटा। यहाँ आने पर देखा, अब उसकी औरतकी हालत ख़राबसे बहुत ख़राब हो गयी थी। शाम होते-होते उसने दम तोड़ दिया!

बुधुआकी झोपड़ी उजड़ गयी! गृहस्थी—अगर उसकी उसी गृहस्थीको हम उक्त नामसे पुकार सकें तो—चौपट हो गयी!

इस घटनासे बुधुआके जीवनमें एक विचित्र परि-[illegible]े गया।

३

पिता, पुत्र

"कहाँ जा रहे हो?"

"घूमने।"

"किधर?"

"बहस क्यों करते हैं?—चौककी ओर।"

"इसीलिये बहस कर रहा था कि तुम झूठ बोलो। अच्छा इस तरह झूठ बोलकर अपने सगे बापको भी ठगनेकी चेष्टा करनेसे क्या फ़ायदा घनश्याम? अब तुम बच्चे नहीं।"

"हाँ मैं बच्चा नहीं, इसीलिये आपको बात-बातमें मुझसे—कहां जा रहे हो? क्या कर रहे:हो? क्यों कर रहे हो? आदि—नहीं पूछना चाहिये। शाम हो गयी है, घूमनेका वक्त है, जहाँ जीमें आयेगा जाऊंगा। इस बीचमें आप क्यों आते हैं?"

"अच्छा भैया, ग़लती हुई। माफ़ करो। कहो तो चरण छूकर क्षमा प्रार्थना करूं। तुमसे, अपने हृदयसे, अपनी आत्माकी सृष्टिसे—पुत्रसे—मुझे इतना भी पूछनेका अधिकार नहीं है कि तुम कहाँ जा रहे हो? अब कभी न पूछूंगा। मगर एक बात तो बताओ! तुम झूठ क्यों बोलते हो?"

"कौन झूठ बोलता है? आप झूठ बोलते होंगे, मैं झूठ नहीं बोलता।"

"तुम चौककी ओर जा रहे हो?"

"हाँ—हाँ—हाँ! चौक जा रहा हूं।"

"झूठ! तुम झूठ बोलते हो और अपने बापसे झूठ बोलते हो। ऐसे बापसे जिसने लुटपनसे लेकर इस उम्रतक तुमको फूलकी छड़ीसे भी नहीं छुआ। कभी आँखें लाल-लाल कर डाँटा भी नहीं। सदा तुम्हारी इच्छाओंकी—और भली-बुरी सभी इच्छाओंकी—पूर्ति करता रहा। तुम संसारके अपने उस मित्रके सामने झूठ बोल रहे हो जिससे बड़ा तुम्हारा हित-चिन्तक कोई हो ही नहीं सकता। ज़रा

ाईनेमें अपना मुह जाकर देखो! तुम्हारी आंखोंमें
ाखा है, तुम्हारे मुहँ पर छपा है—तुम झूठ बोलते
ं। तुम चौक नहीं दुर्गाकुण्ड जा रहे हो।
.वित्र वायुसेवन करने नहीं; किसी ग़रीबकी लड़की-
की इज़्ज़त पर अपनी बेशर्मीकी परछाईं डालने जा
रहे हो। क्यों? आँखें न झुकाइये बाबू साहब!
डाँटकर अपने बापसे कहिये—तू झूठ बोलता है।"

सचमुच घनश्यामजीका चेहरा उतर गया।
सर झुक गया। मगर, यह सब हुआ केवल क्षण-
भरके लिये। तुरन्त ही मानों उन्होंने अपनेको
पिताके विरुद्ध सँभाला। कुछ खीझे भी—

"अब आप ऐसा भी करने लगे? हमारे पीछे
छिप कर चोरीसे हमारी बातें सुनते हैं? ख़ैर, मुझे
इसकी पर्वा नहीं। हाँ मैं झूठ बोलता था—स्वीकार
करता हूं। मैं चौक नहीं, दुर्गाकुण्ड जा रहा हूं—और
जा रहा हूं रधिया भङ्गिनको देखने। फिर? मेरी
इच्छा, मैं ख़राब ही सही; मैं पातकी ही सही। आप
तो पुण्यात्मा हैं—बने रहिये।"

"मैं इन बातोंको नापसन्द करता हूं।"

"पर मैं तो पसन्द करता हूं।"

"यह भलेआदमीयतके बाहर है। तुम्हारा ब्याह हो गया है। तुम्हारी स्त्री घरमें है। ब्याहका उत्तर-दायित्व होता है। ऐसे ही काम करने थे तो ब्याह ही क्यों किया ?"

"दुनियामें बहुतसे लोग ऐसा ही करते आये हैं और करते जा रहे हैं। आपसे साधु-महात्मा बहुत नहीं होते। आप इस बारेमें मुझसे कुछ न कहें। मैं कुछ न सुनूंगा। मैं बच्चा नहीं। जो मुनासिब समझता हूं करता हूं। मुझे अपने उत्तरदायित्वका खूब ख़याल है।"

थोड़ा रुककर घनश्यामजी टहलने लगे। भवें तानकर, नाक फुला कर। थोड़ी देरतक कमरेमें सन्नाटा रहा।

"देखिये" वह फिर बोले—"मैं आख़िरी बार कहता हूं, अब आप मुझसे बहस न किया करें।"

"मैं विवश होकर बोलता हूं। जब नहीं रहा जाता तब मुंह खोलता हूं। अपने मनसे तुम चाहे पढ़े बन जाओ चाहे 'समझदार'। मगर, तुम क्या हो यह मैं ख़ूब जानता हूं। मैं यह बर्दाश्त कर सकता हूं कि तुम एककी जगह चार स्त्रियोंको व्याह कर अपने घरमें रखो। मगर मैं यह नहीं बर्दाश्त कर सकता कि तुम कुत्तोंकी तरह गली-गली औरतोंकी जवानी सूंघते फिरो। यह आदमीयत नहीं, कोरा जानवरपन है। यह मौज नहीं, नरकका नाच है। यह समझदारी नहीं, घोर मूर्खता है। रधिया बड़ी अच्छी है तो उसकी अच्छाई पर कुत्तोंकी नज़र न डालो। जाओ उसे व्याह लाओ। किसीके दरवाज़े पर, किसीकी लड़की घूरनेके लिये जाना शोहदई है। तुम्हें कम-से-कम शोहदोंके रास्ते पर चलते शर्मिन्दा होना चाहिये।"

घनश्यामने कहा—"आप नहीं मानेंगे। अब मैं इस देशहीको छोड़ दूंगा। आप मुझे और मेरी स्त्रीको अलग क्यों नहीं कर देते? मैं कोई रोज़गार

करूंगा और जैसे भला लगेगा रहूंगा। न आपके आगे रहूंगा और न आपको कष्ट दूंगा।"

"अच्छी बात है। मैं भी आजिज़ आ गया हूं। किसी दिन यही होकर रहेगा। यही होगा—अच्छी बात है।"

इसी समय नीचेसे गुलाबचन्दकी आवाज़ सुनायी पड़ी।

"जाइये" घनश्यामके पिताने उनसे कहा—"आपके परम श्रद्धेय और महान-हित-चिन्तक मित्र आ गये हैं। गाड़ी बुलवा दूं? अरे! अरे!! कौन है पहरेपर? साईससे कहो जोड़ी तैयार कर दे। बाबू बलरामजीके सुपुत्र साहब रधिया भङ्गिनके रूप और यौवनमें सुख या मौज खोजने जायँगे। जाइये। क्षमा कीजियेगा, आपका बहुत समय इस बेवकूफ़ने (अपनी ओर इशाराकर) नष्ट किया।"

घनश्यामजीको कमरेमें खिझलाया, शरमाया, उबलता और जलता छोड़, उनके पिता तेज़ीसे घरमें घुस गये।

४

परिवर्तन

स्त्रीके इस तरह बिना दवा-दारूके मरजानेके बाद बुधुआ पहलेसे कहीं अधिक रूखा, कठोर, परिश्रमी और क्रोधी हो गया। उसका परिश्रम करना देखकर तो उसके साथी भंगी दंग रह गये। कोई कहता—'बुधुआके ऊपर ताड़वाला जिन्द आता है! उसीके ज़ोरसे वह इतनी मिहनत करता है। नहीं तो, आदमीके किये ऐसी सख़्त मशक़्क़त हो ही नहीं सकती।' किसीका अनुमान था कि वह सौ घरोंमें कमाता है और किसीका अन्दाज़ था कि इससे भी अधिक। मगर, भारी ताज्जुबकी बात जो थी वह यह थी कि अब उसने गाँजा और चरस, शराब और ताड़ी सभीका त्याग कर दिया था। वह ख़ाली मिहनत करता, एक वक्त सेर

सवासेर आँटेकी मोटी-मोटी तीन-चार लिट्टियाँ और गुड़ या नमक खाता और पैसे जोड़ता था। अगर कभी दिल्लगीमें उसका कोई मित्र भङ्गी उससे पूछ बैठता कि—बुधुआ, तुझे क्या हो गया है भाई! आजकल इतने पैसे पैदा करने पर भी तू कभी मौज-मजा नहीं करता। न गाँजा, न भाँग, न दारू और न 'ताड़तले बाजे सितार मेरी जान! ताड़ीने मुझको दिवाना किया।' तेरे न बच्चे हैं और न बीबी। फिर ये पैसे इकट्ठा कर क्या करेगा रे? वह ऐसी बातें सुनने पर पहले एक लम्बी साँस लेता, हाथ छोड़ कर अपनी मृत-स्त्रीका नाम लेकर कहता—हायरे मेरी औरत! तू पैसे न होने ही से मर गयी! पैसे होते तो ये पैसेके कीड़े हकीम, डाक्टर ज़रूर तुझे बचा लेते। इसके बाद वह मौन और फिर गम्भीर हो जाता—'पैसे इकट्ठा करता हूं पैसेवाला—बननेके लिये। यह ज़माना पैसेका है। जिसके पास पैसे नहीं वह भगवानकी तरह सुन्दर, पवित्र और गुनी होनेपर भी फिज़ूल आदमी है। दुनिया उसका

निरादर ही करेगी। और, पैसे होने पर, भङ्गी भी भगवानसे बड़ा समझा जाता है। हाँ भैया! अच्छर-अच्छर ठीक कहता हूं। खूब जाँची और तौली हुई बात कहता हूं। आजकी दुनिया कोरे पैसेकी दुनिया है।'

बुधुआको वैद्यों, हकीमों और डाक्टरोंपर बड़ा क्रोध था। उसने अपने उन सब मालिकोंका घर छोड़ दिया था जो वैद्य या उनके हमपेशा थे। वह कहता—'मैं कुत्तोंका पाख़ाना साफ़ करूंगा मगर किसी डाक्टर या वैद्यका नहीं। इन्हींकी पत्थरदिलीसे मेरी औरत बे-मौत ही मर गयी। मैं मर जाऊंगा; मगर, किसी डाक्टर या वैद्यके दरवाज़ेपर न जाऊंगा।' वह अपनी प्रतिज्ञा पर हमेशा दृढ़ रहा। लाख लालच और ज़रूरत होनेपर भी किसी डाक्टर या वैद्यके यहां कमाने नहीं गया।

पहली स्त्रीके देहान्तके समय बुधुआ तीस वर्षका पट्ठा था। इसके बाद ग्यारह वर्षोंतक वह स्त्री-हीन जीवन व्यतीत करता रहा। इसी बीचमें घोर परिश्रम

कर उसने अपनी झोपड़ीके एक कोनेमें गड़ी मिट्टीकी हाँड़ीमें पाँच-सौसे ऊपर रुपये एकत्र किये। अब वह मन-ही-मन सोचने लगा कि कहीं कोई अच्छी भंगिन मिल जाती तो वह एक बार फिर औरतके साथ ज़िन्दगीके खेल खेलता। अभी औरतके लिये—नीरस और कठोर होनेपर भी—उसके हृदयमें स्थान बाकी था। वह अक्सर कल्पना करता कि इस बार अगर कोई औरत मिली तो उसे बहुत आरामसे रखूंगा। उससे कम काम लूंगा, उसके सुखोंका अधिक ख़याल रखूंगा और इस तरह पहली स्त्रीके साथ की हुई असावधानीका प्रायश्चित्त करूंगा। हो सका तो कुछ और पैसे एकत्र कर इस देश—याने शहर या प्रदेश—का त्याग कर कहीं और जा बसूंगा। खेती या कोई दूसरा रोज़गार करूंगा। बुधुआको यह बात कभी भूलती ही नहीं थी कि उसके अछूत और अन-धन होनेके कारण ही, समाजके ऊंची जातिके गुलाम, वैद्य और डाकृरोंने उसकी स्त्रीको मृत्युकी राहपर बिना रोके-थामे जाने दिया था।

उसे दूसरी औरत मिली और मिली विचित्र ढङ्गसे। एक दिन दोपहरको काम निपटा कर अपने घर लौटने पर उसने देखा उसके मुहल्ले या उस भंगी-टोलेमें एक औरतको लेकर बड़ा हो-हल्ला मचा था। तमाम भंगिनें, उनके बच्चे और ख़सम उस औरतको घेरे खड़े थे और उससे अनेक सवाल पूछ रहे थे। वह औरत अपनेको भंगिन और गोरखपुर शहरसे आयी हुई बताती थी। उसका कहना था कि, उसका "आदमी' बड़ा पियक्कड़ और क्रूर है। वह रोज़ ही नशा करता और उन्मत्त होता और उसे विविध प्रकारसे सताता था। मारता तो इतना कि उसे उसकी छठीका दूध भी याद पड़ जाता था। उस औरतने सब भङ्गियोंको रो-रो कर अपने शरीर परके डण्डों और नाख़ूनकी खरोंचोंके दाग़ दिखाये और कहा कि उसकी इसी आदतसे घबरा कर मैं यहां भाग आयी हूं।

उसकी भयानक कथा सुनकर एक मर्दानी-भङ्गिनने कहा—

"ओ रे, बड़ा हरामज़ादा था तेरा मर्दुआ!

यहिन तूने उसे छोड़ कर कोई दूसरा मर्द क्यों नहीं कर लिया ?"

"अरे मेरी बहन !" आखोंमें आंसू भरकर वह बोली—"वह बड़ा बदमाश आदमी है। गोरखपुर भरके भंगियोंको उसने बता दिया था कि अगर कोई मेरी लुगाईको अपने यहां रहने देगा या फुसलायेगा तो ठीक न होगा। छुरे चल जायँगे। खून हो जायगा। बलासे, चाहे फिर मुझे फांसी पर ही क्यों न चढ़ना पड़े। बस। उसकी इसी बातके डरसे किसी भी मर्दुवेकी इतनी हिम्मत नहीं हुई कि मुझे अपने साथ रख लेता। इसीसे लाचार होकर मैं यहां भाग आयी हूं।"

"तो अब यहां दूसरा खसम करके रहेगी ?" किसी मनचले भंगीने पूछा।

"रहेगी क्यों नहीं ? दूसरा खसम खोजके रहना न होता तो पहलेके मुहँमें आग लगाकर यह वहांसे यहां भाग ही क्यों आती ?" एक भंगिनने उस भंगीको जवाब दिया।

उसी समय बुधुआ वहां आता दिखाई पड़ा। एकाएक सबके मनमें एक ही बात उठी कि बुधुआ ही इसे अपने साथ रखे। एक बूढ़ी भंगिन उसके पास आ, उस गोरखपुर वालीकी कहानी सुनाती हुई कहने लगी—

"रख ले—रख ले बेटा! बहुत दिनोंसे अकेले दुःख उठा रहा है। यह तेरी पहली औरतसे ज्यादा गोरी और चमकीली है।"

बुधुआने उस आगता भंगिनसे पूछा—

"बोल मेरे साथ रहेगी?"

उसने सिरसे पैरतक बुधुआको देख आंखें नीची कर लीं। याने—हां, रहूंगी क्यों नहीं।

एक भंगीने कहा—"बड़ा अच्छा है। तू इसीका लुगाई बनकर रह। यह तुझे बड़े आरामसे रखेगा। मारे-पीटेगा भी नहीं। लेजा—लेजा रे बुधुआ!—इसे अपनी झोपड़ीमें। ले साले तेरी क़िस्मत बड़ी ज़बरदस्त है। बैठे-बैठाये ऐसी बढ़िया औरत मिल

गयी। अब आज शामको दारू ज़रूर पिलाना। सुनता है?"

मन-ही-मन प्रसन्न होकर उस गोरखपुर वालीका हाथ पकड़ उसे अपनी झोपड़ीकी ओर बढ़ाते हुए बुधुआने पूछा—

"तेरा नाम क्या है।"

भंगिनने आंखें नचाकर, ओठोंमें मुस्कराकर, उछलते कलेजेसे अपने नये ख़समको जवाब दिया—

"सुकली,"

उस दिन शामको सुकली-प्राप्तिके उपलक्षमें बुधुआने अपने महल्ले भरके भंगियोंका, कोई तीस रुपये ख़र्च कर, भात, कलिया और दारूसे स्वागत किया। जिन्न और शैतान पूजे गये। एक भंगिनने बहुत देर तक 'हबुआ' कर बुधुआ और सुकलीको अनेक आशीर्वाद भी दिये।

रात साढ़े-बारह बजे तक भंगियोंका दल उन्मत्त होकर नाचता और खंजड़ी बजाकर गाता रहा—

बुधुआ तोरी लुगैया
गोरी-गोरी भोरी ना।
पीपरे क' भूतवा
औ' तड़वा क' जीनवां
सहाय भैलें ना ;—
मदमाती बलखाती
जोबना पै अठिलाती
ऐसी बांकी गोरी धनियां
पठाय देहलें ना।
बुधुआ तोरी लुगैया

५

औघड़

उस दिन काशीके मुहल्ला शिवालाके पास सड़क-की दाहिनी पटरीपर कुछ दूरस्थित बाबाकीनारामके अखाड़ेपर बड़ी भीड़ थी। सड़कपर एक-दो मोटरें भी खड़ी थीं, अनेक रईसी बग्गियाँ और एक्के भी।

उत्सुक जनताकी टोली-की-टोली अखाड़ेके भवनकी ओर लपकी जा रही थी।

अखाड़ेके फाटकके बाहर चार-पाँच आदमी खड़े आपसमें बातें कर रहे थे।

"बड़ी भीड़ है, मालूम पड़ता है हमलोग उन तक पहुंच ही न सकेंगे। अभी तो उजली पोशाक और सोनेकी सिकड़ीवालोंहीने और उनकी घरवालियों-हीने नाकों दम कर रखा है।"

"सुना है, अघोड़ी बाबा जब-जब यहां आते हैं, तब-तब पाँच दिनोंसे अधिक नहीं ठहरते। आज उनके आगमनका तीसरा दिन है। तीन दिनोंसे, सुबह सात बजेसे लेकर रात बारह बजे तक, ऐसी भीड़ होती है कि बसरे-बस।"

"ग़ज़बके सिद्ध, हैं" एकने गम्भीरतासे कहा—"अच्छे-अच्छे नास्तिक और साधुओंकी सिद्धिमें विश्वास न करनेवाले भी बाबा मनुष्यानन्द अघोड़ी-को देखकर दङ्ग रह जाते हैं। व्यक्ति विशेषको देखते ही वह उसके विषयकी विख्यात और अख्यात बातें

इस तरह बताने लगते हैं मानों उनके पेटमें उसकी जन्म-कुण्डली हो।"

"अरे भाई!" मुखसे भारी आश्चर्य प्रदर्शित करते हुए एक दूसरे व्यक्तिने आरम्भ किया—"पिछले साल तो बाबा मनुष्यानन्दके कमाल देखकर मैं दङ्ग रह गया। वह हमारे मुहल्लेका जो सुबरातीख़ाँ दर्ज़ी है—अजी (एक दूसरे व्यक्तिकी ओर देखकर) वही— वही जिससे तुमने उस दिन अपने कपड़े ब्योंतवाये हैं—उसे ऐसे ज़ोरका कालरा हुआ कि आफ़त मच गयी। सैकड़ों क़ै, हज़ारों दस्त! दो दिनकी बीमारीमें उस हट्टे-कट्टे पहलवानकी मिट्टी पलीत हो गयी। मगर, बाबा मनुष्यानन्दने एक चुटकी ख़ाकसे उसे चुटकियोंमें चङ्गा कर दिया।"

"कैसे भाई? कैसे यार?"

"अरे कैसे क्या बताऊँ? सुबरातीकी बीबीने सुना कि कोई अघोड़ी फ़क़ीर ऐसा आया है जो सब कुछ कर सकता है। बस वह दौड़ी हुई अखाड़ेमें आयी और उसने डाल दिया अपने साल भरके बच्चे

को बाबाजीके चरणोंमें—'अब इस बच्चेकी ज़िन्दगी आप हीके क़दमोंमें है, बाबाजी !' वह कहने लगी—'हैज़ेसे मरते हुए इसके बाप और मेरे मालिकको अगर आप नहीं बचायेंगे तो हमारा कारवाँ लुट जायगा। दोहाई है हुजूर की ! दोहाई है सरकार की !'"

"फिर ?"

"फिर क्या ? अघोड़ी बाबाने अपनी धूनीमेंसे चुटकी भर राख निकालकर पहले औरतके माथेपर मल दिया और फिर दूसरी चुटकीकी राख उसे देते हुए बोले—'भाग, भाग ! ससुरी कहींकी, खिला दे ले जाकर उस साळेको। भाग ! भाग ! नहीं तो मारते मारते राँड़ बना डालूँगा।' बस; वह चुटकीभर राख सुबरातीके लिये संजीवनी बूटी हो गयी। अघोड़ीकी इस करामातकी चर्चा सुनकर डाक्टरोंने और वैद्योंने दाँतों अँगुली दाब ली।"

"अच्छा जी, यह हैं कौन ?" एकने दरियाफ़्त किया—"कुछ इनकी जीवनी भी किसीको मालूम है ?"

"अरे भाई फ़क़ीरोंकी जीवनी ही क्या। ख़ासकर अघोड़ी मनुष्यानन्दके बारेमें दावेसे कुछ कहना बहुत ही मुश्किल बात है। मैंने इनके बारेमें तरह-तरहकी बातें सुनी हैं। कोई कहता है यह पहले हिन्दू ब्राह्मण थे। कोई कहता है मुसलमान शेख़ थे।"

इसी समय एक काला-कलूटा गठीला और मज़-बूत आदमी, गोदमें कोई दो बरसकी लड़की लिये, उन आदमियोंके सामने आकर खड़ा हो गया—

"सरकार! हमलोग भी जा सकते हैं?"

"तू कौन है रे?" एकने उसे किसी नीच जातिका समझकर रोबसे पूछा।

"मैं सरकार, आपका ख़िदमतगार, बुधुआ भंगी हूं। यह मेरी लड़की रधिया है। यह अघोड़ी बाबा ही के आसीससे जी रही है। मेरे ऊपर दो-तीन दिनोंसे भारी मुसीबत आ पड़ी है। इसकी माँ—मेरी औरत सुकली—न जाने कहाँ ग़ायब हो गयी है। उसके लिये रोती-रोती यह छोकरी मरी जा रही है। रात

भर आगकी तरह गरम ज्वर इस सुकुआर फूल पर चढ़ा रहा। मैं जाऊँ बाबू ?"

"अबे जाता क्यों नहीं। इस अखाड़ेमें भंगी हो या ब्राह्मण किसीके लिये रोक-टोक नहीं। यह औघड़का मठ है।"

"नहीं बाबू ; रोज़ तो नहीं मगर जब शहरके बड़े आदमी इसमें आते हैं तो हमें रोका जाता है। हम अछूत जो हैं। भंगी जो हैं। अच्छा सलाम बाबू! लड़की घिघिया रही है। मुझे जाना ही चाहिये। बलासे कोई बिगड़ेगा। सह लूंगा। चुपरे! चुप!! बापरे बाप! यह तो रो-रोकर जान दे देना चाहती है।"

लड़कीको चुप कराता हुआ बुधुआ भंगी आगे बढ़ा।

एक व्यक्तिने उसे पुनः टोका—"अबे! तेरी तो बीबी खो गयी हैं न? भला इसकी दवा अघोड़ी बाबाके पास क्या होगी? पागल हो गया है क्या?"

"नहीं सरकार!" भंगीने जवाब दिया—"वह

सब कुछ कर सकते हैं। वह देवता है—परमेश्वर है। उनसे पूछूंगा कि सुकली कहाँ गयी ? उसे भूत ले गया या जिन ? उनसे पूछूंगा कि अब यह रधिया कैसे जीती रहेगी ?"

बुधुआ लड़कीको चुमकारता-चुमकारता अखाड़ेके फाटकके भीतर हो गया !

अफ़वाह

बुधुआके मठके भीतर चले जाने पर भी बाहरके बातूनी बातें करते ही रहे। जिस व्यक्तिने यह कहा था कि अघोड़ी मनुष्यानन्दके बारेमें उसे कई क़िस्से मालूम हैं उससे बाक़ियोंने सवाल पर सवाल करने आरम्भ किये।

"बताओ, तुमसे किसने कहा ? अघोड़ी बाबा कौन हैं ?"

"मेरे दादाने" उस व्यक्तिने अघोड़ीकी जीवनी आरम्भ की—"पाँचवर्ष पहले मुझे इनके बारेमें जो बातें बतायी थीं उन पर मेरा अधिक विश्वास है। वही सुनाता हूं।

"वह कहते थे कि अघोड़ी मनुष्यानन्द तीर्थ-राज प्रयागके रहने वाले एक प्रतिष्ठित और विद्वान् और कुलीन ब्राह्मण हैं। भू-सम्पत्तिके अलावा इनके विख्यात पिताके पास कई सौ रईस-घरोंकी यजमानी और कई हज़ार रुपये थे। अघोड़ीका नाम कृपाराम था। जिस वक्त उनकी अवस्था अट्ठारह वर्षकी थी, उनके पिताका देहान्त हो गया। कृपाराम अपनी युवती और सुन्दरी स्त्रीको प्राणोंसे भी अधिक प्यार करते थे। व्याह हो जानेके बाद ही उन्होंने सन्ध्या-पूजा, यजमानी-वृत्ति सबकुछ छोड़कर स्त्रीके रूप और मोह पर अपनेको निछावर कर दिया। वह जो कुछ कहती कृपाराम ईश्वरकी आज्ञा की तरह आँख मूंद कर उसका पालन करते। अपने हृदयके सारे प्रेमको स्त्रीके चरणोंपर दिनमें सौ-सौ बार

निचोड़ कर चढ़ानेपर भी उन्हें सन्तोष न होता। वह अपने आपको भूलकर, संसारको भूलकर, स्त्रीकी उपासना करते थे।

"मगर, खूब बलिष्ठ होनेपर भी, ब्राह्मण कृपाराम भयानक कुरूप थे। उनकी काली और बड़ी-बड़ी मूछें तथा कौड़ेकी तरह भारी-भारी खूनी आँखें और भी ग़ज़ब ढाती थीं। शायद इसीलिये, उनके आगे प्रेमका दम भरती हुई भी, उनकी सुन्दरी ब्राह्मणी उन्हें हृदयसे नहीं चाहती थी। मगर, वह तो उसके रूप यौवनपर अन्धे थे। उन्हें यह ज्ञान नहीं था कि मुग्ध-मन, चमाचम रूपके परदेके भीतर छिपा हुआ 'धोका' नही देख पाता। वह समझते थे कि ब्राह्मणी भी वैसे हो स्वच्छ और विशाल हृदयसे उन्हें प्यार करती है जैसे वह उसे।

"पुश्त-दर-पुश्तसे कृपारामके घरपर ग़रीब और अमीर सभी तरहके विद्यार्थी शास्त्रोंका अध्ययन करनेके लिये आते थे। पिताकी मृत्युके बाद कृपारामने भी उस सिलसिलेको तोड़ा नहीं था। उनकी विद्या

और विद्वत्तासे भी अनेक विद्यार्थी लाभ उठाते थे। उन्हीं विद्यार्थियोमेंसे एक युवक और सुन्दर छात्रने उनकी गृहस्थीमें आग लगा दी।

"कृपाराम, रोज़ शामको पाँच बजे, घरके बाहर—कभी मित्रोंसे मिलने, कभी टहलने—चले जाया करते थ। लौटते थे नौ-साढ़े-नौ बजे। एक दिन घरसे बाहर होनेके घण्टा-डेढ़-घण्टा बाद ही उनका जी उचट गया। न जाने क्यों कलेजा धड़कने लगा। मानों उनकी स्त्री, उनका घर, उन्हें पुकार रहा था। मानों कोई भीषण-विपत्ति उन्हें घर लौट चलनेका सन्देश दे रही थी। उनका जी ऐसा उचटा—ऐसा उचटा कि, हमेशा पैदल चलनेवाले वह, एक्के पर बैठकर घरकी ओर लपके।

"घर पहुंचने पर देखा बाहरी दरवाज़ा अधखुला पड़ा था। उनकी अनुपस्थितिमें तो ब्राह्मणी हमेशा दरवाज़ा बन्द रखती थी—आज माजरा क्या है? वह धीरेसे दबे पाँव भीतर घुसे। उनका मकान महल्लेके बाहर, पक्का, छोटा और दो-खण्डका था। उन्होंने
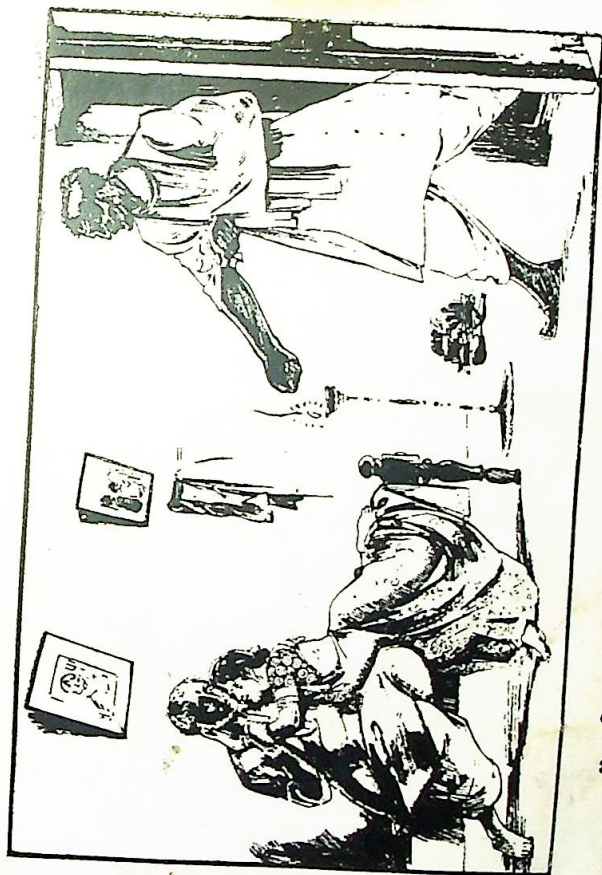
—"उनके वहां पहुंचते ही उस कोठरीका शृङ्गार रस वीभत्समें परिणत हो गया।"

सुना ऊपरी खण्डपर कोई पुरुष बोल रहा था—

'प्यारी चलो हम यहांसे कहीं दूर देश भाग चलें। यह चोरी-लुक्केका प्रेम ठीक नहीं।'

'मगर तुम तो ग़रीब विद्यार्थी हो मेरे राजा!' स्त्री-कण्ठसे उत्तर मिला—'हमारा तुम्हारा गुज़र कैसे होगा?'

"कृपारामकी नसोंमें उक्त संवाद सुनते ही आग-सी लगी। वह एक बार शून्य-से और स्तब्ध हो रहे। काटो तो ख़ून नहीं। हज़ारों तरहके भाव एक साथ ही उनके हृदयको कुरेदने लगे। क्षणभरमें वह लपक कर दो तल्लेकी कोठरी—अपने पुष्प-भवनके द्वारपर जा धमके। दरवाज़े खुले थे आंखोंसे चिन-गारियाँ बरसाते वह कोठरीमें घुसे। उस समय उनकी प्राणवल्लभा—जिसके लिये उन्होंने ईश्वरको भी भुला दिया था—उनके एक युवक विद्यार्थीकी गोदमें खिलखिला रही थी। उनके वहाँ पहुंचते ही उस कोठरीका शृङ्गार रस वीभत्समें परिणत हो गया।

"क्रोधसे अन्धे कृपाराम ब्राह्मणी और विद्यार्थीपर टूटे। अपनी काली और बलवती भुजाओंके भयानक पञ्जोंसे उन्होंने दोनोंको गर्दनके सहारे पकड़कर ज़मीनसे गज़ भर ऊपर तान दिया।

'नीच! राक्षसी!!'

"वह काँपने लगे—भयानक क्रोधसे। उनके पंजोंके शिकार भी काँपने लगे—भीषण भयसे। मगर, क्षणभर बाद ही उन्होंने दोनोंको अपने चंगुलसे मुक्त कर दिया। जहाँ-के-तहाँ ज़मीनपर बैठ गये। दुपट्टेमें मुहँ छिपा लिया। शायद रोने लगे।

"वह कबतक उस हालतमें रहे, मालूम नहीं। फिर मुहँ खोलनेके बाद उन्होंने देखा उनके अपराधी ज्योंके-त्यों वहीं खड़े थे। इस बार वह बोले—

'उफ़! स्त्री! तुम्हारा यह रूप भी हो सकता है? तुम ऐसे भयानक ढंगसे अपने सच्चे-से-सच्चे प्रेमीको भी ठग सकती हो? तुम्हारे लिये—उफ़!—तुम्हारे लिये!'

एकाएक कृपाराम गंभीर हो उठे-

'जी करता है,' उन्होंने उन दोनोंसे कहा—'जी करता है यहींपर तुम दोनों विश्वासघातियोंको, खनकर गाड़ दूं। मगर नहीं, मगर नहीं। मैं स्वीकार करता हूं इसमें अपराध मेरा था। मैंने आईनेमें अपना काला रूप न देखकर तुम्हारे सौन्दर्यके पीछे अपने वासना-विभ्रान्त मनको दौड़ा दिया था। अपराध मेरा है। अपराध मेरा है।'

'अच्छा,' उन्होंने ब्राह्मणीको ललकारा—'अब मेरा नमस्कार स्वीकार करो देवि! अपने गहने और कपड़े संभालो और अभी—इसी वक्त—मेरा घर ख़ाली कर दो। मेरी भूल थी जो मैंने तुम्हें अपनी स्त्री समझा—तुम तो इस गोरे और सुन्दर युवककी—गुरु-तिय-गामीकी—रानी हो। चलो! संभालो सामान!'

'और तुम!' विद्यार्थीकी ओर मुड़कर उन्होंने कहा—'मेरे भाई! तुम अब इन्हें अपनी स्त्री बनाओ। ले जाओ। अपनी जवानी सफल करो। यद्यपि हृदयका पापी क्रोध मुझे तुम्हारा रक्त पान करनेका आदेश देता है, मगर; मैं वैसा करनेका नहीं। मैं

तपस्वियोंकी सन्तान—ब्राह्मण हूं। मैं दूसरोंको क्षमा कर स्वयं कष्ट भोगना जानता हूं। ओह! दुनिया ऐसी भी होती है? मनुष्य ऐसा भी होता है?'

"ब्राह्मणीको अपने स्थानसे न हटते देख कृपाराम स्वयं कमरेके बाहर हो गये और थोड़ी देर बाद सन्दूक भर गहने और कपड़े लिये लौट आये। सन्दूकसे चादर निकाली, उसे विद्यार्थीके हाथमें देकर बोले—

'यह रो रही हैं। मैं अब यह सब नहीं देखना-सुनना चाहता। लो यह चादर। ओढ़ाओ इन्हें। ओढ़ाओ! ओढ़ाओ!! मुझे पुनः ब्राह्मणसे राक्षस न बनाओ।'

"मन्त्र मुग्धकी तरह विद्यार्थीने आज्ञाका पालन किया।

'इस सन्दूकमें,' कृपारामने कहा—'इनके हज़ारोंके ज़ेवर हैं। उनके अलावा मैंने पाँच हज़ार रुपयेके नोट भी रख दिये हैं। इतनेसे तुम अगर समझदार होगे तो अच्छी तरह ज़िन्दगीकी नाव खेने लगोगे।

बस। अब तुम लोग चले जाओ यहाँसे। उठाओ! चलो!!'

"उस काले और भयानक ब्राह्मणने उसी वक्त अपनी रूपकी रानी और उस युवकको अपने घरसे बाहर कर दिया!"

कहानी कहनेवाला व्यक्ति यहाँ पर ज़रा रुका। दम लेने लगा। उसके साथियोंमेंसे एक बोला—

"सचमुच विचित्र ब्राह्मण था। जैसा तुम कहते हो वैसा ही हुलिया तो औघड़ बाबाका भी है। वैसे ही काले हैं, वैसी ही लाल-लाल भयानक आँखें हैं।"

दूसरा बोला—"लेकिन यदि यह कहानी सच हो तो यह आदमी नहीं देवता या राक्षस हैं। यदि मेरी औरतने ऐसा किया होता तो मैंने तो उस मर्द और उस पापिनी नारी, दोनोंका, खून पी लिया होता।"

"इसीसे तुम महापुरुष नहीं, क्षुद्र संसारी प्राणी हो," कहानी कहने वालेने कहा—"अब आगेकी बातें भी तो सुन लो। प्रयागके उस मह्ल्ले वालोंका कहना है कि उक्त घटनाके सात दिन बाद तक ब्राह्मण कृपा-

राम बिलकुल उन्मत्त-से, पागल-से, रहे। वह रात-बिरात रह-रहकर चिल्ला उठते—'हायरी औरत! हायरी औरत!' अगर कोई उनसे पूछता कि क्या है कृपारामजी, आपको क्या हो गया है? तो, अपनी सारी कहानी अक्षर-अक्षर दुहरा कर, एक लम्बी साँस लेकर, हृदयको दहला देने वाले स्वरसे वह गाने लगते—

यां चिन्तयामि सततं
मयि सा विरक्ता!

❀ ❀ ❀

यां चिन्तयामि सततं
मयि सा विरक्ता

"इसके बाद एक दिन कृपारामने आस-पासके सभी ग़रीबों और भिखमङ्गोंको बुलाकर उनमें अपनी सारी सम्पत्ति बाँट दी। किसीको लोटा दिया, किसीको चाँदीकी थाली दी। किसीको दुशाला ओढ़ा दिया, किसीके गलेमें सोनेकी सिकड़ी और मूँगेकी माला डाल दी। महल्लेवाले आश्चर्यकी मूर्ति बने उनकी यह लीला देखते रहे!

—"एक भंगिनने बहुत देरतक हबुआकर बुधुआ और सुकलीको अनेक आशीर्वाद दिये।"

(बु० बे० पृष्ठ ३०)

"उसी दिन, रातके बारह बजेके बाद, एकाएक हल्ला मचा—आग लगी !! घरसे बाहर आकर लोगोंने देखा कृपारामका घर भयानक रूपसे जल रहा था। उन्होंने मिट्टीका तेल और घी डालकर घरके शेष सामानोंमें और उस घरमें आग लगा दी थी। और स्वयं वे, एक अँगोछा लपेटे, घरके बाहर खड़े लोगोंको आग बुझानेसे रोकते और नाचते और अट्टहास करते और गाते रहे—

"अगिया लागी
सुन्दरबन जरिगयो हो,
अगिया लागी !"

इसी समय मठके भीतरसे अमीरोंके पक्षपाती और नौकर, बुधुआ भंगीको, छड़ियों और डण्डोंके सहारे बाहर खदेड़ते दिखाई पड़े !

"भाग ! भाग !! अभी बाहर ठहर ! अभी बड़े-बड़ोंसे तो औघड़ बाबाको .फ़ुर्सत ही नहीं है, और, तू साला अछूत-भंगी भीतर पिला पड़ रहा है। मारूँगा व' हाथकी खोपड़ी भन्ना उठेगी।"

बुधुआ बाहर बैठ कर रोने लगा। उसकी दुधमुहीं रधिया और भी ज़ोरसे घिघियाने लगी। बातूनियोंका दल तमाशा देखने लगा। कहानी कहने वाला व्यक्ति भी अपनी बातें भूल मठके फाटककी ओर देखने लगा!

७

अखाड़ेमें

अखाड़ेके भीतर, आँगनमें, बड़ी भीड़ थी। कोई दो-सौ औरतें, मर्द और बच्चे इकट्ठे थे। भीड़से पचीस गज़की दूरीपर, सामने, बरामदेमें, एक धूनी जल रही थी। उसकी चारों ओर अनेक औघड़पन्थी साधु बैठे थे। सभी देखनेमें डरावने और वीभत्स मालूम पड़ते थे।

भीड़में एक पुरुषकी गोदमें सवार किसी पाँच-छ बरसके लड़केने उससे पूछा—

"बाबूजी, औघड़ बाबा कौन हैं ?

"वही, वही," पुरुषने धूनीकी ओर बच्चेको आकर्षित करते हुए उत्तर दिया—"वह देख, बीचमें कंबल पर बैठे हैं। देखा ?"

पुरुषकी गोदमें चिपकते हुए, कांपते कलेजेसे, लड़केने कहा—

"वह—वह तो बड़े डरावने हैं बाबूजी। भागो, भागो; मुझे डर मालूम पड़ता है। औघड़ बाबा पकड़ेंगे। औघड़ बाबा मारेंगे। भाग चलो बाबूजी।"

"चुप चुप !!" प्रेम-भरे शासनके स्वरमें बच्चेको चुप कराता हुआ पुरुष बोला—"नहीं—ऐसा न कहो। उनसे डरो मत बेटा; वह देवता हैं। अभी मैं तुम्हें उनके पास ले चलूंगा। वहां तुम्हारे पेटका रोग दूर कर देंगे।"

"उनकी आंखें इतनी बड़ी-बड़ी क्यों हैं ? ऐसी लाल-लाल क्यों हैं ? उनके मुँहपर इतने बड़े-बड़े और काले-काले बाल क्यों हैं ? बाबूजी, उनका रङ्ग इतना काला क्यों है ? मुझे डर मालूम पड़ता है। भाग

चलो यहाँसे ; नहीं तो, औघड़ बाबा मुझे पकड़ लेंगे।"

इसी समय औघड़की कर्कश-कण्ठध्वनिने भीड़में सन्नाटा डाल दिया। लोग स्तब्ध-से होकर धूनीकी ओर बड़े ध्यानसे देखने लगे। वहाँ, औघड़के सामने, कोई मोटा-सा सुफ़ेदपोश अमीर, हक्का-बक्का-सा बैठा था। औघड़ अपनी भयावनी आंखोंसे उसे घूर रहा था। क्रोधसे उसके होठ फड़क रहे थे। लोगोंने एक और आश्चर्यजनक बात देखी। उस मोटे-मलके मुँह और गर्दन और माथेपर कई रुपये और गिन्नियां चिपकी हुई चमक रही थीं।

"पाजी, बदमाश!" औघड़ने उसे डाटा—"ऐसा काम क्यों किया?"

"ऐसा काम क्यों किया?" औघड़के पार्श्ववर्ती दूसरे औघड़ोंने भी प्रतिध्वनि की।"

मोटा आदमी मारे भयके कांपने लगा। उसके रोम-रोमसे पसीना बह चला। एक बार मुँहपर हाथ फेरकर उसने रुपयों और गिन्नियोंको छड़ानेकी चेष्टा

भी की । मगर, व्यर्थ । वे उसके बदन पर इस तरह सट गये थे जैसे माँस और नाखून ।

"उसने औघड़ बाबाको रुपयेका लालच दिखाया है।" भीड़के एक व्यक्तिने अपने साथीसे कहा—"मैं तो देखही रहा था। उसने आते ही वे रुपये और गिन्नियाँ निकालकर औघड़ बाबाके खप्परमें डाल दीं । बस इसीसे वह बिगड़ पड़े। वह किसीसे कुछ लेते थोड़े ही हैं।"

"मैं तो अपने पीछे खड़े उस आदमीकी गोदके बच्चेकी बातें सुन रहा था।" उसके साथीने कहा—"मैंने तो देखा ही नहीं। ये रुपये और गिन्नियाँ इसके मुँह पर किस तरह सट गयीं ?"

"औघड़ बाबाने," पहले व्यक्तिने उत्तर दिया—खप्पर समेत उन चाँदी और सोनेके टुकड़ोंको उस मोटे-मलके मुँह पर खींच मारा। वह देखो, खप्पर उधर पड़ा है। देखते हो ? मुर्देकी खोपड़ी है। कैसी डरावनी मालूम पड़ती है !"

"और वे रुपये उसके मुँह पर चिपके ही रह गये !

अरे, वह तो तड़प रहा है। क्या अब वे उसी तरह चिपके ही रहेंगे। बच्चू साधुओंको अपनी अमीरी दिखाने गये थे। तुम्हें मालूम नहीं, साला भारी मक्खी-चूस है। हज़ार तरहकी बेईमानोंसे रुपये बटोरता है। ग़रीबोंके गले बे-रहमासे काटकर अघोड़ी बाबाको अपनी दानशीलता दिखाने आया था।"

"रुपये क्यों लाया? रुपये क्यों लाया?" अघोड़ी की आवाज़ एक बार पुनः चारो ओर गूँज उठी—"किसने तुझे बताया कि मैं रुपयोंका गुलाम हूं। किसने तुझे बताया कि मैं चाँदी या सोना लेनेके बाद कुछ देता हूं?"

मोटा आदमी रोता और काँपता रहा। उसकी आकृति इस तरह बिगड़ गयी थी मानों वे चिपके हुए चाँदी-सोनेके टुकड़े जोंककी तरह उसके जीवनका रस सोख रहे हों। उसने हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाते हुए कहा—

"अपराध हुआ महाराज, मूर्ख हूं, बेवकूफ हूं, क्षमा कीजिये। दोहाई है औघड़ बाबाका! इन रुपयों

और गिन्नियोंको मेरे मुंहपरसे जल्द छुड़ाइये। बड़ी व्यथा—उफ़!—मरा जा रहा हूं।"

वह दोनों हाथोंसे अपना मुंह छिपाकर रोने और तड़पने लगा।

"जा भाग!" औघड़ने आदेश दिया—"गंगाजलसे अपना मुंह धो डाल! ख़बरदार; फिर कभी किसी साधुको चाँदी-सोनेके जालमें फ़सानेकी कोशिश न करना। तू क्यों आया था? उसी कामके लिये न? अपने लड़केके लिये न? उसे क्षय हुआ है? अरे पागल, उसे क्षय हुआ है तेरे ही पापोंसे। सुना नहीं है—बाढ़े पूत पिताके धरमा। मगर तू क्या धरम करता है? किसी मुसीबत-ज़देको कभी चार रुपये क़र्ज़ देता है तो पन्द्रह वसूल करता है। छोड़ इस कमीनी आदतको। रुपयेका उपयोग समाजके ग़रीबों-की भलाई करना है। अर्थ पिशाचकी तरह सूद लेना बन्द कर। तेरा लड़का चंगा हो जायगा। हट यहाँसे—भाग!"

"भाग! भाग!!" दूसरे औघड़ोंने भी पुनः प्रतिध्वनि

अरे, वह तो तड़प रहा है। क्या अब वे इसी तरह चिपके ही रहेंगे। बच्चू साधुओंको अपनी अमीरी दिखाने गये थे। तुम्हें मालूम नहीं, साला भारी मक्खी-चूस है। हज़ार तरहकी बेईमानोंसे रुपये बटो-रता है। ग़रीबोंके गले बे-रहमासे काटकर अघोड़ी बाबाको अपनी दानशीलता दिखाने आया था।"

"रुपये क्यों लाया? रुपये क्यों लाया?" अघोड़ी की आवाज़ एक बार पुनः चारो ओर गूँज उठी—"किसने तुझे बताया कि मैं रुपयोंका गुलाम हूं। किसने तुझे बताया कि मैं चाँदी या सोना लेनेके बाद कुछ देता हूं?"

मोटा आदमी रोता और काँपता रहा। उसकी आकृति इस तरह बिगड़ गयी थी मानों वे चिपके हुए चाँदी-सोनेके टुकड़े जोंककी तरह उसके जीवनका रस सोख रहे हों। उसने हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाते हुए कहा—

"अपराध हुआ महाराज, मूर्ख हूं, बेवकूफ हूं, क्षमा कीजिये। दोहाई है औघड़ बाबाका! इन रुपयों

और गिन्नियोंको मेरे मुंहपरसे जल्द छुड़ाइये। बड़ी व्यथा—उफ़!—मरा जा रहा हूं।"

वह दोनो हाथोंसे अपना मुंह छिपाकर रोने और तड़पने लगा।

"जा भाग!" औघड़ने आदेश दिया—"गंगाजलसे अपना मुंह धो डाल! ख़बरदार; फिर कभी किसी साधुको चाँदी-सोनेके जालमें फ़सानेकी कोशिश न करना। तू क्यों आया था? उसी कामके लिये न! अपने लड़केके लिये न? उसे क्षय हुआ है? अरे पागल, उसे क्षय हुआ है तेरे ही पापोंसे। सुना नहीं है—बाढ़े पूत पिताके धरमा। मगर तू क्या धरम करता है? किसी मुसीबत-ज़देको कभी चार रुपये क़र्ज़ देता है तो पन्द्रह वसूल करता है। छोड़ इस कमीनी आदतको। रुपयेका उपयोग समाजके ग़रीबों-की भलाई करना है। अर्थ पिशाचकी तरह सूद लेना बन्द कर। तेरा लड़का चंगा हो जायगा। हट यहाँसे—भाग!"

"भाग! भाग!!" दूसरे औघड़ोंने भी पुनः प्रतिध्वनि

की। मोटेमल अपनी तोंद संभालते धूनीके सामनेसे अखाड़ेके बाहरकी ओर भाग खड़े हुए। भीड़के कुछ लोग उसकी दुर्दशापर मुंह छिपाकर हंसने लगे। कुछ लोग औघड़ बाबाके करामात देखकर दंग रह गये!

८

कौन रोता है ?

"कौन रोता है ? कौन रोता है ?"

एकाएक औघड़ लाल-लाल आंखें निकालकर उग्र-रूपसे चिमटा लेकर खड़ा हो गया।

"रोता कौन है ? कोई तो नहीं।" दूसरे औघड़ोंने आश्चर्य-चकित हो खड़े होते-होते उत्तर दिया।

"कौन रोता है ? कोई तो नहीं।" भीड़के कुछ लोगोंने भी औघड़-राजको भीत-स्वरसे उत्तर दिया।

"उहुंक ; ज़रूर कोई रोता है। इधर देखो ; मेरी

छातीमें तूफान-सा उठ रहा है। ज़रूर कोई रोता है। ज़रूर किसी ग़रीब और दुखीको किसी अन्यायीने सताया है। बताओ! बताओ!!" औघड़ ज़ोर-ज़ोरसे गरजने लगा—"कौन रोता है? कौन रोता है?"

अखाड़ेके भीतर खड़े सभी लोग अवाक्-से होकर अपने आस-पासके प्राणियोंके मुख और आंखोंको आंखोंसे टटोलने लगे; मगर, वहाँ तो कोई नहीं रोता था। सभी औघड़ बाबासे मिलने, अपने दुख सुनाने और आशीर्वाद पानेके लिये उत्सुक खड़े थे।

"बाहर देखो, फाटकके बाहर कोई रो रहा है। दौड़ो। उसे अभी मेरे पास लाओ। रास्ता छोड़ो, ऐ सुफ़ेद कपड़ेवालो! रास्ता छोड़ो, ऐ आदमी होकर भी दूसरे आदमीको ग़रीब और घृणित समझनेवालो! मैं पहले उस रोनेवालेसे मिलूंगा। उसे मेरे पास लाओ। दौड़ो!"

दस-पाँच सुफ़ैदपोश भी बाहरकी ओर दौड़े और दो-चार औघड़ भी। भीड़ने धूनीवाले बरामदेसे लेकर फाटक तक रास्ता साफ़ कर दिया। औघड़ कद

रूपसे बरामदेमें टहलने और अर्ध-स्वगत रूपसे बड़-बड़ाने लगा—

"शायद उसे किसीने यहाँ आने नहीं दिया। वह फूट-फूट कर रो रहा है। हाँ जी; ज़रूर रो रहा है! दुनियाकी हंसीकी आवाज़ तो मेरे कानोंमें पड़ती ही नहीं। इनमें केवल रोदनकी करुण झंकार ही सुनायी पड़ती है।"

एकाएक फाटककी ओर देखकर औघड़ पुनः चिल्ला उठा—

"वह आया, आया न। देखो, वह अभी तक रो ही रहा है। अरे—अरे! यह तो—यह तो—बुधुआ!"

औघड़ने झटपट आगे बढ़कर, सुफ़ैदपोशों और दूसरे औघड़ोंके आगे-आगे रधियाको गोदमें लिये आते हुए बुधुआका हाथ पकड़ लिया—

"बुद्धू—बुधराम—बुधुआ! अरे तू बाहर बैठा रो क्यों रहा था? पागल कहींका, तुझपर क्या विपत्ति पड़ी है?"

तेज़ीसे बुधुआके हाथसे नन्हीं रधियाको औघड़

ने अपनी गोदमें ले लिया। खूबसूरत गुड़ियाकी तरह सुन्दर रधिया, दाढ़ीवाले काले और भयानक औघड़-की गोदमें जानेसे झिझकी नहीं। हाँ, उलटे उसने घिघियाना बन्द कर दिया। कुछ चकरायी-सी वह टुकुर-टुकुर औघड़का मुंह ताकने लगी।

"यह वही है न? वही—क्या इसका नाम बताया था ...?"

"रधिया—रधिया है स्वामीजी। यह तो आपहीके आसीससे जनमी है। यह आपहीके चरणोंकी धूल है। आह! अब कैसी चुप हो गयी। आपकी गोदमें जाकर अपनी मांको भूल गयी।"

"क्यों, इसकी माँका क्या हुआ? तूने, तो बताया ही नहीं बुधुआ; तू बाहर बैठकर रो क्यों रहा था? भीतर मेरे पास क्यों नहीं चला आया? तुझे क्या उस सालकी मेरी बातोंपर विश्वास नहीं हुआ? मैंने तो तुझसे तभी कह दिया था कि मैं तुझे नीच या अछूत या अपने अथवा किसीसे भी छोटा नहीं मानता। बोलता क्यों नहीं? तू भीतर क्यों नहीं आया भाई?"

औघड़की हृदयसे निकली हुई प्रेम-भरी बातोंने बुधुआको पुलकायमान कर दिया। उसकी आँखें छलछला उठीं। वह चुप रहा—सजल आंखोंसे औघड़ मनुष्यानन्दका मुंह ताकता रहा।

"बोल; तुझे किसने नहीं आने दिया? आदमीके चोलेमें यहाँ ऐसा कौन व्यक्ति है जिसने तुझे इस तरहसे अपमानित कर इतना सताया? बता तो, मैं एक बार उसकी शकल देखूंगा। नहीं, डर मत। संकोच भी न कर। ज़रूर बता, मैं देखना चाहता हूं उस व्यक्तिको जो अछूत या भंगी समझकर तुझसे घृणा करता है। तुझे सबकी तरह, पञ्चतत्वका पुतला नहीं मानता। तुझमें भी उस परम प्रकाशकी एक रेखा नहीं देखता। तू चुप है। तू नहीं बतायेगा। तू उनसे अधिक साधु या महापुरुष या ऊँचा है जिन्होंने तुझे इस अखाड़ेमें नहीं घुसने दिया था। तू उन्हें मेरे क्रोधसे बचाना चाहता है। नाः नाः नाः नाः। यह नहीं होनेका। मैं देखना चाहता हूं उस आदमीको।"

औघड़की लाल-लाल आंखे अंगारेकी तरह चमक उठीं। साधारण लोगोंकी साधारण आंखोंने उन आंखोंमें क्रोधकी छाया अवश्य देखी; मगर, उफ़! साधारण क्रोधसे वह कितना तेजस्वी, कितना भीषण, कितना उग्र क्रोध था। अखाड़ेमें एकत्र सारी जन मराडली स्तब्ध-सी हो रही। जिन्होंने बुधुआको अपमानित किया, मारा और फाटक-बाहर कर दिया था उनकी तो मारे डरके नानी ही मर गयी। वहाँ एकत्र सभी लोगोंको विश्वास था कि औघड़ कोई महापुरुष, अत्यन्त शक्तिशाली योगी है। उसे बुधुआके अपमान पर इस तरह उत्तेजित देख कुछ लोग अपने अगल-बगलवालोंसे फुसफुसाने लगे—

"किसने इसे निकाल दिया था जी?"

"मैं क्या जानू बाबा," एक परम आस्तिक प्रकृतिके व्यक्तिने कानों पर हाथ धरते हुए कहा—"मैं खुद फाटकके पास होता तो ऐसा काम कदापि न करता। वैसे मैं चाहे किसी भंगी या मेहतर-डेला को न छुऊं, उनसे दूर ही रहूं; मगर, बाबाजीके पास

आनेसे तो कभी न रोकता। दुनियामें सबकी विपदा बराबर समझनी चाहिये। महाराज ठीक ही कहते हैं, भंगी हो या बराम्हन, सबकी काया एक ही मिट्टीसे तो संवारी गयी है। भंगी-चमारके, माथे पर कोई सींग तो होता नहीं। राम, राम! जाने कबसे बेचारा रोता रहा। ऐसा रोया कि औघड़ बाबाका कलेजा काँप उठा।"

भीड़के पिछले भागमें दो-तीन आदमी इस बुधुआ-काण्डपर आलोचना करने लगे—

"अरे, अरे!! औघड़ बाबाने तो बुधुआको इतनी आसानीसे छू लिया मानों किसी ऊंची जातिके आदमीका स्वागत करते हों।"

"आखिर औघड़ ही ठहरे, इनके लिये ऊंच,-नीच का भेद कैसा।"

"अब हम सबको भी उसी हाथसे छूएँगे। न जानें क्यों मेरे तो रोंगटे खड़े हो रहे हैं। मुझसे भंगी छू गया होता तो मैं तो बिना स्नान किये अपने 'मन' को शुद्ध न समझता।"

"और, अपनी जोड़ीपर मुसलमान साईसके साथ बैठकर पान चाबनेमें तुम्हें घृणा नहीं होती, क्यों? मुसलमान तो गोमांस खाता है। उसे छूनेसे तुम्हारा मन क्यों नहीं अपवित्र होता?"

मानों पहले व्यक्तिको दूसरे व्यक्तिकी खरी बात चोट-सी लगी। वह तिलमिला-सा उठा। ज़रा झिझककर और कुछ उत्तेजित होकर उसने कहा—

"बड़े उपदेश देने वाले! अरे मुसलमानको सभी छूते हैं; और छूते हैं बिना उस तरहकी भयानक घृणा अपने मनमें लाये जिस तरहकी घृणा भंगीको छूनेसे होती है। तुम कहांके देवता हो, परमहंस हो। स्वयं तुम भी तो गोमांस-भक्षक मुसलमानको छूकर निस्तेज नहीं होते? स्वयं तुम भी तो—भंगीको नहीं छूते?"

"नहीं छूता इसलिये कि छूनेकी कोई ज़रूर नहीं पड़ती। मुझसे कभी कोई भंगी या अछू[illegible] जाता है तो मैं नहाता भी नहीं। मेरे मनपर कोई विशेष प्रभाव भी नहीं पड़ता। मेरे [illegible]

तक छू-जानेका संबन्ध है—भंगी, मुसलमान, हिन्दू और तुम बराबर हो।"

पहले व्यक्तिने, जो मक्खनकी तरह मुलायम, तगड़ा और गोरा था, देखनेमें अमीर-सा मालूम पड़ता था, मुँह फुलाकर कहा—

"चुप रहो! तुम तो बोलते-बोलते गाली देने लगते हो। भंगी-मुसलमान और मैं! छिः—जो तुमसा भ्रष्ट न हो उसको तुम अपमानित करते हो!"

दूसरे व्यक्तिने मुस्कराकर, धीरेसे, मगर तानेसे, कहा—

"सिया-राम मय सब जगजानी,
करौं प्रणाम जोरि जुग पानी।"

इसी समय औघड़का कर्कश-कण्ठस्वर भयपूर्ण-सन्नाटेकी तरह सबके कानोंमें व्याप उठा—

"मैं तुम सबसे पूछता हूं—सच बोलो! मेरे ामने आओ! किसने बुधुआको इतना रुलाया है! सने मेरे पास आनेसे रोका है मैं एक बार उस सूरत देखना चाहता हूं।"

बाबा कीनारामके अखाड़ेमें क्षण भरके लिये गम्भीर सन्नाटेका राज्य हो गया !

६

लियाकत हुसैन

लियाकत हुसैनने कहा—"रहमान, अरे यार थोड़ी देरके लिये इस बैठकमें मुझे अकेला ही छोड़ दो। अभी कितने बजे होंगे? साढ़े-चार—नहीं, अंधेरा गाढ़ा हुआ जा रहा है, पाँच से ऊपर बज गये होंगे। बस डेढ़-घण्टेके लिये तुम कहीं घूमने-फिरने चले जाओ; नाराज़ न होना, मुझे तुमसे ऐसा कहना नहीं चाहिये; तुम मेरे मिहमान हो। मगर, भाई जान; कुछ काम ही ऐसा है जिसके लिये रोज़—शाम छ-बजेसे रात आठ-बजेतक—मैं इस बैठकमें अकेले ही रहता हूं। अपने भाईको—अपने बेटेको—भी यहां नहीं फटकने देता।"

कुछ ताज्जुबमें आकर रहमानने पूछा—"आख़िर ऐसा कौन-सा काम है बड़ेमियां जिसे तुम अपने भाई, बेटे और मेरे जैसे पुराने दोस्तसे भी छिपाते हो ?"

"उहँ! तुमने समझा नहीं। मैं उस कामको अपनी ज़ातके किसी भी आदमीसे नहीं छिपाता। मगर, जिस वक्त मैं उस मज़ेदार कामका दीबाचा तैयार करने बैठता हूं, उस वक्त, अपने पास किसीको नहीं रहने देता। तुम पहले घूम कर लौट आओ, फिर देखना कैसा अच्छा है वह काम। मुझे डर है; एक बार उसका मज़ा पा जाने पर फिर तुम जल्द मेरा घर छोड़ोगे नहीं।"

"अच्छा बड़ेमियां," रहमानने कहा—"मैं अभी जाता हूं। मैं सचमुच तुम्हारे किसी काममें दस्तन्दाज़ी कर तुमको हैरान नहीं करना चाहता। मगर, क़सम खुदाकी, ईमानसे कहता हूं, तुम्हारी बातें सुनकर मेरे पेटमें चूहे कूदने लगे हैं। ज़रा-सा इशारा भर कर दो। तुम अकेले यहां रहकर कौन-सा काम करोगे?"

"कुछ औरतोंको बच्चे देनेका इन्तज़ाम करूँगा और अपनी रोज़ी कमाऊंगा। तुम तो जानते ही हो आजकल मैं बे-कार बैठा रहता हूं। पाँच-बरससे मैंने दुर्गाकुण्ड पर बैठ कर माला बेचना बन्द कर दिया है। वह काम अब मेरा लड़का करता है। पहले—कोई दस बरसकी बात है—मैं गोश्त बेचा करता था। मगर, उस कामको तो कभी अपने छोटे भाईको सौंप दिया। अब वही दालकीमण्डी वाली दूकान पर बैठता है। सब कुछ कर थकनेके बाद अब यही—औरतोंको बच्चा देनेका काम—मुझे बहुत ज़्यादा पसन्द आया है। आजकल गो कि आरिया-समाजियोंने हम लोगोंकी रोज़ी देने वाली हिन्दू औरतोंको हमारे ख़िलाफ़ बहका दिया है, फिर भी, रोज़गार चलता ही है। जहां पहले मेरे पास महीनेमें दो-ढाई-सौ औरतें, बच्चा पानेके लिये, आती थीं; वहाँ, अब, इस गुज़रे ज़मानेमें भी कोई सौ-सवा-सौ औरतें आती ही हैं। इतना भी बहुत है। औसत तीन-चार औरतें रोज़ आती हैं जिनकी वजहसे मुझे कम-से कम दो-तीन

रुपये रोज़ मिल जाते हैं। पहले तो रुपयोंके साथ-साथ 'मज़ा' भी लिया करता था ; मगर अब, तुमसे झूठ क्यों बोलूं, मज़ा लेनेकी ताक़त नहीं रह गयी। अब मज़ा दूसरे लेते हैं, रुपये मैं लेता हूं।"

"आहा !" आश्चर्यमय प्रसन्नतासे मुहँ फैलाकर रहमानने कहा—"बड़ेमियाँ; यह नुस्ख़ा तुम्हें कहांसे मिला ? अरे, यार ! यह तो बड़े मुनाफ़ेका रोज़गार है। क़साईका काम इसके आगे झख मारे और मालीका काम भाड़में जाय। मुझे मालूम है, लखनऊमें मेरा एक दोस्त ठीक यही रोज़गार करता है। तुम तो बुड्ढे हो चले, वह ख़ूब जवान और तन्दुरुस्त है। उसने हज़ारों हिन्दू औरतोंको बच्चे दिये हैं। वह सारे शहरकी औरतोंमें मशहूर है। उसने कई हज़ार रुपये इस रोज़गारसे पैदा किये हैं। ख़ैर, एक बात तो बताओ, जो लोग तुम्हारी मिहरबानीसे 'मज़ा' पाते हैं उनसे तुम कुछ फ़ीस भी लेते हो ? ज़रूर लेते होगे, ऐसा ही वह लखनऊ वाला भी करता है। हाँ, कितनी फ़ीस होती है बड़ेमियां ?"

"अजी फ़ीस-वीस कुछ नहीं लेता," दाढ़ी पर हाथ फेरते-फेरते निरक्षर भट्टाचार्य, पर, साधारण लोगोंका 'मौलवी लियाकत हुसेन' बोला—"खुदाके फ़ज़लसे और तुम चार दोस्तोंकी दोआसे मुझे रुपयोंके लिये कुछ वैसी हाय-हाय करनेकी ज़रूरत नहीं पड़ती। लड़का लायक़ है, दुर्गाकुण्ड पर माला-फूल बेच कर काफ़ी पैसे पैदा कर लेता है। साथ ही, मेरे लिये बच्ची-बच्चे-परस्तोंको भी ठिकाना करता है। अजी मियां रहमान तुम नहीं जानते। इन हिन्दुओंके मन्दिरोंके फाटक भी हूरोंके खलिहान हैं। दुनियाका कोई भी, किसी भी हिन्दू-मन्दिरके फाटक पर पन्द्रह-बीस, हद्-से-हद तीस, दिनों तक हाज़िरी देकर एक-न-एक हूरको अपना बग़लगीर कर सकता है। उफ़! क़सम खुदाकी; ग़ज़बकी भोली होती हैं हिन्दुओंकी औरतें। ज़रा-सा देवता, पीर, भूत और जिन्नके नाम सुनते ही कांपने लगती हैं। फिर तो उनसे जो चाहो वही मांगलो। गहने, पैसे और—उसका कोई मज़-हबी नाम रखकर याने पूजा-पत्तरका रूप देकर—

इज़्ज़त भी। हिन्दू औरतें फ़ाहशा कम होती हैं। मगर, अगर कोई बनाने वाला हो तो, वे सबकुछ बन सकती हैं। कम-से-कम मैंने तो बे-गिनती हिन्दू औरतोंको केवल बच्चा देनेके लालचमें उलटा-सीधा नाच नचाया है। तुम पूछते थे मैं फ़ीस क्या लेता हूं? कुछ नहीं। मुतलक़ नहीं। मैं किसीसे एक हिब्बा भी नहीं माँगता। मगर; देनेवाले देही जाते हैं— और तुमसे झूठ क्यों कहूं, आज तक किसी भी 'मज़ा' लेनेवालेने मुझे आठ-आनेसे कम नहीं दिया। भीड़ लगी रहती है भीड़। शहरके दर्जनों आवारे बन्दए इसलाम मेरे दरवाज़े पर उसी तरह सर पटका करते हैं जिस तरह अपने माशूक़के दरवाज़े पर कोई आशिक़। अच्छा अब बस। वक्त हो चला। 'मामले' आते होंगे। तुम जाओ ज़रा टहल आओ। आज तुम्हारी भी ख़ातिर होगी। सबसे ख़ूबसूरत चीज़के लिये पाकरूहका काम तुम्हींको दूंगा। हाँ, सच कहता हूं; मुझे झूठ बोलनेकी आदत नहीं।"

"नहीं बड़े मियाँ; मैं तो एक दूसरी ही बात अर्ज़

करना चाहता था। आप जानते ही हैं मैं ब्योपारके सिलसिलेमें दो-चार दिनोंके लिये यहाँ आया हूं। आप यह बखूबी जानते हैं कि मदनपुरेमें मेरे कई अज़ीज़ हैं। उन सबको छोड़ कर आपके यहाँ डेरा डालनेकी वजह भी आप ऐसे जहाँ-दीदा आदमीको जानना चाहिये। मैं केवल 'मज़ों' के लिये ही आपकी ख़िदमतमें हूं। और, मैं आपसे अर्ज़ करता हूं कि आप किसी-न-किसी हूरको चार-पाँच दिनों तक बराबर अपने यहां रोक रखें। जो ख़र्च लगेगा मैं ओढूंगा। क़लिया, पुलाव, कोर्मा। मुर्गी, अण्डे, दोप्याज़ा—चार-पाँच दिनों तक सारा ख़र्च मेरा। मगर एक 'चीज़' दोगे तभी। बस, बन्दगी। मैं दो-घंटमें लौटूंगा, किसीको ज़रूर रोके रखना। हाँ। भूलना मत।"

लियाक़त दाढ़ीमें मुस्कराने लगा। रहमानने समझा अर्ज़ी मंज़ूर हो गयी। वह भी मुस्कराने लगा। इस बार ज़रा मज़ाक़से, लंबा—कोई दो गज़का—एक सलाम कर वह कमरेसे बाहरकी ओर बढ़ा।

मगर, दरवाज़े पर शायद उसे कोई बात सूझी, वह लौट पड़ा—

"मगर, एक बातका ख़याल रखना बड़े मियाँ।" उसने कहा—"कहीं अपनी उमरकी कोई 'चीज़' न रख छोड़ना। नहीं तो, सारा मज़ा किरकिरा हो जायगा।"

दरवाज़ेकी ओर रहमानको दिखाता हुआ लियाक़त बोला—

"वह देखो! कोई ख़ूब-रू 'मामला' आ रहा है। हो पसन्द तो बोलो, तुम्हारे लिये पहले इसी चिड़िया पर जाल डालूं। बिसमिल्ला करूं।"

"बस ठीक है, बस ख़ूब है!" रहमानने कहा—"काफ़ी अच्छी है। डालिये कम्पा। इससे मेरी दिल-बस्तगी हो जायगी।"

आने वाली औरत पर एक तेज़ निगाह डालता हुआ, रहमान तेज़ीसे कमरेके बाहर हो गया!
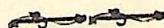
१०

सुकली

एक ही दृष्टिमें रहमानको पसन्द आजाने वाली वह औरत बुधुआकी लुगाई सुकली थी।

सुकलीको बनारसके बेनियापार्कके उस कोनेके भङ्गी-टोलेमें बुधुआके साथ रहते तीन वर्षसे ऊपर हो चले थे। उसे उसके गोरखपुरी 'मर्दुये' ने जिस तरह सताया था बुधुआ उसी तरह आरामसे रखता था। अगर कभी वह ज़्यादा मिहनत-मजूरी करना भी चाहती तो वह उसे न करने देता। कहता—"तू क्यों हाय-हाय करती है? मैं तो कमाता ही हूं। इतना कमाता हूं जितना हम खा नहीं सकते। हर महीनेमें कुछ-न-कुछ बच ही जाता है। फिर तेरे कमाने और घर-घर नरक साफ़ करनेके लिये घूमनेकी क्या ज़रूरत है?" बुधुआके इसी प्रेम-भावके कारण ही सुकली

भंगी-टोलेकी सभी भंगिनोंसे ज़्यादा साफ़ रहा करती। उसे पहनको मोटा मारकीन या गाढ़े की छींट ही मिलती थी—मगर, साफ़। बुधुआ ज़ोर देकर उसे साफ़ रहनेको कहा करता।

बुधुआके पास आते ही, आरामोंका मुहँ देखते ही, सुकलीके मनमें एक अभिलाषाका उदय हुआ। वह अभिलाषा थी पुत्र पाने की। उसने कई बार, बल्कि, हर महीनेमें चालीस बार, बुधुआ पर अपनी इच्छा प्रकट भी की। उससे कहा कि वह किसी साधु-महात्मा या जिन्न-देवसे उसके लिये एक पुत्र—एक गोरा-सा, सुन्दर-सा, खिलौना-सा बेटा—मांग दे। बुधुआ उसकी बातें सुनकर पहले तो उसे समझानेकी कोशिश करता—"देख, मेहरारू! बेटी-बेटा आदमीके दिये नहीं मिलता। उसके लिये कोशिश-पैरवी भी व्यर्थ है। उसे तो भगवान ही दे सकते हैं। हट! तू नाक क्यों सिकोड़ती है? अरे मैं खूब जानता हूं। तेरे मिलनेसे पहले मैं एक अमीरके घर कमाया करता था। उसे भी कोई लड़का नहीं था। विश्वास

मान, उसने हज़ारों रुपये पूजा-पाठ और होम-जापमें ख़र्च किये, सैकड़ों साधुओंकी उसने बेटा पानेके लिये सेवा की। मगर, व्यर्थ। दुनियाका एक भी आदमी उसे बेटा न दे सका। इसी लिये कहता हूं, मान जा। भगवानके आसरे रह। उसकी मरजी होगी तो वह तुझे बेटा भी देगा—बेटी भी। उसकी मरज़ी नहीं होगी तो, उलटी होने पर भी, तेरी कोखसे एक गुड़िया भी न जन्म ले सकेगी।" मगर सुकली न मानती। वह हर महीने बुधुआके कुछ पैसे भूत-प्रेत और ढोंगी साधुओंके फेरमें नष्ट करती।

जब सुकली पहले पहल गर्भवती हुई तब उसकी प्रसन्नताका कोई ठिकाना न रहा। वह रोज़-रोज़ यही सोचती कि उसका इतना लेना-देना अब फल देगा। उसी समय उसने सुना कि कीनारामके अखाड़ेमें कोई भारी महात्मा अघोड़ी आया हुआ है। उसने यह भी सुना कि अघोड़ी सब कुछ जानता है, वह सब कुछ कर सकता है। उसने बुधुआको अघोड़ीसे मिलनेके लिये विवश किया। मगर अफ़सोस! अघोड़ी बाबाने

भंगी-टोलेकी सभी भंगिनोंसे ज़्यादा साफ़ रहा करती। उसे पहनको मोटा मारकीन या गाढ़े की छींट ही मिलती थी—मगर, साफ़। बुधुआ ज़ोर देकर उसे साफ़ रहनेको कहा करता।

बुधुआके पास आते ही, आरामोंका मुहँ देखते ही, सुकलीके मनमें एक अभिलाषाका उदय हुआ। वह अभिलाषा थी पुत्र पाने की। उसने कई बार, बल्कि, हर महीनेमें चालीस बार, बुधुआ पर अपनी इच्छा प्रकट भी की। उससे कहा कि वह किसी साधु-महात्मा या जिन्न-देवसे उसके लिये एक पुत्र—एक गोरा-सा, सुन्दर-सा, खिलौना-सा बेटा—मांग दे। बुधुआ उसकी बातें सुनकर पहले तो उसे समझानेकी कोशिश करता—"देख, मेहरारू! बेटी-बेटा आदमीके दिये नहीं मिलता। उसके लिये कोशिश-पैरवी भी व्यर्थ है। उसे तो भगवान ही दे सकते हैं। हट! तू नाक क्यों सिकोड़ती है? अरे मैं खूब जानता हूं। तेरे मिलनेसे पहले मैं एक अमीरके घर कमाया करता था। उसे भी कोई लड़का नहीं था। विश्वास

मान, उसने हज़ारों रुपये पूजा-पाठ और होम-जापमें ख़र्च किये, सैकड़ों साधुओंकी उसने बेटा पानेके लिये सेवा की। मगर, व्यर्थ। दुनियाका एक भी आदमी उसे बेटा न दे सका। इसी लिये कहता हूं, मान जा। भगवानके आसरे रह। उसकी मरजी होगी तो वह तुझे बेटा भी देगा—बेटी भी। उसकी मरज़ी नहीं होगी तो, उलटी होने पर भी, तेरी कोखसे एक गुड़िया भी न जन्म ले सकेगी।" मगर सुकली न मानती। वह हर महीने बुधुआके कुछ पैसे भूत-प्रेत और ढोंगी साधुओंके फेरमें नष्ट करती।

जब सुकली पहले पहल गर्भवती हुई तब उसकी प्रसन्नताका कोई ठिकाना न रहा। वह रोज़-रोज़ यही सोचती कि उसका इतना लेनो-देना अब फल देगा। उसी समय उसने सुना कि कीनारामके अखाड़ेमें कोई भारी महात्मा अघोड़ी आया हुआ है। उसने यह भी सुना कि अघोड़ी सब कुछ जानता है, वह सब कुछ कर सकता है। उसने बुधुआको अघोड़ीसे मिलनेके लिये विवश किया। मगर अफ़सोस! अघोड़ी बाबाने

सुकलीके खसमकी बातें सुनकर जो जवाब दिया उसे सुनकर सुकलीका दिल टूट गया। अघोड़ीने कहा—"बुधुआ, इस बार तो तुझे लड़की ही होगी, फिर आगेकी राम जानें।" हुआ भी वही। सुकलीके गर्भसे रधियाने जन्म लिया।

यद्यपि बच्ची रधिया वैसी ही खूबसूरत थी जैसा खूबसूरत बेटा सुकली चाहती थी। मगर, वह बेटा जो नहीं थी। इससे सुकलीने उसे प्यार नहीं किया। रधिया कें-कें चिल्लाती रहती और वह सुनती रहती; उसे चुप कराने या दूध पिलानेकी कोशिश न करती। अगर उसकी इस हृदय-हीनता पर बुधुआ उसे डाटता-डपटता तो वह कहती कि—"मैंने इस मुहँ-झौंसीको किससे माँगा था जो इसने मुझे नौ महीने तक हलाल किया। मैं तो बेटा चाहती थी—मैं तो पूत चाहती हूँ। यह मर जाय—इसके मुहँमें आग लगे। मैं लड़की नहीं चाहती, फिर चाहे वह सीता-सती-गौरा-पार्वती ही क्यों न हो।"

रधियाके बाद दो वर्षों तक फिर उसे कोई

सन्तान नहीं हुई, वह देवी-देव, जिन्न-शैतानको मानाती ही रह गयी। आख़िर उसे एक दिन कबीर-चौरा मुहल्लाकी रहनेवाली एक नयी-नवेली भंगिनने मौलवी लियाकतहुसेनका पता बताया। "बहिन, बहिन" उसने सुकलीसे कहा—"बस दो-तीन दिन मौलवी साहबके घर पर जानेसे ही, और रोज़ उन्हें चार आने पैसे, कब्रकी पूजाके लिये देनेसे ही मुह-माँगी मुराद मिल जाती है। अरे मेरा यह जो 'टुनुआँ' है और रमजनवाँकी लुगाई भोलियाका वह जो 'दर-गहिया' है—यह दोनों मौलवी साहबके दिये हुए बेटे हैं। मैं और भोलिया साथ-साथ मौलवीके यहां जाती और कब्र देवताकी पूजा कर आती थी। तू भी बा—हाँ; ज़रूर जा। तेरी इच्छा पूरी हो जायगी।"

सुकलीको तो बेटा चाहिये था; फिर, चाहे वह हिन्दुओंके देवतासे मिले या मुसलमानोंके; इससे उसका कोई वास्ता नहीं। कबीरचौरावाली सखीकी बात सुनकर वह मौलवी लियाकत हुसैनके घर जाने,

क़ब्र पूजने और चार-चार आने तीन-चार दिनों तक ख़र्च करनेके लिये व्यग्र हो उठी।

आख़िर उस दिन शामको, जब बुधुआ घर पर नहीं था, अपनी सबसे साफ़ धोती पहन कर, माथेमें ज़रूरत से कहीं ज़्यादा कड़ुवा तेल चुपड़ कर, आँखोंमें मूसलकी तरह काजलकी रेखाएँ सजाकर, मुहँमें सेर भर मिस्सी लपेट कर, माँगमें सिन्दूरका मोटा तिलक लगाकर, आँचलके कोनेमें एक अठन्नी बाँध कर, वह, चमकती-मटकती, दुर्गाकुण्डकी ओर—दो-तीन दिनोंमें बेटा देने वाले मौलवीकी तलाशमें—चल पड़ी!

११

"छूरा दे! छूरा दे!!"

उस दिन शामको पाँच-साढ़े-पाँच बजे बेनिया पार्कके पीछेवाले भंगी टोलेके भंगी और भंगिनें अपनी झोपड़ियोंके सामने वाले मैदानमें एकत्र होकर

... र रहे थे कि, आज सुबहसे ही बुधुआ कहाँ ग़ायब है ?

"ओरे, ओरे !" सात कोनेका मुहँ बनाकर एक बूढ़ी भंगिन कहने लगी—"वह दाढ़ीजारका पूत तो लुगैयाका ग़ुलाम हो रहा है। वह मु-भौंसी सुकली भी ऐसी पाजी औरत है कि बस रे बस ! तीन दिनसे उसका पता नहीं। एक भतारका मुहं फूंककर गोरख-पुरसे भाग आयी थी, अब दूसरेको बहाली देकर न जाने कहाँ अलच्छ हो गयी। ऐसी कलाबाज मेह-रारू ! मेरी कोंखका छोकरी ऐसी बदमास होती तो मैं—दोहाई सहीद बाबाकी !—ओझासे बान फेकवा कर उसकी छाती फड़वा डालती।"

"ओरे दादी ! ओरे दादी !!" एक बीस बरसका जवान भंगी समर्थनके स्वरमें बूढ़ीसे कहने लगा—"उसकी इसी कुचालपर गोरखपुर वाला उसे मारबा-पीटता रहा होगा। नहीं तो सुकली-सी सुन्नर लुगाई-को योंही कोई मरद न तङ्ग करता। बेचारे बुधुआ चाचाको ही देख। कितनी खातिर करता था। दूसरे

भंगीके पाले पड़ी होती तो उसने 'मुँसपलटी' में, चार रुपैया आठ आना महीनेकी नौकरी दिलवाकर, सड़कपरका कूड़ा फेकवा-फेकवाकर, उसको कमर सीधी कर दी होती। नहीं तो बुद्धू चाचा उसे बबुआ-इनकी तरह रखता था—बबुआइनकी तरह। इतने सुखोंपर ऐसे करतब। धत्तेरी औरतकी जात जले!"

एक दूसरा भंगी कहने लगा—"गुस्सा करता रहा, अम्मां! बड़ा गुस्सा करता रहा जमादार साहब! बोलता रहा कि तीन दिनोंसे साला बुधुआ काम पर नहीं हाज़िर है, उसके हलकेके लोगोंके मकान बद्-बूसे भर गये हैं। सड़कें कूड़ाख़ाना हो रही हैं। इस बार उसे बिना जेहल भेजवाये या जुर्माना कराये न रहूंगा।"

इसी समय—"बुधुआ चाचा आया! बुधुआ चाचा आया!!" कह कर दो-तीन भंगी-बच्चे चिल्ला उठे। मैदानमें एकत्र सब लोग सामने आते हुए बुधुआ और उसकी गोदमें चिपकी रधियाको आश्चर्य और प्रश्न भरी आँखोंसे देखने लगे।

"नहीं मिली सुकली चाची।" एक जवान भंगीने अन्दाज़ लगाया।

"अरे वह किसी दूसरे ख़समके यहाँ भाग गयी, अब क्या मिलेगी। मगर, देखता नहीं; बुधुआका मुहँ कैसा डरावना हो रहा है! गुस्सेमें है—गुस्सेमें!" एक दूसरा भंगी बोला।

"उसकी आंखें कैसी लाल-लाल हो रही हैं!"

"नथुने फूले हैं, ओठ फड़क रहे हैं। जान पड़ता है किसीसे झगड़ कर आ रहा है।"

"रधियाको देखो कैसी सन्न है। डाटके चुप करा दिया होगा। नहीं तो रातको मांके लिये किस तरह चिल्लाती थी?"

"बुधुआ!" बूढ़ी भंगिनने आगे बढ़कर उसे संबोधित किया तथा मुहँके भाव और आंखोंसे ही प्रश्न किया कि—क्या मामला हैं बेटा?

मगर, बुधुआने न तो उस बूढ़ीकी ओर देखा और न अपनी ओर कौतूहल भरी आँखोंसे देखती हुई उस भंगियोंकी भीड़की ओर। वह उसी गम्भीर गतिसे

अपनी झोपड़ीकी ओर बढ़ा। झोपड़ीके द्वारपर पहुंच कर उसने रधियाको गोदसे उतारकर, ज़मीनपर रख दिया। कुछ देरतक खोया-सा खड़ा रहा। फिर एकाएक नथुने फुलाकर ज़ोर-ज़ोरसे साँसें लेने—रह-रह कर दांतों तले ओठ दबाने और आँखें गुरेर-गुरेर कर अपने सामने देखने लगा।

"छुकलीके लिये पागल हो जायगा क्या रे?" वही बूढ़ी एक बार फिर बुधुआकी ओर बढ़ी। मगर, बुधुआने पुनः उसकी बातों पर कान नहीं दिया। रधियाको वहीं—झोपड़ीके दरवाज़े पर—छोड़कर भीतर घुस गया और उजलत-भरे भावसे कुछ ढूंढ़ने लगा। अब भंगियोंकी भीड़ उसकी झोपड़ीके दरवाज़े पर आ गयी। छोटे-छोटे बच्चे तो झाँक कर भीतर देखने भी लगे कि वह क्या करता है।

"छुरा दे! छुरा दे!!" एकाएक वह झोपड़ीके बाहरकी ओर गरजता हुआ, ख़ूनी और डरावनी आँखें ताने, निकला—"मुझे एक छुरा दे! आज जान लेकर रहूंगा—आज ख़ून होकर रहेगा।"

"क्यों ?—क्यों रे भाई बुधुआ ?" एक अध-बूढ़े भंगीने दरियाफ़्त किया—"छुरा लेकर क्या करेगा रे ! सुकलीका पता लगा क्या ?"

"हूं—" गर्ज कर बुधुआ बोला—"लगा पता। अघोड़ी बाबाने ध्यान लगाकर बताया है कि...!"

बुधुआकी आँखें एक बार फिर तन गयीं। उसका क्रोध एक बार फिर उबल-सा पड़ा।

"क्या बताया है अघोड़ी बाबाने बेटा ?" उस बूढ़ी भंगिनने पुनः पूछा।

"फिर किसी दूसरे भंगीके यहाँ बैठ रही ? किसके यहाँ भाई ? कबीरचौरावाले किसी पाजी सालेने तो उसे नहीं बहका लिया ?" अध-बूढ़े भंगीने पूछा।

"नहीं," बुधुआ बोला—"किसी भंगीने उसे नहीं बहकाया है। अघोड़ी बाबाने बताया है कि वह लड़का पानेकी लालचमें किसी पाजीके यहाँ जा फँसी है।" एकाएक बुधुआ फिर उत्तेजित हो उठा—"बस आगे मत पूछ ! अब कुछ न बताऊँगा—मुझे उस पाजी मौलवीका पता मालूम हो गया है। वह दुर्गा-

कुण्ड पर रहता है। अभी जाता हूं उस पाजीके घर। आज ख़ून होकर रहेगा। ला एक छुरा—छुरा दे! छुरा दे!!"

तड़प कर बुधुआ एक भंगी पर टूट पड़ा। बड़े ज़ोरसे उसकी गर्दन दबा कर वह बोला—

"अबे साले छुरा दे! चुपचाप खड़ा क्यों है? सुनता नहीं?"

भीड़ तितर-बितर हो गयी। बूढ़ी और बूढ़े भंगी भाग खड़े हुए। लड़के सहम गये। रधिया चिल्लाकर रोने लगी।

सुकलीके लिये बुधुआ सचमुच पागल हो गया!

—o—

१२

ख़ून हो गया?

दो-तीन आदमी दुर्गाजीके मन्दिरके ठीक सामने सड़क पर खड़े बातें कर रहे थे।

"किसी हिन्दूने एक मुसलमानका खून किया है। इसी लिये इतनी भीड़ वहाँ इकट्ठी है पुलीस जांच कर रही है।" एकने कहा।

"नहीं," दूसरा अपनी बातों पर अधिक विश्वास दिखाता हुआ बोला—"तुमने ग़लत बात सुनी है। मुझसे अभी-अभी एक आदमीने, जो उसी भीड़मेंसे इधर आया था, बताया है कि, किसी मुसलमानने एक हिन्दूका ख़ून किया है।"

"क्यों खून किया है?" तीसरेने दूसरेसे पूछा।

"वह कहता था कि," उत्तर मिला—"मुसलमान, उस हिन्दूकी बहिनको जो विधवा है उढार लाया था। हिन्दू ऊँची जातका है—शायद क्षत्रिय है। बस, इसी लिये, मारे अपमान और क्रोधके, उसने उस दढ़ि-यलको खपा दिया।"

"अजी नहीं," पहला ज़रा चिढ़कर बोला—"तुमसे जिसने यह ख़बर बताई है वह भी तुम्हारे ही जैसा बे-वकूफ़ 'नम्बर वन' था। मेरी ख़बर बिलकुल सच है। कल रातको नौ-साढ़े-नौ बजे शहरके किसी

भंगीने उसी सामनेवाले मकानके मौलवीका ख़ून किया है।"

"क्यों ख़ून किया है?" तीसरे व्यक्तिने भी पहलेसे जवाब तलब किया।

"यह मुझे मालूम नहीं," उत्तर मिला "मालूम हो भी तो, मैं बतानेको तैयार नहीं। कहीं पुलीस-वाले कुछ सुन लें तो लेनेके देने पड़ जायँ। चलो हमलोग भी उस मौलवीके घरकी ओर चलें। भीड़से कुछ-न-कुछ पता ज़रूर ही लगेगा।"

"और, अगर वहाँ पुलीसने पकड़ कर हमें सर-कारी गवाह बननेके लिये कहा तो—?" तीसरेने मुस्कराकर पहलेसे पूछा।

"पहले चलो भी," उसने उत्तर दिया—"हम लोग भीड़से दूर या पीछे खड़े होंगे। ज़रा भी लच्छन-कु-लच्छन देखते ही नौ-दो-ग्यारह हो जायँगे।"

"अच्छी बात है—चलो!"

"हाँ—चलो, ज़रा देखा जाय ख़ूनीका मुंह कैसा होता है?"

आख़िर तानी, भीड़के पिछले भागमें चुपचाप जाकर खड़े हो गये। भीड़ भी मामूली नहीं थी। पचासों तो पुलीसके ही जवान थे। छोटे जमादार, छोटे दारोग़ा, बड़े दारोग़ा और शहर कोतवालको छोड़कर। तमाशबीनोंके मजमेकी तो बात ही पूछनी फ़िज़ूल है। दस-बीस-पचास नहीं, हज़ारों उत्सुक स्त्री-पुरुष और बालकोंने मौलवी लियाकत हुसैनका मकान घेर रखा था। चारों ओर विविध प्रकारकी बातें, तरह-तरहकी कल्पनाएँ, गढ़ी जा रही थीं। कोई कुछ कहता था, कोई कुछ। भीड़ और पुलीसके बीचमें, हथकड़ियोंसे कसे हुए, आठ मुसलमान बैठे थे और एक काला-कलूटा भयानक हिन्दू। पाँच जवान-अधेड़ औरतें भी, नीची गर्दन किये, सिसक रही थीं। इनके अलावा पुलीस आफ़िसरोंके सामने दो लाशें भी पड़ी थीं। एक स्त्रीकी, एक पुरुष की। पुलीसवाले अपने रजिस्टरोंका जाल फैलाये दनादन कलम घिस-घिस कर रहे थे। भीड़के पीछे कुछ आदमियोंके फुसफुसानेकी आवाज़ ज़रूर आ रही था;

मगर, पुलीसकी चारों ओर भयानक सन्नाटेका साम्राज्य था।

हमारे पूर्व-परिचित तीनों दोस्त भीड़के जिस भागमें खड़े थे वहाँ कुछ आदमी आपसमें इस तरह फुसफुसा रहे थे—

"ज़ातका भंगी है।"

"बुधुआ नाम है, बुधुआ ही तो? अभी उसने यही नाम न पुलीसवालोंको निडर भावसे बताया है?"

"लेकिन भाई, है बड़ा मर्दाना भंगी। औरतको भी मार डाला और उसके यारको भी।"

"अजी यार नहीं था। मौलवी था—मौलवी। साला लड़के देनेके बहाने औरतोंको अपने यहाँ बुला-बुलाकर बे-इज़्ज़त किया करता था। भगवान भी कैसी सज़ा देते हैं। मरने पर भी साला गाली सुन रहा है। उसकी लाशकी नसीहत हो रही है। उसके नाम पर थूका जा......।"

"अहं! बे-वकूफ़ों-सी बातें करते हो। मौलविया तो बच गया। सुना नहीं? उसको तो गाड़ी पर

लादकर पुलीसवाले अस्पताल ले गये हैं। वह केवल घायल होकर रह गया। फिर भी उसकी नाक जड़से साफ़ हो गयी है।"

"देखते नहीं, बुधुआ कैसा भयावना है, कैसा दैत्य-सा मज़बूत दिखाई पड़ता है! उसकी आँखें कैसी लाल-लाल हैं! मैं अगर इसे रातको अंधेरेमें देखलूँ, तो, डरकर मर जाऊं !!"

"लेकिन भाई, है भारी हिम्मती। खूब बदला चुकाया। सभी अपनी औरतोंकी बेइज़्ज़तीका बदला इसी तरह चुकानेको तैयार हो जायँ तो बदमाशोंके होश ठिकाने आ जायँ।"

"अरे चुप! अरे चुप!! ऐसी बात न बोलना। कोई सुन ले तो आफ़त हो जाय। इस ज़मानेमें अपनी बेइज़्ज़तीका बदला खुद लेनेका अधिकार आदमीके हाथमें कहाँ। अब तो बेइज़्ज़त हो कोई—बदला ले अदालत। अगर अपने अपमानका बदला लोग खुद ही ले लिया करेंगे तो अदालतें क्या करेंगी—

पुलीसवाले क्या करेंगे—नक़लनवीससे लेकर जज तक क्या करेंगे ?"

"मगर, मेरी समझसे, ऐसे मौकों पर, जब किसीका ऐसा भीषण अपमान हो जैसा कि इस भंगी बुधुआका हुआ है, स्वयं बदला लेना ही ज़्यादा स्वाभाविक और मनुष्यता-पूर्ण है। कायरोंकी तरह अदालत और पुलीसका मुहँ जोहना नीचता है। पक्षियोंको देखो, पशुओंको देखो—इनसे बढ़कर प्राकृतिक और कौन होगा ? और, वह अपने अपमानका बदला स्वयं लेते हैं। किसी अदालत या पुलीसकी शरण नहीं जाते। अदालत और पुलीसकी सहायता लेनेसे तो अपमानका रूप और भी अधिक नग्न हो जाता है।"

"मगर, तुम्हारा पशु-पक्षियोंका उदाहरण कमज़ोर है। उन्हें ज्ञान जो नहीं है। वह हम मनुष्यों जैसे सभ्य जो नहीं हैं। 'आँखके लिये आँख और दाँतके लिये दाँत' जंगलियोंका सिद्धान्त है।"

"मैं ऐसे असभ्य और अज्ञान पशुओंको धन्य

समझता हूं। जंगलियोंको आजकलके कायर सभ्योंके मुकाबलेमें आदर्श मानता हूं। नाश हो इस कृत्रिम सभ्यताका।"

"शोर क्यों होता है?" भीड़के बीचसे दारोग़ाने एक जामादारसे पूछा—

"चुप रहो! भागो!! तुम सब यहाँ भीड़ क्यों लगाये हो जी...!" एक साथ ही अनेक लाल पगड़ी-वाले चिल्ला उठे।

हमारे तीनों परिचित जहाँ खड़े होकर उपर्युक्त बातें सुन रहे थे वहाँसे दुम दबाकर तेज़से भागे!

१३

बुधुआका बयान

"तेरा नाम?"

"बुधुआ,"

"बापका नाम?"

"सुधुआ,"

"ज़ात ?"

"भंगी, हज़ूर।"

"उम्र कितनी है ?"

"बयालिस बरससे ऊपर।"

"कहां रहता है ?"

"बेनियाबागके पीछे वाले भंगी-टोलेमें।"

"इनका," लाशोंकी ओर इशारा कर दारोग़ाने दरियाफ़्त किया "खून तूने किया है ?"

"जी हां सरकार मैंने इन पाजियोंका खून किया है, और, ऐसी हालतमें किया जिसमें कोई भी आदमी यही करता। हुजूर भी यही करते।"

"चुप!" पुलीस जमादारने बुधुआको डाँटा—"फ़िज़ूल बात न कर। दारोग़ा साहब जो पूछें केवल उसीका जवाब दे।"

"इनका खून तूने किया है ?"

"हां सरकार।"

"तूनेही लियाक़त हुसैनकी नाक भी काटी है उसे घायल भी किया है?"

"हाँ हाँ," दाँत किटकिटा कर और भयङ्कर मुह बनाकर बुधुआने कहा—"मुझे अफ़सोस है कि इन पाजियोंने मुझे पकड़ लिया—उस कुत्तेके बच्चेका ख़ून नहीं करने दिया।"

"फ़िज़ूल बात नहीं।" जमादारने पुनः रोका।

"सच-सच बता, तूने ऐसा क्यों किया? देख झूठ न बोलना!"

"झूठ क्यों बोलूंगा। यह जो औरत मरी पड़ी है—मेरी लुगाई, सुकली है। तीन दिनोंसे यह मेरे घरसे ग़ायब थी। बादको, पता लगाने पर, मालूम हुआ कि यह इस मौलवीके घरपर है। यहाँ आने पर मैंने अपनी औरतको इस (मर्दकी लाशको दिखाकर) बदमाशके साथ 'ख़राब काम' करते देखा। बस, मैंने दोनोंको जहाँ-का-तहाँ खपा दिया।"

"और—इन्हें मार डालनेके बाद लियाकत हुसैन-

को भी मारनेकी कोशिश की—? उसे बुरी तरह घायल किया ? उसकी नाक तराश ली ?"

"जीहाँ हुज़ूर......" निडर भावसे बुधुआने स्वीकार किया।

"अच्छा ; तुझे कैसे मालूम हुआ कि तेरी बीबी सुकली लियाक़तके यहाँ है ?"

बुधुआ इस प्रश्नका उत्तर फ़ौरन न दे सका। कुछ हिचका। वह नहीं चाहता था कि अघोड़ीका नाम भी पुलीसके गन्दे कानोंमें पड़े।

"किससे सुना ? बताता क्यों नहीं रे ?"

"सुना सरकार, किसीसे भी सही। मैं इस बीचमें किसी दूसरेको फँसाना नहीं चाहता। इस सवालका जवाब नहीं देना चाहता।"

"रातके कितने बजे तू लियाक़तके घर पर आया था ?"

"मालूम नहीं सरकार, मुझे घड़ीका अन्दाज़ नहीं लगता।"

"यह छुरा तेरा है ? तू इसे अपने साथ लाया था ?"

"हाँ;"

"किधरसे घरमें घुसा?"

"घुसा नहीं—यह जो बड़ी चहारदीवारी है इसी पर चढ़ गया।"

"फिर?"

"धीरेसे झाँक कर देखा—एक छोटा-सा आँगन था उसमें एक नीमका पेड़ था जिसके नीचे कोई कब्र थी। कब्र पर दो-तीन छोटे-छोटे तेलके दीये जल रहे थे......।"

"धीरे-धीरे कह...देखता नहीं; लिख रहा हूं। हाँ—कब्र पर दो-तीन दीये जल रहे थे।"

"कब्रके सामने एक दालान थी, उसमें मैंने देखा आठ-नौ औरतोंके बीचमें, वह पाजी मौलवी खड़ा होकर कुछ मन्त्र-सा पढ़ रहा था।"

"मन्त्र-सा पढ़ रहा था—अच्छा।"

"फिर मैंने देखा वह औरतोंके साथ कब्रके पास आया। वहाँ भी थोड़ी देर तक खड़े-खड़े कुछ भुन-भुनाता रहा।"

"इसके बाद उसने सभी औरतोंसे कहा कि—'कब्रकी चारों ओर आसमानकी तरफ मुहँ कर आँखें बन्द कर सो जाओ। सोनेके थोड़ी देर बाद तुम्हारे ऊपर पाक-रूह आयेगी। ख़बरदार; आँखें न खोलना—नहीं तो तुम्हारी आशा पूरी न होगी। साथ ही जानका भी ख़तरा है। कोई तुम्हें कितना भी हिलाये डुलाये—दम साधे पड़ी रहना—हाँ। ख़ुदाने चाहा तो तुम सबको लड़का ही होगा।"

पुलीसवाले हैरतसे बुधुआका मुहँ ताकने लगे।

वह आगे बढ़ा—

"मौलवीकी बातें सुन सब-की-सब औरतें कब्रकी चारों ओर आंखें बन्द कर पड़ गयीं। उन्हींमें मेरी लुगाई सुकली भी थी। इनके पड़नेके थोड़ी ही देर बाद इन सब बदमाशों (गिरफ़्तार दूसरे मुसलमानोंको दिखा कर) के साथ वह मौलवी फिर, दालानमें, चुपकेसे आया और, इशारेसे इन्हें उन औरतोंकी ओर भेजा। और फिर ये उन औरतोंको—पाक-रूह बन-कर...करने लगे!"

पुलीसके सामने बैठी हुई औरतें बुधुआका बयान सुनकर मारे लज्जाके गड़-सी गयीं। उनमेंसे दो-एक तो ज़ोरसे चिल्ला उठीं।

"बस," बुधुआ बोला—"इसी समय मैं चहार दीवारीसे नीचे कूदा और अपनी औरत और उसके साथ 'ख़राबकाम' करने वालेको चुटकियोंमें खपा दिया। मुझे देखते ही और यह देखते ही कि एक औरत और एक मर्दका खून हुआ है, बाक़ियोंमेंसे कुछ मर्द मुझपर झपटे। औरतें भी मानों होशमें आ गयीं। वे भी चिल्लाने लगीं। मगर, मैंने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया। मैं उस पापी मौलवीकी तलाशमें—अग़ल-बग़लके आदमियोंको धकियाता—झपटा। मगर, अब तक चारो ओर हो-हल्ला मच गया था। बाहरके भी अनेक आदमी घरमें घुस आये थे। मैं मौलवियाके पास पहुंच कर भी उसे केवल घायल ही कर सका—खपा न सका; पकड़ लिया गया। इसी बीचमें चौ-मुहानी और चौकीसे कई सिपाही आ गये। मेरे ही कहनेसे उन्होंने इन कई बदमाशोंको

गिरफ़्तार किया—और कई तो भाग गये! बस इससे ज़्यादा मुझे कुछ कहना नहीं।"

बयान समाप्त होने पर पुलीसवालोंने और भीड़ने देखा बुधुआकी बड़ी-बड़ी आंखें अंगारेकी तरह जल रही थीं—उसके ओठ अभी भी गुस्सेसे काँप रहे थे!

१४

भयानक आश्चर्य

रविवारकी सन्ध्या थी। बनारसके सिगरा मुहल्लेके उस लंबे-चौड़े अहातेमें जो ईसाइयोंका प्रार्थनास्थल या गिरजा घर है, उसमें उस दिन और रविवारोंकी अपेक्षा कुछ अधिक भीड़ थी। इसका कारण शायद यह था कि उसी दिन, प्रातः कालके एक स्थानीय दैनिक पत्रमें, यह समाचार प्रकाशित हुआ था कि आज सायंकाल, सिगरा चर्चके वर्त्तमान पुरोहित, फ़ादर जानसनके मित्र और इङ्गलैण्डके एक

प्रसिद्ध साधु रेवरेण्ड राइटका, रविवारकी प्रार्थनाके बाद, धार्मिक-कीर्तन और भाषण होगा।

इसीलिये उस दिन महात्मा ईसाके सुफ़ेद और काले अनुयाइयों—स्त्रियों, बच्चों और बूढ़ों—का एक अच्छा दल सिगराके गिरजाघरमें प्रार्थना करने और रेवरेण्ड या पादरी राइटका भाषण सुनने आया था। इसी लिये उस दिन दूसरे रविवारोंकी अपेक्षा प्रार्थनामें कुछ समय भी अधिक लगा। प्रार्थना समाप्त होनेके बाद जब ईश्वर-भक्त अपने-अपने घरकी ओर चले तब लोगोंने देखा कि, चर्चके बाहर निकल कर पादरी जानसन, उनके मित्र पादरी राइट और एक कोई और अंग्रेज़ खूब घुल-घुल कर आपसमें बातें करने लगे।

एक अंग्रेज़की मेमने उससे दरियाफ़्त किया—"जार्ज! काला सर्ज पहने वह लम्बा और अधेड़ पुरुष कौन है जो दोनों पादरियोंसे बातें कर रहा है?"

"ओहो, डियर!" उस अंग्रेज़ने उत्तर दिया—"तुम उस भले आदमीको नहीं जानतीं! वही तो हमारे नये सेशन जज हैं।"

"अच्छा! अच्छा!!" आश्चर्य प्रकट करती हुई मेम साहिबा बोलीं—"यही मिस्टर यङ्ग हैं। ओहो! यह तो अपने नामही की तरह जवान भी दिखाई देते हैं। इसी उमरमें यह सेशन जज हो गये! ताज्जुबकी बात है!"

"नहीं प्यारी," अंग्रेज़ने अपनी बीबीकी बाहको अपनी बाहँमें लेते हुए और ज़रा तेज़ीसे आगे बढ़ते हुए कहा—"मिस्टर यङ्ग वर्षोंमें कम हो सकते हैं, पर, ज्ञानमें अनेक बूढ़ोंसे अच्छे हैं। इन्होंने जैसी उन्नति की है उसे देख कर इनके साथी स्तब्ध-से रह गये हैं। इनके फैसलोंको देखकर, हाई-कोर्टके अच्छे-अच्छे जज भी दङ्ग रह जाते हैं। इनके बाल भले ही काले हों; मगर, इनकी बुद्धि बिलकुल सुफ़ेद है।"

"तुमने इनकी स्त्री मिसेज़ यङ्गको देखा है प्यारे?"

"हाँ," साहबने जवाब दिया—"शायद एक बार शहरके किसी रायबहादुर रईसकी दावतमें मिसेज़ यंगको देखा था। वह सुन्दर, आकर्षक, पचीस वर्षसे कम उम्रकी युवती हैं, वही हैं न?"

"हां," मेमने उत्तर दिया—"मैंने उसे कई बार—सैकड़ों बार—होटेल डि पेरो और क्लबोंमें देखा है। वह कुछ अजीब औरत है। उसके विचार विचित्र होते हैं।"

"कैसे विचित्र विचार, डियर?"

"बिलकुल बलवाई। कहती है कि स्त्री-जाति पर शुरूसे ही सबल होनेके कारण, पुरुष बहुत जुल्म करते हैं। पुरुषोंका गढ़ा हुआ समाज भी उन्हींके पक्षमें अधिक है। अब स्त्रियोंको एक बार इस स्वार्थी पुरुष-जातिके विरुद्ध युद्ध-घोषणा करनी होगी!—हा हा हा हा!" मेम साहिबा ज़रा दम लेकर खिल-खिला पड़ीं—"प्यारे; तुमने उसका पुरुषोंके विरुद्ध लेक्चर कभी सुना नहीं है। खूब बोलती है, अद्भुत तर्क प्रणाली है उसकी। बनारसकी अंग्रेज़ी दुनियाकी नौ-जवान छोकरियां तो उसकी चेली-सी होती जा रही हैं।"

"स्त्रियोंको," साहबने कहा—"तुम मुझे माफ़ करना, प्यारी," बहुत अधिक स्वतन्त्रता दिये जानेका

यही फल है। हमारे समाजने उन्हें स्वतन्त्रता दी इस-लिये कि हमारा जीवन अधिक शान्ति-मय, अधिक सुख-मय हो ; मगर, नतीजा बिलकुल उलटा हुआ। मैं तो कभी-कभी हिन्दुस्तानियोंके इस सिद्धान्तको लालचकी नज़रसे देखता हूं कि—औरतोंको सब सुख दो ; मगर, आज़ादी कभी न दो !"

"ओ हो हो ! जार्ज !" मेमने कहा—"ठीक तुम्हारी तरह एक किसी भलेआदमीने उस दिन होटेल डि पेरीके एक 'बाल' में, उससे, स्त्रियोंके विरुद्ध तर्क किया था। मगर उफ़ ! ऐसी तेज़ है मिसेज़ यंग कि बस-रे-बस। उसने तड़प कर जवाब दिया कि—आख़िर इन पुरुषोंको किस पापी परमात्माने हम स्त्रियोंको परतन्त्र रखनेका मन्त्र दिया है ? प्रकृतिकी जिन विभूतियोंसे इन पुरुषोंका निर्माण हुआ है, आख़िर, उन्हींसे हमारा भी तो हुआ है ? अगर कुछ विशेष गुण पुरुषोंमें हैं—तो कुछ हममें भी हैं। रही शारीरिक शक्ति और धनोपार्जिनी शक्ति—इन्हें सदियोंसे हमें दबा-दबाकर, पीस-पीस

कर, पुरुषोंने अपने स्वार्थके लिये हमसे छीन लिया है। वह हमें जान-बूझ कर कोमल बनी रहनेका उपदेश भी देते हैं, इसलिये कि, उनकी कला और उनका आदर्श पूरा होता रहे। मैं पूछती हूं, स्त्रियाँ, पुरुषोंकी झकों पर अपनी प्रकृति, अपने सुखों, अपनी स्वतन्त्रताओंका क्यों बलिदान करें?—ही हा ही ही!" मेम साहिबा एकबार फिर हँसीं—"डियर, उसके उस दिनके भाषणका एक अंश तो मुझे अक्षर-अक्षर याद है। उसने उस भलेआदमीको ललकार कर कहा—सावधान, महोदय! तुम और तुम्हारी जातिवालोंको चाहिये कि अब स्त्रियोंको बुत्ता-बहाली और प्रेमके झूठे सब्ज़-बाग़ दिखाना छोड़ दें। अब वह दिन दूर नहीं हैं जब स्त्रियां पुरुषोंसे पग-पग पर समान अधिकार माँगेंगी। यदि पुरुष विवाहित और अ-विवाहित दोनों ही अवस्थाओंमें अपनेको अपनी झकोंका दास समझेंगे, तो, स्त्रियाँ भी पीछे न रहेंगी। यदि पुरुष हम औरतोंको केवल एक वसन्त तक सूंघने और गलेमें डाल रखने लायक़

जुतीकी माला समझेंगे, और बादमें, अपने रसोई घरके कूड़ा-खानेमें फेंक देनेको तैयार रहेंगे, तो; हम भी उन्हें ठगने, बहकाने और अपने मतलबका कठपुतला बनानेसे बाज़ न आयेंगी। माथे पर शिकन क्यों ला रहे हो? कहना चाहते हो कि जिस दिन स्त्रियाँ ऐसा करने लगेंगी उस दिन उनकी सारी कोमलता, सारा महत्व नष्ट हो जायगा? मैं इसे मानती हूं; पर क्या, हम ऐसी विशेषताओं और ऐसे महत्वोंको लेकर चाटेंगी जिनके कारण हमारा जीवन पशुओं और क़ैदियोंकी तरह हो जाय? छिः! ग़ैर मुमकिन है—दोनोंको दोनोंका बराबर ख़याल रखना होगा—नहीं तो, दोनों अपने अपने स्थानोंसे गिरेंगे और ज़रूर गिरेंगे। एकबार क्रान्ति होगी, प्रलय होगा और तब अपनेको ज़बर्दस्त समझनेवालों की आंखें खुलेंगी!"

"एक बार क्रान्ति होगी! एक बार प्रलय होगा!! तब अपनेको ज़बरदस्त समझनेवालोंकी आंखें खुलेंगी। बहुत ठीक, श्रीमतीजी, मैं आपकी बातोंका

समर्थन करता हूं।" किसीने कर्कश-स्वरसे मेम साहिबाकी बग़लसे, शुद्ध अंग्रेज़ीमें कहा।

मेम और साहब उक्त कर्कश कण्ठ-ध्वनिको सुनकर स्तब्ध-से, जहाँ के तहाँ खड़े हो गये। उस समय सन्ध्याका रंग गाढ़ा हो चला था। अंधकारने सिगरासे बनारस छावनीकी ओर जानेवाली सड़कके मुहँ पर भरपूर कालिमा पोत रखी थी। म्युनिसिपैल्टीके लैम्प अभी जले नहीं थे।

दोनोंने आवाज़की ओर देखा। कोई काली-सी छाया अपनी छाती पर हाथ रखे खड़ी थी।

"कौन है?" कड़ककर साहबने पूछा—

"केवल एक आदमी...।" कह कर वह छाया उन दोनोंके सामने आ खड़ी हुई। दोनोंने देखा, कमरमें कपड़ेका एक टुकड़ा लपेटे, एक हाथमें चिमटा और खप्पर लिये और दूसरे हाथसे कपड़ेमें लपेटी हुई किसी चीज़को छातीसे लगाये, भयानक रूपवाला एक साधू उनके सामने खड़ा था। एक बार, हज़ार वीरजातिके होने पर भी, साहब और

मेम साहिबा सिरसे पैर तक काँप उठे! मेम साहिबा तो अपने पतिसे प्रायः लिपट कर खड़ी हो गयीं!

"डरो मत भाई!" उसी कर्कशस्वर और उसी शुद्ध अंग्रेज़ीमें उस भयानक साधुने पुनः कहा—"मैं कोई खूँख़ार पशु नहीं, मनुष्य हूं।"

"तुम्हें क्या चाहिये," लड़खड़ाते स्वरसे अंग्रेज़ने उस साधुसे पूछा।

"मैं पादरी जानसनका मकान ढूंढ़ रहा हूँ। मुझसे किसीने कहा था कि वह सिगरा पर किसी चर्चके पास रहते हैं। मैंने बहुत ढूंढ़ा; मगर, उनका पता नहीं चला। संयोगसे आप दोनोंको रास्तेमें पाकर मुझे विश्वास हो गया कि अब पता चल जायगा। इसीसे मैं, क़रीब तीन मिनटसे, आपके साथ-साथ आ रहा हूँ। इन श्रीमतीजीकी बातें ऐसी अच्छी थीं कि मैं उनके सुननेका लोभ संवरण न कर सका—ख़ैर। आप परेशान हो रहे हैं। पिस्तौल है या नहीं इसलिये जेब टटोल रहे हैं। गिरजा घरसे आते हैं न? हाँ। उफ़! क्या आप लोग प्रार्थना

मन्दिरमें भी नाशके एक भयानक यन्त्रको लेकर जाते हैं? ईश्वरकी दया पर इतना अविश्वास! अच्छा, अच्छा...घबराइये नहीं। ज़रा बताइये तो पादरी जानसनका मकान कितनी दूर पर है?

इतनी स्पष्ट अंग्रेजी! ऐसा भयानक रूप! साहब और मेम तो इस अद्भुत साधुको देखकर दंग रह गये। एक तरहसे उनकी सिट्टी गुम हो गयी।

"बहुत नज़दीक है," साहबने उत्तर दिया—"सीधे जाइये। ठीक चार फ़र्लाङ्ग जानेपर चर्च मिलेगा। बस वहीं—उसी कंपाउण्डमें—फ़ादर जानसन मिलेंगे।"

"धन्यवाद! अनेक धन्यवाद!" साधुने कहा—"आप लोगोंकी बातें ऐसी अच्छी थीं कि, अगर मैं इस वक्त एक ज़रूरी कामके लिये पादरी जानसनके पास न जाता होता तो, आप लोगों ही के साथ जाता। सभ्यता और सभ्य व्यवहारोंका—जिन्हें इस बीसवींसदीके प्रेमी बड़ा महत्व देते हैं—बिना विचार किये ही। पर, जो हो, मैं आपका बड़ा

कृतज्ञ हूं। आप हमारी धृष्टताको क्षमा करेंगे—धन्यवाद! धन्यवाद!!"

मेम साहिबा और साहब उस घने अन्धकारमें आँखें फाड़-फाड़ कर देखते ही रह गये! वह साधु द्रुत-गतिसे, देखते-देखते अलक्षित हो गया।

"ओ माई गाड!" एक लम्बी सांस खींच कर धड़कते दिलसे मेमने कहा—"फ़क़ीर क्या था पूरा दैत्य था! मैं तो, प्यारे! मूर्छित होते होते बची!"

स्त्रीको अपनी बग़लमें कसकर दबाते हुए और आगे बढ़ते हुए साहबने कहा—

"सचमुच! सचमुच!! वह साधु आश्चर्य जनक था! वह अंग्रेज़ी कैसी साफ़ बोलता था! वह निडर कैसा मालूम पड़ता था! इसे कहते हैं बनारस की विशेषता। इतिहासका यह सबसे प्राचीन नगर आध्यात्मिक आश्चर्योंसे भरा है।"

"चलो जल्दी चलें। बिना केण्टूनमेंट गये कोई सवारी भी न मिलेगी और यह सड़क बड़ी भयानक है।" मेम साहिबाने कहा!

१५

पादरी जानसन

जिस कमरेमें पादरी जानसन, रेवरेण्ड राइट और बनारसके सेशन जज मिस्टर यंग बैठे—चाय पीते-पीते—बातें कर रहे थे, वह सजावटकी दृष्टिसे कोई विशेष उल्लेखनीय नहीं था। छोटे-से उस चौकोर कमरेकी चारों ओरकी दीवारों पर अनेक धार्मिक चित्र टंगे थे। उन चित्रोंमें किसीमें माता मरियम तेजस्वी बालक ईसाके साथ दिखाई गयी थीं, किसीमें ईसा, साधारण मल्लाहों—पीटर और एण्ड्रू—को अपनी कश्ती और जाल छोड़ अपनी ओर बुलाते और यह कहते दिखाये गये थे कि—आओ मैं तुम्हें मनुष्य-रूपी मछलियोंका फंसाना सिखाऊंगा। कम-के प्रवेश-द्वारके ठीक सामने जो बड़ी तस्वीर टंग थी उसमें महात्मा ईसा चोरोंके बीचमें; कांटोंके

ताजसे आभूषित कर, क्रूस पर चढ़ाये दिखाये गये थ। इन तस्वीरोंके अलावा भारत और विदेशोंके अनेक आर्क बिशपों और प्रसिद्ध बिशपोंके चित्र भी थे। पूर्वकी दीवारके सहारे दो मझोले आकारकी शीशे-दार अलमारियां खड़ी थीं जिनमें बहुत-सी सजिल्द पुस्तकें क़ायदेसे सजाकर रखी थीं।

कमरेमें बीचों-बीच जो मेज़ थी उसकी तीन ओर तीन कुर्सियों पर उक्त व्यक्ति बैठे चाय पी रहे थे।

"तब," रेवरेण्ड वाइटने मिस्टर यंगसे पूछा—"आपकी यह श्रीमती आपकी दूसरी पत्नी हैं? आपकी-इनकी शादी कब हुई?"

"तीन वर्ष हुए," मिस्टर यंगने कहा—"लण्डनमें। वहाँ जब मैंने पहले-पहल अपनी पत्नीको कुमारी अवस्थामें, मिस अना गुडविलके रूपमें देखा और परिचय प्राप्त किया था—उस वक्त वह ऐसी क्रान्ति-कारिणी या बे-कही नहीं थीं; मगर, इधर उन्हें न जाने क्या हो गया है। आजकल तो वह स्वतन्त्रताकी दुर्दशाको स्वतन्त्रता कहकर पुकारती और बर्तती हैं।

मुझे उनसे और कोई भी शिकायत नहीं है फ़ादर, मगर, मेरे उनके वर्तमान विचार ऐसे भिन्न हैं कि हमारा दाम्पत्य जीवन विकम्पित-सा हो रहा है।"

"वह गिरजाघरमें प्रार्थना करने जाती हैं?" पादरी जानसनने प्रश्न किया।

"ओ नो! कदापि नहीं। उनका तो कहना है कि इन चर्चों और पादरियोंने स्त्रियोंको और भी परतन्त्र कर रखा है। धर्माध्यक्षोंकी अधिकतर व्यवस्थाएँ बलियों अथवा पुरुषोंके पक्षमें होती हैं। स्त्री जातिकी जागृतिके लिये इन धार्मिक संस्थाओं और पक्षोंका नाश होना भी बहुत ही आवश्यक है।"

"ओ मेरे स्वर्गस्थ पिता!" पादरी जानसनने गंभीर मुहँ बनाकर कहा—"रक्षा कर उस बच्ची की! उसके हृदय पर—मुझे क्षमा करना मिस्टर यंग—काले संस्कार उदय हो रहे हैं। वह बहुत कम उम्रकी है न? हाँ। तब आपको अपनी स्त्रीके विचारों पर ख़ास नज़र रखनी होगी मिस्टर यंग। मेरा विश्वास है, आपकी पत्नीके विषयमें, ऐसी सलाह देकर मैं

आपका अपमान नहीं कर रहा हूं। वह तो बनारसके युरोपियन समाजकी 'कठिन-समस्या' हो रही हैं। सुना है उन्होंने कोई 'स्त्री स्वातंत्र्य-समर्थिनी समिति' कायम की है; जिसकी वही प्रवर्त्तिका हैं। यह भी सुना है कि गाढ़ी-की-गाढ़ी स्त्रियाँ और युवती कुमारियाँ उस समितिकी सदस्या बन रही हैं। लेकिन मेरी समझमें, भारतवर्षके एक प्रतिष्ठित नगरके दौरा जजके नामके लिये ये सब बातें सन्तोषप्रद नहीं हैं। आपकी क्या राय है राइट महोदय? मैं अनुचित तो नहीं कहता—हाँय! कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है क्या?"

"नहीं—नहीं, फ़ादर!" यंगने कहा—"हवा है। दरवाज़ा कौन खटखटायेगा। आपका छोकरा तो बाहर है न?"

"हाँ है तो—हाँ; आपका क्या मत है राइट महोदय!"

रेवरेण्ड राइट अपनी घनी सुफ़ेद और सुन्दर दाढ़ीके भीतर ज़रा मुस्कराये—"मेरा मत न पूछिये,"

उन्होंने कहा—"यद्यपि मैं मिसेज़ यंगकी समितिका सदस्य नहीं ; और, न मैंने उन्हें कभी देखा ही है, पर, जाननेवाले जानते हैं, कभी-कभी मेरे विचार तो मिसेज़ यंगसे भी अधिक उग्र और क्रान्तिकारी होते हैं। मैं संक्षेपमें, इतना तो, कहूंगा कि आकाश गम्भीर दिखाई पड़ रहा है—आँधी भी आ सकती है, बूँदें भी पड़ सकती हैं और पत्थर भी पड़ सकते हैं। हमारा काम घबराना नहीं ठहरना और 'उसकी' इच्छा पूरी होते देखना है।"

"लेकिन, फ़ादर," यंगने कहा—"आप मुझे क्षमा करेंगे—आप तो बाल ब्रह्मचारी साधु हैं। ब्रह्मचारियों-की सहानुभूति इन स्त्रियोंके प्रति अधिक होती है। नहीं, हंसिये नहीं। मैं ठीक कहता हूं—चाहे आपके विषयमें यह सिद्धान्त ठीक न हो। मैं अब अपनी स्त्रीके विरुद्ध शिकायतें—एक भलेआदमीकी हैसि-यतसे—नहीं सुन सकता। मैंने निश्चय कर लिया है, बल्कि अर्ज़ी भी दे दी । मैं शीघ्रही स्वदेश जाऊँगा—और—और इस झगड़ेका फ़ैसला ही करके लौटूंगा।"

"याने ?" पादरी जानसनने कुछ-कुछ-समझ-गये-सा मुहँ बना कर पूछा।

"मैं अपनी वर्त्तमान स्त्रीको तलाक दे दूंगा।"

"पर, मैं तुमसे कहता हूं," कमरेका दरवाज़ा खुलता-सा दिखाई पड़ा और एक कर्कश आवाज़ सुनायी पड़ी—"व्यभिचारको छोड़ और किसी भी कारणसे जो कोई भी अपनी स्त्रीका त्याग करता है, वह उसे व्यभिचारिणी बनाता है; और फिर, जो कोई भी उससे विवाह करता है—व्यभिचार करता।"

"यह तो धर्म-पुस्तक (बाइबिल) का उद्धरण है!" दरवाज़ेकी ओर आश्चर्यसे आँखें फाड़कर देखते हुए रेवरेण्ड राइटने कहा—"ओहो तुम! रूखे और भयानक रूपवाले भारतीय साधु! अच्छा!! तुम हमारी भाषा इतनी सरलतासे बोले लेते हो! तुमने हमारी धर्म-पुस्तकका इतना अच्छा अध्ययन किया है! खूब कहा तुमने! ठीक कहा तुमने!" कुर्सीसे उठकर राइट महोदय दरवाज़ेकी ओर बढ़े!

उधर मिस्टर यंगने दाँतों तले ओठ दबाकर घूसा

तान लिया—किसने चोरीसे उनकी गुप्त बातें सुनी हैं। मगर, दरवाज़ेके भीतर निर्भय भावसे घुसनेवालेका मुहँ देखकर कमरेके सभी प्राणी एक बार अवाक्‌से रह गये! थोड़ी देरतक किसीको कुछ सूझा ही नहीं कि क्या किया या कहा जाय! सब लोग आँखें फाड़-फाड़कर उस आगन्तुक भयानकको देखने लगे।

वह व्यक्ति प्रायः नंगा था, भयानक काला था, उसके दाहिने हाथमें लोहेका एक लम्बा चिमटा था और थी मनुष्यकी खोपड़ी, बाएं हाथसे उसने एक छोटी-सी किसी चीज़को छातीसे चिपका रखा था, उसकी डरावनी आँखे अंगारेकी तरह लाल-लाल थीं, उसकी लम्बाई साढ़े ६ फ़ीटसे भी अधिक थी, सिर और दाढ़ीके बाल काले और रूखे और घने थे,—वह एक साथही, भयानकता, तेजस्विता और दयाकी मूर्ति-सा दिखाई पड़ता था!

१६

किसका बच्चा है ?

"बाय ! बाय !!" उत्तेजित रूपसे अपनी कुर्सीसे उठते हुए पादरी जानसनने आवाज़ दी। मगर, वह केवल उठ और पुकार कर ही रह गये। उस चिमटा धारी भयानक साधुके सामने या पास जानेकी उनकी हिम्मत न पड़ी !

"घबराओ मत !" उसी कर्कश-स्वर परन्तु स्पष्ट अंग्रेज़ीमें साधुने कहा—"यह मत समझो कि मैं कानून भङ्ग करने आया हूं, मैं तो उसे पूरा करने आया हूं। तुम्हारा छोकरा तो मेरी शकल ही देखकर भाग गया। बेचारा डर गया ! आदमी ऐसा डरपोक होता है कि अपने ही जैसे दूसरे आदमीको देख कर भी डर जाता है। आदमी ऐसा भयानक होता है कि अपने ही जैसे दूसरे आदमीके हृदयमें भी कँपकँपी
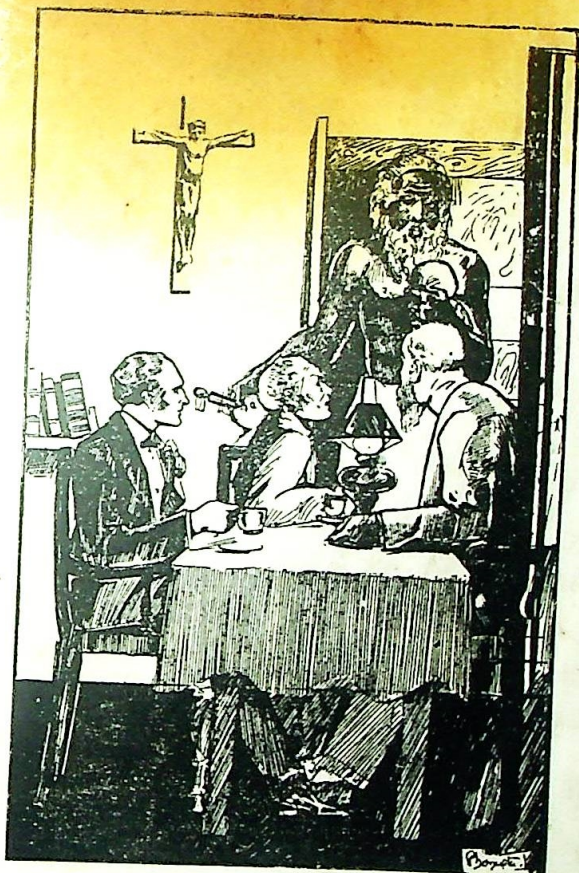
—"बस लोग आँखें फाड़-फाड़ कर उस आगन्तुक भयानकको देखने लगे।"

(बु० बे० पृष्ठ ११३)

पैदा कर देता है। यह आदमी भी एक अजीब पहेली है।"

"बाहर भागो!" पादरी जानसनने, अपने स्थान ही से हिन्दीमें, साधुको उस तरह भगानेकी कोशिश की जिस तरह कोई किसी पगलेको भगाता है।

"ठहरो!" साधूने आंखें चमकाकर पादरीको डाटा—"सच्चे ईसाईकी तरह व्यवहार करो। धर्माध्यक्ष होकर जब तुम्हीं अपने धर्म और व्यवस्थाओंके विरुद्ध आचरण करोगे तब तुम्हारे अनुगामियोंकी क्या अवस्था होगी? यह तुम्हारे ही महापुरुषोंकी बात है न कि—'मांगों, तुम्हें, दिया जायगा; खोजो, तुम पाओगे; खटखटाओ, तुम्हारे लिये द्वार खोला जायगा।' मैंने तो अभी-अभी एक ईसाई साधुका द्वार खटखटाया था; मगर, वह क्यों नहीं खोला गया?"

"ओहोहो!" रेवरेण्ड राइटने सदय मुस्कराहटके साथ कहा—"तब वह हवा नहीं थी, मिस्टर यंग;

जैसा कि आपने अन्दाज़ लगाया था। वह इनकी खटखटाहट थी।"

"पर जाने दीजिये उस बातको राइट महोदय," पादरी जानसनने कहा—"मैं नहीं पसन्द करता इन पढ़े-लिखे हिन्दुस्तानी साधुओं को। इस देशमें, प्रभुके सन्देशके प्रचारके, सबसे बड़े बाधक यही हैं। मैं तो इन्हे शत्रु समझता हूं।"

"पर मैं तुमसे कहता हूं," अभी दरवाज़े ही पर ज्यों-का-त्यों खड़ा वह भयानक साधु बोला—"पादरी, तुम्हारी बाइबिलमें लिखा है—अपने शत्रुओंसे प्रेम करो और अपने सतानेवालोंके लिये परमपितासे प्रार्थना करो। ऐसा करनेसे तुम अपने स्वर्गस्थित पिताकी सन्तान कहलाओगे। क्योंकि उसका सूर्य भले और बुरे दोनों पर उदित होता है, उसके बादल दोनोंको पानी देते हैं। फिर, यह तुम्हारा कैसा आचरण है ईसाई साधु? तुम्हारा धर्म तो बड़ा उदार कहा जाता है?"

"मैं तुमसे बहस नहीं करना चाहता," मानों

अपने सुफ़ेद रंगपर इतराते हुए पादरी जानसनने कहा—"तुम भागो यहांसे। तुम बड़े भयानक दिखांई देते हो।"

"हा हा हा हा!" इस बार साधु खिलखिला कर भयानक रूपसे हँसा—"मैं भयानक दिखाई देता हूं! पर, तुम्हारे इस आचरणका, शैतानके ख़ज़ानेमें जो दण्ड होगा, वह मुझसे भी कहीं भयानक होगा। यह निश्चय है। याद रखो! अब भी कुल्हाड़ी पेड़ोंकी जड़ों पर जमी है। अब भी जो पेड़ अच्छा फल न देंगे वह काटे और आगमें डाले जायँगे।"

"ठीक कहते हो भाई! ठीक कहते हो भाई!" भयानक साधुके बिलकुल सन्निकट जाते हुए रेवरेण्ड राइटने कहा—"बेशक हमारे मित्रने तुम्हारे साथ न्याय नहीं किया। यद्यपि मैं उनकी छतके नीचे हूं, यद्यपि मैं उनका अतिथि हूं; पर, सचसे दूर क्यों रहूं?" पादरी जानसनकी ओर न्याय-प्रार्थिनी आँखोंसे देखकर राइटने कहा—"क्या आप इस भले आदमीके

साथ न्याय न करेंगे जानसन महोदय ? नहीं, आप ऐसे निर्दय या अन्यायी नहीं हो सकते।

मानो राइटकी बातोंसे जानसनके होश ठिकाने आये। होश ठिकाने क्या आये, बल्कि, उसने अपने पदके महत्वका ख़याल किया। फिर भी, अभी गोरोंके मनमें कालोंके विरुद्ध जो अकड़ होती है वह बाक़ी थी—

"बहुत अच्छा, मैं इसकी बातें सुन लूंगा। पूछिये यह क्या चाहता है ?"

"मैं अपनी ग़रज़ कहता हूं," वह साधु बोला—"मगर, अब भी तुम्हारा हृदय मेरे प्रति वैसा नहीं हुआ जैसा होना चाहिये। अब भी तुम शासक-जातिके गुरूकी तरह अकड़े हुए हो—अपने आपेमें आओ पादरी !—कहाँ भूले हो ?"

अब रेवरेण्ड राइटने साधुकी बायीं बाह पकड़ कर उसे अपनी ओर खींचा—

"अब जाने दो भाई ; अपनी बात कहो ; इधर

आकर बैठो !—आर्य !! यह तो बच्चा है। तुम्हारे हाथमें बच्चा ? इसे तुमने कहाँ पाया साधु ?"

बच्चेका नाम सुनकर पादरी जानसन और मिस्टर यंग भी अपने स्थानसे विचलित हुए। अब सब-के-सब उस भयानक साधुके सामने आश्चर्य-विस्मित-से आ खड़े हुए।

"किसका बच्चा है ?" पादरी जानसनने साधुसे उत्तर माँगा ?

"एक ग़रीबका, एक अज्ञानका, संसारके दुष्टों और पापियों द्वारा सताये हुए एक अभागेका। इस बच्चेका बड़ा कारुणिक इतिहास है पादरी महोदय। यह दो बरसकी लड़की है। इसका नाम रधिया है। इसका बाप बुधुआ भंगी है जो इस समय कई खूनोंके अपराधमें जेलकी हवालातमें है। यहाँकी सेशन अदालतमें उसपर हत्याका मुकदमा चल रहा है।"

"बुधुआकी कहानी," जानसनने कहा—"मैंने सुनी है। यहाँकी मुक्ति फ़ौजके प्रधान अधिकारीकी हैसियतसे मैं उस दिन जब बेनियाबाग़के पीछेवाले

भंगी टोलेमें पतितोंको स्वर्गका सन्देश सुनाने और उन्हें मुक्तिका मार्ग बताने गया था, तब भंगियोंने बुधुआकी सारी कथा मुझसे बतायी थी। तो तुम्हीं वह अघोड़ी साधु हो, जो उसकी लड़कीको लेकर चला गया था? तुम्हारा ही ज़िक्र भंगियोंने किया था?"

"हाँ मैं ही वह व्यक्ति हूं," अघोड़ीने उत्तर दिया—"मैं इसे वहाँसे इस लिये उठा ले गया था कि, शहरका कोई-न-कोई हिन्दू मेरे कहनेसे इसे ज़रूर अपने यहाँ रख लेगा और इसके पिताकी मुक्तितक पाले-पोसेगा।"

"मगर," पादरीने कहा—"इसके बापको तो फाँसी होनी चाहिये," इसी समय एकाएक कुछ सोचकर उन्होंने सेशन जज मिस्टर यंगसे कहा—"मेरा विश्वास है, आप मेरी बातोंको अनुचित या ग़ैर-कानूनी न समझेंगे। हम लोग यहाँ प्रायः प्राइवेट बातें कर रहे है।"

मिस्टर यंग चुप रहे और अघोड़ीकी ओर देखते रहे।

"नहीं," अघोड़ीने कहा—"बुधुआको फांसी नहीं होगी। मेरा पूरा विश्वास है।"

मिस्टर यंगने इस बार और भी गम्भीर दृष्टिसे उस विचित्र साधुकी ओर देखा।

"ख़ैर," अघोड़ी बोला—"मुझे अपना उद्देश्य कह लेने दीजिये। मैंने यहाँके अनेक हिन्दुओंसे, जिनके पास पैसे और हृदय थे, इस बच्चीको आश्रय देनेका आग्रह किया। किसी-किसीसे तो, अपनी प्रकृतिके विरुद्ध, मैंने प्रार्थना भी की; मगर, उनमें से एक भी न पसीजा। इस शहरका एक भी हिन्दू बुधुआ भंगीकी इस अनाथा बालिकाको पालनेके लिये तैयार न हुआ। यद्यपि यहाँ पर ऐसे-ऐसे अनेक हिन्दू हैं जिनके यहाँ कुत्ते भी पले हैं और एक नहीं अनेक। भंगी समाजका मैला फेकनेके कारण ही पतित है—और उसी मैलेको खानेवाला कुत्ता शुद्ध है! वसुधैव-कुटुम्बकम् सिद्धान्तके आदि आविष्कारक इन हिन्दुओंका ऐसा पतन हो गया है पादरी साहब!"

कुछ रुक कर अघोड़ीने एक ठण्ढी साँस ली।

मानों इस जातिके पतनका स्मरण कर वह व्यथित हो उठा!

"पन्द्रह-बीस दिनोंसे," वह फिर बोला—"जबसे अभागा बुधुआ इस विपत्तिमें पड़ा है, मैं इस सुकुमार फूलको अपनी कड़ी छातीसे लगाये, इधर-से-उधर और उधर-से-इधर घूम रहा हूं। बहुत ध्यान रखने और चेष्टा करने पर भी यह मुझसे हिलती नहीं है—अपनी माँ को—उसी मातृ-जातिकी किसीको ढूंढ़ रही है। रातको रोने लगती है तो तबतक रोती है जबतक गला बैठ नहीं जाता। खाती नहीं, पीती नहीं—ज़रा इसका मुहँ देखिये! कैसी सुन्दर थी पहले, किस तरह मुरझा गयी है अब?"

औघड़ने कपड़ा हटाकर रधियाका मुह खोल दिया; वह टुकुर-टुकुर ताक रही थी। मानो, गम्भीर भावसे, अपने भविष्यत्‌की कहानीकी भूमिका सुन रही थी।

"ओहो!" रेवरेण्ड राइटने उसे देख कर कहा—"बच्ची तो बड़ी ही सुन्दरी है। दया आती है इसकी

अभागिनी माता पर! हृदय उमड़ा आता है इसके अभागे पिताकी परिस्थिति पर! रोनेको जी करता है इस सुकुमार फूलके दुर्भाग्य पर!"

सहृदय राइटने एक ठण्ढी साँस ली!

"साधु!" उन्होंने पुनः औघड़से कहा—"मैं पहले पहल तुम्हारे देशमें आया हूं, अभी मुझे यहाँ आए अधिक दिन हुए भी नहीं। मगर, यह मैं क्या देख रहा हूं? क्या गीताका सन्देश सुनानेवाले श्रीकृष्ण इसी पुण्य भूमिमें पैदा हुए थे, जहाँ आज एक अनाथ बच्चीको कोई आश्रय देनेवाला नहीं? क्या संसारको प्रेम और विश्व-बन्धुत्वका उपदेश देनेवाले महात्मा बुद्धने यहीं-जन्म ग्रहण किया था—अपने महामन्त्रका प्रथमबार उच्चारण इसी काशीमें किया था—जहाँ आज मनुष्य मनुष्यको इस तरह घृणित और शोक-जनक नज़रसे देखता है? साधु; बोलो! क्या आजका भारत वह भारत नहीं रह गया है जिसके यशका सौरभ सात समुद्र पारतक, हज़ारों वर्षोंसे आजतक, अपना सुगन्ध फैला रहा है?"

"आजका भारत वह प्रसिद्ध भारत नहीं है," अघोड़ीने उत्तर दिया—"यह तो तभीसे प्रसिद्ध है जबसे हम गुलामीका जीवन बिता रहे हैं। हमारा प्राचीन भारत आत्माके महान उपासककी तरह प्रसिद्ध था, पर जबसे हम परतन्त्र हुए तबसे हमारी विचार धारा ही पलट गयी है— अब हम शरीर-वादी हो गये हैं। बल्कि, अब हमारा कोई सिद्धान्त ही नहीं रह गया है। पशुओंकी तरह पेट पालकर कुत्तोंकी तरह जीवन व्यतीत करके ही हम अपनेको धन्य समझते हैं। यदि, महोदय, पतन नामक कोई चीज़ भी संसारमें होती है, तो, यह देश और इस देशके आर्य इस समय पतनकी चरम सीमा पर पहुंच गये हैं। यहाँ पर—जहाँ किसी समय प्रत्येक प्राणी ईश्वर समझा जाता था—इस समय, एक मनुष्य दूसरे मनुष्यको अपनेसे जातिमें छोटा समझता है, कुलमें छोटा समझता है, नीच समझता है, पतित समझता है, अ-स्पृश्य समझता है।"

"इस देशमें क़रीब ६ करोड़ अछूत हैं।" अभीतक

चुप मिस्टर यंगने भी इस संवादमें भग लिया।

"इस देशमें इकतीस करोड़ अछूत हैं।" अघोड़ीने कहा—"छः करोड़ तो ऐसे हैं जिन्हें इस देशके हिन्दू नामधारी मूर्ख अछूत समझते हैं; और बाक़ी, पचीस करोड़ ऐसे अछूत हैं जिन्हें सारा संसार अस्पृश्य और पतित और पृथ्वीका भार और ग़ुलाम समझता है। प्रकृति भी, ईश्वर भी, थप्पड़का जवाब थप्पड़से देता है—महोदय; हम छः करोड़से नफ़रत करते हैं, हमसे सारा संसार नफ़रत करता है। हम नफ़रत बोते हैं, नफ़रत काटते हैं।"

"मगर देखिये," जानसनने कहा—"एक तरहसे हम ईसाई आपके अछूतोंका उद्धार ही कर रहे हैं। हम उनसे नफ़रत नहीं करते-हम उन्हें छूते हैं, पढ़ाते-लिखाते हैं, समाज और शहरसे बाहर रहनेवाले जंगलियोंकी श्रेणीसे उठाकर मनुष्य बनाते हैं।"

"आप उन हिन्दुओंसे अच्छे ज़रूर हैं," अघोड़ीने कहा—"जिनके कारण ये छः करोड़ अभागे अछूत बने पड़े हैं। जो न तो इन्हें छूते हैं और न मनुष्य

बनने देते हैं। मगर, आप बिलकुल अच्छे हैं, यह बात नहीं है। मेरी रायसे तो आप और आपकी मुक्ति फौजवाले इन अभागोंको 'हिन्दू अछूत'से हटाकर ईसाई अछूत बना देते हैं। कितने ऐसे अछूत आप पेश कर सकते हैं जिन्हें आपने अपनी जातिमें मिलाकर समाजमें बराबरीका पद दिलवाया हो? मेरा तो ख़याल है—नहींके बराबर। फिर, आप केवल ईसाइयोंकी संख्या बढ़ानेके लिये इन्हें अपने दलमें घसीट रहे हैं। यह शुद्ध सेवा नहीं है, जिसका कि आपके धर्म-ग्रन्थमें महत्व है। यह स्वार्थ-साधन है। मूर्खोंकी मूर्खतासे लाभ उठाना है। इसे शुद्ध सेवा मैं तब मानता जब आप उन्हें अपने समाजमें मिलाते, पढ़ाते-लिखाते, ज्ञानी बनाते और तब उनसे पूछते कि तुम हिन्दू धर्म अच्छा समझते हो या ईसाई या कोई भी नहीं? मगर, ऐसा आपके यहाँ कहाँ होता है?"

अघोड़ी थोड़ा रुका। एक सतर्क दृष्टिसे उसने पता लगा लिया कि जानसनको उसकी बातें अच्छी नहीं लगीं—

"ख़ैर, मैं इस समय, इस विषयपर विवाद करने नहीं आया हूं।" उसने कहा—"हिन्दू मूर्ख हैं, उन्हें अभी संसारके चरणोंकी अनेक ठोकरें खानी हैं, इसीलिये उनके यहाँ इतनी जातियाँ, उप-जातियाँ, ऊँच-नीच और अछूत हैं। आप हिन्दुओंसे तो लाखदर्जे अच्छे मालूम पड़ते हैं। फिर चाहे ढोंगी ही क्यों न हों। हां, हां—इस तरह आंखें फाड़-फाड़कर मेरी ओर न देखिये। मैं ठीक कहता हूं—आपकी जातिमें भी ढोंगी ही अधिक हैं—बल्कि, और सब जातियोंसे अधिक हैं। मगर, आपमें और भी कुछ ऐसे गुण हैं जिनके कारण आपका ढोंग भी जम जाता है। जाने दीजिये इस विषयको। मैं जिस लिये आया हूं, वह काम सुन लीजिये। मैं इस बच्चीको आपकी शरणमें—आश्रयमें—छोड़ना चाहता हूं।"

"मुझ ढोंगीके आश्रयमें—?" तानेसे जानसनने कहा।

"इस तरह न बोलिये, गंभीर विषयोंमें व्यंग परिहास ठीक नहीं। मेरी बातोंपर एकान्तमें विचार

कीजियेगा। इस समय इस बच्चीको संभालिये। मुझे अभी और भी अनेक काम हैं—बुधुआकी फ़िक्र है। उसे फांसीसे बचानेकी चिन्ता है।"

"अच्छी बात है," जानसनने कहा—"मैं इसे पाल लूंगा। बच्ची बड़ी सुन्दरी है—मैं इसे खुशीसे पाल लूंगा।"

"मगर," अघोड़ीने कहा—"याद रहे; आप इसे बप्तिस्मा न देंगे—केवल पालेंगे। पढ़ाने-लिखानेमें भी आप अपनी इच्छाका प्रयोग न करेंगे। यह लड़की आपकी नहीं—बुधुआ भंगीकी है। वह जब इसे माँगेगा, आपको देना पड़ेगा।"

दूसरा कोई मौक़ा होता तो जानसन ऐसा पादरी, उक्त शर्तोंपर, किसी बच्चेको अपनी संरक्षतामें कदापि न लेता। मगर, न जाने कैसी शक्ति थी उस भयानक अघोड़ीकी आंखोंमें, जिससे दृष्टि मिलते ही, पादरी जानसनने मन-ही-मन अनुभव कर लिया कि, अघोड़ीका व्यक्तित्व उसके व्यक्तित्वसे कहीं बड़ा—कहीं

ऊंचा—था। उसने रधियाको अपनी संरक्षतामें ले लिया।

"जानसन महोदय," रेवरेण्ड राइटने कहा—"यदि आप बुरा न मानें तो मैं एक प्रार्थना करूँ। जबतक यह बच्ची आपके यहाँ रहे, इस पर जो व्यय पड़े वह मुझसे लिया जाय। मैं इसके लिये दो पौण्ड मासिकसे आरम्भ कर, चार पौण्ड मासिक तक, बराबर भेजते रहनेकी प्रतिज्ञा करता हूं।"

"ओ थैंक्यू वेरी मच!" जानसनने कहा।

अघोड़ीने कहा कुछ नहीं केवल अपनी तेजस्विनी आंखोंमें करुणा भरकर उसी ओर देखा।

"तो," चलनेका रूपक बाँधते और रधिआको रेवरेण्ड राइटके हाथों पर रखते हुए, अघोड़ीने कहा—"अब मैं जाता हूं भाई जानसन! मैं आपसे अक्सर मिला करूंगा।"

वह बाहर जानेके लिये, बिना प्रणाम-अभिवादनके ही पीछे मुड़ा; मगर, ड्योढ़ीपर जाकर एकाएक रुका। उसने एक बार फिर दोनों पादरियों और

९

मिस्टर यंगका सामना किया। मगर—ओह! उक्त तीनोंने देखा इसबार उस भयानक साधुकी जलती हुई आँखोंमें विचित्र ज्योति थी। उसने मिस्टर यंगकी आँखोंसे आँखें मिलाकर कहा—

"तुम मेरे साथ आना चाहते हो?"

"हाँ," मन्त्र मुग्धकी तरह दौरा-जज मिस्टर यंगने कहा।

"तो फिर चलो! अभी दस ही बजे हैं, अधिक विलम्ब नहीं है। आओ!"

मिस्टर यंग भी अखाड़ीकी ओर बढ़े!

आश्चर्यसे जानसनने पूछा—

"रात अंधेरी है, हवा ज़ोरोंकी है, आप इस अपरिचित भयानकके साथ कहाँ जा रहे हैं, मिस्टर यंग?"

"क्या कोई विशेष प्रयोजन है?" राइटने भी दरियाफ़्त किया।

मगर, यङ्गने उनमेंसे किसीको भी उत्तर नहीं दिया। क्षण भर बाद वह, साधुके साथ, उस कमरेके बाहर थे!

१७

अघोड़ीके पीछे

पादरी जानसनके कमरेसे बाहर आकर उसी अँधेरी और तूफ़ानी रातमें, ज़रा सन्निकटसे, अघोड़ीने मिस्टर यंगकी आंखोंमें देखा। उसकी आँख क्या थी बिजली थी। मिस्टर यंग एकबार अपने गाढ़े काले सूटमें, काँप उठे। अघोड़ीकी दोनों आँखें उनके कलेजेमें उतर गयीं। उसने दरियाफ़्त किया—

"तुम किसी सवारी पर आये हो?"

"हाँ," मिस्टर यंगने उत्तर दिया—"मेरी मोटर बाइक वह रखी है।"

"अच्छी बात है, तुम उसपर बैठ लो, और मेरे पीछे आओ!"

"मगर," हिचकिचाते हुए यंगने कहा—"मोटर

बाइसिकिल तो बहुत तेज़ जायगी, उसमें साइडकार भी नहीं है, जो दो आदमी बैठ लेते।"

"तुम बैठकर चलो! जल्दी करो!"

शायद, कुछ देर बाद, पादरी जानसनका छोकरा लौट आया था, और, शायद उस भयानक साधुसे अपने मालिकको बातें करते सुन उसकी हिम्मत खुल गयी थी। क्योंकि, इस बार अघोड़ीने देखा, वह फाटकके पास मिस्टर यंगकी मोटर बाइक सँभाले खड़ा था। अघोड़ी उसे देखकर ज़रा मुस्कराया—

"क्यों, तू आदमीसे भी डरता है? पागल कहींका!"

छोकरा फिर काँप उठा!

इधर मिस्टर यंग फट्-फट् कर, मोटर बाइसिकिल पर चढ़ बैठे। वह बड़े ज़ोरसे फड़फड़ाती हुई, अपने तीव्र प्रकाशसे उस घने अन्धकारकी छाती फाड़ती हुई, आगे बढ़ी। चर्च-कम्पाउण्डके बाहर आनेपर उन्होंने पीछे मुड़कर देखा कि अघोड़ी कहाँ है? मगर, वह उधर नहीं था। फिर सामनेकी ओर नज़र

दौड़ायी। ओ हो! मोटर बाइसिकिलके प्रकाशकी अन्तिम रेखा सड़कके जिस भाग पर पड़ रही थी—अघोड़ी वहीं जाता दिखाई पड़ा! "ओह!" आश्चर्यसे यंगने अपने मनमें विचार किया—"यह इतना आगे कैसे निकल गया!" उन्होंने अपनी गाड़ीकी गति ज़रा तीव्र की। क्षण भर बाद उन्होंने फिर सामने देखा—मगर, अब भी अघोड़ी उनकी गाड़ीके प्रकाश-की चोटीपर ही था। सड़क सूनी, काली और भयानक थी। यंगने सोचा, माजरा क्या है। उस व्यक्तिकी चालसे मेरी गाड़ीकी गति मन्द क्यों है? इसबार प्रति घंटा तीस मीलके हिसाबसे उन्होंने अपनी गाड़ीकी गति कर दी। अग़ल-बग़लकी पृथ्वी थर्रा उठी। वायु और अन्धकारकी छातीमें उनकी गाड़ी तीरकी तरह घुस चली—मगर उफ़! अब भी जब उन्होंने सामने नज़र उठायी, तो, अघोड़ी आगे ही था—इतना आगे की उनकी गाड़ी उसे देख भर सकती थी, छू नहीं।

घंटों तब यही हालत रही। जैसे मायाके पीछे

बीच दौड़े, उसी तरह इस भयानक बदन साधुके पीछे, बीसवींसदीके विज्ञानके चरम विकास पर चढ़े, मिस्टर यंग दौड़ते रहे। बनारसकी बाहिरी तरफ़की किन-किन सड़कोंकी ख़ाक उन्होंने छानी—कहना मुश्किल है। मगर, वह ऊबे नहीं। इस दौड़में कोई विशेष प्रयोजन, कोई ख़ास स्वार्थ, न होनेपर भी, इस भयानक व्यक्तिकी ओर न जाने क्यों उनका हृदय बे-लगाम घोड़े-सा झपटा—खिंचा—चला जा रहा था। आख़िर, बहुत दौड़-धूपके बाद, उन्हें ऐसा मालूम हुआ मानों वह बनारसके उस मुहल्लेमें आ गये जिसमें युरोपियनोंकी बस्ती है। मगर, अब भी अघोड़ीकी गति रुकी नहीं। उस मुहल्लेमें भी वह यंग साहबको प्रायः १० मिनट तक दौड़ाता रहा।

"बस!" उन्होंने सुना, अघोड़ीने आवाज़ दी। उन्होंने अपनी गति मन्द की। मेशीन रोक दी। उतर पड़े।

"अब थोड़ी देर तक," उनके पास आकर अघोड़ी

कहने लगा—"गाड़ीको हाथसे घसीटते हुए मेरे पीछे आओ!"

कोई १० मिनट तक यंग साहबको, अघोड़ीके पीछे. पेड़ोंसे घिरी हुई सड़कपर चलना पड़ा। उन्होंने देखा वह अंग्रेज़ी-बस्तीके एकान्त भागमें थे।

"बस, इसी पेड़के नीचे गाड़ी रख दो! और मेरे पीछे आओ! रख दो! कोई डरकी बात नहीं है। बनारसके सेशन जजकी गाड़ी कोई चुरा नहीं सकता!"

गाड़ी पेड़के नीचे रखकर वह अघोड़ीके पीछे चले। कोई सौ गज़ चलकर वह एक पेड़ोंके झुरमुटमें घिरे बंगलेके फाटकपर पहुंचे। मिस्टर यंगने देखा फाटकके बाहर एक साइनबोर्ड था जिसपर दूरसे आती हुई सड़कके लैम्पकी रोशनी पड़ रही थी। उन्होंने पढ़ा। उस पर लिखा था—"स्त्री-स्वातन्त्र-समर्थिनी-समिति।"

साइन बोर्ड देखकर यंग साहब चकराये! उन्होंने धीरेसे अघोड़ीसे कहा—

"आज यहाँ समितिका एक विशेष उत्सव है, जिसमें चुने हुए लोग ही निमन्त्रित हैं। यहाँ मेरी स्त्री भी है। मैं इस अहातेमें नहीं जाऊँगा। ऐसा करना नियम विरुद्ध होगा। अभद्रता होगी।"

"चलना होगा!" आँखें चमकाकर अघोड़ीने कहा—"इसीलिये तो तुम्हें यहाँ ले आया हूं। ठहरो, घबराओ मत। तुम्हारे जूते आवाज़ करेंगे। उन्हें उतार कर यहीं आड़में रख दो—हाँ, यहाँ—ठीक है। अच्छा, उधरसे नहीं—इधरसे आओ। इसे फाँद तो सकोगे न? क्यों नहीं, तुम काफ़ी लम्बे हो, कोशिश करो—पार हो गये यंग? ठहरो मैं भी आया!"

क्षणभरमें अघोड़ी और मिस्टर यंग समितिके अहातेके भीतर थे। अहातेके बीचोबीच एक सुन्दर बंगला था जिसके हालमें ख़ूब रोशनी हो रही थी। मिस्टर यंगने देखा हालसे सटे हुए एक कमरेमें १०-१५ पुरुष और ठीक उतनी ही स्त्रियाँ मद्यपान कर रही थीं। लोगोंकी नज़रोंसे बचता, यंग साहबके साथ, अघोड़ी एक ऐसे स्थानपर जा छिपा जहाँसे

भीतरवालोंकी भाव-भंगी और बातें साफ़ दिखाई-सुनाई पड़ती थीं !

मिस्टर यंगने देखा, प्रत्येक पुरुषकी बग़लमें एक-एक युवती स्त्री थी। उनकी स्त्री भी एक जवान और सुन्दर पुरुषकी बग़लमें बैठकर, आँखों और कपोलों और होठोंमें मुस्करा रही थी। यद्यपि इसमें कोई छिपनेकी बात—मिस्टर यंगके सामाजिक नियमों द्वारा—नहीं थी ; फिर भी, उनका ख़ून गरम होने लगा ! इसी समय उन्होंने अपनी स्त्रीकी आवाज़ सुनी—

"चलो ! जल्दी करो ! हम अन्तिम नाच नाच लें। सब सदस्याएं अपने-अपने साथीकी आँखें बांध दें।"

"इस बार नहीं, प्यारी !" यङ्ग साहबकी बीबीके बग़लमें बैठे हुए युवकने मुस्कराकर कहा।

"नो नो नो नो—हज़ार बार नो ! तुम पुरुषोंके स्वार्थके लिये हम अपनी समितिका नियम नहीं तोड़ेंगी। हम यहां पर उन्हीं पुरुषोंको निमन्त्रित

पुरुष अधिक आकर्षक होता है। जैसे हो वैसे ही रहो। मैं आंखवाले पुरुषोंको नहीं प्यार करती।"

वह एक बार फिर उस अन्धेकी छाती पर मिस्टर यङ्गकी नज़रोंमें वीभत्सतासे थिरकने लगी! मगर, अब, शायद वह पुरुष अपनेको न संभाल सका। बड़े ज़ोरसे मिसेज़ यङ्गको एक हाथसे छातीमें दबाकर उसने दूसरे हाथसे अपनी आंखोंकी पट्टी खोल दी। बेञ्चसे उठ खड़ा हुआ। उन्मत्तोंकी तरह मिसेज़ यङ्गको गोदमें उठा लिया और पागलोंकी तरह चूमने, छातीमें छिपाने, उसको लिये-दिये बेंच पर बैठने—फिर उठने—फिर बैठने लगा!

इस बार अघोड़ीने मिस्टर यङ्गकी ओर देखा। उन्होंने अपना हाथ अपने पाकेटमें डाल लिया था—वह कुछ ढूंढ़ रहे थे! शायद पिस्तौल!

"ठहरो!" यङ्गके कानमें तीव्र परन्तु धीमें स्वरमें अघोड़ीने कहा—"तुम कानूनके पण्डित हो, बुद्धिमान हो! तुम्हें वैसा काम न करना चाहिये जैसा काम करके बुधुआ भंगी फाँसी पानेका स्वप्न देख रहा है।"
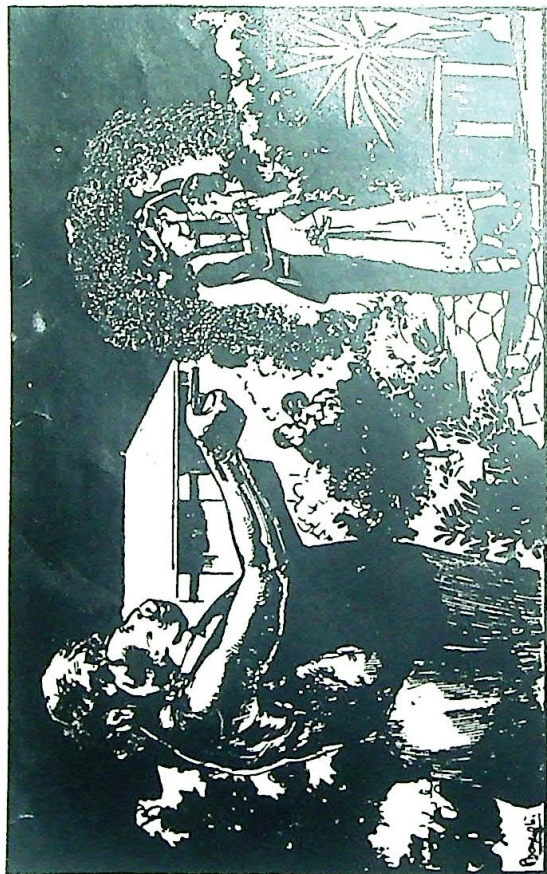
—"उसने एक हाथसे यक्षका पिस्तौल वाला हाथ पकड़ा पिस्तौलको अपनी मुट्ठीमें किया और दूसरे हाथसे उनका मुह बन्दकर दिया।"

(मु० बे० पृष्ठ १५१)

मगर, यङ्ग रुके नहीं। उनकी पिस्तौल बाहर निकली और वह उन दोनोंकी ओर झपटनेकी तैयार हो गये। पर, वाहरे अघोड़ीकी शक्ति! उसने एक हाथसे यङ्गका पिस्तौल वाला हाथ पकड़ा—पिस्तौल को अपनी मुट्ठीमें किया और दूसरे हाथसे उनका मुह बन्द कर दिया!

मारे उत्तेजनाके बेचारा यङ्ग बेहोश हो गया!

१८

होशमें आनेके बाद

ज़रा-सा होश होनेका अनुभव होते ही मिस्टर यङ्गने यह जाननेकी चेष्टा की कि वह कहां हैं। उन्हें मालूम पड़ा जैसे उनको कोई अपनी पीठ पर लादे लिये जा रहा हो। एकबार सन्नाटेमें आकर उन्होंने आँखें खोल दीं। उन्हें मालूम पड़ा, अभी सवेरा नहीं हुआ है, रात्रिके पिछले पहरकी घड़ियां सायं-सायं

कर रही हैं। आकाशमें नक्षत्र-राशि है ज़रूर ; मगर, खिली हुई नहीं, कुम्हलायी हुई। उन्होंने अपना दाहिना हाथ उठाकर उस चीज़को स्पर्श करना चाहा जो उनकी कमरके ऊपर लिपटी-सी थी। मगर, हाथ हिलाते ही उनका पञ्जा किसी कड़ी और ठण्ढी चीज़—शायद लोहे—से टकराया। वह चीज़, उन्हें मालूम पड़ा, उनकी मोटर बाइकका पिछला भाग था। मोटर बाइसिकिलका स्मरण आते ही मिस्टर यङ्ग 'धक्' से हो उठे! उन्हें कुछ घण्टे पहलेकी सब घटनाएं याद आने लगीं। उनके स्मृति-पट पर, क्रमशः, सिगराका चर्च, रेवरेण्ड राइट और पादरी जानसनसे भेट, औघड़के दर्शन, रधियाकी कथा, उनका औघड़के साथ जानेको राज़ी होना, मोटर बाइककी दौड़, स्त्री-स्वातन्त्र्य-समर्थिनी समिति, अन्धे पुरुषोंका नाच, उनकी स्त्रीकी स्वतन्त्रताका वीभत्स प्रदर्शन, उनका उत्तेजित होना, औघड़का बाधा देना आदि घटनाएं फिर गयीं। वह मन-ही-मन समझ गये कि अलौकिक शक्तिमान वह भयानक

बुभुक्षा कीबेटी

—वह मन-ही-मन समझ गये कि अलौकिक शक्तिमान वह भयानक औघड़ उन्हें अपनी पीठपर लादे लिये जा रहा है—(बु० बे० पृष्ठ० १४२)

औघड़ ही उन्हें अपनी पीठ पर लादे उस नारकीय स्थानसे कहीं दूर लिये जा रहा है ; जहां उनकी स्त्री विश्वासघात और व्यभिचारका नारकीय नाच नाच रही है। यंगका माथा एकबार पुनः गरम हो उठा। उन्होंने ज़ोरसे सगबगाते हुए अघोड़ीसे कहा—

"रुको ! हे भयानक साधु ! तुम मुझे कहां लिये जा रहे हो ?"

"ओहो ! तुम होशमें आगये !" यङ्गको पीठ परसे उतारते हुए तथा बाइसिकिलको सड़क पर रखते हुए अघोड़ीने कहा—"मिस्टर यङ्ग, तुम्हारा जी कैसा है ?"

"मेरा जी ?" यङ्गने तीव्र स्वरसे उत्तर दिया—"मेरा जी ख़राब कब था ? मगर, वहाँ पर, उस पाजी औरत और उस नराधमको मारनेसे रोक कर तुमने अच्छा काम नहीं किया। उफ़ ! तुमने मुझे छूते ही बेहोश कर दिया। तुम्हारे स्पर्शमें निद्रा मालूम पड़ती थी।" मिस्टर यङ्ग आगे कुछ न कह कर अघोड़ीको, छीजते हुए पूर्ण-चन्द्रके हलके प्रकाशमें,

सिरसे पैरतक देखने लगे—"तुम आदमी हो ? तुम शैतान हो ? तुम देवता हो ? तुम क्या हो !" उन्होंने पूछा—"मुझ जैसे तगड़े आदमीको पीठपर लाद कर, इस वज़नी मोटर बाइसिकलको हैण्ड-बेगकी तरह एक हाथसे उठाकर, तुम ढाई मीलसे ऊपर चले आये ; और, तुम्हारे माथेपर पसीनेकी एक बूंद भी नहीं दिखाई पड़ती है ! तुम्हारी छातीसे एक दीर्घ-श्वाँस भी बाहर नहीं निकल रहा है ।...मगर सुनो ! मगर सुनो !" एकाएक पुनः उत्तेजित होकर यंग कहने लगे—"मेरी पिस्तौल कहां है ? लाओ उसे मुझको दो, मैं बङ्गलेपर लौट जाना चाहता हूं—मैं...।"

यङ्ग अपने होठको दाँतोंसे काटने लगे।

अघोड़ीने दयार्द्र-भावसे मिस्टर यङ्गके कन्धेपर अपना दाहिना हाथ रखकर पूछा—

"एक बात बताओगे मिस्टर यङ्ग ? देखो !—ठहरो ! ज़रा उत्तेजना कम करो ! मैं जानता हूं तुम्हारी जैसी परिस्थितिमें पड़कर कोई भी 'आदमी' उतनाही उत्तेजित हो उठेगा जितने तुम हो—मगर,

नहीं ; तुम बुद्धिमान हो, तुम दौराजज हो, सुना है प्रतिभाशाली भी हो, तुम इस बातको ज़रूर जानते होगे कि उत्तेजित और क्रोधान्ध मस्तिष्क हमेशा उचित ही नहीं सोचता। ठीक है, ठीक है। तुम मेरी बात समझ रहे हो। क्यों न समझोगे, तुम बुद्धिमान हो।"

"लेकिन," एक ठण्ढी सांस खींचकर यङ्गने कहा—"ऐसे वक्तोंपर भावोंको वशमें रखना बड़ा कठिन काम है। दौराजज या बुद्धिमान होनेसे कोई फ़रिश्ता तो हो नहीं जाता—उफ़! ऐसा विश्वास घात! ऐसी नीचता! जी करता है—जी करता है......।"

यङ्ग एकबार पुनः उत्तेजित हो उठे।

"मगर सुनो तो—सुनो तो मिस्टर यङ्ग। तुम ऐसी दुनियामें रहते हो जिसमें सुखके साथ दुख, प्रकाशके साथ अन्धकार, विश्वासके साथ अविश्वास और प्रेमके साथ द्वेष अक्सर देखे जाते हैं। दुनिया रङ्ग-मञ्च है—जैसा कि पूर्व और पश्चिम, उत्तर और

दक्षिण, चारोंओरके विद्वान कह गये हैं—जीवन नाटक है, और हम, तुम अभिनेता हैं। इस नाटकमें कहीं भी नाटकीय सत्यसे परे किसी ठोस सत्यको ढूंढ़ना व्यर्थ है, मूर्खता है, बालूसे तेल निकालनेकी आशा है। एक अभिनेता तुम हो, दूसरी अभिनेत्री तुम्हारी वह सामाजिक पत्नी है जिसे तुम पापिनी, राक्षसी और क्या-क्या कह कर पुकार रहे हो—नाः नाः नाः भाई! सांसारिक खिलौनोंसे इतना गंभीर संबन्ध रखोगे तो कष्ट पाओगे। तुम दूसरोंका अभिनय देख कर दाँत क्यों किटकिटाते हो? पिस्तौल क्यों ढूंढ़ते हो?—तुम अपना पार्ट याद करो—अपना 'रोल प्ले' करो! और; यह तो तुम भी स्वीकार करोगे कि तुम्हारा रोल, तुम्हारा पार्ट, दाँत किट-किटाना और रोना और हत्या करना और किसी एक मुट्ठीभरके पञ्चतत्वके पुतलेके लिये जीवनको नरक बना डालना नहीं है।"

"मगर—मगर!" मिस्टर यङ्गने अजिज़ीसे कहा—"यही स्वाभाविक है। यही मानुषिक है

धर्मावतार। हज़ार विद्वान होनेपर भी मनुष्य हमेशा दार्शनिक नहीं रहता है। मानव-समाजका अधिकांश हमेशा दार्शनिक रहना भी नहीं चाहता। आपकी बातोंको अगर हम सच मान भी लें, तो, वह केवल कल्पनामें रहने लायक़ है—बर्तने लायक़ नहीं। आपकी बातें साधारण सांसारिकोंके लिये असाध्य हैं। संसारी प्राणी तो अपनी स्त्रीको व्यभिचारिणी देखकर आग उगलेगाही—खूनकी होली खेलनेको तैयार होगा ही। वह, जीवन और नाटक और रङ्गमञ्च और अभिनायकताका विचार नहीं करेगा। नहीं करता। शायद कर ही नहीं सकता। संसार रङ्ग-मञ्च पर आकर जीवनके नाटको सत्य मान लेना और अपने असली पार्टको भूलकर कुछ दूसरा ही बक-झक और दाँता-किटकिट करने लगना ही, मनुष्यने, सृष्टिके आरम्भसे आज तक सीखा है। वैसाही साधारण मनुष्य मैं भी—मैं स्वीकार करता हूं—वैसा ही साधारण मनुष्य मैं भी हूं। मैं ऐसे ही साधारण मनुष्योंकी मण्डलीमें पाला-पोसा गया हूं

जो जीवनके नाटकमें अपने असली पार्टको भूल कर रोते हैं, गाते हैं, पुलकते हैं, प्रेम करते हैं और मरते मारते हैं।"

"मगर यङ्ग" अघोड़ीने कहा—"ऐसे जीवनका अन्त असन्तोष है। और, असन्तोष तो जीवनको नरक बना डालता है। इस समय तुम बड़े ही भयानक खड्डके मुंह पर खड़े हो, बहुत संभाल कर पैर आगे बढ़ाना—बहुत संभाल कर मित्र! नहीं तो, पछताना पड़ेगा। और, पश्चात्तापके फल विष-वृक्षके फलोंसे भी अधिक कड़ुवे होते हैं। इतनी बातें तुमसे इस लिये कहता हूं कि तुम्हारी परिस्थितिसे मेरी पूर्ण सहानुभूति है। जिस स्थान पर तुम आज खड़े हो, उसी स्थान पर—ठीक उसी स्थान पर—एक ज़माना हुआ, मैं भी खड़ा था। नारीका ठीक वही रूप एक बार मेरे सामने भी आया था जिसे देखकर तुम अपने आपेके बाहर हुए जा रहे हो—मगर, मैं बच गया। मुझे बचा लिया मेरे ईश्वरने, मेरे भगवानने, मेरे उदार मालिकने! उस घटनासे मैं केवल बचा ही

नहीं, बल्कि, जीवनके मैदानमें कुछ आगे भी बढ़ गया।"

"तुम बच गये!" आश्चर्यसे आंखें फाड़कर यज्ञने पूछा—"किससे बच गये! औरतकी मायासे? उसके विश्वासघातसे? साधु, बोलो! क्या कभी तुम भी मुझ जैसे गृहस्थ और संसारी जीव थे? ओहो! तुम तो अद्भुत घटनाओंसे भरे उपन्यासकी तरह कौतूहल-मय दिखाई पड़ते हो! तुम कहो, मैं तुम्हारी वह कहानी सुनना चाहता हूं जिसमें किसी स्त्रीने तुम्हारे साथ विश्वासघात किया था। मैं तुम्हारी उस कहानीको एक बार सुन लेनेके बाद ही अपना मार्ग निश्चत करूँगा। सच कहता हूं—विश्वास मानो!"

"कहानी सुनना है तो" अघोड़ीने कहा—"सड़क छोड़कर उस पीपलके पेड़की छायामें चलकर बैठो। यहां खड़े-खड़े—मैं तो नहीं तुम्हीं—थक जाओगे; आओ!"

मिस्टर यज्ञ औघड़के हाथसे अपनी मोटर-बाइक

होकर, उसके साथ, सड़ककी एक ओर खड़े, विशाल पीपल वृक्षकी ओर बढ़े।

१६

उत्तरार्ध

अघोड़ीकी कहानीका पूर्वार्ध सुनकर मारे आश्चर्य के मिस्टर यङ्ग, उछलकर खड़े हो गये ; और कहने लगे—

"सचमुच तुम विचित्र आदमी हो भयानक साधु! हमारे पश्चिमीय देशोंमें तुम्हारे जैसे व्यक्ति, लाख चेष्टा कर खोजने पर भी, नहीं मिलेंगे। तुमने अपने उस गुरु-पत्नी गामी विद्यार्थीको बिलकुल क्षमा कर दिया! अपनी उस विश्वासघातिनी पत्नीको केवल क्षमाही नहीं कर दिया—पूर्ण स्वतन्त्रता भी दे दी; और पूर्ण स्वतन्त्रता ही नहीं; कई हज़ारके गहने

और नोट भी दिये! वाहरे क्षमा करनेवाले! वाहरे उदार!"

"तुम नहीं जानते," अघोड़ीने कहा—"यद्यपि तुम्हारी बायबिल क्षमाके महत्वोंसे भरी पड़ी है—अपने शत्रुओंको क्षमाकर, जो तेरे दाहने गालपर तमाचा मारे उसके सामने अपना बायाँ गाल भी कर दे, हे परमात्मा! इसे क्षमाकर क्योंकि यह नहीं जानता कि क्या कर रहा है, आदि—महान् उपदेश-मय बातोंसे बायबिल चमक रही है। मगर, तुम लोग उसे अपना धर्म-ग्रन्थ मानते हुए भी क्षमाके महत्वको नहीं समझते। तुम ईंटका जवाब पत्थर और घूसेका जवाब तलवारसे देनेके हिमायती हो रहे हो, जो कि, ईश्वरीय नहीं शैतानी, सात्विक नहीं अ-सात्विक प्रकार है। मैं देखता हूं मिस्टर यङ्ग! तुम्हारे ओष्ठाधरोंपर व्यंगसे भरी मुस्कराहट नाच रही है। ऐसा न समझो कि इस अन्धकारमें मुझे तुम्हारे मुखपरके भाव नहीं, दिखाई पड़ते हैं। तुम मन-ही-मन सोच रहे हो कि ऐसे स्थानोंपरका क्षमा-दान कायरोंका शस्त्र है। नहीं,

नहीं, कदापि नहीं। मैं कायरोंकी तरह क्षमा करनेको नहीं कहता। और न तो वैसी क्षमाका महत्व ईसाही ने समझा था। क्षमा तो वीरोंका शस्त्र है। दण्ड देनेकी शक्ति रखते हुए भी जब, मुस्करा कर, किसीको क्षमा कर दो; तब, क्षमा करनेका मज़ा है। ऐसे मौक़ोंपर क्षमा-दान लेनेवाला ही अपमानित होता है, कायर साबित होता है। मेरा मत यह है कि, आदमीको क्षमा-दान देनेको तैयार रहना चाहिये—लेनेको कभी नहीं। किसीसे क्षमा दान लेनेसे दण्ड लेना ही अधिक उत्तम है; क्योंकि, दण्डकी व्यथा थोड़ी देरमें दूर हो जाती है और क्षमाकी मार बरसों तक—और कभी-कभी आजीवन—छातीमें चिलक पैदा करती रहती है।—मगर ठहरो! इन विषयोंपर मैं तुमसे कभी फिर बहस कर लूंगा, अभी मुझे अपनी कहानी पूरी कर लेने दो। भोर होनेको आ रहा है। तुम्हें प्रभातके पूर्व ही अपने बंगलेपर पहुंचना चाहिये।"

सम्राटेकी प्रति-मूर्ति बने मिस्टर यङ्ग अघोड़ीकी कहानीका उत्तराध सुननेको तैयार हो गये।

"जीवन-हीन शरीरकी तरह घरनी-हीन घरमें आग लगा देनेके बाद मैं उसी रातको, प्रयागसे, एक ओर—न जाने किस ओर—चल पड़ा। मैं किधर जाता था, कहां जाता था, मुझे मालूम नहीं था। फिर भी दिन और रात—और रात और दिन—मेरे पैर आगेकी ओर ही बढ़ते जाते जाते थे। उस समय अपनी स्त्रीके विश्वासघातका स्मरणकर, अपने पागल प्रेमको याद कर, मेरी छातीमें तहलका-सा मचा था। जी करता था, समुद्रकी तरह हाहाकार कर गर्ज उठूं; दावा-नलकी तरह दहक कर आग उगलने लगूँ; रुद्रकी तरह भयानक रूप धरकर ताण्डव नृत्य करने लगूँ। उफ़! मैंने कैसे सच्चे हृदयसे प्यार किया था दुनियाके उस छलिया रूपको! मैंने कितना महत्व दिया था संसार-की उस विश्व-विमोहिनी मृग-मरीचिकाको! आह! मैं किस बुरी तरह ठगा गया! बस, यही विचार, बिच्छूके आरकी तरह, मेरे माथेपर, हृदयपर, टपाटप टपक रहे थे। यदि कभी चलते-चलते सामने कोई वृक्ष दिखाई पड़ता था; तो, ऐसा जी करता था कि—

टकरा दूं इसीसे अपना माथा और इस हाय-हाय-मय जीवनका 'बस' कर दूं। नदी दिखाई पड़ती थी तो मन करता था फाँद पड़ूं और जीवनको जीवनमें विलीनकर, अधम शरीरको जल-जन्तुओंके 'क्षणभर मौज' के लिये छोड़ दूं।

"कभी-कभी रास्तेके किनारेपर रुक जाता और हाय-हाय कर रोने लगता था। हाँ—हाँ, आश्चर्य न मानो; दहाड़ मारकर रोने और 'हायरी औरत! ायरी माया!! हायरी औरत! हायरी माया!!' चिल्लाने ाता था। रास्तेके भोले-भाले बटोही मेरी ओर ने और सहानुभूतिकी मीठी-मीठी बात करने ते थे। कोई कहता—'बेचारा लुट गया-सा मालूम ड़ता है।' कोई कहता—'अभागा पागल है, पागल!'

"इसी तरह कितने दिनोंतक मैं इस संसार समुद्र-की भयावनी लहरोंमें पड़ा, इधर-से-उधर और उधर-से-इधर ठोकरें खाता रहा—मालूम नहीं। हाँ इतना मालूम है कि चलनेकी क्लान्तिसे और भूख-प्याससे

जर्जर होकर एक दिन यह काया किसी रेतीली ज़मीन
पर घुटनोंके बल गिर पड़ी। मैंने, तबाहकी सूरत
बनकर, उसी तरह घुटनोंके बल पड़े, अपने माथेको
बालूमें गाड़ दिया और रो-रोकर लगा चिल्लाने—'मेरे
ईश्वर! मेरे स्वामी! बड़ी व्यथा है। बड़ा कष्ट है; बड़ा
कष्ट है! अब समाप्त करो इस नारकीय यन्त्रणाको!'

"मैं उसी अवस्थामें—वहीं मूर्छित हो गया!

"इसके बाद जब मेरी मूर्छा टूटी उस समय प्रभात
हो चला था। प्रकृतिके उसी प्रभातके साथ मेरे नये
जीवनका प्रभात भी हुआ। मानों परमेश्वरने मेरी
पुकार सुन ली। आंखें खुलनेपर देखा, कोपीनधारी
एक औघड़ साधु, नर-मुण्डमें जल भरे, मेरे माथेपर
छींटें दे रहे थे। मुझे सचेत होते देख उन्होंने
आवाज़ दी—

'चेत! चेत!! सवेरा हो गया!'

"मैंने पूछा—

'कैसा सवेरा महाराज! आप कौन हैं?'

'मैं तेरा गुरु हूं; उस अघोड़ीने कहा—'उठ! च

मेरी कुटीपर। मैं तेरी ही प्रतीक्षामें था। तुझे तो कभी यहां आ जाना चाहिये था। हा हा हा हा! फंस गया दुनियाके चक्करमें और भूल गया मुझे! कैसा थप्पड़ लगा भैया! कैसा पुरस्कार दिया तुझे उस ठगिनीने! अब उठ! चल मेरी कुटीपर! मेरा समय पूरा हो गया है। मैं आज देह छोड़ूंगा। तू मेरा उत्तराधिकारी है। अपनी सारी सम्पत्ति मैं तुझे सौंपूंगा।'

"इसके बाद पास हीके जंगलकी कुटीमें ले जाकर उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति, अर्थात् वह कपीन और नर-मुण्ड, मुझे दे दी। उन्होंने मुझे अनेक दिव्य-मन्त्र भी दिये, उनके साधनेकी विधियां बतायीं और उसी कुटीमें रहकर दस वर्षतक एकान्त चिन्तन करनेका उपदेश दिया।

"बस। इसके बाद, प्राणायाम कर उन्होंने देह छोड़ दिया जिसे मैंने उनके इच्छानुसार जल जन्तुओंके आहारके लिये यमुनामें प्रवाहित कर दिया। आगे चलकर ईश्वरने मेरी बड़ी मदद की। मैं प्रवृत्तिसे परे

हो कर निवृत्तिके मार्गका पथिक बन गया और अबतक उसी पथपर, अपने गुरुदेवके आज्ञानुसार, चलनेकी चेष्टा कर रहा हूं।"

अघोड़ी क्षणभरके लिये रुका। यङ्गने एक ठण्ढी साँस खींचकर कहा—

"उफ़! साधु! तुम मूर्तिमान आश्चर्य हो!!"

—०—

३०

बुधुआ बच गया!

उस दिन संध्या ६ बजेके समय, बनारसके कम्पनी बाग़की बेञ्चोंपर, आमने-सामने बैठे, कुछ लोग, बातें कररहे थे—

"क्या कहते हो?"

"बुधुआ भंगी बच गया।"

"बच गया ?? याने, उसे दौरा-जजने साफ़ छोड़ दिया ?"

"नहीं, साफ़ नहीं छोड़ा। ऐसा तो मुमकिन ही नहीं था, उसने दो-दो ख़ून किये थे, एकको घायल किया था और पुलीसके आगे ख़ून करना और घायल करना स्वीकार भी किया था।"

"तब ? वह बचा कैसे ?"

"बच ही गया, उसकी क़िस्मत ही ऐसी थी, और क्या कहा जाय ?"

"क़िस्मतसे ज़्यादा उसकी बहादुरीने उसकी मदद की।"

किसी तीसरे व्यक्तिने कहा—"मैंने उड़ती हुई ख़बर सुनी है, कि, दुनियाभरकी दुश्मन पुलीसने भी उसकी मदद की। उस भेलूपुरा थानेका थानेदार उसकी बहादुरी पर ऐसा ख़ुश हुआ कि उसने बुधुआसे कह कर, उसे समझा-बुझाकर, ऊपरकी अदालतमें और मैजिस्ट्रेटके सामने, उसका बयान बदलवा दिया।"

"बयान बदलवा दिया का क्या अर्थ? क्या उसने खून करनेसे इनकार कर दिया?"

"खून करनेसे इनकार नहीं, और दूसरी कई छोटी-छोटी, पर, महत्व-पूर्ण बातोंसे इनकार कर दिया। जैसे, घरसे छुरा लेकर आनेकी बात। छोटी और बड़ी अदालतमें उसने यह नहीं कहा कि मैं घरसे ही मारने-मरनेकी तैयारी करके आया था, बल्कि, बात ही बदल दी। कहा—अपनी स्त्रीको बेइज़्ज़त होते देख मैं मौलवीके घरमें कूद पड़ा और वहीं, एक कोठरीमें, उस छुरेको टंगा देख, क्रोधके भयानक आवेशमें, मैंने उसका उपयोग किया।"

"बस, महज़ इतनी रद्दोबदलसे हो उसकी जान बच गयी?"

"अजी इतनी ही रद्दोबदल हुई यह कौन कह सकता है? मैंने कुछ अदालतोंमें जाकर उसके बयान सुने तो हैं नहीं, अफ़वाह सुनता हूं। जब पुलीस ही उसकी मदद पर थी तब उसने क्या-क्या बदला और क्या-क्या नहीं बदला यह कौन कह सकता है?"

"ख़ैर उसे फांसी नहीं हुई, मैं इस संवादसे खुश हुआ, बुधुआने जिस परिस्थितिमें वह खून किया था उससे, मेरा विश्वास है, प्रति-शत निन्नयानवे व्यक्ति सहानुभूति प्रकट करेंगे। अच्छा उसे सज़ा कितनी हुई?"

"सज़ा उसे आजन्म कालेपानीकी हुई है।" एक चौथे व्यक्तिने कहा—"मगर मुझे एक दूसरी बात मालूम हुई है। मुमकिन है मेरे मित्रकी पुलीसके मदद देनेकी बात सही हो; मगर, मैंने सुना है—और बड़े विश्वासी आदमीसे सुना है, कि—दौराजजही ने बुधुआकी परिस्थितिको सहानुभूतिकी नज़रसे देखकर उसे फांसीसे बचा दिया। सुना है, उन्होंने फ़ैसलेमें सरकारसे इस बातकी सिफ़ारिश भी की है कि, अगर कुछ समय तक, जिसकी तादाद कई बरसोंसे कम न हो, जेलमें इसका आचरण अच्छा रहे, तो, सरकार इसे मुक्त करने पर ज़रूर विचार करे।"

इसके बाद उक्त वक्ता, दौराजजके बारेमें, कोई दस मिनट तक, धीरे-धीरे बातें करता रहा, जिसे,

पासके लोगोंने सुना, दूर वालोंने नहीं सुना। उसकी बातें समाप्त होनेपर उसके पार्श्ववर्तियोंमेंसे एकने कहा—

"ओहो! यह बात है! ठीक है, ठीक है। मैंने भी सुना है कि, दौराजज मिस्टर यङ्ग इसी पहली तारीख़-को अपनी बीबीके साथ स्वदेश जा रहे हैं। उक्त संवादका रहस्य यह है!"

"कैसा रहस्य?" न सुनने वालोंमेंसे एकने पूछा—"तुमने आपसमें ही न जाने क्या कुल्हियामें गुड़ फोड़ लिया। अरे ज़रा हमें भी सुनाओ, दौरा-जजके जानेमें क्या रहस्य है?"

"नहीं भाई, नहीं भाई," उत्तर मिला—"किसी दूसरे वक़्त कानमें सुन लेना। यह अफ़सरोंकी बातें हैं, और यह है जनसाधारणके घूमने-फिरनेकी जगह कंपनी बाग़। कहीं इधर-उधरसे कोई सी० आई० डी० वाला सुनले तो चलो, बैठे-बैठायेकी बला खोपड़ी पर सवार हो जाय। अच्छा जी बुधुआका तो क़िस्सा ख़त्म हुआ। मगर, उसकी बेटीका क्या

हुआ ? सुना था अघोड़ी मनुष्यानन्दने, बुधुआकी बहादुरीसे प्रसन्न होकर, उसे अपनी संरक्षतामें ले लिया था।"

"अपनी संरक्षतामें ले लिया था ज़रूर अघोड़ीने ; मगर, इस विश्वास पर लिया था कि, उनके कहनेसे, उनके हज़ारों काशी-वासी भक्तोंमेंसे, कोई-न-कोई उस बच्चीको पाल लेगा। मगर, यह सच बात है कि उनके किसी भी भक्तने उस लड़कीका भार सम्भालना स्वीकार नहीं किया। किसीने भी नहीं।"

"फिर ?"

"सुना है, शहरके हिन्दुओंसे निराश होकर उन्होंने उसे सिगराके गिरजाघरके धर्माध्यक्ष पादरी जानसन की संरक्षतामें रख दिया है।"

"ईसाईके यहाँ उस हिन्दू बालिकाको अघोड़ीने सौंप दिया !" किसी चलते पुरज़े हिन्दूने कहा—"भाई यह तो ठीक नहीं हुआ।"

"क्या ठीक नहीं हुआ ? जब हिन्दू उसे अपने यहां आश्रय देनेको तयार ही नहीं हैं, तब बेचारे

अघोड़ीके लिये दूसरा मार्ग ही कहां था? ठीक नहीं हुआ, यह कहनेवाले तो अनेक हिन्दू मिलेंगे; मगर, उसे आश्रय देनेवाला भी कोई है?"

"अजी आश्रय देनेवालोंकी कमी नहीं," एक दूसरे महा-हिन्दूने कहा—"बशर्ते कि, किसी ऊँची जातकी सन्तान हो। भला भंगीकी बच्चीको कौन पालेगा? अछूतोंकी सन्तान तो ऊंची जातवालोंके लिये धोबीके कुत्तेकी तरह हैं—न घरके और न घाटके।"

"मगर, तुमने सुना नहीं? अघोड़ीने यहांके हिन्दुओंके आगे भविष्यत् वाणी की है कि—मैं अपनी ही आंखोंके आगे तुम्हें इन अछूतोंके आगे 'ताक थेई' नचवाकर दम लूंगा। कर्मोंमें अक्सर महा-नीच होते हुए भी तुम ढोंगी 'ऊंचों' की सारी हेकड़ी निकाल दूंगा।"

"अभी उस युगकी दिल्ली बहुत दूर है!" एक पण्डितराजने मुस्करा कर उत्तर दिया।

"अरे बाबा! अघोड़ी जैसे महापुरुषोंके लिये

किसी भी युगकी दिल्ली या बम्बई दूर नहीं। वह सिद्ध है—सिद्ध!"

२१

बारह बरस बाद

अब हमें बुधुआकी सज़ा होनेके बारह बरस बादसे अपनी कहानी शुरू करनी है। इस पूरे एक युगके बीचमें घटी हुई आवश्यक घटनाएं, आवश्यकतानुसार, हम बता देंगे।

उस दिन, इलाहाबादसे, प्रातः ६॥ बजे, छोटी लाइनकी जो गाड़ी, बनारस कैंट स्टेशन पर आयी, उससे एक यात्री उतरा जो देखनेमें आबनूसकी तरह काला था। उसके तन पर कोई दो-ढाई गज़की एक मोटी और सुफ़ैद लुंगी थी और वैसा ही एक दुपट्टा। उसकी मूंछ और दाढ़ी और सरके बाल धुए-से सुफ़ैद थे। उसकी आँखें ज्योति हीन-सी और

हीन-सी दिखाई पड़ती थीं। उसका मुख अधिक आयुके पद-चिन्हों—विविध रेखाओं—और दुःखकी मुहरों—झुर्रियों—से भरा था। उसकी कमर कुछ झुक-सी गयी थी।

गाड़ीसे उतरते ही, अपने हाथके दण्डेके बल खड़े होकर, उसने एकबार स्टेशनकी इमारतों, प्लेटफ़ार्म परके आने-जाने वालों और रेलके डब्बोंको बड़े ग़ौरसे देखा। इसी समय किसी पण्डेके दलालने आकर उससे सवाल किया—

"किसे ढूंढ़ रहे हो बुढ़ऊ? तीरथ करने आये हो क्या? साथमें औरत-बच्चे भी हैं? कौन है तुम्हारा पण्डा?"

पण्डेके दूतकी ओर तीव्र दृष्टिसे देखक बुड्ढेने कहा—

"हटो! मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है?" मगर, फिर न जाने क्या सोच कर, उस गमनोद्यत पण्डा-चरको उसने रोका—"सुनो, एक बात बता सकते हो?"

"मेरी तो तुम्हें ज़रूरत ही नहीं थी," व्यंगसे

पण्डेके दूतने कहा—"अपनेको बड़ा सयाना लगाता है बुड्ढे ?"

बुड्ढा ज़रा नम्र पड़ा—"नहीं भैया, मैंने यह ग़लत नहीं कहा था कि मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। मैं भी यहींका बाशिन्दा हूं; मगर, आज बारह बरस बाद इस शहरका मुहँ देखनेका मौक़ा मिला है। मुझे एक बात जाननी है। तुम कीनाराम बाबाका अखाड़ा तो जानते होगे ?"

"हां जानता क्यों नहीं हूं, मैं काशीकी राई-रत्तीसे वाक़िफ़कारी रखता हूं।"

"अच्छा भैया, उस अखाड़ेमें आजकल अघोड़ी बाबा हैं या नहीं ? तुमने उनका नाम तो सुना होगा ? बड़े भारी देवता हैं वह।"

"कौन अघोड़ा अघोड़ी ?" पण्डेके दूतने इसे व्यर्थकी बात समझ कर कहा—"कीनारामके अखाड़े में एक-दो अघोड़ी हों तो बताया भी जाय। वहां तो बावन गण्डे हरामख़ोर, अघोड़ी और कन-फट्टोंका स्वांग बनाये, पड़े रहते हैं।"

उस कलूटे और नाटे बुड्ढेको पण्डेके नौकरकी बातें अच्छी नहीं लगीं। उसने कहा—

"अच्छा भया जाओ! तुम उन्हें नहीं जानते; इसीसे ऐसी बातें कर रहे हो।"

धीरे-धीरे बुड्ढा प्लेटफ़ार्मसे उस ओर बढ़ा जिधर टिकट इकट्ठ किये जा र थे।

स्टेशनके अहातेके बाहर आकर वह एक बार फिर, चारों ओर आँखें फाड़-फाड़ कर देखने लगा। उसने ज़रा ज़ोरसे कहा—"क्या मामला है? अघोड़ी बाबाने तो मुझसे वादा किया था कि वह स्टेशन पर ही मिलेंगे।"

इसी समय उसके पीछे-से आवाज़ आयी—

"बुधुआ—बुद्धू—बुधराम!"

बुड्ढेने चौंककर पीछे देखा। सचमुच वह अघोड़ी बाबा ही थे। कोपीन धारण किये और हाथमें खप्पर तथा चिमटा लिये वह उस बुड्ढेकी ओर मुस्काराते हुए बढ़े आ रहे थे।

"अरे बुधुआ—अरे बुधराम!" आंखोंमें आंसू भरे

हुए अपने चरणोंपर बे-तहाशा गिरते हुए बुधुआ भंगीको उठाते और छातीसे लगाते हुए अघोड़ीने पूछा—"तू तो उम्रमें मुझसे कम होते हुए भी इस वक्त मेरा बाप मालूम पड़ता है। तेरे बाल कैसे सुफ़ेद हो गये? तेरा शरीर कैसा जुलजुल हो गया? मज़ेमें तो रहा न?"

"अरे बाबा! अरे स्वामीजी!!" ज़मीन पर बैठ कर अपने हाथोंसे अघोड़ीके चरण सहलाते हुए बुधुआने कहा—"जेलख़ाना नरक भोगनेकी जगह है कि मज़ेमें रहनेकी। अट्ठारह बरसका जवान अगर साल भर जेलमें रह जावे, तो, वह छूटनेके वक्त तीस बरसका अधेड़ मालूम पड़ेगा। दुनियामें जेल ही नरक है स्वामीजी!"

"अच्छा बुद्धू!" उसके सिरपर प्रेमसे हाथ फेरते हुए अघोड़ीने पूछा—"तू अभी ही कैसे छूट गया? सरकारने खुश होकर छोड़ दिया क्या?"

"नहीं स्वामी, मेरे छूटनेकी बड़ी लम्बी कहानी है, उसे कभी फिर सुनाऊंगा। अभी तो रधियाको

देखना चाहता हूं। चार बरस पहले आपने मुझसे नैनी जेलमें भेंटकर कहा था कि, वह बड़ी होनहार छोकरी है। उसी वक़्तसे मैं उसे देखनेके लिये तड़प रहा हूं। कहां है वह महाराज? कितनी दूर है पादरी साहबका बंगला? वह उसे मुझे लौटा देंगे न? न लौटावेंगे तो मैं तो तबाह हो जाऊंगा। मेरी बुढ़ौती बिगड़ जायेगी।"

"लौटाएँगे क्यों नहीं; मगर, उसको खिलाने-पिलानेके लिये भी कुछ रखा है? अब वह मामूली रधिया नहीं है। साहबके यहाँ पाली-पोसी गयी है। पूरी मेम साहबकी छोकरी मालूम पड़ती है।"

"तब," बुधुआने कहा—"मेमकी छोकरीको खिलानेभरको मुझ ग़रीब भंगीके पास पैसे कहां—मगर हां, अगर वह 'मेरी' रधियाकी तरह रहेगी, तो, आपके चरणोंकी दयासे, बहुत है। उस बेनिया बाग़वाले भंगी टोलेके एक कोनेमें हज़ार रुपये गाड़कर छोड़ गया हूं। वह सब मेरी इस बुढ़ौती और रधिया हीके लिये तो हैं।"

"अच्छी बात है।" अघोड़ीने कहा—"आ ; तुझे तेरी रधियासे मिला दूं। चल, चलें। ज़्यादा दूर नहीं है यहांसे पादरी जानसनका बंगला। मगर देख, पहले तूही रधियाके पास जाना। देख वह तुझे कुछ पहचानती है।"

"भला वह बेचारी क्या पहचानेगी" बुधुआने उत्तर दिया—"पहले मैं ही तो उसे पहचान लूं। वह तो—उफ़! वह भी कैसा ज़माना गुज़र गया! मानों कोई भयानक सपना देखकर उठा हूं!—उस वक्त नन्ही-सी बच्ची थी। वह मुझे क्या पहचानेगी?"

"अरे ऐसा मत समझना," सिगराकी ओर बढ़ता हुआ अघोड़ी बोला—"वह बड़ी तेज़ छोकरी है। न देखनेपर भी जबसे उसने होश सँभाले हैं, तभीसे वह बराबर तुझे याद किया करती है।"

अघोड़ीकी बातें सुनकर बुधुआकी आँखें छलछला आयीं। उसने एक लम्बी साँस खींचकर कहा—

"हाय मेरी अभागिनी रधिया!"

२२

अरे, वाह!

"अरे, वाह!" ज़रा दूरहीसे, उस लड़कीको देखकर जो तितलीकी तरह तेज़ीसे नाच-नाचकर पादरी जानसनके नज़रबाग़के गमलों और क्यारियोंके पौधोंको पानी दे रही थी, बुधुआने आश्चर्य चकित भावसे मनही-मन सोचा—"क्या यही मेरी रधिया है? अरे इसने तो मेमों-सा कपड़ा पहन रखा है! बाल किस तरहसे सवारे हैं! भला इसे देखकर कोई यह कह सकता है कि, यह मेरी लड़की है? अरे इसे तो मैं ह नहीं पहचान पा रहा हूं। मगर, नहीं, है रधिया ही। वह उसकी गर्दनके नीचे वह दाग़ है। लड़कपनमें, उस पागल सुकलीकी असावधानीसे, बेचारी जल गयी थी। उसी जलनेकी वह निशानी है। अहाहा! धन्य हो भगवान! धन्यहो

अघोड़ी बाबा! तुमने मेरी इस रानीको बचा लिया। नहीं तो, इस बुढ़ौतीमें मैं इसे कहां खोजता—किस हालतमें पाता!"

बुधुआकी आंखें सजल हो आयीं, वह एक पेड़की जड़से उठँगकर, पुलकित वदन, अपनी सुन्दरी लड़की रधियाको देखने लगा। उसका हृदय, उसका मन और उसके प्राण, सभी उसकी मन्द-ज्योति आंखों में एकत्र होकर, मानों उस लड़कीको निहारने लगे!

"मगर, हे भगवानजी!" बुधुआ पुनः विचारने लगा— "इतने बरसोंतक तो इसने पादरी साहबके साथ, इस सफ़ाई, इस शौक़ीनी और इज़्ज़तकी ज़िन्दगी बसर की, अब क्या यह फिर भंगी होना पसन्द करेगी? क्या यह मुझ कुरूप, बुड्ढे और अपाहिजको उसी भक्ति-भावसे देखेगी जिस भक्ति-भावसे दूसरे बच्चे अपने सगोंको देखते हैं? बचपनसे लेकर आजतक तो इसने दूसरोंको प्यार देने और दूसरोंसे प्यार लेनेका अभ्यास किया है, अब एकाएक यह मेरी भुजाओंमें कैसे आयेगी? हे भगवान! हे अघोड़ी

बाबा! मेरा दिल बैठा क्यों जा रहा है? मेरा मन, ऐसे आनन्दके अवसर पर, मरा-सा क्यों जा रहा है?"

बुधुआ जिस पेड़के सहारे खड़ा होकर विचार कर रहा था वह पादरी जानसनके कम्पाउण्डका सुन्दर अशोक वृक्ष था। बागीचेमें पानी देते-देते एकाएक रधियाकी बड़ी-बड़ी चञ्चल आंखें उस बुड्ढे पर पड़ीं। बुधुआने भी उसे अपनी ओर ताकते देखा—अभागा मारे आनन्द और प्रेमके काँप उठा! उस लड़कीके मनमें भी, इस बूढ़ेको देख कर, न जाने क्या-क्या विचार आये। वह पुष्प-पौधोंको सींचने-वाले हज़ारेको अपने हाथमें लिये हुई बुधुआकी ओर बढ़ी। बुधुआने उसे देखा। वह भी सतर्क होकर खड़ा हो गया।

"कौन है तुम, बुड्ढा?" ईसाइयोंके बीचमें पली रधियाने प्रश्न किया।

बुधुआने इस प्रश्नका कोई भी उत्तर नहीं दिया। वह अपनी आंखें पोंछ-पोंछ कर रधियाको निहारने

लगा। रह-रह कर उसका जी करता था कि, उसे गोदमें उठा ले, कन्धेपर बैठा ले और पागलोंकी तरह उस कम्पाउण्डके बाहर दौड़ पड़े। मगर, उसकी बुद्धि इस बातको जानती थी कि, ऐसा करनेसे व्यर्थ ही, एक नाटक हो जायगा!

"बोलता काहे नहीं," रधियाने आंखें तान और मुहँ बिगाड़कर प्रश्न किया—"तुम क्या मांगता है?"

"हम तुमको माँगता है बेटी," ग़रीबकी तरह दाँत निकाल कर प्रेमसे बुधुआने कहा।

"हमको!" रधियाकी दुष्ट आँखे चमक उठीं—"हमको—मुझको माँगता है? ना: ना: तुम्हारे साथ मैं नहीं जायगा। अभी मेरा बाबा मुझको माँगने आयेगा। वह नैनी जेलमें है।"

"नैनी जेलमें है तुम्हारा बाबा?" बुधुआ ज़रा बनने और अपनी रधियाकी बातें सुननेका सुख लेने लगा—"क्यों जेलमें है बेटी! क्या तुम्हारा बाबा डाका डालता था? या चोर था?—ना: ना: आंखे न तानो! मुझे क्या मालूम कि तुम्हारा बाबा कौन

था? इसीसे तो पूछता हूं—वह जेलमें क्यों भेजा गया है?"

"मैं नहीं जानती" रधियाने ज़रा गंभीर होकर कहा—"मैं नहीं जानती कि वह काहेको जेलमें गया है, मगर हमारा अघोड़ी बाबा बोलता था, वह बहादुरीके लिये जेल गया है।"

"तो जाने दो अपने क़ैदी बाबाको," बुधुआने कहा—"चलो मेरे साथ। मैं भी तुम्हें अपनी बेटीकी तरह रखूंगा। आओ, रखदो इस हज़ारेको! चलो चलें।"

बुधुआने रधियाका कोमल, सुडौल और सुन्दर दाहना हाथ अपने रूखे पञ्जेसे पकड़ कर खींचा—

"चलो मेरे घर!"

"ओह! नो-नो!! नहीं जायगा। छोड़ दे मुझे! यू बीस्ट!!"

शायद रधिया ज़ोरसे चिल्ला पड़ी। उसकी आवाज़, अपने स्टडी-रूममें बैठे, वृद्ध पादरी जानसन तक पहुंची। वह, मुहँमें चुरूट लगाए, बङ्गलेके बाहर घब-

राये-से निकल आये और रधियाकी ओर देखकर उधर ही लपके।

"क्या मामला है? तुम कौन है? लड़कीको काहे छेड़ता है?" जानसनने बुधुआसे पूछा।

"इसलिये छेड़ता है, कि" एक ओरसे आवाज़ आयी—"उसकी चीज़ उसे मिल जाय। पादरी जानसन, तुम इस बुड्ढेको नहीं पहचानते। यही इस लड़कीका बाप बुधुआ भंगी है।"

दूसरे क्षण अघोड़ी उन सबके सामने खड़ा होकर मुस्करा रहा था। रधियाकी आँखें नीचेकी ओर झुक गयी थीं।

अब बुधुआने झपटकर उसे छातीसे लगा लिया। वह प्रेम कातर हो कर आनन्दाश्रु बहाने लगा।

मगर, रधिया सन्न थी! अपने बहादुर और क़ैदी बाबाको पानेकी प्रसन्नता उसके होठों या कपोलों या भवों या आँखोंपर नहीं थी!

शायद बुधुआने भी इस बातका अनुभव किया!

२३

पादरीकी राय

पादरी जानसनकी, सिकुड़े चमड़ेसे आच्छादित, बड़ी-बड़ी आंखें उस समय सड़कके उस छोरकी ओर देख रही थीं जहाँ पर कोई एक किरायेकी बग्घी चली जा रही थी।

"बस, करिये जानसन महोदय," उन्हींकी बग़लमें खड़े और उनके मुख परके भावोंका ध्यानसे अध्ययन करते हुए अघोड़ीने कहा—"अब आपकी मिस राधा अपने बापके साथ हमारी आपकी मामूली आंखोंसे ओझल हो गयीं।"

"लेकिन," रुमालसे आँखें पोंछते हुए पादरी जानसनने कहा—"विचित्र लड़की है मिस राधा। इधर एक ज़मानेसे उसको साथ रख कर, अब, मैं तो उसके बापसे भी बढ़कर हो गया हूं। मेरा जी, अगर

सच पूछिये तो, यह नहीं चाहता था कि, मैं राधाको उसके बापके साथ जाने दूं।"

"मगर," अघोड़ीने मुस्कराते हुए बाधा दी—"आपने उसे जाने कहाँ दिया है। अभी-अभी आपहीने तो उन बाप-बेटी दोनों ही को अपने यहाँ नौकर रख लिया है ? सचमुच पादरी जानसन महोदय, आपने बुधुआके साथ बड़ा भला सलूक किया है। अगर आपने उसे अपने यहाँ नौकर न रख लिया होता, तो, यह बनारसकी पाजी पुलीस उसे तंग कर मारती। ज़्यादातर पुलीस ही इन जाहिल-जपाट अछूतों और अपढ़ ग़रीबोंको पापकी ओर झुकाती है।"

"मैं सब जानता हूं, मैं सब जानता हूं," पादरीने उत्तर दिया—"मैं तो एक तरहसे इन्हींके बीचमें रहता ही हूं। तीस बरससे मेरा सम्बन्ध इन अछूतों और—आप हिन्दुओंके शब्दोंमें—पतितों और नीचोंसे है। मैंने भारतके प्रायः प्रत्येक प्रदेशकी अछूत जातियोंमें काम किया है। उनतक प्रभु मसीहका सन्देशा पहुंचानेकी

कोशिश की है। मैं खूब जानता हूं इन अभागोंकी दुर्दशाओंको। पुलीस इनसे मिल कर चोरी कराती है, हिस्सा लेती है, और फिर, इन बेचारोंको जेलमें बाँध भी देती है। पुलीस विभागके नीच-तबीयत वाले अनेक नौकर, प्रत्येक सूबेमें, इन गरीबोंकी बहू-बेटियोंको डरा-धमका कर नष्ट भी करते हैं और उनके पति और प्रियजनोंको हज़ार तरहसे तंग भी करते हैं। इसी लिये मैंने बुधुआ, और उसकी लड़कीको अपने यहाँ नौकर रख लिया है। मैं जानता हूं राधा सुन्दर है, आकर्षक है। यदि वह अपने अपढ़ और कमज़ोर और ग़रीब और समाजमें बिल-कुल नगण्य बापके साथ, केवल उसीके सहारे रहेगी, तो बच न सकेगी। धीरे-धीरे बदमाश उसे बालिकासे वेश्या और वेश्यासे राक्षसी बना देंगे। इसीलिये मैंने बुधुआ और उसको अपने आश्रयमें रख लिया है। राधा एक तरहसे मेरी पुत्री ही है।"

"एक बात और है जानसन महोदय," अघोड़ीने कहा—"यदि आपने ज़रा भी सतर्क दृष्टिसे रधियाके

मुख परके भावोंको देखा होगा, तो, आपको यह अवश्य मालूम हुआ होगा कि, वह भी आपको अपने पितासे अधिक ही मानती है, कम नहीं। अभी परसोंकी बात है, महीने भरतक घनघोर परिश्रम कर, जब आप और चार दूसरे भले आदमियोंकी सहायतासे, दुर्गाकुण्डके पास एक छोटा-सा कच्चा मकान या झोपड़ी तैयार कर वह रधिआके पास आया, तब, संयोगसे मैं भी उसके साथ था। उस समय घुघुआके इस प्रस्ताव पर कि—अब अपने नये घरमें कब चलेगी? रधिया रो पड़ी थी। कहने लगी, मेरा मन नहीं करता कि मैं 'पापा' को छोड़ कर जाऊं। वह मुझे बहुत प्यारे हैं।"

"ओह!" एक ठण्ढी साँस खींचकर पादरीने कहा—"जाने दीजिये। प्रभुका प्रत्येक प्रबन्ध मनुष्यके प्रबन्धसे सुन्दर होता है। उसकी इच्छा पूरी हो! मगर, एक बात मुझे आप और उस घुघुआसे और भी बता देनी चाहिये, और वह बात यह है कि, राधा विचित्र प्रकृतिकी बालिका है। यदि उसके स्वभावका

विशेष ख़याल रखे बिना ही उसको विश्व-पथ पर दौड़ा दिया जायगा, तो, धोका भी हो सकता है।"

"क्या विचित्रता है उसके स्वभावमें ?" औघड़ने दरियाफ़्त किया।

"पहली बात यह है," पादरीने कहा—"राधा बड़ी ही भावुक लड़की है। मैं तो उसे लड़कपनसे जानता हूं। उसके भावोंको छेड़ कर कोई उसका रूप किसी भी रंगमें रंग सकता है। वह परिश्रमी खूब है और व्यवहारमें सच्ची भी खूब; मगर, यदि उसे यह मालूम हो जाय कि उसके साथ दूसरे व्यवहार करनेवाले सच्चे नहीं हैं, तो, वह भयानक भी खूब ही है। मुझे उसकी एक छोटी-सी कहानी सुनाने दीजिये। छः महीने पहलेकी बात है। मेरे एक ईसाई मित्र हैं। उनका छोकरा डेविड मेरे यहाँ अक्सर आया-जाया करता था। उसकी और राधाकी खूब पटती। दोनों साथ ही साथ खेलते भी, नाचते भी, कूदते भी! एक दिनकी बात है डेविड अपने साथ कहींसे एक टिन अंग्रेज़ी मिठाई ले आया, और

राधासे बोला कि आओ, खाया जाय। दोनों बैठ कर खाने लगे। उसी समय, राधाके मुँहमें एक मिठाई डालनेकी प्रार्थना कर, डेविडने उसे कुछ छेड़ दिया! बस, वह तो आग हो उठी! उसने दसों थप्पड़ उस युवकके मुह पर जमाये! बड़े ज़ोरसे चिल्ला पड़ी। रोने लगी! इसने मेरी बेइज़्ज़ती क्यों की? इसने धोकेसे मुझे अपमानित क्यों किया?"

"उसके मिज़ाजकी वह तेज़ी" औघड़ने उत्तर दिया—"उसके बापसे उसको मिली है। बुधुआ भी परले सिरेका भावुक है।"

"एक बात और है," पादरीने कहा—"राधाकी प्रवृत्ति आनन्दोंकी ओर अधिक है। बचपनसे ही वह खाने और पहननेकी अच्छा-अच्छी चीज़ोंको प्रेम और लालचकी नज़रसे देखती है। इस ओर भ बुधुआको सावधान रहना होगा; अब अगर, एकाएक, वह राधाको भंगिनोंकी तरह गन्दी और मज़दूरिन-सी रखना चाहेगा, तो, अनर्थ हो सकता है।"

"नहीं, नहीं," अघोड़ीने कहा—"ऐसा होगा ही

नहीं। बुधुआ स्वयं भंगी-जीवनसे दूर रहना चाहता है। इसके लिये उसने कुछ पैसे भी इकट्ठा कर रखे हैं। आपसे तो सब कहा ही है। फिर, जब वह दो-के-दोनों ही आपके यहाँ नौकर हैं, तब, मेरे लिये कोई विशेष चिन्ताकी बात नहीं। आपकी दया दृष्टिसे सब अच्छा ही होगा।"

"मगर," पादरीने उत्तर दिया—"मेरा क्या ठिकाना। पैंसठकी उम्र हो गयी। मैं तो अब न जाने कब आपकी इस पुण्य-भूमि काशीके एक कोनेमें, मिट्टीमें, छिपाकर सुला दिया जाऊं। ख़ैर, देखा जायगा! हमारा स्वर्गस्थ पिता सब अच्छा ही करेगा।"

थोड़ा रुककर पादरी जानसनने आँखपरसे अपना चश्मा उतार कर उसे पोंछा फिर ज़रा चौंककर बोले—

"इस बार तो आप ३-४ बरसों बाद बनारस आये हैं। क्यों? इधर कहाँ रहना होता है?"

"किसी विशेष स्थान पर नहीं; कभी जङ्गलमें और कभी, समाजके शब्दोंमें, जङ्गलियोंमें।"

राधासे बोला कि आओ, खाया जाय। दोनों बैठ कर खाने लगे। उसी समय, राधाके मुँहमें एक मिठाई डालनेकी प्रार्थना कर, डेविडने उसे कुछ छेड़ दिया! बस, वह तो आग हो उठी! उसने दसों थप्पड़ उस युवकके मुह पर जमाये! बड़े ज़ोरसे चिल्ला पड़ी। रोने लगी! इसने मेरी बेइज़्ज़ती क्यों की? इसने धोकेसे मुझे अपमानित क्यों किया?"

"उसके मिज़ाजकी यह तेज़ी" औघड़ने उत्तर दिया—"उसके बापसे उसको मिली है। बुधुआ भी परले सिरेका भावुक है।"

"एक बात और है," पादरीने कहा—"राधाकी प्रवृत्ति आनन्दोंकी ओर अधिक है। बचपनसे ही वह खाने और पहननेकी अच्छी-अच्छी चीज़ोंको प्रेम और लालचकी नज़रसे देखती है। इस ओर भ बुधुआको सावधान रहना होगा; अब अगर, एकाएक, वह राधाको भंगिनोंकी तरह गन्दी और मज़दूरिन-सी रखना चाहेगा, तो, अनर्थ हो सकता है।"

"नहीं, नहीं," अघोड़ीने कहा—"ऐसा होगा ही

नहीं। बुधुआ स्वयं भंगी-जीवनसे दूर रहना चाहता है। इसके लिये उसने कुछ पैसे भी इकट्ठा कर रखे हैं। आपसे तो सब कहा ही है। फिर, जब वह दो-के-दोनों ही आपके यहाँ नौकर हैं, तब, मेरे लिये कोई विशेष चिन्ताकी बात नहीं। आपकी दया दृष्टिसे सब अच्छा ही होगा।"

"मगर," पादरीने उत्तर दिया—"मेरा क्या ठिकाना। पैंसठकी उम्र हो गयी। मैं तो अब न जाने कब आपकी इस पुण्य-भूमि काशीके एक कोनेमें, मिट्टीमें, छिपाकर सुला दिया जाऊं। ख़ैर, देखा जायगा! हमारा स्वर्गस्थ पिता सब अच्छा ही करेगा।"

थोड़ा रुककर पादरी जानसनने आँखपरसे अपना चश्मा उतार कर उसे पोंछा फिर ज़रा चौंककर बोले—

"इस बार तो आप ३-४ बरसों बाद बनारस आये हैं। क्यों? इधर कहाँ रहना होता है?"

"किसी विशेष स्थान पर नहीं; कभी जङ्गलमें और कभी, समाजके शब्दोंमें, जङ्गलियोंमें।"

"याने ?"

"इधर, एक इच्छा विशेषसे, मैंने सम्पूर्ण भारतकी दूसरी परिक्रमा की है।"

"आपकी वह इच्छा विशेष क्या थी ? क्या आप मुझे भी उसे जाननेका सौभाग्य दान दे सकते है ?"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं ; आपको तो, यदि आप न पूछते, तो भी, मैं बताता। मैं चाहता हूं कि इस देशके अछूतोंमें किसी तरह जीवनका मन्त्र फूंका जाय। मैं बहुत दिनोंसे इन ग़रीबोंके लिये कुछ-न-कुछ करनेको सोच रहा था और सोच रहा हूं। इधर जबसे बुधुआको जेल हुई तबसे तो मैं एक धुनसे किसी ऐसे मार्गकी खोजमें हूं, जिसपर चलाकर, परमात्माके इन अपमानित बच्चोंको सुखी कर सकूं।"

"कोइ उपाय सोचा आपने ?" पादरी जानसनने गम्भीर भावसे पूछा—

"उपाय तो बहुत दिनोंसे सोचे बैठा हूं ; मगर, समयकी इन्तज़ारी थी। अब, मेरे ख़यालसे, वह समय आ रहा है कि, अछूतोंको उठाया जाय। पिछले

दस-बारह बरसोंमें भारतकी सामाजिक और राजनीतिक अवस्थाओंमें जो क्रान्ति हुई है, उसे आप खूब जानते हैं। अब यही वक्त है इन अछूतोंको सम्भाल देनेका। इस समय यदि समाजके थोड़े-से ज़िम्मेदार ऊँच इन्हें उठायें, तो, बस, सब ठीक हो जाय। ये ६ करोड़ भूले-भटके भाई अपने स्थानपर आजायँ।"

"आप क्या सोचते हैं, इस समय, उसी समाजमें, आपको ऐसे लोग मिल जायँगे जो अछूतोंकी सहायताके लिये तत्पर हों, जिस समाजमें, आजसे बारह बरस पहले एक भी ऐसा प्राणी नहीं था जो उस अभागे बुधुआकी रधियाको पाल लेता?"

"मेरी तो ऐसी ही धारणा है पादरीसाहब कि," अघोड़ीने कहा—"आज हमें समाजसे, ग़रीबों और पीड़ितों और अछूतोंके कुछ सच्चे सेवक मिल जायंगे। और, अगर न मिलें, तो भी कोई हानि नहीं, मैं चेष्टा करूंगा कि ये अछूत स्वयं सँभलें, स्वयं अपनेको मनुष्य घोषित करें, स्वयं भयानक आग

लगायें और अपनी कमज़ोरियोंको भस्म कर डालें। आप इस प्रस्तावपर अविश्वास न करें। मेरा ख़याल है कि अगर कोई सच्चा सेवक हो, तो, केवल इन मूर्ख और घृणित किन्तु भोले अछूतोंको लेकर ग़दर करा सकता है। हाँ हाँ—मुस्कराइये नहीं,—ग़दर करा सकता है।"

"अगर ऐसा हो सके! अगर ऐसा हो सके!"

"अगर नहीं," अघोड़ीने उत्तर दिया—"ऐसा हो सकता है—ऐसा हो सकता।"

३४

झूले वाली!

"बुज़ुर्ग लोग ऊपर थे क्या? सच्चरित्रता पर तुम्हारे पिताजी कोई लेक्चर दे रहे थे क्या? हाँ न। यही बात तो तुम्हारे मुखपर अपना साइनबोर्ड लगाये

बैठी है। तुम स्वयं कुछ बोलो या न बोलो। ठहरो, इधर आओ! ज़रा पान खा लिया जाय। ए, अपने ख़याल में अलमस्त बाबू घनश्यामजी! ज़रा इधर मुड़ो यार! कहाँ बढ़े जा रहे हो? पान न खाओगे? ज़रा शोभा बढ़ा लो—अरे किसीसे आँखें चार करनी हैं।"

"उहँ! छिः!" घनश्यामजीने अन्यमनस्क भावसे, नाकको सिकोड़ा।

"देखो," तर्जनी अंगुली दिखा कर गुलाबचन्दने कहा,—"अगर यहींसे 'उह-छीः' का राग अलापोगे, तो, मैं आगे न बढ़ूंगा। कैसे बढ़ सकता हूं? तुम अभीसे सारा मज़ा किरकिरा किये दे रहे हो। अजी भंगिन है तो क्या उस सत्य कितना है। सुन्दरता कितनी है। उसके पास जितना रूप और तेज है, उतना, बहुत-सी ऊंच-कुमारियोंके पास भी नहीं। आख़िर है तो वह भी आदमी हो?"

मैं उहं-छिः इस लिये कह रहा हूं कि," घनश्याम जीने कहा—"यह दौड़-धूप फिजूल ही होगी। रंधिया अगर क्षणभर हाहा-हूहू लायक़ हो भी, तो

भी, उससे खेलवाड़ करना ठीक न होगा। मैंने कई बार कहा दुनिया पड़ी है। फिर ऐसा काम करनेसे फ़ायदा जलमें मज़ा मामूली और सज़ा दुनिया भरकी मिले। अभी आज तो मेरे बाबू जी ही लानत-मलामत कर—रह गये हैं, मगर, बातके ज़रा भी आगे बढ़ते ही समाज-का-समाज हमारे विरुद्ध हो सकता ... से कहता हूं जाने दो—उहं छि:!"

"नहीं जी," गुलाबने उत्तर दिया—"तुम डरते हो—व्यर्थ ही बाबूजी और समाज और दुनियाके भयके राग अलापते हो। रधिया भंगिनके लिये चारों ओर मजनूकी तरह बदनामी ली जाय इसे तो मैं भी ना-पसन्द करता हूं। मगर, इसकी ज़रूरत ही न पड़ेगी। वह भंगिनकी दरिद्र छोकरी है, हमारे सोने-चांदी और रूप-विन्यासको देखते ही हम पर लट्टू हो जायगी—तुम तो हंसी समझते हो मेरी बातको—हंसी नहीं, लट्टू हो जायगी, फिरहरीकी तरह नाच उठेगी। और; एकबार जहां पंछी पिजंड़ेमें आयी कि फँसी। और जब फँसी तब अपना राज है, अपना रंग है,

जबतक चाहेंगे छातीके सामने पिंजड़ा टाँगे रहेंगे—नहीं तो, फुरसे उड़ा देंगे। कोई देखेगा; कोई नहीं देखेगा। इस प्रसंगका अर्थ किसीको कुछ बताया जायगा, किसीको कुछ। बढ़े कहां जा रहे हो—पहले चलो पान खाओ!"

गुलाबने घनश्यामका हाथ पकड़ कर उसे तमोलीकी दूकानकी ओर बढ़ाया। अभी वह दस-पांच क़दम बढ़े होंगे कि, सामनेसे दोनोंका परिचित और स्कूल-मित्र बरकतुल्ला आता दिखाई पड़ा। उसे देखकर एक बार दोनों चमक उठे। घनश्यामने गुलाबसे कहा—

"वह बरकत आ रहा है, पहले उसे भी साथ लेलो, तब तमोलीकी ओर बढ़ो! ज़रा उससे भी पूछ लूं कि, वह रधियाके बारेमें कहां तक और क्या जानता है?"

"आह! नहीं, नहीं" तेज़ीसे गुलाबचन्दने कहा—"मैंने जो यह तुमसे कहा था कि रधिया बरकतके यहाँ कमाने जाती है वह बिलकुल ग़लत बात थी।

तुम्हारा मत जाननेके लिये, तुम्हें रधियाकी ओर आकर्षित करनेके लिये या अपने मौजी मनकी इस यात्रामें किसी-न-किसी तरह तुम्हें भी हम-सफ़र बनानेके लिये मैंने बरकतके घर वाला क़िस्सा गढ़ दिया था। मुहं फैलाकर तअज्जुबसे मेरी ओर ताकते क्या हो? क्या यह मेरी नयी [illegible] है, नयी आफ़त है? उधर न देखो! वह बरकत अगर तुम्हें देख लेगा, तो, फिजूल ही दाल-भातका मूसलचन्द हो जायगा। इधर आओ; इधर!"

गुलाबचन्द ज़बरदस्ती घनश्यामजीको तमोलीकी दूकानकी ओर घसीट ले चला। पटरीके सन्निकट पहुंच कर उसने कहा—"क्या इसे तुम मामूली विद्या समझते हो? जब चाहता हूं—और जिसके सामने चाहता हूं—ऐसेका वैसा और वैसेका ऐसा क़िस्सा गढ़ देता हूं, और अपना उल्लू (घनश्यामकी ओर इशारा कर) सीधा कर लेता हूं।"

घनश्यामजीने अपने हाथके बेंतसे गुलाबकी पीठ पर हल्की थपकी देते और मुस्कराते हुए कहा—"तुम

मार खाने लायक़ पाजी आदमी हो गुलाब! मुझीसे झूठ भी बोलते हो और मुझीको उल्लू भी बनाते हो?"

घनश्यामके हाथमें चार बनारसी, रसीले, पान देते हुए गुलाबचन्दने कहा—"इन्हें लो, ज़रा मुंहका जोबन चमकाओ—उंहं! चूक गये न! जनम बीता बनारसमें और पान खानेकी तमीज़ न हुई। बीड़ोंको इस तरह दबा कर पकड़ते हो मानों किसी भयानक सांपका मुहं पकड़ते हो! अब मेरी ओर क्या ताकते हो? बेवकूफ़ोंकी तरह बनारसका पान खाने चलोगे तो धोती ख़राब न होगी? लगा दो ज़रा सा चूना उस पर, नहीं तो, धोती ख़राब ही हुई समझो!"

बातोंके झोंकमें ज़रा कड़ी अंगुलियोंसे पान पकड़नेके कारण सचमुच घनश्यामजीकी धोती कत्थेके दाग़से लाल हो उठी! बेचारा खिसला उठा, मगर, लाचारी थी। तमोलीसे चूना मांग कर पानके दाग़ों पर लगाया और फिर दो-के-दोनों दुर्गाकुण्डकी ओर बढ़े!

"देखो" गुलाबने कहा—"अब रधियाका क़िस्सा तुम्हें बताता हूं। वह हर किसीके यहां झाड़ू देनेवाली मामूली भंगिन नहीं। अरे इस बारेमें तो कुछ कहना ही व्यर्थ है, तुम स्वयं देखते ही सब समझ जाओगे। वह यहांके सिगराके चर्चके पुराने पादरी जानसनके यहां बारह बरस तक पली है। उसका बाप और वह आज भी उन्हींके यहां नौकर हैं। इसकी मुझे और भी फ़िक्र है। अगर हम लोग रधिया पर हाथ न फेर सकेंगे, तो, कोई-न-कोई किरण्टा ही ले मरेगा। हिन्दूके घरकी चीज़ म्लेच्छोंके मसरफ़में आयेगी।"

"बड़े हिन्दू बनने वाले," घनश्यामजीने उत्तर दिया—"अजी क्या तुम उससे विवाहका प्रस्ताव करने जा रहे हो? नहीं। तुम तो उसे बाज़ारमें बिकने वाली मामूली फूल-मालाकी तरह कुछ पैसोंमें ख़रीदना, गले लगाना, मलना और आख़ीरमें सबकी आंखोंसे बचाकर फेंक देना चाहते हो! भला इससे उस 'हिन्दूके घरकी चीज़' की क्या रक्षा होगी? वह तो फिर भी किरण्टों और बरकतुल्लोंके पैरोंके नीचे

पड़ने और दली-मली जानेके लिये बाज़ारके एक कोनेमें रहेगी। इसीसे कहता हूं कम-से-कम तुम तो हिन्दू या ईसाईका नाम न लो। सीधसे कहो कि किसी ग़रीबकी यौवन-सम्पत्ति, रूप-निधि, देख कर मुहंमें पानी आ रहा है, उसे हम लूटनेकी कोशिश करने चल रहे हैं। और, लूटनेकी कोशिश करने चल रहे हैं यह सोचकर कि कहीं हमसे पहले दुनियाका कोई दूसरा डाकू उसे न लूट ले जाय। आयं! यही वक्तव्य ठीक है न? हां। सच बोलो। साफ़ बोल कर जो करो मैं तुम्हारे साथ हूं। तुम यदि पतित हो, तो, मैं 'पतितनको सरताज' हूं।"

"ख़ैर, ख़ैर, ख़ैर," गुलाबने कहा—"ज़रा जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाइये। शाम होनेको आ रही है। देर हो जायगी तो वह मिलेगी भी, तो, अन्धेरेकी ओढ़नी ओढ़े। वैसी हालतमें—ए, ए, बाबू साहब! इधर मुड़िये। नालेकी ओर नहीं। हमें नगवा नहीं जाना है। हम चल रहे हैं दुर्गाकुण्डसे थोड़ा आगे। वह—वह किस रानीकी कोठी है? अहं उसका नाम ही नहीं

याद आता—बड़हर, भिनगा—अजी कुछ होगा, उसीकी कोठीकी उस ओर बुधुआकी झोपड़ी है।"

दुर्गाकुण्डसे, बुधुआकी झोपड़ी तकका, कोई पांच मिनटका रास्ता दोनों दोस्तोंने चुपचाप और कुछ-कुछ धड़कते कलेजेसे तय किया। दूरहीसे झोपड़ीकी पहली झांकी देखते ही गुलाबने प्रसन्न होकर घनश्यामसे कहा—

"वह आगये! वह देखो! यही है हमारी रधिया! बापरे बाप! आज तो फांसी देनेका सामान है। इस आधे आषाढ़मेंही इसने सावनका सामान जुटा रखा है। झोपड़ीके सामनेवाले उस आमके पेड़ पर झूला डालकर झूल रही है। अर्रर्रे! देखते हो?—देखते हो? किस तरह सन्नसे झूल गयी! अरे, अरे! उस कुत्तेको देखो! वह किस उत्साहसे उसके झूलेके साथ दौड़ता और पीछे लौटता है! बापरे बाप! देखते हो इसे? इसे कह सकता है कोई बुधुआ भंगीकी लड़की?"

अभी तक उक्त बातें गुलाबचन्द रधियाकी ओर

देखता हुआ बोल रहा था। घनश्यामजी पर रधिया का क्या प्रभाव पड़ा यह देखनेके लिये जो उसने अपने दोस्तकी ओर देखा, तो, फ़ौरन ही ताड़ गया कि इस भंगिनकी बेटीके हुस्नका जादू धीरे-धीरे काम कर रहा है। उस समय घनश्यामजी एकटक उस झूले वालीको देख रहे थे। मानों दुनियामें उन्हें और उस झूलेवालीको छोड़कर और तीसरा कोई था ही नहीं।

२५

"सफाई"

बुधुआकी, दुर्गाकुण्डवाली, झोपड़ीको हम चाहें तो एक छोटा-सा, तीन कोठरियोंका, कच्चा मकान कह सकते हैं। तीनों कोठरियाँ भी छोटी-छोटी ही थीं। उनमेंसे एक कोठरामें रधियाने रसोईका सामान सजा रखा था और शेष दो अगल-बग़लकी कोठरि-

घोंमें, वे बाप-बेटी सोया करती थीं। झोपड़ीका अगला हिस्सा रंगिया था, अब, मिस-राधाके इच्छा-नुसार चूनेसे पुता हुआ था। उसकी पिछली ओर, बुधुआकी राय थी कि, दीवारके एक सिरेसे दूसरे सिरेतक काँटे बिछा दिये जाँय या काँटेदार पौधे लगा दिये जाँय जिससे—यद्यपि वे ग़रीब थे फिर भी, चोर लोग व्यर्थ ही उन्हें सतानेकी हिम्मत न कर सकें। मगर, राधाने अपने पिताका इस विषयमें विरोध किया और पादरी जानसनने भी—सलाह ली जाने पर—उसीकी राय पसन्द की।

राधाकी राय थी कि झोपड़ीके पीछे कांटे बिछाने से, या कटीले पौधे लगानेसे, उस स्थानका सौन्दर्य नष्ट हो जायगा। झोपड़ीकी चारों ओर आमके कई पेड़ थे। राधाका कहना था कि जब आम फलेंगे और आसपासके लड़के उन कच्चे-पक्के फलोंकी लाल-चसे इधर आवेंगे, तब, उन्हें काँटे कष्ट देंगे। और, लड़कोंके आम खानेमें बाधा पड़े यह बात लड़कपनसे भरे राधाके हृदयको स्वीकार न थी।

"मगर, राधा," बुधुआने अपनी बेटीसे इस आम और लड़कोंकी बात चलनेपर कहा था—"ये आमके पेड़ और इनके फल तो तुम्हारे नहीं हैं ।"

"क्यों ?" 'क्यों' का स्वर ज़रा लम्बाकर राधाने पूछा—"क्या पापाने इन्हें भी नहीं ख़रीदा है ?"

"ख़रीदा तो है," उत्तर मिला—"मगर पापाने ख़रीदा है, मैंने या तुमने नहीं। हम तो पादरी साहबकी मिहरबानीसे उनकी ख़रीदी हुई इस ज़मीन पर केवल एक झोपड़ी बनाकर रह रहे हैं।"

"मगर, पापाने" राधाने कहा—"इन पेड़ोंकी देखभाल तुम्हारे सिपुर्द कर रखी है। है न ? फिर, तुम्हीं लड़कोंको एक-दो आम खा लेने दिया करना। बेचारे कितनी दूरसे इन आमोंके लिये झुण्ड-के-झुण्ड आते हैं। क्या उनके, उन प्यारे बच्चोंके, इस आम-प्रेम पर तुम प्रसन्न नहीं होगे ?"

"मैं तो प्रसन्न हो जाऊंगा, मगर, अगर पादरी नाराज़ होंगे तब ? वैसी हालतमें तो वह हमसे भी यहाँसे हटनेको कह बैठेंगे।"

"टट, टट, टट !" तालूसे ज़बान सटाकर आवाज़ करती हुई राधाने कहा—"नो-नो ! पापा वैसे नहीं हैं। मैं उन्हें खूब जानती हूं। वह तो एक दिन मुझसे कह रहे थे कि राधा, तू किसीसे अपना ब्याह कर ले तो मैं वह ज़मीन हमेशाके लिये तुझे दे दूं। अरे, फ़ादर...।" अकसर, ईसाईयोंके बीचमें रहनेके कारण राधा बीच-बीचमें अंग्रेज़ी शब्दोंका प्रयोग भी स्वाभाविक ढंगसे कर बैठती थी—"अरे फ़ादर, पापा की फ़िक्र न करो। एक-न-एक दिन वह इस ज़मीनको हमें ही देंगे। और, चोरोंकी फ़िक्र भी न करो। मेरा जो वह 'स्पाई' है, उसके रहते-रहते रातको चोर और दिनको अपरिचित हमें तंग न कर सकेंगे!"

जिस समय राधाने अपने बापसे 'स्पाई'—याने वह कुत्ता जिसे गुलावने राधाके झूलेके साथ दौड़ते देखा था—की चर्चा की, उस वक्त वह उन दोनोंसे थोड़ी दूर बैठा दो-तीन मक्खियोंसे लड़ रहा था। मक्खियाँ रह-रह कर उसकी नाक या आंख पर बैठना चाहती थीं और वह गुर्रा-गुर्रा कर, अपने

मुंहको झटाझट फैला और फटाफट बन्द कर, उन्हें पकड़ने और उनकी गुस्ताख़ीकी सज़ा देनेकी कोशिश कर रहा था। राधाके मुंहसे अपना नाम सुनते ही वह सबसे झपट कर उन दोनोंके सामने आकर खड़ा हो गया और लगा दुम हिलाने और कूं-कूं कर राधाकी ओर ताकने। राधाने अपनी भाव-भरी आँखोंको नचाकर और सुन्दर मुखको मटकाकर कुत्तेको डांटा—

"तू यहां क्यों आया? गो—गो एण्ड सिट देयर—वहां आकर बैठ!"

स्पाई चुपचाप अपने पूर्व स्थानकी ओर लौट चला। राधाने अपने बापसे कहा—"फ़ादर, स्पाई सभ्यता नहीं जानता।"

"सभ्यता क्या बेटी?" बुधुआने आंखें साफ़ करते हुए राधासे पूछा।

कानके पास, अपने बालोंमें अंगुली डाल कर, धीरे-धीरे खुजलाती हुई राधा सोचने लगी कि वह अपने बापको "सभ्यता क्या है" यह किस तरह

समझावे। मगर, अन्तमें उसे अनुभव हुआ कि यह कार्य उसके लिये साधारण नहीं था।

"सभ्यता क्या है," उसने कहा—"यह तो मैं भी ठीक-ठीक नहीं बतला सकती; पापा जब किसी आदमीके साथ अकेलेमें बातें करते होते और मैं या कोई दूसरा लड़का उनके पास पहुंच जाता, तो, वह हम पर नाराज़ होते। कहते यह शिष्टाचार, एटिकेट, के विरुद्ध है। दो में तीसरेको, बिना बुलाये, नहीं शामिल होना चाहिये। पापाकी वही बात आज इस रुपाईके बिना बुलाये ही आ जानेपर मुझे याद आ गयी। मगर वह देखो! वह फिर हमारी ओर आ रहा है। नाम भी लेना मुश्किल है इस दानवका! ज़रा-सा आहट पाया और बस माथेपर सवार। "यू-यू!" राधाने रुपाईको पुनः डांटा—"डोण्ट, डोण्ट! मत आओ! वहां जाकर बैठो!"

बेचारा रुपाई एक बार पुनः हताश होकर लौट गया, एक बार पुनः पाजी मक्खियोंने उसकी नाक पर धावा बोल दिया।

घुघुआको इस नयी झोपड़ीमें आनेके पूर्व ही राधाने स्पाईका इतिहास सुना दिया था। वह कहानी भी विचित्र है। उसने कहा था, कि एक दिन वह, सवेरे, सिगराके बंगलेके बाहर घूमनेके लिये जा रही थी। जाड़ेका प्रभात था। जिस समय वह बाहर हुई उस वक्त भी चारों ओर कुहरा छाया हुआ था। मगर, प्रभात और सूर्य, पूर्ण वेगसे, कुहरोंके नाशमें लगे थे। बंगलेसे कोई दो-तीन फर्लाङ्ग दूर जानेपर उसे किसी जानवरके बच्चेका 'कों-कों'-स्वर सुनाई पड़ा। वह रुकी। ध्यानसे चारों ओर देखने पर उसने वहाँ जो कुछ पाया उससे एक बार तो वह सहम-सी गयी। उसने देखा एक सुन्दर-सी कुतिया बुरी तरहसे दो-टुकड़ोंमें कटी सड़ककी एक ओर पड़ी है। शायद किसी अमीरकी मोटर गाड़ी उस बेचारीकी पीठपरसे निकल गयी थी। अभागिन गर्भवती भी थी। क्योंकि, उसके शवके पास दो मरे हुए बच्चे पड़े थे, और एक बच्चा, जिसकी आंखें अभीतक बन्द ही थीं, उन्हीं मुर्दोंके पास कों-कों कर रहा था।

वह तमाशा देखकर राधा आगे न बढ़ सकी। उस समय वह भी बच्ची ही थी। रही होगी कोई नव दस बरसकी। उसने डरते-डरते उस जीते बच्चेको उठा लिया और उसको सर्दीसे बचानेके विचारसे, अपने कपड़ोंमें छिपाकर, पादरी पापाके यहाँ ले गयी। संयोगसे पादरीके घरकी कुतियाने भी उक्त घटनाके दो-तीन दिन पूर्व बच्चे दिये थे। पादरीकी रायसे वह अनाथ बच्चा भी उसी कुतियाके बच्चोंमें मिलाकर रख दिया गया और पादरीकी उस भलेमानस—यदि कुतियाके लिये दुनियाके भले-आदमी 'भलेमानस' शब्दका प्रयोग करने दें—कुतियाने उस बच्चेको भी पाल लिया।

इसके बाद, जब वह बच्चा बड़ा हुआ, तो, उसकी विचित्रता देखकर पादरी जानसन और उनके दूसरे मित्र दङ्ग रह गये। वह पूरा सवा दो फीट ऊँचा, चितकबरे रंगका, झबरा कुत्ता था। होश संभालते ही वह न जाने क्यों राधाको प्राणोंसे भी बढ़कर प्यार करने लगा। राधा उसे जो सिखाती, वह जल्द-से-

जल्द उसे सीख लेता। उसके इशारों और कुछ शब्दोंको तो वह आदमियोंकी तरह समझ लेता था। पादरी जानसनके बंगले और बगीचेमें, कहीं भी, राधा छिप जाती तो निःसन्देह वह अनाथ कुत्ता उसे ढूंढ़ निकालता। उसके इन्हीं गुणोंपर मुग्ध होकर बनारसका एक बंगाली सी० आ० डी० आफ़िसर, पादरी जानसनसे, उस कुत्तेको किसी भी दामपर ख़रीदनेको तैयार था। मगर, राधा या उसके पापाने उसे बेचा नहीं। उसके इन्हीं गुणोंपर मुग्ध होकर पादरी जानसनने उसका नाम "स्पाई" रखा था।

राधा जब पादरीके बंगलेको छोड़ अपने ग़रीब बापकी झोपड़ीमें आयी तब अपने साथ अपने प्यारे सहचर "स्पाई" को भी लेती आयी थी!

—०—

२६

चारोंखाने चित्त !

"कहिये !" मुग्ध घनश्यामका कन्धा पकड़कर झकझोरते हुए गुलाबने भाव-भरा सवाल किया—"देखते ही हुस्नको बीमार आँखें हो गयीं ?"

"अरे यार !" हक्के-बक्केसे घनश्यामजीने कहा।

"अरे यार...!" गुलाबने इशारेसे कहा—"देखो कहता था न कि, आफ़त है, ग़ज़ब है, सितम है, क़हर है, क़यामत है।"

"तुमने तो मुझे," घनश्यामजीने मस्त आँखोंसे गुलाबकी ओर देखा—"इसे भङ्गिन बताकर बुरी तरह डरा दिया था। मगर, कहां है यह भंगिन ? ओह ! ऐसी साफ़ और सुन्दर भंगिनें अगर पैदा होने लगें, तो, सारा क़िस्सा ही ख़त्म हो जाय। यह तो ईसाइन मिस मालूम पड़ती है।"

"सुना है, पादरी जानसन इसको बहुत प्यार करते हैं। ये दोनों—रधिया और उसका बाप बुधुआ—नाममात्रके पादरीके नौकर हैं। लड़की बाग़के फूलोंको सुबह-शाम सींच दिया करती है, और बाप, दिन भर बङ्गलाके फाटकके सामने बैठा बीड़ी सुलगाया करता है।"

"देखो न मोज़ा भी है और—चाहे ताज़ी पालिश न हो मगर—पैरमें जूता भी है। नीचे वह—उसे क्या कहते हो जी, साया?—विलायती घांघरा—पहने है, और ऊपरसे 'बाडी' पहनकर—उफ़! उफ़!! क्या आफ़तकी केसरिया चादर ओढ़े है! तिस पर ये हरे-भरे आमके पेड़, यह सन्ध्या! वाह गुलाब, तुमने आज मुझे बहिश्तका एक कोना दिखा दिया। मेरे भैया!" एकबार राधाकी ओर देखकर घनश्यामजी गुलाबसे लिपट गये!

"कैसे बेवक़ूफ़ आदमी हो?" गुलाबने उसे अपने हृदयसे दूर करनेकी व्यर्थ चेष्टा करते हुए कहा—"अरे हटो यार! वह देख रही है। वह देखो हस

पड़ी ! उफ़, या परमात्मा ! यह हँसी है या नशेका दरिया उँडेल देना है !"

घनश्यामजीने भी राधाकी वह मोहिनी हँसी देख ली जो इन दोनोंको आलिंगित होते देख सहसा उसके मुग्धावस्था-सुलभ यौवन-चञ्चल कपोलों पर नाच उठी थी। नशाका दरिया इनकी ओर भी आकर्षक तरंगे लेता हुआ दिखाई पड़ने लगा। अब दो-के-दोनों एकटक आंखें गड़ा कर, उस झूलेवालीको देखने लगे। वह भी इन्हें देखकर कुछ अधिक कलासे झूलने लगी। उधर मुड़कर, इधर मुड़कर, सामने सन्नसे—आहा हाहा !—निकल जाकर, लट्टूकी तरह नाच कर—जितनी तरहोंसे उस चुलबुल छोकरीको झूला झूलना आता था उसने इन दोनों सुफ़ेदपोशोंको—न जाने क्यों, प्रसन्नतासे दिखाये। एकबार सामने-सामने "पटेंग" लेती हुई, एकाएक, बीच ही में रुक कर, उसने आश्चर्य नाट्य करनेकी चेष्टा की। इससे उसे कुछ ज़रा-सा धक्का लगा। मगर, उसने उस साधारण चोटकी अनु-

भूतिको अपने मुख पर ऐसे मसख़रे ढङ्गसे अदा किया कि, ये दो-के-दोनों "आँख-बाज़" हँस पड़े। इस बारकी उनकी हँसी, मुस्कराहट नहीं, किलकारी थी। इसका अनुभव उस स्पाईने भी किया।

अभीतक राधाका दोस्त स्पाई अपनी उस सुन्दरी सखी या स्वामिनीको प्रसन्न करनेमें ही मशगूल था। उसने एक बार सड़कके उस कोनेपर दो सुफ़ेद कपड़े वालोंको देखा तो था; मगर, निरुत्साही नेत्रोंसे। वह तो उस समय अपनी सखीको खिला रहा था। उसका सुफ़ेदपोशोंसे क्या वास्ता! मगर, इस बार जो उधरसे "किलकारी" सुनाई पड़ी तो स्पाई चौंका! क्या कोई और भी उनके इस ख़ूबसूरत तमाशेमें शामिल है? वह अपने सामनेके दोनों पैरोंको ज़मीन पर टेक कर, "हिज़ मास्टरर्स वायस" की तस्वीरकी तरह, कान खड़े कर, क्रोधपूर्ण कौतूहलसे उनकी ओर देखने लगा।

"भुः; भुः!"

वह गुर्राया। मानो, कौन हो तुम हमारे बीचमें

पड़ने वाले ? सावधान ! मेरा गुस्सा बड़ा ख़राब है !

"कुत्ता भी पूरा ज़बरदस्त है," गुलावने कहा—"ख़ूबसूरत तो है ही; मज़बूत भी मालूम पड़ता है।"

"मगर यार, बड़ा भयानक है। गुर्रा कैसा रहा है। वह देखो, वह हम लोगोंसे कुछ कह...।"

"गो ! बाबू गो !!" राधाने ज़रा ऊंचे स्वरसे इन दोनोंसे कहा—"सामने खड़े होकर इधर देखनेसे स्पाई बुरा मानता है।"

इन दोनोंने राधाकी ओर इस तरह देखा मानों इनके कानों तक उसकी उपरोक्त बातें पहुंचीं ही नहीं। फिर, आपसमें बातें करने लगे—

"कैसा साफ़ बोलती है !"

"कैसा मीठा बोलती है !"

"जी करता है यहींसे फादूं और ठीक सामने ही कूदकर हैरानकी तरह खड़ा हो जाऊं।"

"अरे, ऐसा झड़पान देगा उसका कुत्ता कि आशिकीकी नस ढीली हो जायगी ?"

"वह कुत्तेको हम पर आक्रमण करनेसे रोकेगी।

तुम अविश्वास न करो। मैं जो कहता हूं। चिड़िया जालके पास आकर 'फुदुक' रही है!"

"चलो कुछ बातें करें। हां, इसमें हर्ज क्या है। यह तो ईसाइयोंकी तरह रहती है। इनके यहां तो परदा नहीं है।"

"मगर, बातें करोगे क्या?"

"यही कि हम उसके बापसे मिलना चाहते हैं।"

"क्यों मिलना चाहते हैं?"

"अहं! पहले चलो भी। वहां जैसी ज़रूरत होगी वैसी बातें की जायेंगी। हम सयाने हैं। इस छोकरी-से बातें करनेमें हिचकिच कैसी। आओ!"

दोनों एकाएक; राधा और उसके झूले और कुत्तेकी ओर बढ़े। यह राधाने भी देखा।

"नो! नो! डोण्ट कम! डोण्ट कम! बाबू; स्पाई काटेगा!"

वह फिर सन्नसे झूल गयी. मुस्कराने लगी, आंखें नचाकर ज़मीन आसमानको एक करने लगी।

स्पाईने भी उसके साथ सन्नसे एक चक्कर लगाया। इधर, ये दोनों बाबू भी आगेही बढ़ते गये।

अब राधाने तीव्र-स्वरमें, मगर लीलासे, कहा—

"नहीं आओ इधर! हमारा बाबा मना करता है।"

"हम कुछ पूछेगा।" इन दोनोंने कहा।

"नहीं—नो-नो!"

मगर, ये रुके नहीं, क्रम-क्रमसे—मचलते हुए—आगे बढ़ते ही गये। इस बार मानों राधाने अन्तिम सूचना दी—

"बस! आगे बढ़ोगे तो मैं तुम दोनोंके सिरपर झूल जाऊंगी। ख़बरदार! डोण्ट कम! गो—गो!"

मगर, इनके सिर पर तो हज़रत इश्क़ सवार थे। ये अब इस लायक़ नहीं रह गये थे कि रुकनेकी बात पर दिमाग़ लड़ाते। वह—फिर आगे बढ़े। वह—और आगे बढ़े! वह—राधाने इशारेसे कहा—रुक जाओ; मैं झूल जाऊंगी! मैं तुमसे डरने वाली

नहीं। वह—इनका पुनः बढ़ना! वह—आ हा हा हा! भूल गयी!!

उस दुष्ट लड़कीने—आह ताज्जुब!—सबसे भूलकर, बिजलीकी तरह तेज़ीसे, घनश्यामजीकी छाती पर अपने स-बूट चरणोंका एक ख़ासा धक्का दिया। वह चारोंख़ाने चित्त ज़मीन पर गिर पड़े! टोपी छटक गयी, काकुल बिगड़ गया, घड़ी जेब-के बाहरकी मिट्टी सूंघने लगी।

क्षणभर बाद, तीरकी तेज़ीसे, अपने पूर्व स्थान-पर लौट कर राधाने देखा, उसका प्यारा स्पाई, उस दूसरे आशिक़ मिज़ाज भले मानसकी खातिर कर रहा था!

२७

पहली पंचायत

रातके आठ-साढ़े-आठ बजे होंगे। कबीरचौरा-के भंगी-टोलेमें जो छोटा-सा म्युनिसिपैल्टिटीका

बनवाया हुआ भंगियोंके लिये मकान है, उसीके सामने, उस भंगी-टोलेके प्रायः सभी बूढ़े-जवान भंगी, उनकी स्त्रियाँ और बच्चे एकत्र थे। एक जगह गोलाकार बना कर दस-बारह बूढ़े भंगी बैठे थे, उनके पासही, और प्रायः उतनेही, जवान भंगी भी थे। औरतें इधर-उधर छितरायी हुई बैठी थीं। कोई-कोई अपने काले-कलूटे प्रेताकार बच्चेको लेकर, और कोई, चुड़ैलकी बहिन-सी अपनी सखीसे, विचित्र भाव-भङ्गियोंके साथ, बातें करती हुई।

"ओरी बहन," एकने अपनी सखीसे पूछा—"कौन है यह अघाड़ी? जंगलीकी माँ रजिया, कल कहती थी बहन, कि, अघोड़ी बड़ा भारी ओझा है। जिसको चाहता है, छू-मंतरमें, उसीका भूत और चुड़ैल उतार देता है। उसकी सूरत देखते ही बड़े-बड़े जिन और पाजी-से-पाजी भट भाग खड़े होते हैं। नटकी याद आते ही मेरे रोंगटे खड़े हो गये! रेउड़ी तलावके उस बरगदके पेड़वाले नटने मेरे भाईको हुचकाते-हुचकाते मार ही डाला था!"

"यह, अघोड़ी बाबा, बहन," दूसरीने अपने बिखरे और गन्दे बालोंको ज़ोरसे खजुआते हुए उत्तर दिया—"मेरी अम्मा कहती थी, सच्चा जोगी है, साधु है। इसीने बुद्धू चौधरीको ख़ून करने पर भी फांसीसे बचा लिया था। वह मन्तर मारा कि, साहब-सूबा और जज-कलेक्टरकी अक्किल भी गुम हो गयी। अघोड़ीकी ही कृपासे वह हमारी ही जातिकी रधिया—तूने देखा नहीं—मेम बनी फिरती है। हमें पहचानती ही नहीं। न जाने क्या गिटपिट-गिटपिट काबुली बोली बोलती है।"

"चुपरे! चुपरे!" गोलाकार बैठे हुए बूढ़ोंमेंसे एकने इन दोनोंको डांटा—"ये ससुरिनें एक पंचायत अलग ही कर रही हैं।"

"हां भैया फेकू," एक जवान भंगीको एक बूढ़ेने सम्बोधित किया—"अघोड़ी और बुद्धू चौधरीकी बात गौर करने लायक है। अघोड़ीने कल, बेनिया वाले हमारे भाइयोंको समझाते हुए कहा था कि, अगर तुम अछूत अपनी कमज़ोरियोंको दूर कर एक हो

जाओ, तो, तुम भी संसारके अच्छे-से अच्छे लोगोंमें आदर पाने लायक़ हो सकते हो। तुम अछूत बने हो अपनी ला-पर्वाहीसे। नहाते तुम नहीं, अपने शरीरको धोते तुम नहीं, हमेशा गन्दगीसे तुम लिपटे रहते हो—ऐसी हालतमें रहनेवाला तो समाजका अछूत समझा जायेहीगा; फिर चाहे वह संसारके किसी भी भागमें क्यों न पैदा हुआ हो।"

"अरे दादा," एक युवकने कहा—"मैं तो खुदही कलके बेनियाके 'जुटाव' में था। ओ हो हो हो! ऐसी-ऐसी ज्ञानकी बातें अघोड़ी बाबाने हमें बतायीं कि बस-रे-बस! उन्होंने समझाया कि हमें नशाकी चीज़ोंको काममें लाना बन्द कर देना चाहिये, आपसमें गाली-गलौज और रोज़-रोज़का लत्तम-जुत्तम करना रोकना चाहिये, चोरी करना और अपनी ही बिरादरी और महल्लेकी परायी बहू-बेटियोंपर बुरी नज़र डालना बन्द कर देना चाहिये। बच्चोंको, हज़ार उपाय करके भी, कोई हुनर—चाहे वह बेना या सूप या पंखा बनाना ही क्यों न हो—सिखाना चाहिये। बन

पड़े तो उन्हें पढ़ाना भी चाहिये। क्योंकि, अघोड़ीके शब्दोंमें, जनम-भर शहरके लोगोंका पाख़ाना फेंक कर गुज़र करना तो नरक भोगनेके बराबर है।"

"नरक तो है ही भैया," एक बूढ़ेने खाँसते हुए कहा—"सारी ज़िन्दगी, केवल लोगोंका मैला फेंक कर गुज़र करना पूरा नरक-दण्ड है। सुबह-शाम जब, पैसे वाले और अपनेको 'ऊँच' कहाने वाले लोग, ईश्वरचिन्तन और हवा-ख़ोरीकी तैयारी करते हैं उस वक्त हम क्या करते हैं। या तो कूड़ा-गाड़ीकी गन्दी हवासे अपनी साँसोंमें ज़हर भरते हैं या पाख़ानोंमें झाड़ू देकर, अपने माथे पर मैलेका मुकुट धारण कर, पतितोंके सरदारकी तस्वीर बनते हैं। और, इतना करने पर भी हम प्लेग या हैजा, खाँसी या बुख़ारसे मरते रहें, कोई हमें पूछने वाला नहीं। कोई हमारी दवा-दारूकी फ़िक्र करने वाला नहीं। यह नरक-भोग नहीं तो और क्या है?"

"तब दादा!" एकने दरियाफ़्त किया—"इस

"मगर," किसी बूढ़ेने कहा—"अघोड़ी बाबाका कहना है कि, पापकी कमाईमें बरकत नहीं होती। उन्होंने बताया है कि सैकड़ों डोमों और अछूत-जाति-के दूसरे लोगोंने उनसे अपनी-अपनी चोरियोंकी और बड़ी-से-बड़ी चोरियोंकी कहानियां सुनायी हैं। मगर, फिर भी, इतने रुपये चोरीसे पाने पर भी, उनमेंसे कोई सुखी नहीं था। कोई पैसेसे बे-फ़िक्र नहीं था। सभी रोगी या दुखी या बन्दी थे! फिर? ऐसी चोरीसे फायदा जिससे न लोक बने और न परलोक? इसलिये, अघोड़ी बाबाका कहना है कि—हमें अपने पसानेकी कमाई खानी चाहिये। पसानेकी कमाई खानेवालेपर परमेश्वर खुश होते हैं। गृहस्थीमें बरकत और परिवारमें सुलह होती है। पसीनेकी कमाई खानेसे, बे-कुसूरोंकी आह, हमारे पीछे अपमान और तिरस्कार, रोग और बला बन कर नहीं लग सकेगी।"

इसी समय कबीर चौरावाले म्युनिसिपलपाख़ानेके पाससे आवाज़ आयी—

बुधुआकी बेटी

"अरे फेकुआ!"

"आया! अरे आया!" आवाज़ लगाकर फेकुआ उठा और पुकारनेवालेकी ओर बढ़ा।

"किस मुहल्लेमें 'काम' होगा बेटा!" मानों मुहँमें पानी भर कर, एक बुड्ढे डोमने, पासके किसी जवानसे पूछा।

"अरे मैं क्या जानूं, भला अपना भेद कोई बताता है? इस लौंडेने जो अभी फेकुआके 'काम' की बात सबके सामने कह दी है इससे वह बहुत नाराज़ होगा। इस नरेसवाको बिना दो-चार धौल जमाये, छोड़ेगा नहीं।"

"ठेंगा धौल जमायेगा साला फेकुआ!" दूसरे नरेसवा नामक, युवक भंगीने उत्तर दिया—"मैं तो अघोड़ी बाबाका चेला हूं। मैंने ताड़ी छोड़ दी है, दारू छोड़ दी है, कल परसों तक दो-चार चिलम और—'जिसने न पी गांजेकी कली, उस लड़केसे लड़की भली'के– मज़ेसे फूक कर इसे भी छोड़ दूंगा। मैंने तो अघोड़ी बाबासे प्रतिज्ञा की है कि मैं, न खुद चोरी

करूंगा और न, भरसक, किसीको करने दूंगा। फेकुआ साला अभी पंचायत छोड़ कर मुकबिरसे बातें करने गया है। रामदोहाई; मैं सब जानता हूं। सुबह होते ही अघोड़ा बाबाको ख़बर करूंगा।"

"मुकबिर क्या नरेसवा भैया ?" किसी दस-बारह बरसके अज्ञान भङ्गीने नरेसवासे पूछा—"मुकबिर किसे कहते हैं रे ?"

"अरे घरके भेदियाको—बिभीषणको! हम चोरोंको, पहले, पैसोंवाले वा मालदारोंके नज़दीक रहनेवाले मालका पता देते हैं। उन्हीं भेदियों या मुकबिरोंके कहे मुताबिक हम सेंध लगाते हैं आम-दनीमें इन मुकबिरोंका भी हिस्सा होता है।"

"अरे बेटा!" एक बुड्ढेने कहा—"अब तो कल-जुग है न। लोप हो गया लोप इस चोरी करनेकी विद्याका। नही तो, हमारा दादा झिनकू कहा करता था कि, उसका ससुर कलपू डोम, दो कोड़ी गावोंके चोरोंका सरदार था। बड़े-बड़े ज़मीन्दार और दरोग़ा कलपू सरदारसे डरा करते थे। क्योंकि, उसकी चोर-

पलटनमें तीन सौ और दो-बीस और पाँच चोर थे। कलपू चौधरी ख़ुद चोरी नहीं करता था। वह तो दिनमें अपनी कच्ची बखरीमें बैठा ताड़ी और रोहू मछली उड़ाया करता और रातमें मसानमें मुर्दोंकी खोपड़ी जगाया करता था। अच्छत और सरसों और रोली और काले तिलसे वह खोपड़ियाँ चेताता और फिर इन्हीं चीज़ोंकी एक-एक चुटकी, चोरी करने जानेके पहले, अपने सागिर्दोंको देता। 'घरमें सेंध लगाकर घुस जानेपर'—वह सागिर्दोंको बताता—'इन चावलों और सरसों और तिलोंको अन्धकारमें फेंक देना। ये उसमें जुगनूकी तरह चमक-चमक कर नाचने लगेंगे और जहाँ माल होगा वहीं जाकर स्थिर होंगे? बस चुपचाप रुपये कमाकर चले आना। ये, मन्त्रबलसे, पुनः मेरे पास चले आवेंगे।' ऐसी थी यह चोरीकी विद्या किसी ज़मानेमें। जब चोरीके लिये मसान जगानेवाले वीर चोर थे, तब, इस कलामें बरकत होती थी, इज़्ज़त मिलती थी। अब तो चोर नहीं रह गये, सब साले छिछोर हैं छिछोर!"

क़िस्सेको समाप्त कर वह बूढ़ा डोम एकके बाद दूसरी और तीसरी और चौथी और पांचवी डकारें लेने लगा। उसके डकार लेनेके ढंगसे ऐसा मालूम होता था मानों उक्त क़िस्सेको सुनाकर उसने कोई अनमोल बात अपने साथियोंको बतायी है। उसने मन-ही-मन अपनी स्मरण-शक्तिको आदर्श और कहानी कहनेके ढंगको अद्वितीय समझा।

—o—

३८

चोट लगी क्या ?

"स्पाई, स्पाई! नहीं, नहीं! इधर आओ!!"

राधाने उस दूसरे भले आदमीपर विपत्ति देख कुत्तेको डांटा और पुकारा। स्पाईने खुद भी, बाबू गुलाबचन्दको आहत नहीं किया। केवल पछाड़कर छोड़ दिया। मगर, बाबू साहबके तो स्पाईके झपटते

ही होश हिरन हो गये। छाती धक् से बोल उठी, कलेजा मुंहमें आ गया! क्षणभरमें सारा शरीर पसीने-पसीने हो गया। स्पाईका वह भयङ्कर मुंह देखकर ही उन्हें निश्चय हो गया कि अब जानकी ख़ैर नहीं। वह धम्मसे ज़मीनपर ढेर हो गये! ऐसी दम्मी साधी कि स्पाई भी एक बार चकरा कर दूर भाग गया!—आदमी है या मुर्दा ??

दोनों आशिकोंने ज़रा सँभाला लेते ही पहले अपनी चारों ओर नज़र दौड़ाया। किसीने उनके इस पतनको देखा तो नहीं? मगर, अफ़सोस! फ़क़त किसीने ही नहीं, कई आदमियोंने देखा! एक एकावान तो, पूरी सवारी रोककर, सामने सड़कपर खड़ा हो गया और लोट-लोटकर हंसने लगा!

एक क्षणमें दोनों उठकर खड़े हो गये। एकबार इधर हाथ मार कर कपड़ा झाड़ा, एक बार उधर। लपककर टोपी और उसके आस पास जो चीज़ें दिखाई पड़ीं उन्हें उठाकर यथा स्थान रखा; और फिर, बिना अपनी नायिकाकी ओर देखे ही, तीरकी तरह, सड़ककी

ओर लपके। सड़कपर पहुंचने पर उन्होंने न उत्तर देखा और न दक्षिण, बस जिस ओर पैर बढ़े और रास्ता मिला, उधर ही वह बढ़ते और झपटते चले गये! कुछ दूर जानेपर उन्हें मालूम हुआ कि वह दुर्गाकुण्डकी ओर नहीं, संकटमोचनकी ओर चले जा रहे थे, जो, घर लौटने या चौक जानेकी दृष्टिसे, बिलकुल उलटा रास्ता था।

पहले, संकटमोचनसे पहले पड़नेवाले—नालेवाले पुलपर दोनों बैठ गये, और अब, ज़रा सहूलियतसे अपनी पोशाकके मुंह परकी मिट्टी पोंछने लगे।

"चोट लगी क्या?" गुलाबने घनश्यामसे पूछा—"मैंने तो ऐसी दम्मी साधी कि, वह कुत्ता पूरा गधा बनकर रह गया। हज़ार शिकारी हों बच्चू; पर मेरी चालाकीके आगे एक न चली। मगर, तुम्हें शायद चोट लग गयी है। क्यों? बोलते क्यों नहीं?"

"चोट," घनश्यामजीने उत्तर दिया—"बाहर तो कुछ वैसी नहीं लगी है; मगर हां, भीतर पीड़ाका अनुभव होता है। तुमने देखा नहीं, उस खूबसूरत

पाजीने ठीक मेरी छातीपर, मेरे दिलपर, जूतेसे मारा !"

"उफ़ ! अजीब माशूक़ है।"

"गज़ब है, गज़ब ! भंगीकी लड़कीका यह मजाल कि हमारी छातीपर जूते मारे !"

"मगर, सरकार !" गुलाबने बनानेवाली चापलूसी की—"मैंने पहले ही अर्ज़ किया था कि, चाहेवह भंगीही की लड़की क्यों न हो, मगर, पली है साहबोंके बीचमें—बल्कि, साहबोंके गुरुओं या पुरोहितोंके बीचमें। वह भला हम काले हिन्दुस्तानियोंको क्या समझेगी।"

गुलाबने हज़ार समझानेकी चेष्टा की; मगर, घनश्यामजीका क्षोभ राधापरसे कम नहीं हुआ। वह रह-रहकर यही कहते कि—"इस भंगिनकी बेटीने मुझे जूतेसे, और सो भी ललकार कर, मार दिया ! इस आशिक़ीके फेरमें आज नाक कट गयी मेरे ख़ानदानकी। जी करता है इसका बदला लूं—क्या ही अच्छा होता अगर वह छोकरी न होकर, भंगीका, छोकरा हुई होती।

जूतोंसे पिटवाता सालेको ! गुण्डोंसे नाक कटवा लेता, और तब, बतलाता कि, नीच जातवालोंको, ऊँचोंसे, सभ्यता पूर्वक और नम्र व्यवहार करना ही चाहिये।"

"मैं पूछता हूं," गुलाबने कहा—"अगर आख़िरीमें भी ऊँच-नीचका इतना ख़याल था, तो, तुम गये ही क्यों उस नीच जातिकी छोकरीके नज़दीक ? और, अगर गये, तो, अब रोओ मत। उसका जो कुछ परिणाम हुआ भोगो ! यह तो 'प्रेमको पंथ है,' 'तरवारकी धार पै धावनो है' । अभी जूते ही देखकर घबरा गये ! चलो, लौटा जाय। घबराओ मत, अब मैं ख़ुद भी दुर्गाकुण्डकी ओरसे नहीं लौटूंगा। गोकि, अन्धेरा गाढ़ा हुआ जा रहा है, फिर भी, हम लौटें उस नालेकी ओरसे—ज़रा और आगे बढ़कर। अब, कम-से-कम आज तो, उस छोकरीसे फिर आंखें मिलानी, मुझ जैसे मर्दोंके लिये, ग़ैर मुमकिन है। हां, ज़रा घड़ीमें देखो तो, कितने बजे हैं ?"

मगर, यह क्या ! घनश्यामजीकी जेबमें उनकी घड़ीही नदारद !

"अरे यार!" खिन्न भावसे माथेपर शिकन देकर घनश्यामने कहा—"कई चीज़ें उस दुष्टके पास ही छूट गयीं। मेरी जेबमें तो घड़ी ही नहीं है?"

"घड़ी वहीं छोड़ आये! ताज्जुब! बड़े डरपोक आदमी हो। मुझसे कहते तो मैं ही रुककर सब चीज़ोंको ढूंढ़ और सहेज लेता। और भी कुछ छोड़ा है कि केवल घड़ी ही?"

"कई चीज़ें जेबमें नहीं हैं, शायद एक चिट्ठी भी वहीं छूट गयी, पेन्सिल भी,—उफ़! उफ़!!"

"क्यों? उफ़, उफ़, क्यों कर रहे हो? क्या कलेजेमें दर्द हो रहा है? चोट ज़्यादा लगी है?"

"अजी, चोटके लिये उफ़ नहीं कर रहा हूं," उत्तर मिला—"मगर, मुफ़्तहीमें उसने अपमान कितना किया। मिला कुछ भी नहीं, आंखें भी मज़ेमें न सिंक सकीं, और अपमान और बेइज़्ज़ती और नुक़सान हुआ दुनिया भरका। ऐसा गुस्सा आता है उस लड़कीपर कि, अगर वह इस वक्त दिखाई पड़े, तो, मारे थप्पड़ोंके उसका मुंह लाल कर दूं।"

"औरतपर हाथ छोड़ोगे? नः, नः। यह वीरोंके लिये शोभाकी बात नहीं!" गुलाबने सूखी मुस्कराहटसे कहा—"कम-से-कम मैं तो ऐसा, इस जनममें, नहीं कर सकता।"

"अजी फ़िज़ूलकी बातें बघारते हो," घनश्यामजी चिढ़े—"अगर औरतें मर्दोंपर पैर चलायेंगी, तो, मर्द क्या औरतोंसे कम हैं? वह भी ज़रूर, ज़रूर, ज़रूर, हाथ छोड़ेंगे। मैं पहले ही तुमसे कह रहा था कि किस गन्दे स्थानपर चल रहे हो। मगर, तुम तो कमअक़्लों और जल्दबाज़ोंके सरदार हो। आख़िर में ख़ुद भी बेइज़्ज़त हुए और साथही मुझे भी ले डूबे!"

"कलपते क्यों हो? बहुत रंज है, तो, जाओ घर लौट माँग लाओ!"

"चलो!" घनश्यामने उत्तेजित रूपसे उठते हुए कहा।

"नाः!" गुलाबने उत्तर दिया—"मैं नहीं जाने का। मैं तो इतनी बेइज़्ज़तीको कुछ बहुत बड़ी हतक-इज़्ज़ती भी नहीं समझता। माशूक़ बुलबुल और

शरारती होते ही हैं ; और, आशिक़ीके रास्तेकी दोनों ओर लात-जूतों और अपमानोंकी खेती हमेशा लह-राया ही करती है। घड़ी और चीज़ें तो मुनाफ़े में छूटी हैं। गोया हम, इश्क़का बयाना घड़ीके रूपमें दे आये हैं। गोया इस ठोकर और धक्केके रूपमें हमें उन चीज़ोंकी रसीद मिली है। चलो, अब चलें। छोड़ो घड़ीका मोह। थी कितने वाली ? वही जिस-को तुमने फ़ौव्वारे वाली दूकानसे अस्सी रुपयेमें ख़रीदा था ? उहँ ! तुम लखपती हो। रधिया जैसी 'चीज़' पर आज अस्सी न्यौछावर हो गये तो क्या हुआ।"

"उफ़ ! गुलाब !" घनश्यामजी कुछ कहते-कहते चुप हो गये !

"अब आजही से इस 'उफ़' और 'आह' की झड़ी लगानेकी ज़रूरत नहीं है। चलो, उठो !"

घनश्यामजी लड़खड़ाते-से उठे और गुलाबके गलेमें हाथ डालकर, लम्बी सांसे खींचते और गुन-गुनाते हुए, आगे बढ़े—

मेह की तुझसे तवक्का थी
सितमगर निकला,
मोम समझे थे तेरे दिल को
सो पत्थर निकला।

"बाबू, ओ बाबू!" दोनोंके पीछेसे किसीकी बाँसुरी-सी आवाज़ सुनाई पड़ी। दोनोंने रुककर पीछेकी ओर देखा।

"ओहोहो!" गुलाबने खिलकर कहा—"यह तो वही है। इधरही आ रही है—बापरे बाप! घनश्याम, अब लात खानेका पुरस्कार मिलेगा। ठहरो!"

"वह हाथमें मेरी घड़ी और दूसरी चीज़ें लिये हुए है। कुछ झेपी भी है—उफ़! ठहर जाओ!"

दोनों, पुलसे थोड़ा आगे, बीच सड़कपर रुककर, गुदगुदो-भरी हवा की तरह आती हुई, उस खूबसूरत भंगिनको देखने लगे!

घनश्यामजी और गुलाबचन्द

२६

दूसरी पंचायत

वहाँके सुधारवादियों और अघोड़ी मनुष्यानन्दका तेज पाकर उत्साहित, अपढ़, पीड़ित, तिरस्कृत बेचारे भंगियोंको दूसरी पंचायत अलईपुर मुहल्लेके एक चौड़े मैदानमें हुई। इस बारकी दलितोंकी भीड़ पहली पंचायतसे, कहीं गाढ़ी थी। कोई पाँच सौ भंगी, कई सौ मेहतर और पचासों उच्च जातियोंकी स्त्रियाँ और बच्चे भी इस बार उपस्थित थे। इस पञ्चायतके लिये बनारसके कुछ सच्चे अछूत सेवकोंने वह भी ख़ासा किया था जिसे अंग्रेज़ीमें "प्रोपागैण्डा" या हिन्दीमें "प्रचार" कहा जाता है।

शहरके "पवित्रों" में यह बात फैल रही थी कि प्रचण्ड योगी, मनस्वी मनुष्यानन्द इन दिनों अभागे "पतितों" के उत्थानके लिये जी-जानसे जुट पड़े हैं।

उन्हें कोई पचास नवयुवक "ऊंच" ऐसे मिल गये हैं जो उग्र विचारोंसे पूर्णतया सहयोग करते हैं। और सत्यके सम्मुख, मनुष्यताके सम्मुख, न्यायके सम्मुख इस ढोंगी समाजको तृण बराबर भी महत्व नहीं देते। पुलीसके दफ़्तरमें तो यहां तक ख़बर पहुंची थी कि, ये युवक, बिना किसी संकोच या सिहरके इन "नीचों" के टोलोंमें चले जाते हैं। जैसे कोई अपने परिवारके साथ बैठकर दुख-सुख कहे-सुने, वैसे ही उनसे दुख-सुख कहते-सुनते हैं। उनकी ठण्ढी साँसोंको, कण्टकित होकर सुनते हैं—उनकी निस्तेज, निराश आँखोंको सजल भावसे देखते हैं। उनसे जीवनके उन प्रश्नों पर गम्भीरतासे विचार करनेको कहते हैं जिनका भीतरकी पवित्रतासे सम्बन्ध है। उन्हें स्वच्छ रहनेका मन्त्र भी देते हैं और—ज़रूरत पड़नेपर—पैसे भी।

बुधुआका नाम भी शहरके कुछ हिस्सोंमें, भंगियोंके नेता रूपमें, ख्याति प्राप्त कर रहा था। उसके बारेमें लोगोंका कहना था कि अघोड़ी मनुष्यानन्दके

प्रसादसे वह पत्थरसे पारस हो गया है। अघोड़ीहीके कारण वह फाँसीसे बचा, अघोड़ीहीके कारण अपनी छबीली लड़कीके साथ पादरी जानसनके यहाँ आराम की नौकरी कर रहा है, अघोड़ी हीके कारण पादरीने उसे और उसकी लड़कीको दुर्गाकुण्डके पास वह ज़मीन ख़रीदकर दे दी है, और अब, उन्हीं अघोड़ी हीके कारण वह अपनी जातिका नेता बना जा रहा है। वह साफ़ और पवित्र तो ऐसा रहता है कि लोग उसे देखकर दङ्ग रह जाते हैं। इधर उसने, दृढ़ प्रतिज्ञा करके, मांस आदि खाना तो छोड़ ही दिया था, अब, बीड़ी तक नहीं छूता। केवल बनारस हीके नहीं, आस-पासके अनेक कस्बों, देहातों और शहरोंके दलितोंमें बुधुआ साधुकी तरह मशहूर हो गया। इस बारकी पंचायतके लिये जो इतने भंगी इकट्ठे हुए, उसमें बुधराम चौधरीके प्रभावका ख़ासा हाथ था।

संध्याके साढ़े-छ या सात बजे, जब बुधुआ आ गया तब, पंचायत शुरू हुई। महीनेके कृष्णपक्षका

चौथा या पाँचवां दिन था, और बेचारे ग़रीबोंके पास आधुनिक सभाओंके संयोजकोंकी तरह चन्देके पैसोंकी भरमार नहीं थी कि, गैस-बत्ती आदिकी व्यवस्था करते। अस्तु, दुनियाके अन्धकारमें भटकने-वालोंकी सभा अन्धकारहीमें आरम्भ हुई! सभा आरम्भ होते-होते वह भीड़ कुछ और बड़ी हो गयी। अब कुल मिलाकर हज़ारसे कम दलित वहाँपर न एकत्र रहे होंगे।

सबसे पहले बुधुआने अपना भाषण आरम्भ किया। वह उस जमातके बीचमें खड़ा होकर बोला—"भाइयो, आजकी पंचायतमें अघोड़ी बाबा भी आने-वाले थे, मगर, जब मैं उन्हें बुलानेके लिये उनकी तलाशमें गया तब मालूम हुआ कि, वह कहीं और चले गये हैं।" इसपर एक ओरसे आवाज़ आयी कि—"बुधराम चौधरी, हम बीस आदमी तो यहाँ से बीस कोस दूरसे आये हैं, और आये हैं केवल बाबा साहेबकी वे ज्ञानकी बातें सुनने जिनसे वह हमारा बेड़ा पार लगाना चाहते हैं।" मगर, बीच हीमें

रोकनेवाले इस परदेशी वक्ताको दूसरे भंगियोंने डाटकर चुप कर दिया—"ठहरो, पहले बुधराम चौधरीकी सब बातें तो सुन लो। यह वही बोलते हैं जो अघोड़ी बाबा इन्हें बताते और समझाते हैं।" बुधुआ आगे बढ़ा—"भाई, अघोड़ी बाबाके दर्शन, यदि ईश्वरकी कृपा हुई तो, तुम्हें ज़रूर मिलेंगे, और; आज ही मिलेंगे। तबतक, थोड़ेमें, मैं आपको यह बतलाना चाहता हूं कि क्या करनेसे हमारा, इस सामाजिक नरकसे, उद्धार होगा। हमारे लिये सबसे ज़रूरी बात यह है कि हम सब तरहकी गन्दगियोंको छोड़कर सफ़ाईका जीवन बिताना सीखें। आप कहेंगे—अघोड़ी बाबाके साथ रहकर बुधुआ बढ़-बढ़कर बातें हांकने लगा है। भला, ज़्यादा-से-ज़्यादा पांच, सात या दस रुपये महीने कमानेवाला ग़रीब परिवारी किस तरह उस सफ़ाईका जीवन बिता सकता है, जिसे केवल अपनीही सम्पत्ति समझकर अपनेको 'ऊंच' कहने और समझनेवाले हमें 'नीच' और अपवित्र कहते हैं। मगर नहीं, आपका ऐसा सोचना

व्यर्थ भी होगा और आपके हितोंका घातक भी। सफ़ाईका सम्बन्ध, पैसेसे अधिक मनसे है। एक धोती, एक कुरता और एक ही अंगोछा रखनेवाला प्राणी भी—अगर ज़रा-सा हाथ-पैर हिलानेमें आलस्य न करे तो—साफ़ और ख़ूब साफ़ रह सकता है।" भीड़मेंसे कुछ उत्सुकोंने सवाल किया—"कैसे चौधरी? कैसे सरदार? ज़रा हमें भी बताओ कि एक ही धोती और कुरता-अंगोछा वाला ग़रीब किस तरह साफ़ रह सकता है?" बुधुआने उत्तर दिया—"इस सवालका जवाब तो यहाँपर इकट्ठे सभी लोगोंको मालूम है। अगर इस वक़्त यहाँपर स्त्री और बच्चोंको छोड़कर नौ सौ दलित भी हैं, तो, यह निश्चय है कि उनमेंसे आठ सौसे ऊपर लोग ज़रूर ही एक या एकसे अधिक बार सरकारी नरकों—जेलों—की सैर किये हुए होंगे। क्या मुझे उन लोगोंको यह बताना होगा कि जेलोंमें भी, अभागे क़ैदियोंको उतने ही कपड़े मिलते हैं जितनेकी चर्चा मैंने अभी की है। और क्या यह भी मुझे बताना होगा कि वहां उतने

ही कपड़े किस सफ़ाईसे रखे और व्यवहारमें लाये जाते हैं। कपड़े तो अगर रोज़ पानीहीसे, ज़रा ध्यान पूर्वक, साफ़ कर लिये जायँ, तो, गन्दे नहीं रह सकते। साबुन और धोबियोंका ज़माना तो अब बढ़ा है। पहले तो सब लोग अपनी सफ़ाई स्वयं ही कर लेते थे। मेरा तो कहना है कि अगर, अपने काम निपटा कर, हमलोग रोज़ स्नान कर लिया करें और अपने तथा अपने बच्चोंके कपड़ोंको कचार लिया करें, तो, हमारी गन्दगी एकदम दूर हो जाय।"

इसपर किसीने पूछा—"चौधरी, हमारे पास कचारने लायक़ कपड़े ही कहां होते हैं। हम तो शहर और गांवके लोगोंके पुराने-धुराने उतारे हुए कपड़ोंसे अपना गुज़र करते हैं। वे कपड़े ऐसे थोड़ी ही होते हैं कि रोज़-रोज़ कचारे जा सकें। हमारे शहरी भाइयोंके पास तो, फिर भी, 'कपड़े' कहलाने लायक़ कुछ चीज़ें होती हैं, क्योंकि वह शहरमें रहते हैं। मगर, देहाती दलितोंके पास एक लंगोटी छोड़कर और होता ही क्या है जो वह उसे कचारें और साफ़ रखेंगे?"

दूसरे कोनेसे खड़ा होकर कोई महा कलूटा और कमरमें एक चिथड़ा मात्र लपेटे हुए राक्षसाकृति डोम कहने लगा—"हज़ूर; हमें तो देहातवाले कुरता पहनने ही नहीं देते। कहते हैं, ससुर भंगीकी जात और पहनोगे ऊंचोंकी तरह कुरते! अगर हम लङ्गोटी छोड़कर घुटने इतनी ऊंची धोती भी पहनें, तो, हमपर बिना मार और गालियोंकी वर्षा किये देहाती 'ऊंच' न मानें। ऐसी हालतमें अगर हम सफ़ाईसे रहना शुरू करेंगे तो लात भी खायंगे और अपनी लगी-लगायी रोज़ीसे भी हाथ धो बैठेंगे।" देहाती भंगीकी बातोंने बुधुआको उत्तेजित कर दिया—"नाश हो ऐसे देहाती या शहराती पापी ऊंचोंका जो हमसे नीच-से नीच काम कराकर, हमें आदमीकी तरह खाने और पहनने भी नहीं देते। ऐसों हीके होश ठिकाने लानेके लिये तो बाबा अघोड़ी और शहरके कुछ भले आदमी और हम उद्योग कर रहे हैं। एकबार हमें आपसमें एका कर इन ऊंचोंकी अक़ल ठिकाने करनी होगी। एकबार उन्हें यह अच्छी तरहसे समझा देना होगा

कि, जिस तरह हम तुम्हारे आश्रित हैं, उसी तरह तुम भी हमारे आश्रित हो। इसलिये, छोड़ो इस झूठी हेकड़ीको; और, इस बातको अच्छी तरह समझ लो कि, दोनों हाथोंके संयोग बिना, किसी तरह भी, ताली शुद्ध नहीं बज सकती। अब बहुत दिन हो गये तुम अज्ञानी ऊंचोंको हमपर जुल्म करते हुए। अब हम भी तुम्हें पहचान चले हैं। अब हम भी, अपनेको चीन्हने लगे हैं। अब, समाजकी मशीन प्रेम और सहयोग हीसे चलानेसे चलेगा, भय और शासन और अत्याचार से नहीं।"

इसी समय एक ओरसे, पेड़ोंके झुरमुटको प्रकाश से नहलाती हुई, द्विजराजकी रजत किरणें भी, दलितोंके उस दलमें आकर नाचने लगीं। उदार प्रकृतिने, उन बेचारोंके लाभार्थ, आकाशके एक कोनेमें, ठण्ढा और शान्तिप्रद एक दिव्य दीपक जला दिया।

इसी समय अनेक दलित-बन्धुओंके साथ औघड़-राज भी सभाकी ओर आते हुए दिखलाई पड़े। उनकी आहट मिलते ही चारों ओर सन्नाटा व्याप उठा। उनके

स्वागतके लिये, उत्साहसे उमड़कर, दलित-मण्डली खड़ी हो गयी !
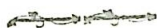
३०

समर्थक

बुधुआके कथनानुसार, भंगियोंने, सभाके आरम्भ ही में, उस मैदानके एक कोनेमें पड़े, एक बड़े चट्टानको उठा लाकर सभाके सिरेपर रख छोड़ा था। वही अघोड़ीराजके लिये आसन था। सभामें आते ही वह उस चट्टानपर जाकर खड़े हो गये। शहरके शरीफ़ स्वयंसेवक—जिनमें ऊंची कही जानेवाली सभी जातियोंके युवक और अधेड़ थे और जिनकी संख्या पचीससे कम न थी—उनके अग़ल-बग़ल प्रसन्न-वदन खड़े हो गये। अघोड़ीके पीछे पेड़ोंका झुरमुट था और उस झुरमुटके माथेपर चन्द्रमा था। और, उनके सम्मुख, अछूतोंका दरिद्र

दल था। चन्द्रमाके मन्द प्रकाशकी कृपासे अब उन दलितोंकी शोभा और भी सम्पूर्ण हो गयी थी। उस दलका अधिकांश काला, कलूटा, रूखा, भयानक और वस्त्र-हीन था। चन्द्रमा और पेड़ोंके "बैक ग्राउण्ड" के साथ, खप्पर और चिमटाधारी भयानक अघोड़ी, उस मजलिसमें ऐसे मालूम पड़ते थे मानों भूतनाथ शंकर अपने दल-बलके साथ शोभायमान हों।

एकबार सारी सभापर दृष्टि दौड़ाकर, अपने जलद-गम्भीर स्वरसे, अघोड़ीराज बोले—"सबसे पहले मैं बाहरसे आये हुए तथा स्थानीय दूसरे मुहल्लोंके भाइयोंकी कष्ट-कहानी सुनना चाहता हूं। तुममेंसे जिसके ऊपर जो विपत्ति हो वह, बारी-बारीसे, मेरे सामने आकर बताये, जिससे मैं, उस भाईके छुट-कारे की, यथाशक्ति, चेष्टा कर सकूं।" उनकी उक्त बात सुनकर पहले तो सभामें थोड़ा कोलाहल मचा, फिर, एक बुढ़िया अपने एक काले और सींककी तरह दुबले-पतले छोटे बच्चेको लेकर आगे बढ़ी—

"बाबा महराज," वह हाथ जोड़ और दाँत निका-

लकर बोली—"यह जो आपके चरनकी कृपासे पैदा हुआ मेरा नाती है, इसे राजघाट टेसनके उत्तर ओर वाले उस बड़े ताड़में रहनेवाला नट बहुत सता रहा है। ज़रा देखिये इसकी सूरत, आंखें बैठ गयी हैं, देहपर एक परत चमड़ा और मुट्ठीभर हड्डियोंको छोड़ और कुछ दिखलाई ही नहीं पड़ता। यह हमेशा ही बीमार रहता है। और, इस तरह, न तो मुझे ही मिहनत-मजूरी कर कमाने-खाने देता है और न अपनी माँ—मेरी बेटी रजनी ही—को। इसे किसी तरह अच्छा कर दो मेरे भगवान! मैं आपके चरनोंपर पड़ती हूं।"

अघोड़ीने उस बच्चेका हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचा। यद्यपि उसकी अवस्था १०—११ वर्षोंसे कमकी न रही होगी, फिर भी, भयानक अघोड़ीके कर-स्पर्शसे वह आपादमस्तक कांप उठा। अपनी बूढ़ी नानीकी ओर भय-कातर दृष्टिसे निहार कर रो पड़ा।

"चुप! रो नहीं!" अघोड़ीने उसे चुप कराया—

"डरता क्यों है बच्चे ! मैं अभी तेरे रोग अच्छे किये देता हूं।"

इसके बाद उन्होंने उस लड़केकी आँखें जाचीं, पेटको दबाकर पता लगाया कि प्लीहा आदि तो नहीं है, नाड़ीका अनुसन्धान भी किया और फिर बूढ़ीसे बोले—

"तू व्यर्थ ही कहती है माँ, कि, इसे नट या भूत लगा हुआ है। इसकी बीमारी मेरी समझमें आ गयी है। इसे मन्दाग्नि हो गयी है। यह जो कुछ खाता-पीता है, उसे अच्छी तरह हज़म नहीं कर सकता। यह रोग तो मेरी दवासे एक सप्ताहमें ही अच्छा हो जायगा। ले जा आज इसे। तू कहां रहती है ?"

"इसी अलईपुरमें महराज," बूढ़ीने उत्तर दिया—"आप तो दो बार यहांके भंगी टोलेमें आ चुके हैं। वहीं मैं रहती हूं।"

"अच्छा मैं कल वहीं आकर तुझे, इसके लिये दवा दूंगा—आज ले जा।"

इसके बाद एक वृद्ध भंगी आया। उसकी कमर धनुषकी तरह टेढ़ी हो गयी थी, उसके बाल धुए की तरह सुफ़ेद हो गये थे। उसकी आँखें खुली हुई अवश्य थीं, पर, वह उनसे काम भी ले सकता था या नहीं इसमें सन्देह है। उसने अघोड़ाके आगे आकर रोते-रोते कहा—

"बाबा साहेब ; आप मुझे कोई ऐसी दवा दें, जिससे मैं जल्द-से-जल्द मर जाऊं और जीवनके परदेमें छिपी इन नारकीय यन्त्रणाओंसे छुटकारा पाऊं। बाबा साहेब, दोहाई आपके चरणोंकी ! मैं रात-दिन परमेश्वरसे मरनेकी प्रार्थना किया करता हूं। मगर, न जाने कहां मेरा पुरजा गुम हो गया है। वह मेरी खबर लेते ही नहीं।"

"तुझे क्या कष्ट है भाई ?" सजलभावसे औघड़ने दरियाफ़्त किया—"तू क्यों दुनियासे भागनेकी फ़िक्रमें है।"

"बाबा साहेब," वह बोला—"मेरी उम्र अस्सी बरस और पाँच बरस है। इतने दिनोंमें मैंने दुनियाके

और साफ़ और एक होकर रहेंगे—दोहाई औघड़ बाबा की ! हमारा उद्धार कीजिये इस नरकसे !"

३१

गुदगुदी

"बाबू," दोनोंके सामने आकर मिस राधाने चटपटे संकोच और लज्जासे कहा—"मुझको माफ़ कर दो बाबू; ये अपनी चीज़ें लो, मेरी वह बहुत बड़ी भूल थी जो मैंने आप भले आदमियोंको उस तरह गिरा कर अपमानित किया। आप ज़रूर मुझे माफ़ करदें।"

घनश्यामजी और गुलाबचन्द, बिना कुछ उत्तर दिये ही, एकटक, बुधुआकी उस अनोखी लड़कीको देखते रहे। यद्यपि अब अन्धेरा गाढ़ा हो चला था, फिर भी, बिलकुल सामने खड़ी राधाके

सौन्दर्यमें उससे कुछ भी कमी न पड़ सकी। बल्कि, प्रकृतिके उस बारीक परदेसे कुछ अस्पष्ट होकर, वह रूप और भी मादक हो चला था। यद्यपि यह ठीक है कि घनश्यामजीने यह बात गुलाब पर प्रकट नहीं की थी, फिर भी, राधाको इतना सन्निकट पाकर उनका उबलता और मुग्ध मन, रह-रह कर यही चाहता था कि, उस यौवन और उन्माद और रूपकी प्रतिमाको वह बरबस भुजाओंमें कस लेते, हृदयसे लगा लेते और प्रेमके उन गर्म-गर्म निह्रोंसे उसके कपोलको, कण्ठको, माथेको, जुल्फ़ोंको ताप देते जिसे संसारके प्रेमी और ज़िन्दादिल और साहित्यिक "चुम्बन" कह कर पुकारते हैं।

"आप लोग ज्यों ही मेरे मकानके सामनेसे इस इस ओर चले आये," दोनोंको चुप देखकर निडर राधाने पुनः आरम्भ किया—"त्यों ही मेरे पापा और फ़ादर आये। प्रायः त्योंही मैंने ज़मीन पर आपकी यह घड़ी और दूसरी चीज़ पड़ी देखीं। अभी मैं उन्हें उठाकर संभाल भी न सकी थी कि दोनों मेरे

फेरकर उसे आश्वासन दिया—"घबरांव नहीं बूढे बाबा ! घबरानेवालेका दुनिया और भी भयानक हो जाती है। तुम्हारा लड़का जेल गया, यह दुखकी बात है। अगर वह बे-कुसूर गया है—और जहां तक मुझे तुम लोगोंके प्रति पुलासके व्यवहारका पता है ज़रूर बेकुसूर ही गया होगा—तो, यह बहुत बुरी बात है। इन्हीं जुल्मोंके रोकनेके लिये ही तो मैं तुम लोगोंके बीचमें काम करनेको आया हूं। अगर एक बार तुम सब एक होकर अपनेको उठाते, तो, बस, सब दुःख छूमन्तर हो जाते। तुम चलो बैठो। कलसे तुम्हारे खाने-पहनने और शान्तिसे रहनेका प्रबन्ध मैं करूंगा।"

इसके बाद और भी अनेक दलितोंने अपनी-अपनी कष्ट-कथा अघोड़ाको सुनायी और उसने सबकी उचित व्यवस्था की; अन्तमें वह बोले—

"अब मैं तुम लोगोंसे, आजके सभाका कारण बताना चाहता हूं। और वह कारण और कुछ नहीं, तुम्हारे असंख्य कष्ट ही हैं। हमारी हार्दिक इच्छा है

कि, तुम लोग अपने वर्तमान जीवनसे छुटकारा पाओ। मगर, इन कष्टोंसे तुम्हारा उद्धार तबतक नहीं हो सकता जबतक स्वयं तुम अपने पापोंसे युद्ध करने को तैयार न हो जाओ। मैं, कई महीनेसे, कोई आन्दोलन खड़ा कर तुम्हारी आर्थिक समस्या हल करना चाहता हूं, क्योंकि, आजकलके संसारकी सबसे बड़ी समस्या यही पैसोंकी समस्या है। प्रायः सभीके जीवनका पहला सवाल आजकल पैसा ही है। इस पैसेके प्रश्नको हल करनेके लिये तुम्हें सबसे पहले आपसमें एका करना चाहिये। अपना एक संघ बनाना चाहिये, पञ्च चुनने चाहिये और उनकी आज्ञाओंको मान कर सब काम करना चाहिये। ज्योंही तुम संघबद्ध होकर काम करोगे त्योंही समाज तुम्हारे सामने झुक जायगा। लोग समझने लगेंगे कि तुम्हारा भी कोई अस्तित्व है और आवश्यक अस्तित्व है।

"अभी तुममेंसे अनेकोंने अपनी बुरी आदतें छोड़नेकी ओर गम्भीरतासे ध्यान नहीं दिया

है। अभी भंगी टोलोंमें व्यर्थ ही युद्ध और कलह और शराबखोरी और सब प्रकारकी नशेबाज़ियोंका बाज़ार गर्म रहता है। अभी तुमने सफ़ाई पर ध्यान नहीं दिया है। अभी तुम चोरी करनेसे नहीं हिचकते। अभी तुम्हारे मुखसे बात-बातमें गन्दी बातें निकला करती हैं। पर, मेरे भाइयो! अब तुम्हें इन बातोंसे दूर रहकर, एक और दलबद्ध होना चाहिये। नहीं तो, ये ऊंची जातवाले, जन्मभर तुम्हें गुलाम और नरकके कीड़ेही बनाये रखेंगे। आदमी स्वभावहीसे बड़ा पाजी होता है। अपने सुखके लिये वह बुरा-से बुरा काम करता है और उसके समर्थनमें भला-से भला प्रमाण पेश करता है। ऐसी पाजी जातिसे लड़नेके लिये तुम्हें दृढ़ और चरित्रवान और संयमी होना पड़ेगा।

"पहले तुम सब यह बताओ कि हमारे पीछे चलनेको तुम तैयार हो? यदि हां, तो, स्वागत है तुम्हारे इस पवित्र निश्चयका। ये, शहरके अनेक भले आदमी, तुम्हारी सहायता करनेके लिये

उत्सुक हैं। ये भी उन्हीं की सन्तान हैं जो तुम्हें युगोंसे नरकमें धकेलते चले आ रहे हैं। मगर, ये अपने पूर्वजोंके पापोंका प्रायश्चित्त तुम्हारे उत्थानमें सहायक होकर, तुम्हारी सेवा कर, करना चाहते हैं। हम, शीघ्रही, तुम अछूतोंके लिये कोई कारखाना या रोज़गार खोलना चाहते हैं। तुम्हारे बच्चोंके लिये, विद्यालय खोलना चाहते हैं। इन कामोंके लिये, गुप्त और उदार दाताओंने, हमें रुपये भी काफ़ी दिये हैं। मगर, तबतक हम इस काममें हाथ नहीं लगाते जब-तक तुम स्वयं अपने भलेके लिये आगे बढ़ना स्वीकार नहीं करते। आज तुम्हें इस बातकी प्रतिज्ञा या निश्चय करना होगा कि, तुम अब अपनी सभी बुराइयोंको धीरे-धीरे त्याग दोगे, और, हमारे बताये हुए पथ पर, निर्भय भावसे चलोगे। बोलो, तुम लोग तैयार हो?"

"तैयार हैं स्वामीजी! तैयार हैं बाबाजी!! हम चोरी छोड़ देंगे राम दोहाई! हम शराब गांजा, ताड़ी, वगैरह भी न छूएंगे, लड़ें-झगड़ेंगे भी नहीं

उन-उन कष्टोंके मुख देखे हैं जिनका मैं वर्णन भी नहीं कर सकता। मैंने पेटके लिये दूसरोंके मल साफ़ किये, पाख़ाने फेंके, चोरी की, जेब काटी, जेलके कष्ट झेले, विविध रोगोंका शिकार बना—क्या-क्या नहीं किया। मगर, फिर भी, मुझे बराबर दो महीने तक, कभी भर पेट इच्छा-भोजन नहीं मिला। आज भी मेरे तनपर समूचा कपड़ा नहीं है। तिस पर अभी परसों मेरा एकमात्र बेटा 'सुधना', पाजी पुलीस की बदमाशीसे, जेल भेज दिया गया है।"

सुधनाकी याद आनेसे बूढ़े भंगीका गला भर आया! उसकी आंखोंके आंसू धाराप्रवाह उसके कपोलों पर बह चले—

"बाबा साहेब! मेरी दुख भरी ज़िन्दगीमें वह सुधना ही सुखकी एक रेखा था। और, इस बुढ़ौतीमें तो वह पूरा सहारा ही था। मगर, उसे अब पुलीस ने दो बरसोंके लिये जेल भेज दिया है। बिना कुसूर भेजा है स्वामीजी, झूठ नहीं बोलता। झूठ बोलने वालेकी आंखें फूट जायं। अभी कहीं चोरी हुई थी

जिसकी तलाशी हमारे भंगी टोलेमें आयी थी। कुछ माल गोबरधना भंगीकी झोपड़ीमें निकला, जो मेरे सुधनाका संगी था। बस ; संगी होने ही से वह भी पकड़ लिया गया और बेकुसूर जेलमें ठेल दिया गया है। हम भंगी लोग बे-कुसूर भी जेलोंमें भेजे जाते है। जेलवाले बाहरी अफ़सरोंको लिखकर हमें मांगते हैं। जेलके पाख़ाने साफ़ करनेके लिये। क्योंकि, दूसरी जात वाले मुश्किलसे यह काम करते हैं। इस लिये, जबतक ये जेलें हैं तबतक, हम भंगियोंका उनमें रहना ज़रूरी है—फिर चाहे हम कुसूर करें या न करें। चार दिन हुए उसे जेल गये। चार दिनसे मैंने एक दाना भी नहीं खाया हैं। मेरा अब कोई खोजलेवा नहीं। दुनियाका मल फेकनेका मुझे यह पुरस्कार मिला है कि, आज मुझ-सा दुखी कोई नहीं। मुझे मौत भी नहीं पूछती। नहीं छूती। ऐसा अछूत हूं मैं स्वामीजी—अघोड़ी बाबा !"

बूढ़ा फूट-फूट कर कलपने लगा। अघोड़ीने उसके रूखे बाल सहलाकर, उसकी पीठ पर हाथ

पास आकर अनेक सवाल करने लगे। किसकी चीज़ें हैं? यहां गिरीं कैसे? आदि, आदि। मैंने भी बिना किसी संकोचके, सच-सच, सभी बात बता दीं। मैं झूठ नहीं बोलती। लड़कपन होसे पापाने मुझे झूठ बोलनेको मना किया है।"

"अच्छा, अच्छा!" घनश्यामजीने कहा—"फिर आपके पापाने क्या कहा? कौन हैं आपके पापा? पापा तो फ़ादर ही को अंग्रेज़ीमें कहते हैं न? फिर आपके यह पापा और फ़ादर दो क्यों हैं?"

"मेरे पापा हैं," राधा बोली—"सिगरा चर्चके प्रधान, फ़ादर जानसन। और मैं, बुधराम चौधरीकी, जो जातका भंगी है, लड़की हूं। बुधराम चौधरी मेरा फ़ादर है, और पादरी साहब पापा। जब मेरा फ़ादर बहादुरीके लिये जेलमें गया था, तब, पापाहीने मुझे पाला-पोसा, कुछ पढ़ाया-लिखाया और इतना बड़ा किया था। मैं और फ़ादर उन्हींके नौकर हैं। यह ज़मीन जिसपर मेरी झोपड़ी है, पापाकी ज़मीन है"

"ओहो!" धूर्ताकृति बनाकर गुलाबने कहा—"तब तो आपके पापा और फ़ादर देखने लायक़ आदमी हैं।"

"देखने लायक़ आदमी तो हैं," राधा बोली—"पर फादर भंगी जो हैं। आपलोग तो ऊंची जातके भले आदमी, यहांके रईस, मालूम पड़ते हैं। भला आप मेरे फ़ादरसे कैसे मिलेंगे? आप अपवित्र नहीं हो जायंगे? शहरके लोग, मालूम होनेपर, आपपर नाराज़ नहीं होंगे?"

"ना ना ना!" विचित्र मुहं बनाकर गुलाबने उत्तर दिया—"अब ज़माना बदल रहा है। अब धीरे-धीरे इस देशसे अछूत रोग उठा जा रहा है। कहां लिखा है आपकी देहमें कि आप अछूत हैं। आप तो, अगर उनके बीचमें बैठा दी जायं तो, किसी भी ऊंची ज़ातकी लड़की कही जा सकती हैं। ऐसी साफ़ आप, ऐसी सुन्दर आप, ऐसी शरीफ़ आप, भला ऐसा कौन बेवकूफ़ होगा जो आप या आपके फ़ादरसे परिचय करनेमें हिचकेगा।"

इसी समय संकट मोचनकी ओरसे किसीकी मोटर आती हुई दिखाई पड़ी। "इधर चली आइये," राधाका हाथ कोमलतासे पकड़कर उसे पुलके चबूतरेकी ओर बढ़ाते हुए घनश्यामजीने कहा—"मोटर आ रही है। सड़कसे दूर खड़े होकर बातें करें।"

"नो, नो!" राधाने आँखें नचाकर, मगर घनश्यामजीकी इच्छानुसार चबूतरेकी ओर बढ़ते हुए उत्तर दिया—"फ़ादर और पापा मेरे आसरे बैठे होंगे। आपने उन्हें देखा नहीं, वह इधर हीसे तो गये हैं। उन्होंने आपलोगोंको शायद पुलपर देखा था। तभी तो, सारी बातें सुनकर, उन्होंने मुझे आपसे माफ़ी माँगनेके लिये इधर ही भेजा है।"

इसके बाद उसने घनश्यामजीकी सारी चीज़ें उनके सामने विकल्पित हाथोंपर रख दीं, एकबार उन दोनोंकी ओर देखकर निश्छल भावसे मुस्करायी और गमनोद्यत भाव दिखाती हुई बोली—

"मैं पापासे बोल दूंगी कि आप लोगोंने मुझे क्षमा कर दिया।"

"ओहो !" आकर्षक उदारताके भावसे घन-श्यामने कहा—"इसमें क्षमा करनेकी क्या बात है। फिर भी आप अपने पापासे निस्संकोच जो चाहें कह सकती हैं। मैं तो आजकी घटनाको अपना सौभाग्य ही समझूंगा, अगर आप हमें जल्द ही भूल न जायँगी तो। इसी बहाने भला आपसे परिचय तो हो गया।"

बात काटकर गुलाबने कहा—"अब आते-जाते देखकर आप हमें पहचानेंगी तो! यही सौभाग्य कहांका कम है? इसीके लिये तो......।"

सदस्य गुलाब कुछ कहना ही चाहता था कि आँखों-ही-आँखोंमें घनश्यामने उसे रोक दिया, मगर राधा कुछ-कुछ समझ-सी गयी—

"हां," उसने पूछा—"एक बात पूछना तो मैं भूल ही गयी थी। आप लोग मेरे घरपर क्यों गये थे? क्या कोई प्रयोजन था? आपसे इस प्रश्नका उत्तर लेनेके लिये भी पापाने कहा है।"

"इसके लिये," घनश्यामने कहा—"पापासे मेरी

ओरसे धन्यवाद देते हुए कहियेगा कि हमारा कोई विशेष प्रयोजन तो नहीं था, हाँ, यह सुनकर कि बुध-राम चौधरी और अघोड़ी मनुष्यानन्दके उद्योगसे शहरमें अछूतोंका कोई आन्दोलन होनेवाला है, हम यह जाननेके लिये आये थे कि, यह बात कहाँतक सत्य है।"

"बिलकुल सत्य है," राधाने लौटते-लौटते उत्तर दिया—"ज़रूर आन्दोलन होगा ; मगर, अभी उसकी तैयारी हो रही है। हमारी जाति और परिस्थितिके लोग, अघोड़ी बाबा कहते थे, इतने 'बैकवर्ड' हैं कि वह दृढ़तासे, जल्दी कोई आन्दोलन अपने अत्याचारियोंके ख़िलाफ़ चलाही नहीं सकते।"

और बस। वह उन दोनोंसे मुस्कराहटोंमें विदा ले, धीरे-धीरे सड़ककी दोनों ओरके पेड़ोंकी घनीभूत छायामें विलीन हो गयी। जैसे बिजलीकी परछाईं काले बादलोंकी छातीमें बिलीन हो जाती है।

उसके चले जानेपर दोनों आशिक़ मिज़ाज कोई १० मिनट तक स्तब्ध खड़े रहे। न इनको उनकी फ़िक्र

और न उनको इनकी। इसके बाद एकाएक कुछ सोच और चमक कर घनश्यामजीने गुलाबसे कहा—

"अब चलोगे भी, या अभी कोई और कर्म होना बाक़ी है?"

"चलो," गुलाबने कहा—"आजकी प्रेम-कथा यहीं समाप्त होनी ठीक है। कोई घाटेमें नहीं रहे हम लोग। अब तो देख भी चुके, लात भी खा चुके, हाथ भी छू चुके, नज़दीकसे रूप-रस-पान भी कर चुके। बाक़ी बातें भी, अगर मेरी सलाहसे काम लोगे तो, जल्द ही पूरी हो जायंगी। अब तो किसी दिन भी हम इससे लात मारनेका बदला ले सकते हैं, और ऐसी ख़ूबसूरतीसे ले सकते हैं कि यह भी जन्मभर याद रखेगी कि किसी बनारसीसे कभी पाला पड़ा था।"

"मगर नहीं," घनश्यामने कहा—"मेरी ओरसे तो यह कथा यहीं समाप्त हो गयी। अब मैं कभी, इस फेरमें, इस ओर न आऊंगा। अरे बाबा, अंग्रेज़ोंकी इस लाड़लीसे कौन उलझे। ज़रा भी कुछ यह

वह हो जाय तो लेनेके देने पड़ जायं। नाः, नाः। यह ख़ूबसूरत है तो क्या, जवान है तो क्या—जिसके पास पैसे हैं उसके लिये ऐसी ख़ूबसूरती और ऐसी जवानी, इस बाज़ारमें, मनों पड़ी है। फिर ऐसी ख़तरनाक मुहब्बतसे दूर ही रहना अच्छा।"

गुलाबने तानेसे कहा—"बस! उतर गया नशा! हो बिलकुल कच्चे आशिक! मेरी तो चाहे जो भी दुर्दशा हो, मगर, मौका पानेपर मैं इसे विना अपनाये छोड़ूंगा नहीं।"

दोनों संकट मोचनकी ओर बढ़े। यद्यपि घन-श्यामने गुलाबसे, इस भंगिनसे अधिक रब्त-ज़ब्त बढ़ानेकी चर्चामें, उपेक्षा ही दिखलाई थी, पर उनके मनकी राय कुछ और ही थी। वह धूर्तराज गुलाबको भी ठगना और राधाका सारा सुख स्वयं लेना चाहते थे। घनश्यामने गुलाबसे यह झूठ कहा था कि वह अब इस विषयमें आगे न बढ़ेंगे। उनके मनमें तो वह लड़की गुदगुदीकी तरह बस गयी थी; वह उसे चाहते थे—मगर, केवल अपने लिये!

औरतके बीचमें आ जानेसे, पुरुष-पुरुषकी पुरानीसे पुरानी मित्रता भी, झंझा बातके बीचमें पड़ी हुई रुईकी तरह, न जाने कैसे, न जाने क्यों, न जाने किस ओर उड़ जाती है!

३९

विरोधी

अगर आप हमारी सलाह मानें तो, बनारसकी प्रत्येक ज़रूरी घटनापर वहांकी मध्य-श्रेणीके लोगोंकी राय जाननेके लिये, वहाँके कम्पनीबाग़का एक चक्कर ज़रूर लगावें। यद्यपि वहाँके सार्वजनिक पुस्तकालयों और कुछ गप्प-पसन्द दूकानदारोंकी दूकानें भी लोकमतके ग्रामोफ़ोनका काम करती हैं; पर, कम्पनी बाग़की बहसोंमें जो आनन्द आता है वह और जगह कहाँ। अस्तु, उस दिन भंगियों और उनके अधि-

कारों को लेकर जो विवाद उक्त स्थानपर हुआ उसका कुछ वर्णन करना भी अनावश्यक न होगा। इस बार बहसका अड्डा कम्पनीबाग़का वह फ़ौव्वारा था जिसकी चारों ओर बहुत-सी पत्थरी बेंचें पड़ी हुई हैं और जिसके 'बेसिन' के चतुर्दिकके चबूतरेपर भी आनन्दी लोग बैठकर गप्पें हाँका करते हैं।

रात आठ बजेका वक्त था। आकाशमें चन्द्रमाका और पृथ्वीपर ज्योत्स्नाका बोलबाला था। मन्द-मन्द पवन, कम्पनीबाग़के अनेक सुगन्धित पुष्पोंकी भीनी-भीनी गन्ध लेकर, मस्तीसे बह रहा था। फ़ौव्वा-रेके पश्चिम ओरकी दो बेंचोंपर बैठे कोई आठ सज्जन और उनके सामने खड़े कोई एक दर्जन दूसरे लोग ज़ोर-ज़ोरसे बहस कर रहे थे। उनकी वह बहस क्या थी पूरी लड़ाई मालूम पड़ती थी। कभी-कभी कोई-कोई बकी तो ऐसा गर्जता और तड़पता था मानों इस वाद-विवाद का अन्त बिना धर-पटकके होगा ही नहीं।

बहसका आरम्भ वहींके, कर्णघण्टा मुहल्लेके,

किसी ब्राह्मण देवताने किया था। अपने चन्द परिचितोंके एकत्र होते ही उन्होंने पूछा—

"आप लोगोंके घरमें उठौवा पाख़ाना है या बहौवा ?

"क्यों ? क्यों गुरु ? आज आपकी तबीयत पाख़ानेपर क्यों आयी ? नयी म्युनिसपलिटीसे कोई नया ठेका-वेका लिया है क्या ?"

"अहं !" उन्होंने अपने उस मज़ाकिये मित्रकी ओर खीझ-भरी नज़रोंसे देखा—"दिल्लगी न करो। मैं गम्भीर होकर प्रश्न कर रहा हूं।"

"हम तो पक्के मुहालमें रहते नहीं," किसी एक ने कहा—"हमारा तो मुहल्ले-का-मुहल्ला उठौवा पाख़ानोंसे भरा है। तभी तो, परसों, हमारे मुहल्लेके भंगियोंने हमें धमकाया है।"

"यह बात !" पण्डितजी बोले—"अब आये रास्तेपर। अच्छा क्या धमकी दी है उन्होंने ?"

"वह कहते हैं, हमारी तनख़ाह बढ़ाओ, हमारे बच्चोंके पढ़ने-पढ़ानेका प्रबन्ध कराओ, म्युनिसपैलिटी
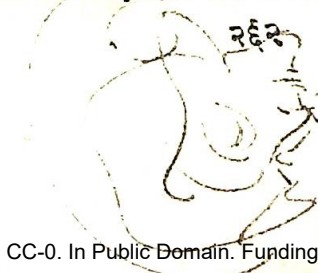
और सरकार और समाजसे लड़कर हमारे रहनेके लिये, महल नहीं तो, साफ़-सुथरी मिट्टी-फूसकी झोपड़ीहीका प्रबन्ध कराओ। और, अगर एक महीनेके भीतर उक्त बातोंका सन्तोषजनक फ़ैसला नहीं होगा, तो, हम सब, एक स्वरसे हड़ताल बोल देंगे।"

"इतना ही नहीं भैया," सामने खड़े एक उस्तरा-धारी हरमुण्डक और गुण्डाकृति व्यक्तिने कहा—"यहाँ तक भी किसी तरह ग़नीमत है। हमारे मुहल्लेमें झाड़ू देनेवाला रमैया भंगी तो यहाँ तक कह रहा था कि, हमारे लिये देव-मन्दिरोंके द्वार खोल दो। ज़रूर हमें झाड़ू और टोकरी और विष्ठाके साथ मन्दिरमें न जाने देना, क्योंकि वैसे तो कोई नहीं जाने पाता या जाता, पर, जब हम नहा-धो और साफ़-सुथरे होकर, हिन्दूके नाते, भक्तके नाते और मनुष्यके नाते भग-वानके दर्शन करने जायं तब हमें अवश्य जाने दिया जाय।"

"तब ?" एकने पूछा—"तुम्हीं बताओ गुरू, भङ्गियों, चमारों और चाण्डालोंको मन्दिरोंमें जाने

दोगे ? देवताओंके दर्शन करने और उनकी पूजा अछूतों द्वारा होने दोगे !"

"अरे भैयाकी बातें !" घृणा और उपेक्षा और 'हम ज़बरदस्त हैं' के भावसे नाक सिकोड़कर दण्ड-धरजी बोले—"ई सारे दुनियाका गलीज साफ़ करनेवाले पतित देव-मन्दिरमें जायंगे ! छिः !! मारे डण्डोंके खोपड़ीकी कलई खोल दी जायगी । मुहं भुरकुस कर डाला जायगा ।"

नये विचारोंके किसी युवकने धीरेसे कहा—"मगर, महराज, अब पतितों और मजूरों और अछूतोंका युग आ रहा है । अब, समाजकी मशीनको शुद्ध रूपसे चलती रहने देनेके लिये पुरानी बातों और प्रणालियोंमें रद्दो-बदल करना होगा । आपने शायद सुना नहीं, शहरके अनेक शरीफ़ युवक और योगिराज मनुष्यानन्द भी इन अछूतों और भङ्गियोंकी मददपर हैं । अब यह, धारा दण्डों और ज़बरदस्तियोंसे, न रुक सकेगी ।"

"न कैसे रुक सकेगी जी, अभी छोकरे हो, नात-

जर्बकार हो"—गुण्डाजीने नहीं पण्डितजीने कहा—"चार अक्षर अंग्रेज़ी पढ़कर ही तमाम व्यवस्थाओंके अद्वितीय विवेचक नहीं हो गये हो। समाजकी अशीन युगोंसे जिस तरह चलती रही है वैसे ही चलती रहेगी। जो जहाँपर युगोंसे है वहीं रहे, पवित्र अपने स्थानपर, अपवित्र अपने। इसमें यदि कोई पक्ष आगे बढ़ने या बदमाशी करनेकी कोशिश करेगा, तो, वह ज़रूर पीटा और शुद्ध किया जायगा। कौन है मनुष्यानन्द! ऐसे न जाने कितने मनुष्यानन्द आये और चले गये। यह वही बनारस है जहाँसे आर्योंका दयानन्द भी लुलुआकर निकाल दिया गया था। यह बनारस सारे भारत और सारे विश्वकी पवित्रता और धार्मिकताका केन्द्र है। यहाँ प्रति वर्ष न जाने कितने योगी और यती पैदा होते हैं और मर जाते हैं। यहाँपर किसीकी बे-पेंदीकी बातें और औंधी राय नहीं मानी जाती—नहीं मानी जा सकती—नहीं मानी जा सकेगी।"

"तब होगा क्या?" एकने पूछा—"क्या आपका

अनुमान यही है कि भङ्गियोंकी यह सब धमकियाँ खूखे बादलोंका गर्जन मात्र है। अपने आप ही सबकी अक़ल कुछ दिनोंमें ठिकाने आ जायगी।"

"और नहीं तो क्या," पण्डितजीने गर्वसे उत्तर दिया—"कभी यह सम्भव हो सकता है कि द्विजातियोंके साथ अछूत भी बैठकर वेदपाठ करें, गंगा-स्नान करें, देवमन्दिरमें जायं और सारा भेदभाव दूर होकर सब एकाकार हो जाय। नाः, नाः। यह असम्भव है।"

"ज़रूर यह असम्भव है। कइयोंने एक साथ कहा—ऐसी ईसाइयत हमारे देश और हमारी काशीमें नहीं फैल सकती। हमलोग प्राण दे देंगे, पर, अछूतोंको सरपर न चढ़ने देंगे।'

३३

गुडईवनिङ्ग मिस

घनश्यामजी सुन्दर थे, हृष्ट-पुष्ट थे—चाहे बली भलेही न रहे हों—आकर्षक थे और परम मृदुभाषी थे। इस बातका पता मिस राधाको तब लगा जब वह उनकी चीज़ें उन्हें देकर अपने घरकी ओर लौटी। उसके उद्दण्ड मनने उस समय इस बातका अनुभव किया कि जैसा व्यवहार उसने उन भलेआदमियोंके साथ किया था वह किसी प्रकार भी क्षम्य और सज्जनोचित नहीं था। उसने उन्हें लातसे मार दिया था, एक तरहसे उनपर कुत्ता दौड़ा दिया था—और क्यों?—बिना किसी अपराधके, अपनी शैतानी प्रकृतिकी मूर्खता या झकके फेरमें पड़कर। ऐसे ही कामोंसे बचनेके लिये तो पापा मने करते हैं, इन्हीं पाजीपनों ही के लिये तो वह कई बार मुझ पर प्रेम-

पूर्ण असन्तोष प्रकट कर चुके हैं। फिर मैंने ऐसा क्यों किया ? छिः ! छिः !! भला वे बेचारे भले आदमी—जो सूरत और पोशाकोंसे रईस भी मालूम पड़ते थे—मेरे विषयमें, अपने मनमें, क्या सोचते होंगे ! छिः ! छिः !!

घर पर लौटने पर पादरी और बुधुआने भी उससे अनेक प्रश्न किये—

"मिले थे कि नहीं ?" पादरीने अपनी दाढ़ीपर हाथ फेरते-फेरते उससे दरियाफ़्त किया—"क्या वे तुझपर बिगड़े थे ? तूने सचमुच उनसे बड़ा ही भद्दा व्यवहार किया था। क्षमा माँग ली या नहीं ! क्या वे तुझपर बहुत बिगड़े थे ?"

"राम, राम," बुधुआने कहा—"कहाँ तो हम लोग उनसे न्याय और अधिकारकी भीख माँग रहे हैं और कहाँ तूने उनके साथ ऐसा व्यवहार किया ! वे अपने मनमें क्या सोचेंगे ? यही न कि, अछूतकी छोकरी है. साफ़ कपड़े पहने है तो क्या, अलग घरमें रहती है तो क्या—असभ्य है।" इनके रग-रेशेमें

असभ्यता भर गयी है। ये नीम हैं, मीठे हो ही नहीं सकते ; ये बबूल हैं, दुर्गुण-कण्टकोंसे भरे हैं ; ये 'कारी कामरी' हैं, इनपर 'दूजो रङ्ग' चढ़ ही नहीं सकता।"

पादरी और बुधुआने रधियाकी इस बेवकूफ़ीको इतना महत्व दिया, उसका ऐसा उदास ख़ाका खींचा, उसे इसके लिये इतना ऊंचा-नीचा सुनाया कि राधा उस रातमें, प्रायः पिछले पहर तक, जगती और सायंकालकी घटनाओं पर विचार करती रही। उसने मन-ही-मन यह तय किया कि, यदि अब कभी वह भलेआदमी फिर दिखाई पड़ेंगे, तो, वह एक बार आँखें झुकाकर, उनमें आँसू भरकर, परम विनीत भावसे उनसे क्षमा प्रार्थना करेगी। ज़रूर करेगी। वह सभ्यता और सभ्योंको, अपने पापाकी कृपासे, समझती है और प्यार भी करती है। वह इसका विचार भी नहीं कर सकती कि दुनियाके भले और आकर्षक और 'सुखोंके खिलौने' उसे 'भंगिनकी बेटी' समझ कर घृणा या उपेक्षाकी दृष्टिसे देखें।

दूसरे दिन तो नहीं, और तीसरे दिन भी नहीं ; शायद चौथे दिन बाबू घनश्यामजी मिस राधाको दूसरी बार दिखाई पड़े। कैसे विचित्र ढङ्गकी वह दूसरी भेंट थी। राधाकी तो, इस बार घनश्यामको इस भावमें देखकर, छाती सिहर उठी।

वह पादरीके बंगलेसे, पैदल, प्रायः रोज़ दुर्गा-कुण्ड जाया करती थी। अकसर उसके साथ उसका फ़ादर या बुधुआ भी रहा करता और कभी-कभी वृद्ध और उदार जानसन स्वयं, अपनी गाड़ी पर बैठा-कर, उसे पहुंचा देते। मगर, अधिकतर उसे अकेली ही आना पड़ता था। उस दिन भी वह अकेली ही, सिगरासे दुर्गाकुण्डकी ओर, जा रही थी। भेलूपुराके अस्पतालके आगे अभी वह बढ़ी ही थी कि, पीछेसे घोड़ोंकी टाप और बग्घीकी घण्टीकी घनघनाहट सुनायी पड़ी। मुड़कर पीछे देखने पर पहले तो कोई विशेष बात नहीं ; मगर, जब गाड़ी पास आ गयी तो ठाट-बाट और जवानीसे लिपटे बाबू घनश्यामजी बैठे और राधाकी ओर देखकर मर्म-भरी मुस्कराहट

बिखेरते दिखाई पड़े। एक बार तो वह सहम कर खड़ी हो गयी। उनकी ओर देखने लगी।

उसने देखा, उसके साथ ही वह बग्घी भी खड़ी हो गयी। भीतरसे आवाज़ आयी—

"कोई हर्ज न हो तो आइये, आपको पहुंचा दूं। मैं भी सङ्कटमोचन महावीरके दर्शनोंको जा रहा हूं। रास्ते ही में तो आपका वह घर है ?"

वह, फ़ौरन, गाड़ीसे उतर पड़े और उत्तरकी प्रतीक्षा किये बिना ही राधाको हाथोंका अंग्रेज़ी सहारा देकर उन्होंने गाड़ी पर बैठा लिया। वह बेवकूफ़ छोकरी, गाड़ीपर बैठ जाने पर भी और उसके चल पड़ने पर भी, बहुत देर तक यह निश्चय न कर सकी कि उसे ऐसा काम करना चाहिये या नहीं। वह चुपचाप घनश्यामकी ओर देखने लगी। उसके होठ काँप रहे थे, उसकी छाती काँप रही थी, उसके कण्टकित रोम न जाने क्यों काँप रहे थे। मगर, उस कँपकँपीमें कोई व्यथा नहीं थी, पीड़ा नहीं थी, भय नहीं था; बल्कि, न जाने क्या था, न जाने क्या था !!

घनश्यामने लंबी छलांग ली। उनकी समझमें बात आ गयी कि, उनका जादू चल सकता है, चल रहा है, चल जायगा। वह "आप" से, "तुम" पर, बिना अधिक इन्तज़ार किये ही, आ गये।

"तुम रोज़, इतनी दूरसे पैदल ही आती हो?"

"हाँ," बड़ी-बड़ी बरौनियों वाली बोलती आंखें नीचे झुकाकर राधाने कहा—"दूर तो दुर्गाकुण्ड अवश्य है सिगरासे, मगर, पापा कहते हैं अभी तो मैं बच्ची हूं, मुझे तो रोज़ दोनों वक्त इतना 'वाक' करना चाहिये।"

"ठीक कहते हैं, तुम्हारे पापा," उत्तर मिला—"मगर, अगर तुम बुरा न मानो तो, शामको एक बार रोज़ मैं तुम्हें वहाँसे दुर्गाकुण्ड तक पहुंचा दिया करूं। मुझे कोई भी असुविधा न होगी। मैं तो इसी वक्त रोज़ ही घूमने निकलता हूं। और, मुझको उधर ही घूमना ज़्यादा अच्छा मालूम पड़ता है, बुरा न मानना, जिधर तुम्हारा मकान है।"

घनश्याम मुस्करा पड़े, अपनी ही बातों पर,

भावसे। राधाने अपनी आंखोंकी, ओठोंकी, कपोलोंकी मुस्कराहटको भीतर ही भीतर हलाल कर डाला—भावसे।

उसके घरके पास, आमोंकी बारीके पास, प्रथम दर्शन और प्रथम चरण-स्पर्शके उस उन्मादक तीर्थके पास पहुंच कर घनश्यामने कोचवानको आवाज़ दी—"गाड़ी रोको!" वह रुकी; मगर साईस,—द्वार खोलनेको—उतर कर सामने नहीं आया। राधा स्वयं आधी खड़ी होकर बग्घीका दरवाज़ा खोलने लगी।

इसी बीचमें तो, शिकारी घनश्यामने, उसे गोदमें उठाकर, बरबस, नीचे खड़ी कर दिया। मगर, इस उठानेमें, उन्होंने दुष्टता ज़रा भी नहीं की। वाहरे उनकी हिम्मत!

ज़मीन पर पांव टिकाकर पुलकित राधा, घन-श्यामकी ओर, यह-तुमने-क्या-किया-भावसे ताकने लगी। घनश्यामने सदय प्रेमसे कहा—

"मगर पापा कहते हैं, अभी तो मैं बच्ची हूं—क्यों?" वह मुस्करा पड़ा। वह भी भाव-भरी खीझसे

मुस्करा पड़ो। हुक्म हुआ—"गाड़ी बढ़ाओ; गुड ईवनिङ्ग मिस!"

३४

प्रेम अन्धा होता है

उस दिनकी घटनाके बाद, पहले तो, दो-दो, एक-एक दिनका नागा कर, और फिर बराबर, घनश्यामजी राधाको उसके घरपर पहुंचानेके 'तार' में अपनी बग्घी और कोचवानके साथ रहने लगे। अक्सर उनकी गाड़ी, पांच-साढ़े-पांच बजे, पादरी जानसनके बङ्गलेसे थोड़ी दूर पर ही रुकी रहती, सधी-बधी की तरह राधा पादरीसे विदा लेकर घर जानेके लिए आती, और सधे-बधेकी तरह उसका वह प्रेमी उसे गाड़ी पर बैठाता और दुर्गाकुण्ड तक पहुंचा देता। अब राधाका मन उस गाड़ीसे अधिक गाड़ीवालेकी

ओर आकृष्ट होने लगा। अब वह रास्तेमें धीरे-धीरे निस्संकोच भावसे मुस्कराने, सिहरने, भावसे ताकने, खुलकर बातें करने लगी। रास्तेमें वह घनश्यामसे कभी इस विषयपर बातें करती, कभी उस विषयपर। अब यदि कभी घनश्यामकी गाड़ी उसके आसरे खड़ी न दिखाई पड़ती तो उसे बुरा भी मालूम पड़ता और वह कुछ—न जाने क्यों—उदासीका भी अनुभव करती। अब उसने अपने बहादुर फ़ादरसे कुछ झूठ बोलना भी आरम्भ कर दिया और वह इस लिये कि बुधुआ उसे अपने साथ ही दुर्गाकुण्डकी ओर ले जानेकी चेष्टा न करे।

बुधुआने और पादरी जानसनने भी इधर राधाकी गति-विधिमें कुछ परिवर्त्तनका अनुभव किया। उसकी वह बाल-सुलभ-चञ्चलता कुछ कम-सी होने लगी। वह कभी-कभी कुछ विचारती-सी दिखाई पड़ती। कभी-कभी तो, फूलोंको सींचती-सींचती, वह सनकियोंकी तरह हाथमें हज़ारा लिये, फूलोंकी ओर देखती ही खड़ी रह जाती। वैसे तो दिन भर वह

उदास-सी दिखाई पड़ती, मगर, सन्ध्याके समीप आते ही उसकी प्रसन्नता प्रस्फुटित होने लगती। कई बार पादरीने उसको अकेलेमें बुलाकर पूछा भी कि—"बच्ची आजकल तू कुछ भूली-सी क्यों रहती है!" मगर, उसके पास सिवा इसके कि—"नहीं तो, मुझे तो अपनेमें कोई परिवर्त्तन नहीं मालूम पड़ता"—कोई उत्तर नहीं।

धीरे-धीरे राधा, मन-ही-मन, यह भी विचारने लगी कि—आहा! कैसे अच्छे आदमी हैं घनश्याम! कितने प्रेमसे बोलते हैं। कैसा निश्छल व्यवहार करते हैं। कैसा खिला हुआ है उनका रूप। कैसे प्रतिष्ठित और सम्पत्तिशाली हैं वह। क्याही अच्छा होता अगर हममें कोई संवन्ध होता! संवन्ध? कैसा सम्बन्ध? किस तरहका संवन्ध? मैं भंगिन की बेटी, वह रईस ज़ादे—हममें मेल—सम्बन्ध—कैसे हो सकता है? वह तो—यद्यपि मुझपर प्रकट नहीं होने देते तथापि मैंने इसका अनुभव किया है—मुझे गाड़ी पर चढ़ाने और उतारनेके पहले सावधानीसे

चारों ओर देखते हैं। शायद इसीलिये कि कोई उन्हें—मुझ छोटी जातवालीके साथ देखकर—बदनाम न करे! ऐसी हालतमें हमारा संबन्ध कैसे हो सकता है? मगर, अगर ऐसा होता—अगर......

उधर घनश्यामकी अल्हड़ जवानी अपनी इस चालाकी नाम्नी सफलता पर फूली न समाती थी। उन्होंने अपने मित्र गुलाबचन्द्रको तो इस सुखसे बिलकुल अलग कर दिया। उसे समझा दिया कि मैं अब उस पाजी नीच कुमारीके पास कभी न जाऊंगा। क्योंकि मेरी कुलीनता है जिसका मुंह दालकीमण्डीमें नहीं अशुद्ध होता, मगर, रधियाके यहां हो जायगा। मेरे ख़ानदानका यश है जो चौपट हो जायगा।

गुलाब स्वयं तो परलेसिरेका धूर्त था, मगर, घनश्याम को "भुग्गा" या उल्लू समझता था। उसे ऐसा विश्वास ही नहीं था कि घनश्याम, राधाको लूटनेके लिये, उससे भी बड़ा काइयां हो सकता है। वह उनकी बातोंमें आ गया और एक बार भूल

ही गया रधियाको और उसके सरस आकर्षणोंको !

एक दिनकी बात है, जब राधा घनश्यामकी गाड़ीमें आकर बैठ गयी तब उन्होंने कहा—

"अभी तो आज पांच ही बजे हैं। तुम्हें तो साढ़े छ बजेतक घर पहुंचना चाहिये। अभी बहुत वक्त है ! चलो आज तुम्हें अपना बाग़ दिखलाऊं। बहुत दूर नहीं है वह यहांसे। कैन्टूनमेण्ट स्टेशनके पास ही है।"

राधा चुप रही। और उसका प्रेमी उसे लेकर बाग़की ओर चल पड़ा। वहां पहुंचने पर बग़ीचेके मालीने बिना किसी आश्चर्यके, मानो पहले हीसे सधा-बधा हो, दोनोंका स्वागत किया। बङ्गलेका दरवाज़ा खोल दिया गया। दो कुर्सियां और मेज़ बाहर बारहदरीमें, सजा दी गयीं। कुछ सुन्दर-सुन्दर फूल मालीने अपने मालिकको दिये और मालिकने अपनी उस खूबसूरत दिल्लगी को। घनश्यामने घूम-घूम कर राधाको विविध पुष्पों, लताओं और कुञ्जोंका परिचय दिया।

सूर्यकी अन्तिम सुवर्ण किरणें उस समय मालती कुञ्जकी मधु-मदिर-गन्ध भरी छायाकी छाती पर चमक रही थीं। उसके पास जाकर घनश्याम रुक गये। न जाने क्या विचार उनके मनमें आया। उनके कपोल एकाएक सुर्ख हो उठे। उन्होंने राधासे कहा—

"यह बड़ा ही सुखद कुञ्ज है। बैठोगी इसके भीतर चलकर ?"

"देर तो हो रही है," बिना कुछ सोचने-समझने की चेष्टा किये ही, घनश्याम—प्रवाहमें बहती हुई राधाने कहा—"मगर, चलिये ज़रा देखूं। ऐसी कोई भी लता पापाके गार्डनमें नहीं है। क्या नाम है इसका ?"

"मालती," घनश्यामने कहा और उसका हाथ पकड़ कर भीतर घुसे। "इसकी गन्ध बड़ी मधुर और मादक होती है। भौंरे, मालती सुमनबालिकाको, अथक भावसे चूमा और रस लिया करते हैं।"

उस कुञ्जमें बैठनेकी कोई जगह नहीं थी। दोनों

उसके भीतर जाकर आमने-सामने खड़े हो गये। पवनने एक थपकी देकर दोनोंके दिमाग़ोंको सुगन्ध और उन्मादसे भर दिया। उस एक ही थपकीमें दोनों सिहर उठे और प्रकृतिके न जाने किस मन्त्रके वश होकर एक दूसरेकी ओर—मूक किन्तु सार्थक दृष्टिसे—देखने लगे। दोनोंकी सांसें तीव्र हो चलीं।

घनश्यामने उसे अपनी छातीके पास खींच कर कहा—"प्रिये! क्षमा करना, मैं इस कुञ्जमें तुम्हें चूमना चाहता हूं। जैसे किरणें इन हरित दलोंको चूम रही हैं, भौंरे इन चन्द्रिकाधवल मालतियोंको चूम रहे हैं।"

राधा निष्क्रिय और निरुत्तर रही। उसके प्रेमीने उसकी ठुड्ढी पकड़ कर उसका मुख ऊपर उठाया और उन्मादसे उछलकर चूम लिया उसके अछूते, अमोल, भावुक, कोमल, सरस सुन्दर ओष्ठाधरोंको। वह कम्पित होकर और कण्टकित होकर लिपट पड़ी उनसे।

उस दिन राधाने अनुभव किया कि घनश्यामके

चुम्बनोंसे बढ़कर न तो पापाका सरल दयार्द्र हृदय है और न फ़ादरका निश्छल, वात्सल्य-भाव-भरित मन। उसके सारे भाव, उन्मत्त होकर, घनश्याम और उसके प्रेमोपचारों और चुम्बनोंकी ओर दौड़ने लगे। और, उसी दिनसे, वह बराबर आंखें मूंद कर, उस विश्व-विख्यात अन्धे—प्रेम—की अंगुलियोंपर नाचने लगी !

३५

राधा ला पता !

ज्यों-ज्यों मिस राधापर प्रेमके मूक रहस्य खुलने लगे, ज्यों-ज्यों घनश्यामकी सम्पत्ति और जवानी और मिष्ठभाषिताका प्रभाव उसके अनुभव-हीन हृदय पर पड़ने लगा, त्यों-त्यों वह अपने पापा और फ़ादरसे दूर और घनश्यामसे, अधिक-से-अधिक, निकट रहनेकी चेष्टा करने लगी। थोड़े ही दिनों

में यह नौबत आ गयी कि, कभी-कभी, वह कोई बहाना निकाल कर तीन या चार ही बजे पादरीके बंगलेसे बाहर निकल आती। बाहर, थोड़ी दूर पर, घनश्याम या उनकी गाड़ी उसके इन्तज़ारमें खड़ी रहती और वह उस पर बैठकर उनके बगीचेमें जा पहुंचती। बगीचेमें, राधाको प्रसन्न रखनेके लिये, घनश्याम जो कुछ भी आवश्यक समझते मंगा रखते। फल, फूल, इत्र, रूमाल, आइने, फ़ोनोग्राफ़, हारमोनियम और भिन्न-भिन्न रंगके रेशमी सामानोंसे, उन दिनों, उन्होंने उस बगीचेके बंगलेको भर रखा था। राधा अपने घरसे तो देशी ईसाइनकी पोशाक पहन कर आती, मगर, अक्सर बगीचेमें, कुछ तो घनश्यामके आग्रहसे और कुछ अपनेको अधिक मोहक और आकर्षक बननेकी इच्छासे, वह हिन्दुस्तानी ढंगसे भी अपना श्रृङ्गार करती। सुन्दर, रेशमी, बनारसी कामकी साड़ी पहनकर जब वह घनश्यामके सामने आती तब वह चकाचौंध-से हो जाते। उन्हें मालूम पड़ता मानों स्वर्गकी अप्सरा उतर आयी हो।

अक्सर घनश्याम उसे यह या वह अमूल्य चीज़ प्रेमोपहारकी तरह देनेका आग्रह करते, मगर, वह यह कहकर उन्हें अस्वीकार कर देती कि, अगर पापा या फ़ादर पूछेंगे कि ये चीज़ें किसने दीं, तो, मैं उन्हें क्या जवाब दूंगी? मगर, उसका मन—उन चीज़ोंको अपनाने और उन्हें पहनकर घनश्यामसे बाहरकी दुनियाकी आंखें चकाचौंध करनेके लिये—तड़प कर रह जाता। कभी-कभी, घनश्यामजीने उसे छेड़कर, विवाहके विषयपर उसकी राय जाननेकी चेष्टा भी की और वह मुहंसे कुछ न कहकर भी घनश्यामसे—जिन्होंने उसके सम्मुख अपनेको अविवाहित घोषित कर रखा था—विवाह करनेको तैयार थी। मगर, घनश्यामका यह कहना था कि यदि वह अपने बाप और पापासे बिलकुल अलग हो जाय तो किसी तरकीबसे ऐसा किया जा सकता है। लेकिन वह ऐसा करनेको तैयार नहीं थी। यह ठीक है कि घनश्याम उसके प्रियतम थे, फिर भी, बेचारे फ़ादर

और दयालु पापा को छोड़ना उसके मनने किसी तरह भी स्वीकार नहीं किया।

पर घनश्याम इस बात पर तुले थे कि, राधाको उसके घरसे अलग करेंगे। वह अपने प्रत्येक भावसे यही व्यक्त करते कि, यदि तुम मुझे प्यार करती हो, तो, छोड़ो दुर्गाकुण्ड और सिगराके रिश्तेदारोंको, आओ मेरे बगीचेमें, और फिर, हम गले-से-गला बाँध कर प्रेमकी सुखद नदीमें गोते लगायें। ऐसी बातें घनश्याम उससे तभी करते जब यह देख लेते कि वह प्रेम या वासनाके पूर्ण आवेगमें है। उदाहरण के लिये एक दिनकी घटना यहां लिख देना अनुचित न होगा। उस दिन ज्योंही राधा और वह उस उद्यानमें आये, मेघ घिर आये और देखते-देखते वृष्टि होने लगी। पहले तो दोनों अलग-अलग कुर्सियों पर बैठे थे, मगर वृष्टिने, उन्हें एक दूसरेके निकट रहनेके लिये रोमाञ्चित कर, पुलकित कर, गुदगुदा कर, विवश कर दिया। घनश्यामने अपनी पगली प्रियतमाकी ओर रस-भरी आंखोंसे देखा—

"ज़रा सुनो !"

राधा उनके पास जाकर कुर्सीकी भुजापर, उनके गलेमें हाथ डालकर, बैठ गयी। उन्होंने उसे खींच कर छाती पर ले लिया, हृदयसे चिपका लिया और लिपट कर गर्म सांसे लेने लगे। राधा भी सब कुछ भूलकर जोंककी तरह उनसे सट गयी। मानों उस पावस, उस प्रेम और उस जवानी को सफल करनेमें तन्मय हो गयी। इसी समय, एकाएक, उसके प्रेमीने अपनी भुजाओंके बन्धनको, एक सांस लेकर, शिथिल कर दिया—

"राधा, अपनी जगह पर जाकर बैठो। मेरी वह भूल थी जो मैंने तुम्हें यहां बुलाया। तुम्हें पास पाकर मैं पागल हो जाता हूं। मगर, मुझे वैसा होना नहीं चाहिये। क्योंकि तुम मेरी जो नहीं हो।"

उक्त बातें सुन राधाका कलेजा सन्न हो गया। कहां वह गर्म आलिङ्गन, कहां यह ठण्ढी बातें! उसे ऐसा मालूम पड़ने लगा मानों घनश्यामकी रूखी बातोंने उसके कलेजेमें घाव कर दिया हो। मगर,

वह अपने प्राणोंके प्राणसे ऐसी बातें नहीं सुनना चाहती। वह सब कुछ त्याग सकती है उनके लिये। फिर वह हमेशा ही ऐसी बातें क्यों करते हैं? उसे जी खोल कर प्यार क्यों नहीं करते? उसके प्यासे प्रश्नोंका सरस उत्तर क्यों नहीं देते?

"तुम ऐसी बातें क्यों करते हो?" उसने खेदसे पूछा—"आख़िर तुम क्या चाहते हो?"

"मैं चाहता हूं कि, तुम शीघ्र-से-शीघ्र दुर्गाकुण्डकी सोसायिटी छोड़ दो। मेरे साथ यहाँ रहना शुरू कर दो। मेरी हो जाओ। बस, तब मैं कुछ न कहा करूंगा। अरे! तुम्हारी आँखोंमें आँसू आगये! पगली कहीं की।"

घनश्यामने फिर उसे छातीसे लगा लिया और उसके अश्रुसिक्त कपोलोंको चूमने लगे।

मानो उस दिनके वह बादल भी इसीलिये इतना तूफ़ान मचा रहे थे कि राधा अब अपने बापको भूले और प्रियतमको छोड़कर फिर दुर्गाकुण्डकी ओर न जाय। वृष्टि घोरसे घोरतर हो चली। अन्धेरा

ऐसा बढ़ा कि यह पता लगाना मुश्किल हो गया कि अभी दिन भी है या रात हो गयी।

न जाने क्या-क्या उलटा-सीधा समझा-बुझाकर उस दिन घनश्यामने उसे वहीं रोक रखा। प्रायः उसकी इच्छाके विरुद्ध। इसके बाद तीन दिनोंतक वृष्टिका वह झड़ रुका नहीं। तबतक घनश्याम और राधा, दुनियाको भूलकर, आठो पहर उसी बगीचे में रहे और प्रेमके विविध नाटक खेलते रहे।

अब राधाने यह तय कर लिया कि वह अपने प्यारे घनश्यामको छोड़कर पापा या फ़ादर या स्याई किसीके यहाँ न जायगी। उसको, जबतक घनश्याम हैं, संसारकी और किसी भी चीज़की चाह या ज़रूरत नहीं।

हायरी उन्मत्त जवानी!

*　　*　　*　　*

उस दिन बुधुआ जब अपनी जाति-बिरादरी वालोंसे मिल-जुलकर, कोई छ बजे, दुर्गाकुण्ड लौटा तो सदाकी तरह इसी आशामें था कि उसकी

मोहिनी राधा उसके लिये खाना तैयार करती होगा और रुपाई उसके पास बैठा प्रेमसे दुम हिलाता होगा। पर, जब उसने दूरहीसे देखा कि, घरमें ज्यों-का-त्यों, ताला पड़ा हुआ है और रुपाई वीर भावसे बैठकर उसकी रखवाली कर रहा है तब उसे एक प्रकारकी विचित्र निराशा-सी हुई। उसका बूढ़ा हृदय, रधियापर सौ जानसे मुग्ध था। दुर्गाकुण्ड वाला घर तो, जब राधा वहाँ न होती, उसे सूना-सा मालूम पड़ता।

"वह आयी क्यों नहीं अभीतक?" बुधुआ मन-ही-मन विचारने लगा—"आज तो वह मेरे सामने ही और रोज़से कुछ सवेरे ही सिगरासे चल पड़ी थी। कहाँ रुक गयी वह? क्यों रुक गयी वह? अरे! यह बादल तो बड़े ज़ोरोंसे घिरे आ रहे हैं। घनघोर वर्षा होनेकी संभावना है। यह—बूंदे भी पड़ने लगीं। कौन कह सकता है कि इस वृष्टिका दम कब टूटेगा। कहाँ है मेरी प्यारी रधिया ऐसे भयानक समयमें?"

वह अपने मकानके सामने खड़ा होकर यही

सोच रहा था। अभीतक उसने ताला भी नहीं खोला था। क्या करता ताला खोलकर। जब उसकी राधा ही नहीं, तब मकान खुलकर ही क्या होगा।

जब बूंदें ज़रा और बढ़ीं तब वह घबराया और सड़कपर आकर दूरतक नज़र दौड़ाकर यह देखने लगा कि कहीं वह आ तो नहीं रही है। मगर, वह कहां थी। फिर वह सोचने लगा—हो-न-हो वह, किसी कामसे, पुनः पादरीके बंगलेपर लौट गयी हो और अब भी वहीं हो। अगर वह वहाँ है, तो कोई चिन्ताकी बात नहीं। मगर, यदि यह अनुमान असत्य हो—तब? तब कहाँ होगी मेरी सुकुमार कली इस अंधड़ और झड़ और गर्जन और प्रलयङ्कर वर्षणमें?

सचमुच, देखते-देखते, वृष्टि सुन्दरीके सजल-भाव उन्मत्त रूप धारण करने लगे। देखते-देखते सामनेकी सड़क पङ्किल हो चली। बटोहियोंका आवा-गमन कम हो चला। चारों ओरकी अप्राकृतिक चहल-पहल

शान्त हो चली और चारों ओर प्राकृतिक कोलाहल गर्जने लगा। अब? अब वह बूढ़ा, कमज़ोर, सन्तान वत्सल, बेचारा बुधुआ क्या करे? उसे कहीं ढूढ़ने जाय तो कैसे जाय? कहाँ जाय?

इसी समय वह स्पाई उसके निकट आकर, कों-कों करने, दुम हिलाने, अपने पंजोंसे ज़मीन खरोचने और सार्थक दृष्टिसे उसकी ओर ताकने लगा। मानो—आज तुम अकेले ही यहाँ कैसे हो मालिक? मेरी वह...मेरी वह...जिसका मैं नाम भी नहीं बता सकता, कहाँ है? बुधुआ समझ गया उस मूक प्रेमीके भावोंको। उसने उसको चुमकारते हुए और थपकते हुए कहा—मैं भी तो ताज्जुबमें हूं 'सिपाही'—न जाने आज वह कहाँ रुक रही! तुम भूखे हो क्या?

स्पाई, जिसे बुधुआ शुद्ध-शुद्ध न पुकार कर 'सिपाही' कहा करता था, मानो समझ गया उसके भावको। वह पुनः दुम हिलाने लगा। याने—हाँ; भूखा तो कभीसे हूं, मगर, कहाँ है वह हमारी सुन्दरी अन्नदात्री!

अन्तमें उस अभागे बूढ़े बापसे न रहा गया। उसने मकान खोलकर अपना छाता बाहर निकाला और फिर, ज्यों-का-त्यों ताला लगा कर, राधाकी तलाशमें, सिगराकी ओर, उस घोर वृष्टिमें, काँपता और लड़खड़ाता हुआ, बढ़ चला। इस बार—न जाने क्या सोचकर—स्पाई भी उसके पीछे हो लिया।

मगर, पादरीके बङ्गलेपर पहुंचनेपर उसे वही मालूम हुआ जिसका भय था। वहाँ भी वह नहीं मिली! अब? कहाँ ढूढ़े वह अपनी राधाको? वृष्टि तो बढ़ती ही जा रही है। पादरीने कहा—तुम जल्दीमें चले आये चौधरी। वह अब आ गयी होगी तुम्हारे घर। मगर, ठहरो; अभी जाओ नहीं। वहांसे यहाँ तक ऐसी वृष्टिमें आकर ही तुमने ग़ज़ब किया है, अब, अगर भींगते ही लौटोगे तो बीमार पड़ जाओगे। मगर, बुधुआ ठहरा नहीं। वह ज़रा दाँत निपोर कर और यह कहकर कि बिना राधाको देखे वह वहाँ नहीं रुक सकता—पुनः लौट पड़ा।

इस बार उसे दुर्गाकुण्ड लौटते-लौटते ज्वर चढ़

आया। उसका साथी रुपाई भी काँपने लगा। मगर, फिर भी मकान सूना ही था! अब बुधुआका धीरज—न जाने किस भीषण विचारसे—छूट गया। वह ताला खोलकर घरमें घुस गया। खाटपर पड़ गया और क्लान्ति, ज्वर और मानसिक कष्टसे व्यग्र होकर रोने लगा। उस समय कितनी रात बीत गयी थी यह, बादल और अन्धकारके कारण, समझना मुश्किल था; मगर, फिर भी रात भयानक और गुप्ती और घोर काली थी। मानो अर्धरात्रिका समय हो गया था।

दूसरे दिन सवेरे तक बुधुआके दरवाज़े खुले रहे। दूसरे दिन सवेरे तक, ज्वराक्रान्त होने पर भी, वह एकटक रधियाके आनेकी प्रतीक्षा, धड़कते कलेजेसे, करता रहा। दूसरे दिन सवेरे तक न उसने और न रुपाईने ही एक भी दाना छुआ। आह! कहाँ गयी उनकी राधा!

३६

स्वार्थी घनश्याम

एक दिन, दो दिन, एक सप्ताह, दो सप्ताह—धीरे-धीरे इतना समय बीत गया और इस बीचमें कई बार सच्चे हृदयसे राधाकी इच्छा अपने फ़ादर और पापाके पास लौट जानेकी हुई। मगर, घनश्यामने उसे फिर अपने बाग़के बाहर न जाने दिया—न जाने दिया। जब-जब वह इस तरहका प्रस्ताव करती तब-तब वह ऐसी-ऐसी बातें सुनाते, ऐसी-ऐसी माया पसारते कि, बेचारी भोली बाला निरुत्तर हो हो जाती। एक दिन जब घनश्यामने भूलसे उससे यह कह दिया कि—मैंने पता लगाया है, पादरी और तुम्हारे फ़ादर तुम्हारे लिये बहुत परेशान हैं। पुलीसमें हुलिया तक कराया गया है। तब तो, राधा व्यग्र होकर रो पड़ी। बोली—तुम्हें मेरी क़सम; तुम आजही

मुझे फ़ादरके यहाँ पहुंचा दो। मैं उनसे हाथ जोड़ कर, पापासे चिरौरी कर, यह वचन ले लूंगी कि वह हमारे प्रेम या विवाहमें बाधा न डालेंगे। मगर, घनश्यामका तो प्रस्ताव ही और था। इस समस्या पर उनके तर्क ही और थे।

वह बड़ी नम्रता और प्रेमसे लथ-पथ भावसे कहते—प्यारी राधा, तुम नहीं जानती। यद्यपि मैं तुम्हें अपनी आंखोंकी पुतली समझता हूं, यद्यपि मेरे सामने कोई तुम्हें अछूतकी नज़रसे देखे तो मैं उसकी पुतलियाँ निकाल लूं; मगर, फिर भी, हम इस काशीमें प्रकट रूपसे वैवाहिक जीवन नहीं व्यतीत कर सकते। यह पुराने विचारवालोंका सर्व-श्रेष्ठ अड्डा है। यहां चुपके-चुपके चाहे जो भी किया जाय, पर, समाजकी रुचिके विरुद्ध खुलेआम 'अलिफ़' से 'बे' भी नहीं किया जा सकता। अस्तु, मैं तो अपने पितासे झगड़ कर अलग होनेकी भूमिका बांध ही रहा हूं। बहुत बड़ा कारबार है हमारा—कुछ भी नहीं तो लाखों रुपये मुझे मिलेंगे। पिता

मुझसे बहुत दिनोंसे नाराज़ भी रहते हैं और मुझे अलग कर देना भी चाहते है—मगर, इसमें समय लगेगा। अधिक नहीं, कुल छ महीनेमें काम हो जायगा। और तब, मैं तुम्हें लेकर यहांसे कहीं दूर चला चलूंगा। जहां न तो कोई मुझे ऊंच समझेगा और न तुम्हें—मेरी जान!—नीच। बस वहीं हम दूध-पानीकी तरह बस जायेंगे। तबतक ज़रा शान्तिसे यहीं रहो न। अरे लड़कियां पतियोंकी होती हैं, फ़ादरोंकी नहीं। हर तरहसे तुम पहले मेरी हो—फिर अपने पिता या पापाकी। मैंने माना, आरम्भमें तुम्हें और तुम्हारे पापाको भी, इस वियोग से कुछ कष्ट होगा, पर, फिर सब कुछ भूल जायगा। आदमीकी यही प्रकृति होती है। वह एक ही अवस्था में बहुत दिनों तक रहनेसे ऊब उठता है। कुछ दिनोंमें आप-ही-आप सब ठीक हो जायगा। और, अगर तुम जल्दबाज़ीसे काम लोगी, तो सच मानना—मैं तुम्हारे हाथके बाहर हो जाऊंगा। हमारा समाज किसी तरह भी हमें मिलने नहीं देगा। फिर चाहे

मुझे तुम्हारे लिये आत्महत्या ही क्यों न करनी पड़े।

जब-जब ऐसा प्रकरण आता तब-तब ऐसी ही बातें कर घनश्याम ऐसा भाव बनाते और मुहं लटका कर कुर्सी पर लेट जाते मानो राधा अपने पिताके यहाँ जानेका प्रस्ताव कर उनके प्रेमका निरादर कर रही है। बेचारी वह इस नाटकमें भूल जाती अपने भविष्यको और फिर उनकी अगुंलियों पर नाचने लगती। इसी तरह पहला महीना बीत गया और दूसरा भी बीत चला। वह रोज़ ही एकबार कुछ समयके लिये शहर जाते और फिर वहांसे अनेक आकर्षक भोग्य-सामग्री लेकर लौट आते। शहरमें, और मित्रोंमें, और घरमें उन्होंने यह मशहूर कर रखा था कि, आजकल दुनिया और ऐय्याशीसे वह ऊब गये हैं। एकान्त ही उन्हें अब पसन्द आता है, और वह भी, ऐसा एकान्त जहाँ उनके भावोंको देखने वाला और कोई भी न हो। उनके पिताने इसका अर्थ यह समझा कि लड़का अब सुधर रहा

है। मित्रोंने यह समझा कि नालायक बना कर निकाल दिये जानेके डरसे घनश्याम अब अपने खूसट बापकी आज्ञाओंके सामने झुक गया।

और वह राधा? उस पगलीने तो उन्हें अपना सर्वस्व निछावर कर दिया। वह उनके प्रलोभनोंमें बुरी तरह फंस गयी। सामाजिक या दुनियाके ढंगसे विवाह न होने पर भी वह उनकी भार्याका पार्ट खेलने लगी। अब वह उसे इतने प्यारे हो गये कि बिना उनके उसका एक-एक पल युगों-सा बीतता। और उनकी उपस्थितिमें घंटे और दिन और हफ़्ते और महीने इस तरह बीत जाते मानो एक पल—और वह भी छोटा-से-छोटा!

घनश्याम दोनों हाथोंसे उस भोली बालिका की अछूती जवानी, उसके सुन्दर ओष्ठोंका स्वर्गीय रस, उसकी छातीकी अलौकिक गर्मी, उसकी अज्ञान हंसीका अनुपम प्रवाह, लूटने लगे। उन्हें केवल, जल्द-से-जल्द समयमें, अधिक-से-अधिक सुख लूट लेनेकी फ़िक्र थी। उनका बस चलता तो वह

एक ही घूंटमें, सौन्दर्यकी उस अनुपम सुरा-भरी सजीव सुराहीको—घट-घट पी जाते।

साथ ही उस बेवक़ूफ़ लड़कीका बस चलता, तो, वह भी एक ही घूंटमें, अपने प्रियतमके कण्ठके नीचे, अपने सर्वस्वको—आगे-पीछेकी चिन्ता किये बिना ही—उंडेल देती।

हायरे जवानीके पागलपन !

३७

हड़ताल !

महीनों तक राधाका पता न चलनेके कारण बेचारा बुधुआ पागल हो गया होता, अगर, उसकी पीठपर अघोड़ी मनुष्यानन्द न होते। फिर भी, उसके ग़ायब होनेके बाद, कोई डेढ़ महीने तक लगातार वह बीमार रहा। ज्वर और सर्दी दोनोंने उसके जर्जर शरीरपर ऐसा भयानक धावा बोल दिया कि उसका

बधिया बैठ गया। अघोड़ीने उस समय उसके उसी घरमें प्रायः टिककर उसकी भरपूर सेवा-शुश्रूषा की और अन्तमें उसे चंगा करके ही छोड़ा। किन्तु राधाके मिलनेकी बात, अच्छा हो जानेपर भी बुधुआकी छातीमें हमेशा धुकधुकीकी तरह गूंजा करती थी। इसके लिये अघोड़ीने उसे यह कहकर धैर्य दिया था कि—राधाको जीवनके रहस्य समझनेके लिये आरम्भमें, कड़ी ठोकरोंकी ज़रूरत है। मैं जानता हूं, वह बड़ी भाग्यशालिनी बालिका है। वह ज़रूर सुख पावेगी, मगर, समय आनेपर। अभी कुछ दिन उसके ग्रह ख़राब हैं, यह मैं बहुत पहलेसे जानता हूं। तुम्हें बताया इसलिये नहीं था कि, जो होनेवाला ही है उसे मनुष्य उलटा लटककर भी नहीं रोक सकता। तुम व्यर्थ ही घबरा उठते। अतः छोड़ो उसकी चिन्ता; उठो और देखो! तुम्हारी दलित जाति और उस जातिकी अनेक राधाएं तुम्हारी ओर करुण दृष्टिसे निहार रही हैं। तुमने उनके उद्धारका जो आन्दोलन उठाया है, वह घोर परिश्रम

करने और भयानक कष्ट सहन करने ही पर सफल होगा। तुम्हारी बीमारीसे बुधराम चौधरी, तुम्हारी जातिवालोंका हौसला कुछ ढीला पड़ा जा रहा है। उठो, और समय रहते ही उन्हें सम्भालो! मैं तो यहाँ तक कह सकता हूं कि यदि तुम अपनी जातिके लिए एकबार लड़कर सुख और शान्ति ढूंढ़ लो तो बस मिल गयी तुम्हें तुम्हारी प्यारी राधा। आज यदि तुम दुनियाकी दृष्टिमें पतित और दरिद्र और अज्ञान और अबल न होते तो कौन कह सकता है कि तुम्हारी राधाको इस तरह तुम्हारा साथ छोड़ना पड़ता।

अघोड़ीकी उक्त बातें भावुक बुधुआकी समझमें आ गयीं। उसने एकबार कोशिश कर अपनेको अपनेसे ऊंचे उठाया और राधा-प्राप्तिकी लालसाको, बेचारे दलित भाइयोंके लिये सफलता प्राप्तिकी कामनाके रूपमें, बदल दिया।

शहरके सामाजिक तानाशाहों—जिनसे इस देशकी एक-एक गली भरी पड़ी है—पर कुछ दिन पूर्व की भंगियोंकी धमकी का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा

था। बहुतोंने तो उनकी बातोंपर कान ही नहीं दिया, और बहुतोंने धमकीके विरुद्ध महा धमकी देकर कुछ भङ्गियोंको डरा भी दिया। कहा जाता है एक किसी "पवित्र" कायस्थने तो अपने भंगीकी बातें सुन उसे सैकड़ों गालियां दीं उसके इस धृष्ट प्रस्तावके लिये; और, कुछ बाता-बाती बढ़ जानेपर उसे पटककर मारा भी। कुछ अमीरोंकी अंगुलियोंपर रुपयोंकी खनखन आवाज़पर नाचनेवाली पुलीसके कठपुतलोंने भी अलग-अलग बुलाकर भङ्गियोंको गालियां और धमकियाँ दी,—"सालेके बच्चे!" उन्होंने अपना मन्त्र सुनाया उन्हें—"शामत सवार है तेरी खोपड़ीपर? क्यों लोगोंको हड़तालकी धमकी देता है? भले आदमियोंका पाख़ाना नहीं साफ़ करेगा तो क्या करेगा—कलेक्टरी, थानेदारी, सुपरडण्टी? सुअर कहींके! अब अगर ऐसी बातें सुनायी पड़ीं तो मारे जूतोंके सिरके बालोंकी खेती साफ़ कर दी जायेगी। पाख़ाना नहीं साफ़ करेंगे तो डाका डालेंगे ससुरे!"

इधर शहरके दलितोद्धार संघके सदस्योंने भी इस आन्दोलनपर कमर कस ली थी। धीरे-धीरे उनके मनमें यह निश्चय हो गया कि बिना टेढ़ी और कड़ी अंकुली किये जिस दुनियाके पात्रोंमेंसे घी भी नहीं बाहर निकल सकता है भला फिर उसी दुनियाके लोग सीधी तरहसे दलितोंको सामाजिक स्वतन्त्रता और अधिकार कैसे देंगे। किसी भारी अमीरने, अघोड़ी मनुष्यानन्दके प्रभाव और चरित्र और तेजसे मुग्ध होकर, कुछ शर्तोंपर, इन दलित-बन्धुओंको पूरे एक लाख रुपये दिये थे और यह इच्छा प्रकट की थी कि, उस धनकी सहायतासे सबसे पहले इस पवित्र पुरी काशीके अपवित्रोंको ही पवित्रताका मन्त्र दिया जाय। रुपये किस तरह ख़र्च किये जायंगे, इसका मसविदा भी तैयार कर लिया गया।

उसीके अनुसार, बुधुआके अच्छा होते ही, एक दूसरे उदार दानी और अमीरकी ज़मीनपर, जो अलई-पुरमें है, एक बड़ा-सा अछूताश्रम खोला गया। वह आश्रम क्या था पूरा गाँव था। पहले उसमें पांचसौ

भंगियोंके रहने योग फूसकी अनेक झोपड़ियाँ डाली गयीं, एक कच्चा मकान—साफ़ और खुला—उनके विद्यालयके लिये बनवाया गया और उसमें कताई-बिनाईका काम सिखाने और चलानेके लिये करघे आदि बैठाये गये। पादरी जानसनने अघोड़ीके आग्रहसे अपने बंगलेपर कई सौ मज़बूत और हलके चलनेवाले चरखे तैयार कराये। उन्होंने कई ऐसे ईसाई लुहार और बढ़ई भी अछूताश्रममें काम करनेके लिये बुलाये जो पहले किसी दलितजातिके परिवारी थे। शहरके दूसरे, कोई दो दर्जन पढ़े-लिखे स्वयं सेवकोंने भी आश्रममें रहने और दलितोंको लिखाने-पढ़ाने, संयमी बनाने, और हस्तकौशल-कला सिखानेकी प्रतिज्ञा की। अघोड़ी मनुष्यानन्द और भीतर-ही-भीतर पादरी जानसनने भी आश्रमको हर तरहसे सफल बनाने और अछूतोंको एकबार धूर्त "छूतों" से लड़ा देनेका निश्चय किया।

फिर क्या, इस आन्दोलनके नेता चौधरी बुधरामके आज्ञानुसार एक दिन सारे बनारसके भंगी टोले

खाली हो गये। और, सब-के-सब भंगी अपने बीबी-बच्चोंके साथ, अछूताश्रमकी झोपड़ियोंमें आ बसे !

इसके दूसरे दिनसे ही तो, शहरमें, हड़ताल हो जानेकी चर्चा फैल गयी। और अमीर, ग़रीब, पण्डे पुरोहित, बाबू, भैया सभी एकबार उत्सुक और कुछ चिन्तित हो उठे। अरे इतनी हिम्मत इन पाजियोंकी ! अरे; इनका यह आश्रम एकाएक कहांसे तैयार हो गया ! अरे; इन्हें इतने रुपये कहाँसे मिले ! अरे; अरे !!

३८

धोका !

अरे यह क्या ? अरे यह क्या ??—कोई छ महीने तक घनश्यामजीकी "रखीली" रहनेके बाद उस बेवक़ूफ़ लड़कीने मन-ही-मन अनुभव किया—अब उनका प्रेम ठण्ढा-सा क्यों हुआ जा रहा है ? अब

उनकी आंखोंकी मस्ती हलकी, उनके प्रेम-सम्भाषण रूखे और उनका आलिङ्गन-पाश शिथिल-सा क्यों मालूम पड़ता है? अब वह शहरमें इतना अधिक क्यों रहने लगे? कभी-कभी तो दिन-दिन भर रह जाते हैं और पूछनेपर बुद्धिमानी का राग अलापते हैं। कहते हैं—तुम्हें तो केवल शृंगार और खिल-खिल चाहिये। क्योंकि तुम स्त्री हो और केवल इन्हीं निस्सार कामोंके लिये बनी हो। मगर, मुझे और भी कुछ करना है। काम-धाम देखना है। तुम्हारे शृंगारों और खिलखिलोंके लिये उस चीज़का प्रबन्ध करना है जिसे तुम खूब पहचानती हो—पैसा! ऐसा तो वह आरम्भमें नहीं करते थे। अब यह एकाएक उनको क्या हो गया?

अरे! अब तो वह रात-रात भर ग़ायब रहने लगे! पिताजीने नहीं आने दिया, करता क्या? बिरादरीमें काम था, आता कैसे? आख़िर तुम इतनी घबराती क्यों हो? तुम्हें कमी किस बातकी है? बड़ी बेवक़ूफ़ हो। खाना तुम्हारे पास, कपड़े तुम्हारे

पास, पैसे तुम्हारे पास, नौकर तुम्हारे पास—फिर मेरे लिये इतना क्यों परीशान रहती हो ? मैं क्यों परीशान रहती हूं यह कैसे समझाऊं उन्हें ? क्या यह परीशानी कुछ नयी है ? एक दिन तो वही मुझे अपने लिये परीशान रखना चाहते थे और आज जब मैं सचमुच परीशान रहती हूं तब पूछते हैं कि—ऐसा क्यों करती हो ? अब तो वह विवाहकी बातें भी नहीं करते और जब मैं उठाती हूं उस प्रसङ्गको तब न जाने कैसा अनाकर्षक मुख बनाकर उड़ा देते हैं उस विषयको। अब वह रातमें अक्सर मेरे साथ ही सोनेका—और लिपटकर, छातीकी धड़कनसे छातीकी धड़कन मिलाकर सोनेका—आग्रह क्यों नहीं करते ? आते भी हैं तो मानों मेरी प्रसन्नताका उन्हें ध्यान ही नहीं रहता ? अब वह लम्बी-चौड़ी बे-सींग-पूंछकी बातें कहां ग़ायब हो गयी ??

उस दिन घनश्यामको कुछ प्रसन्न देखकर वह उनकी कुर्सीके पास चली गयी और बोली—

"चुप क्यों हो ?"

"क्या बोलूं, जब कुछ बोलनेको बाक़ी ही नहीं रह गया है। कहो तो बगीचेमें घूम-घूम कर कौवे उड़ाऊं और इसी बहाने तुम्हें खुश रखनेके लिये बोलता रहूं ?"

"अहँ! प्यारे! तुम चिड़चिड़े क्यों हुए जा रहे हो ? मैं वैसा करनेको तुमसे कब कहती हूं।"

"तब चलो हटो! उधर चलकर बैठो। मैं रोज़-गारकी बातें सोच रहा हूं।"

"बुरा न मानो प्राण!" उनकी आँखोंसे आँखे मिलाकर उसने कहा—"मैं तुमसे-कुछ पूछना चाहती हूं। छ महीने तो बीत गये। अब......अब......, यहांसे कहीं और कब चलोगे ? हमारा सम्बन्ध—ब्याह... !"

वह संकुचित होकर आँख नीची कर चुप रह गयी। आगे कुछ भी न कह सकी।

"बस तुम्हें हमेशा वही एक ही बात याद रहती है—ब्याह—ब्याह। अरे प्यारी!" वह ज़रा नम्र बने—"हमारा ब्याह तो हुआ ही है। रही कहीं

चलनेकी बात सो उसीकी तैयारीमें तो आजकल जी-जानसे जुटा हूं। घबराती क्यों हो इतना ?"

यद्यपि घनश्यामने इस तरह बातें बनाकर उस दिन उसे चुप कर दिया पर अब वह भी धीरे-धीरे—न जाने किस आन्तरिक प्रेरणासे—उनसे कुछ सहमने लगी। न जाने क्यों अब वह अपने फ़ादर और पापाके लिये कुछ व्याकुलताका अनुभव करने लगी। उसका हृदय मानो यह पुकारने लगा कि इस तरह अपने स्वजनोंको छोड़ कर उसने कोई भला काम नहीं किया। मगर, फिर भी, उसकी सारी आशाओं-का अवसान नहीं हुआ था। अब भी वह अपने प्राणप्यारे घनश्याम पर अविश्वास करनेको तैयार नहीं थी।

उस दिन घनश्यामजी जो सुबह नहा-धो कर शहरकी ओर गये तो दिन भर नहीं लौटे। उस दिन राधाका जी भी बहुत उदास था। उदास तो वह इधर महीनोंसे रहती थी, पर, उस दिनकी उदासी मृत्युकी उदासी-सी सूनी और भयावनी थी। आठ

बजे शाम तक जब उनका पता न चला तब नौकरने आकर उससे भोजन कर लेनेका आग्रह किया। पर, उसने यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि, जब-तक वह नहीं आवेंगे, आज भोजन न करूंगी। कोई हर्ज नहीं, कुछ तबीयत भी भारी है।

नौकर चला गया; और वह, चुपचाप एक आराम कुर्सीपर बैठकर "उनके" आनेकी प्रतीक्षा करने लगी! रह-रह कर उसका ध्यान बगीचेसे सटे सड़ककी ओर जाता—उनकी गाड़ी तो नहीं आयी। आह! आख़िर वह आही तो नहीं गये! मगर, नौ बजे, दस बजे, ग्यारह और बारह भी बजे, पर उनका पता न चला। खेद और जागरण और क्षुधासे उसकी आँखें ढपने लगीं। लेकिन वह कुर्सीसे उठी नहीं। आख़िर बंगलेके क्लाकने, टन्नसे एक बार बजकर, साढ़े बारह बजनेकी सूचना दी। यह जाननेके लिये कि यह घण्टी साढ़े बारह की है या एककी वह ज्योंही कुर्सीसे उठी त्योंही बगीचेके फाटक पर गाड़ीके पहियेकी खड़खड़ाहट सुनायी

पड़ी। वह रुक गयी। उसने नज़र दौड़ाकर फाटक और गाड़ीकी ओर देखा। रात अंधेरी थी, इसलिये सिवा गाड़ीके प्रकाश और कुछ नर-मुण्डों और उनकी कण्ठ-ध्वनिके उसे कुछ भी दिखाई-सुनाई न पड़ा। पर यह क्या—वह लोग किसे उठाकर इधर ही ला रहे हैं? हैं? हैं! इस आधीरातमें यह कौन लोग आ रहे हैं।

क्षणभर बाद कई सुफ़ेदपोश युवक और बगीचे का माली तथा नौकर, घनश्यामको लादकर उसके सामने ले आये। यह दृश्य देखकर उसकी छाती धड़क उठी। उसने इस बातका अनुभव भी किया कि वे सभी सुफ़ेद पोश शराबके नशेमें चूर थे और उसका प्राणप्यारा भी उसीमें बेहोश था। वह चमक कर आगे बढ़ी—पलङ्ग पर घनश्यामको सुलाते हुए उन आदमियोंकी ओर; पर—आह! यह कौन? उसने देखा उस भीड़में कोई सुन्दरी और युवती स्त्री भी थी! शायद वह भी नशेमें थी। उसके वस्त्र यथा स्थान नहीं थे। उसके बाल खूबसूरतीसे

बिखरे थे और उसके कपोल शायद ताम्बूलराग-रञ्जित थे।

अभी वह भौचकी-सी यह तमाशा देख ही रही थी कि उनमेंसे एक व्यक्ति उसकी ओर लड़खड़ाता हुआ बढ़ा—

"ओहो! मिस राधा!!" आश्चर्यसे उसने कहा—"तुम यहाँ हो? घनश्यामके साथ? अरे! तब उसने मुझे धोखा दिया था? तुम्हें घरसे फुसलाकर यहाँ मौज ले रहा था और हमसे कह रखा था कि—एकान्तवास कर रहा हूं! बापरे! ऐसा पाजी निकला घनश्याम।"

वह राधाको गुरेरने लगा—

"ताकती क्या हो, मेरा नाम गुलाबचन्द है। मैं वही हूं जिसे तुमने उस दिन देखा था, अपने इस धोकेबाज़ छबीलेके साथ। ओह! तुम तो आज पूरी औरत और मज़ेदार हो गयी हो। बड़ा मज़ा लिया इस पाजीने। हमींको ठग लिया। ख़ैर तो आजही सही—प्यारी; मेरी जान! मैं भी तुम पर मरना चाहता हूं।"

उन्मत्त गुलाबने झपट कर परीशान राधाको ज़बरदस्ती छातीसे लगा लिया और सँभलते-न-सँभलते उसके मुखपर चुम्बनोंकी बौछार लगा दी उस मदहोशने ! मगर, तुरन्त ही राधा सँभली और बड़े ज़ोरसे धक्का मार कर उसने उस बे-सुध कामीको गिरा दिया पृथ्वीपर—हुङ्कार उठी क्रोधसे ; और उस पतित पर लगी लगातार चरण प्रहार करने।

"डैम डेविल !" वह रो और चिल्ला पड़ी—"ऐसी हिम्मत तेरी ! तू आदमी है या सूअरका बच्चा !"

बाग़के माली और नौकरने टुकराकर, गुलाबको वहाँसे दूर धकेला, दूसरे युवक तो आश्चर्यसे काठ मारे-से हो रहे। उनकी समझमें वह पहेली कुछ भी न आयी। हाँ, वह दूसरी स्त्री इस नाटक पर खिलखिला कर हँस पड़ी—

"घनश्याम बाबू बगीचेमें भी मेरी एक सौत रखे हैं। अच्छा ! जब होशमें आवेंगे और आवेंगे किसी दिन मेरे कोठे पर तब मैं पूछूंगी उनसे... ।"

नफ़रतसे राधाकी ओर देखकर वह स्त्री और

ताज्जुबसे उसकी ओर घूरकर वे शराबी, घन-श्यामको वहीं छोड़, बगीचेके बाहर चले गये।

३६

युद्ध होगा

सन्ध्या समय, मैदागिनकी चौमुहानीसे आरम्भ कर सीधे अस्सीघाट मुहल्लेके अन्ततक, स्थान-स्थान पर "पवित्रों" की छोटी-बड़ी टोलियाँ, खड़ी होकर, सड़कों और गलियोंके गन्दे शृङ्गारको नाक बन्द किये देख रही थीं और आपसमें बातें कर रही थीं—

"उफ़, उफ़! आज पन्द्रहवां दिन है साले भंगियोंकी इस हड़तालका। अब तो सारी काशी मलाकीर्ण हो गयी है। जिधर निकलो, उधर ही दुर्गन्ध—साँस लेना मुश्किल हो रहा है।"

"अरे मुहल्ले के मुहल्ले 'बंपुलिस' का साज

सजाये—महक रहे हैं। मक्खी और गोबरैले लोगोंके घरोंपर इस तरह क़ब्ज़ा किये बैठे हैं जिस तरह संसारके अनेक ग़रीब-देशोंपर अंगरेज़।"

"अगर एक हफ़्ता यह हड़ताल और चली तो शहरमें हैज़ा फैल जायगा।"

"अभी फैल जायगा कहते हो? अरे फैल रहा है। कल मक़्नबुरेमें तीन मुसलमानोंकी मृत्यु हुई है।"

"उस मुहल्लेमें हैज़ा? क्यों वहाँ तो ड्रेनसे भंगीका काम लिया जाता है।"

"पर, सबके घरोंमें अभी ड्रेन थोड़े ही घुस सका है। ड्रेन-पाख़ाने तो अमीरोंकी शोभा हैं—ग़रीबके घरपर तो मेहतर ही अपना नरक भोगा करते थे—उफ़! जो हो भाई! अब कुछ-कुछ पता चल रहा है कि भंगीका काम कितना घृणित और नारकीय होता है। मेरे घरका पाख़ाना तो बड़ी गन्दगीसे बजबजा रहा है। हे मेरे भगवान! जी नहीं करता घुसनेको। इसीलिये बहुतसे पुरुष, निपटनेवालोंके

दलमें मिलकर, उसपार या मैदानोंमें जाने लगे हैं। पर बेचारी औरतें कहाँ जायँ? बीमार कहाँ जायं? बच्चे कहाँ जायं? इन्हें तो उस नरकके सिवा और कोई जगह नहीं। कुछ अक्ल काम नहीं कर रही है।"

चौकके पास एक तम्बोलीकी दूकानके पास कुछ लोग बातें कर रहे थे—

"अब क्या होगा?"

"म्युनिसिपैलटी पर दबाव डाला जाय।"

"वह कुछ नहीं कर सकती। शहरके भंगी तो अछूताश्रममें दाख़िल हो गये और किसी भी धमकी या भयसे वे दबते ही नहीं। रहे बाहरके, सो पहले तो बाहर वाले यहाँकी हालत सुनकर आनेपर राज़ी हो नहीं होते, और; अगर कहींसे कुछ भोले-भाले आते भी हैं, तो, अछूतोद्धारक और वह अघोड़ी और वह बुधुआ सालेका दल ऐसे-ऐसे मन्त्र उनके कानोंमें भरता है कि वे झाड़ू रख देते हैं—टोकरी फेक देते हैं।"

"सुनते हैं उस अछूताश्रममें रहनेवाले दलितोंको

और इनकी स्त्रियोंको चरखा कातना, रुई धुनना, चरखे बनाना और बढ़ईके अन्य काम तथा सूप, बेना, मेज़, कुर्सी आदि तैयार करना बड़े धड़ल्लेसे सिखाया जा रहा है। उनके बच्चोंको पढ़ाया-लिखाया और स्वच्छता-प्रेमी बनाया जा रहा है। सुनते हैं बड़ा उत्साह और बड़ा जोश है उन भूखे पतितोंमें।"

"मैंने सुना है कल पुलीस सुप्रेण्टेण्डेण्ट और और कोतवाल और कलेक्टर और कमिश्नर भी अछूताश्रममें गये थे।"

"अरे केवल गये ही नहीं थे—वहाँसे अपना-सा मुहं लेकर चले आये थे। अघोड़ी मनुष्यानन्द और उनके साथ-साथ पादरी जानसनने ऐसी-ऐसी फटकारें बतायी मनुष्यताके उन वैध-लुटेरोंको कि, वे स्तब्ध रह गये। गये थे धमकाने कि ऐसा आश्रम और ऐसी व्यवस्था ग़ैर-कानूनी है, और ऐसी कड़ी कनेठी मिली उन्हें उन अछूत प्रेमियोंसे कि तिलमिला कर, बिलबिलाकर, चले आये।"

"तो अब साहब-सूबा और म्युनिसिपैलिटी भी

कुछ नहीं कर सकती? फिर क्या होगा? क्या सारा शहर इसी तरह गन्दा रहेगा?"

"लक्षण तो, फ़िलहाल, ऐसे ही दिखाई पड़ते हैं। अब सिवा इसके कि अपने हाथसे पाख़ाने और घर और सड़कें साफ़ की जायं दूसरा कोई उपाय नहीं। औरङ्गाबाद मुहल्लेके कुछ पवित्र-स्वयंसेवकोंने तो बहुतसे स्थानों पर स्वयं झाड़ू फेरा है, पर, पाख़ाने साफ़ करनेकी हिम्मत उनमें भी नहीं। छिः! मैं तो इस कल्पना हीसे कण्टकित हो उठता हूं।"

तमोलीने कहा—"भैया, सुना है पुलीसवाले भंगियोंपर ज़ोर-ज़ुल्म करनेकी सोच रहे हैं; अफ़सरोंके इशारेपर। सुना है, सीधी तरहसे काम न होगा तो, डण्डे और बन्दूकोंकी सहायता ली जायगी। स्वयंसेवक और अछूत और अघोड़ी तक पकड़े जायंगे।"

एक जगह पुराने और नये दोनों विचारोंके लोगोंकी मण्डली भी उक्त प्रकरणपर निम्न तर्क-वितर्क कर रही थी—

नये—बेशक, उनकी पुकार न सुनकर हमेशासे हम उनपर अत्याचार करते आये हैं, और, पददलितोंको क्रान्ति करनेका, बलवा करनेका और युद्ध करनेका जन्म सिद्ध अधिकार है। हमें उनकी ईमानदारीसे भरी मांगोंके आगे झुकना चाहिये।

पुराने—अरे चलो। बड़े झुकनेवाले। इस अघोड़ीने इस घटनाको इतना महत्व दे रखा है, नहीं तो अबतक मारे जूतोंके सालोंके होश ठिकाने कर दिये गये होते। इनको यह हिम्मत।

नये—शर्म कीजिये महाराज! वे बेचारे भरपेट रोटी मांगते हैं और आप उन्हें—ऐसे धार्मिक और ज्ञानी होकर भी—जूते देनेको तैयार हैं। उनकी इच्छा—वे नहीं चाहते समाजकी वर्त्तमान शर्तोंपर उसका नरक ढोना। आप कौन हैं उनके साथ ज़बरदस्ती करनेवाले? वे आपके ज़रख़रीद गुलाम नहीं। कर लीजिये अपने घर अपने हाथों साफ़—नः—नहीं कर सकते आप! घृणा मालूम होती है—क्यों? जो काम खुद नहीं कर सकते उसे दूसरोंसे ज़बरदस्ती कराते

कहनेका आपको क्या हक़ है ? सावधान ! यह बीसवीं सदी है। इसमें किसीकी ज़ोर-ज़बरदस्तीकी गाड़ी कभी नहीं चल सकेगी। मनुष्य जाग रहा है— ग़रीब आंखें फाड़-फाड़कर ज्ञान और मुक्तिकी ओर देख रहे हैं।

"तब क्या होगा ?" किसी दूसरे पुरानेने पूछा— "क्या हमींको अब पाख़ाने साफ़ करने होंगे ?"

"नहीं, आप उनकी शर्तें स्वीकारिये," नये मतोंके समर्थकने कहा—"सरकारसे, उन्हें पीसनेके लिये, जो लड़ते हैं उसे रोकिये और उनके उत्थान और सुधारका रास्ता साफ़ कीजिये। पहले आप उनकी मुक्तिका पथ साफ़ कीजिये तब वह परम कृतज्ञ भावसे आपकी मुक्तिका पथ साफ़ करेंगे। उनके बच्चोंके लिये पढ़नेकी व्यवस्था कीजिये, उन्हें पाख़ानोंके बाहरकी कलाका भी परिचय दीजिये। उन्हें, यदि आपको धर्म प्यारा हो, तो, धार्मिक और सच्चा धार्मिक बनाइये ! मन्दिरोंके द्वार खोलिये,—भड़-किये नहीं !—पवित्रोंके लिये नहीं, पूजीपति सर्व-

शक्तिमानोंके लिये नहीं, चमार, डोम, या भङ्गियोंके लिये भी नहीं—मनुष्यके लिये, सारी मनुष्य जातिके लिये। मन्दिरोंके पवित्र फाटकोंपरसे "आर्य धर्मेतराणां प्रवेशो निषिद्धः" के संकुचित और अन्यायी साइनबोर्डको हटाइये और उसके स्थानपर, प्रसन्नवदन होकर, दूसरा साइनबोर्ड लगाइये जिसपर स्वर्णाक्षरोंमें खुदा हो—हरिको भजे सो हरिका होई।"

"यह पागलोंकी बातें और कल्पनाएं हैं," पुराने विचारोंके महाराजने सगर्व उत्तर दिया—"ज़रूरत पड़नेपर हम और सब तरहकी स्वतन्त्रता इन अछूतोंको दे सकते हैं—शायद दे दें—मगर, मन्दिरोंमें कैसे, क्यों, जाने देंगे—ये नीच हैं, पतित हैं, चाण्डाल हैं—दो पैरके मनुष्य रूपधारी प्राणी हैं तो क्या हुआ। यदि ये मन्दिरोंके विषयमें कभी दस्तन्दाजी करेंगे तो—याद रखिये—सारी काशी इनके साथ 'डाटे पे नव नीच' सिद्धान्तानुसार व्यवहार करेगी।"

"ठीक यही बात मुझे भी" एक ओरसे नये विचार वाले किसी युवककी आवाज़ आयी—"कुछ

परिवर्त्तनोंके साथ कहनी हैं। ये पुराने विचारके पवित्र-पशु यदि अब अधिक इन सार्वजनिक देवताओं और मन्दिरोंके विषयमें दस्तन्दाज़ी करेंगे तो—याद, रखिये सारी काशी और उसके ग़रीब मनुष्यता प्रेमी इनके साथ 'डाटेपै नव नीच' सिद्धान्तानुसार व्यवहार करेंगे। समझे कूपमण्डूकजी !"

इस पर उस भीड़में बड़ा हो-हल्ला मचा। वह कूपमण्डूकजी लगे तलाशने उस उदण्ड वक्ताको। चारों ओर और दोनों पक्षसे ले-दे की आवाज़ें आने लगीं। यह तो कहिये पुलीसने समय पर पधार कर उन्हें तितर-बितर कर दिया। फिर भी, पवित्र सनातनी लोग अछूत समर्थकोंकी मा-बहनोंको वेद-विहित मन्त्रोंके साथ स्मरण करते हुए और यह कहते हुए इधर-उधर चिल्ल-पों मचाने लगे कि—मारो इन साले भंगी समर्थकोंको। अब बिना युद्ध किये हमारे धर्म और जाति और मन्दिरोंका कल्याण नहीं।

४०

राइट का पत्र

उस दिन अपने बंगलेपर औघड़राजके आतेही पादरी जानसनने पूछा—

"कोई नई ख़बर है ?"

"नयी ख़बर क्या अभी दोनों दल अपने-अपने स्थानोंपर अड़े हैं। न हमीं लोग झुकनेके लिये तैयार हैं और न यहाँका दुष्ट समाज और उसकी समर्थक सरकारही।"

"शहरकी सफ़ाईकी क्या व्यवस्था हुई है ?"

""अभीतक कुछ भी नहीं। सड़कें ज्यों-की-त्यों गन्दी हैं। कहीं-कहीं पर अमीर और रोज़गारी और अधिकारी दूसरे ग़रीबों याने नौकरोंकी सहायतासे सफ़ाई करा रहे हैं; मगर, केवल छोटी-छोटी

जगहों—दफ्तरों, थानों और दूकानोंकी। सड़कें और पाख़ाने तो ज्यों-के-त्यों हैं।"

"इधर दो-तीन दिनोंसे बुधरामका कोई पता नहीं। वह क्या प्रचारके लिये कहीं बाहर गया हुआ है?"

"नहीं—वह बहुत बीमार है। मालूम पड़ता है, अब उसका समय पूरा हो चला है। शक्ति रहने पर ज़रूर वह तपस्वियोंकी तरह अपनी जातिके हितार्थ उद्योग और परिश्रम करता है, पर, राधाके लापता हो जानेसे मानों उसके प्राण ही शिथिल पड़ गये हैं। जबसे वह ग़ायब हुई तबसे अबतक बराबर वह एकबार रोज़ गिड़गिड़ाकर मुझसे अपनी रधियाके लिये प्रार्थना करता है। मगर, उसका कहीं पता चले तब तो?"

"आपको भी पता नहीं चलता! आपके बारेमें तो, सुना है, आप सब कुछ कर सकते हैं। फिर बुधुआकी बेटी हीके खोजनेमें आप..."

बात काटकर अघोड़ीने कहा—"गुरुकी कृपासे अवश्य कुछ भी असम्भव नहीं। पर मैं यह भी तो

जानता हूं कि उसका अन्त बहुत निकट है और मुझे, मरनेके पूर्व ही, उससे दलितोंके हितके कई आवश्यक काम भी तो लेने हैं। इस समय राधाके खोजनेसे अधिक ज़रूरी कार्य है इनकी हड़ताल सफल करना।"

"मगर," ज़रा गम्भीर स्वरसे वृद्ध जानसनने कहा—"राधाकी तो इस वक्त मुझे भी ज़रूरत है। मैं भी एक बार किसी-न-किसी तरह उससे मिलना चाहता हूं।"

"क्यों? क्यों? क्या आपका प्रेम भी उस बच्चीके लिये व्याकुल हो रहा है?"

"प्रेमकी कोई विशेष चिन्ता नहीं है," उत्तर मिला—"दुनियामें कितने प्रियोंको छोड़ते-छोड़ते और भूलते-भूलते मैं परमात्माके इन आकर्षक बच्चे-बच्चियोंके छोड़ने-भूलनेका आदी हो गया हूं। पर, कोई दूसरा काम भी आ पड़ा है। यह देखिये।"

पादरीने फ़ाइलसे निकालकर एक विलायती पत्र अघोड़ीके हाथमें दिया। वह पत्र लण्डनसे आया था। अघोड़ीराज ध्यानसे उसे पढ़ने लगे—

"प्यारे साधु जानसन महोदय !

एक युग बीत गया, मेरी कुछ अमूल्य संध्याएं आपके बंगलेपर—काशीमें—बीती थीं। उन सन्ध्याओंमें, एक सन्ध्या तो बहुत ही महत्व-पूर्ण थी। वही जिस दिन वह भयानक साधु उस अनाथ बच्चीको लेकर आपके बंगलेमें घुस आया था। ओह! कैसा तेजस्वी था वह भारतीय महापुरुष! अभीतक उसका चित्र मेरी आँखोंमें ज्यों-का-त्यों नाच रहा है।

इसके बाद अपने प्रतिज्ञानुसार मैं बराबर, कई पौण्ड प्रति मास, उस बच्चीके भरण-पोषणके लिये आपके पास भेजता और उसी व्याजसे आपलोगोंका कुशल संवाद पाता रहा। आपको स्मरण होगा पिछले दो-तीन वर्षोंसे आपने मुझसे उस बच्चीके लिए मदद लेना बन्द कर दिया है। और, यह कहकर बन्द कर दिया कि, अब उसका बाप अपनी सज़ा भोग कर बाहर आ गया है और वह स्वयं अपनी बेटीका भार सम्भालनेको तैयार है। आपने यह भी लिखा था कि अब वह लड़की भी परिश्रमकर अपनी

रोज़ी कमाने लायक़ हो गयी है और यह भी लिखा था कि बच्ची अद्वितीय रूपवती, गुणवती और तेजस्विनी है। आज मैं उसी बच्चीके बारेमें आपसे कुछ निवेदन करना चाहता हूं।

इधर देहातोंमें प्रभुके सन्देशोंका प्रचार कर पिछले सप्ताह जब मैं लण्डन लौटा तब एक दिन एक चर्चमें एकाएक काशीके उन भूतपूर्व सेशन जज मिस्टर यंगसे भेंट हुई। इतने दिनों बाद भेंट होनेपर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई और मिस्टर यंगकी पिछली कहानी सुनकर तो मुझे बड़ी ही खुशी हुई।

अपनी उन्मत्त पत्नीकी परम स्वतन्त्रतासे घबरा कर और अवकाश ग्रहण कर जब उस बार मिस्टर यङ्ग विलायत आये तो फिर लौटकर अपने पदपर नहीं गये। स्त्रीको तलाक़ देनेके बाद उनका जी कुछ उचट-सा गया। इसीसे उन्होंने वहींसे पद त्याग कर दिया। बादको, अपनी कमाई हुई सम्पत्तिसे, उन्होंने लण्डनमें कोई छोटा-मोटा व्यापार कर लिया। दैवकी गति; उस व्यापारसे मिस्टर यङ्गको छप्पर

फाड़कर धन मिला। और आज, बारह-पन्द्रह बरस बाद, वह उसी व्यापारके प्रभावसे कई लाखके आदमी कहे और माने जाते हैं।

मगर न जाने क्या मन्त्र फूंक दिया था उस भयानक साधुने मिस्टर यङ्ग पर कि, अब दुनियावी कामोंमें उनका जी ही नहीं लगता। इतने रुपये पैदा करते हुए भी और यहाँके नारकीय समाजमें रहते हुए भी, वह पुनः किसी स्त्रीके रूप या यौवन जालमें नहीं फंसे। उनका जीवन ऐसा सादा और तपस्वियों-सा हैं कि वह व्यापारीसे अधिक धर्म-प्रचारक मालूम पड़ते हैं। कहा तो, उनमें वह परिवर्त्तन देखकर मैं दङ्ग रह गया।

हाँ, उस दिन उन्होंने मुझे एक ऐसी बात सुनायी जिसे सुनकर मैं आश्चर्यसे उनका मुंह ताकने लगा। उन्होंने कहा कि वह अब कुछ धन और एक छोटा-सा मकान लेकर फ्रान्स या इटलीके किसी समुद्रतट पर एकान्तवास करना चाहते हैं और चाहते हैं अपनी वह कई लाखकी सम्पत्ति किसीको दे देना। और

वह भाग्यशाली व्यक्ति दूसरा नहीं—आपकी वह पालिता बालिका राधा ही है। मिस्टर यङ्गने मुझसे प्रार्थना की है कि मैं आपसे यह निवेदन करूं कि यदि आप कृपा कर उस लड़कीको उन्हें दे देनेकी व्यवस्था करते तो बड़ा उपकार होता। उनका कथन है कि, न वह लड़की होती और न उन्हें उस मनस्वी भयानकके दर्शन मिलते। अस्तु, सन्तानके अभावमें वही उनकी उत्तराधिकारिणी क्यों न बने? अस्तु, यदि आप उसके बूढ़े बापसे उसे दिलवा सकें तो यङ्गको बड़ी ही खुशी होगी। आप ज़रूर-ज़रूर उसे समझा-बुझाकर यङ्गकी पुत्री बनवा दें। आवश्यकता होगी तो वह वीर हत्यारा :बुधुआ भी उसके साथ यहाँ आ सकेगा।

हाँ, दो शब्द मिसेज़ यङ्ग—जो काशीमें बदनाम थीं— के बारेमें भी लिख देनेको जी चाहता है। मिस्टर यङ्गसे अलग होनेके बाद—उन्हींका कथन है; वह बहुत दिनों तक फ्रान्समें रहीं और खूब खुलकर खेलती रहीं। पाजीपनेमें वह बे-जोड़ थीं एक ज़माने

में। इसके बाद वह बर्लिनमें चली गयीं। वहाँ बहुत दिनों तक तो वह एक कपड़े धोनेके कारख़ानेमें, उसके पुरुष स्वामीको फांसकर, साझेमें काम करती रहीं, और अपने उद्धत सिद्धान्तोंके प्रचारके लिये ज़मीन तैयार करती रहीं। अब, उनकी एक समिति हो गयी है। यद्यपि अब वह युवती नहीं, फिर भी, उनके उन्मादोंका अन्त नहीं। उनकी उस समितिमें जर्मनी और दूसरे युरोपीय देशोंकी अनेक बिगड़ी औरतें और अनेक रानियों-सी अमीर औरतें शामिल हो गयी हैं। शायद भारतमें भी यह संवाद पहुंचा हो—ज़रूर ही पहुंचा होगा—उनकी वह समिति विचित्र है। उसके सभी सदस्य, चाहे पुरुष हों या स्त्री, उस समितिके विशेष स्थानमें नंगे-नंगे घूमा करते हैं। वह पुरुषोंको, अपनी पशुवृत्तिकी सन्तुष्टिके बाद कुछ भी महत्व नहीं देतीं। ऐसे-ऐसे सैकड़ों उच्छृंखल नियम हैं उस संस्थाके जिसका मैं इस पत्रमें वर्णन भी नहीं कर सकता। यह है उस स्वतन्त्रताको दुरुपयोगिनी स्त्रीका इतिहास। पहले मिस्टर

यङ्ग--वह स्वयं कहते थे—उसकी लीलाएं सुनकर खीझा भी करते थे, यद्यपि उनका उससे कोई संबंध नहीं था। मगर, अब वह धीरे-धीरे रीझ-खीझसे परे हुए जा रहे हैं। रूप और रुपये और मान और अपमानसे ऊपर उठ रहे हैं। सच्चे ईसाइयतके पथको ढूंढ़ रहे हैं या सत्य मार्गको खोज रहे हैं।

मरनेके पहले एकबार मेरी भी इच्छा है कि संसारके पैगम्बरोंकी जननी पूर्व-वसुन्धराके एकबार फिर दर्शन करूं। राधाके लिये मिस्टर यंग भी काशी आनेको तैयार बैठे हैं। हमलोग दूसरे ही मेल जहाजसे रवाना हो रहे हैं। सीटें रिज़र्व हो गयी हैं। अतः आप उत्तर न देकर हमारी प्रार्थनाको पूरी करनेकी चेष्टा कीजियेगा।

हमें अब अपने पास पहुंचा ही समझिये। विशेष मिलनेपर---भूलियेगा नहीं।

आपका वही सेवक

(रेवरेण्ड) राइट।"

बुधुआकी बेटी
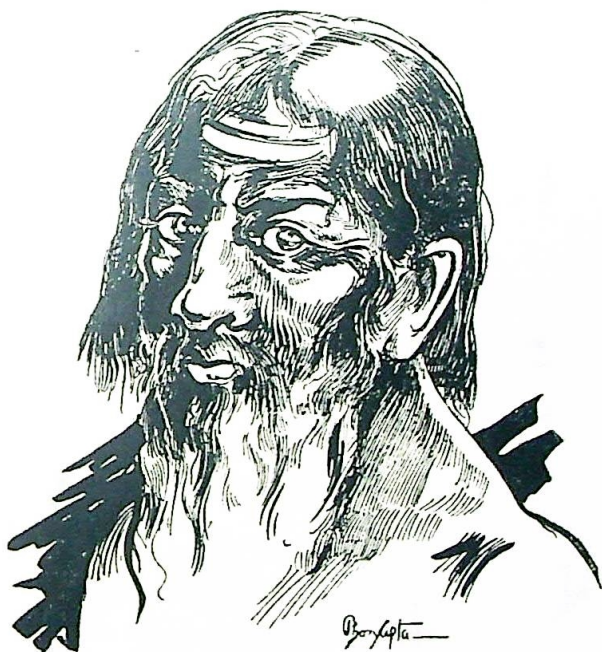
अघोड़ी मनुष्यानन्द

४१

अबला राधा !

उन सब उन्मत्त शराबियों और उस मर्दानी औरतके चले जानेपर भी व्यथिता राधा, बहुत देर तक तूफ़ानी विचारोंमें पड़ी जहां-की-तहां खड़ी रही। उस समय उसका माथा चक्कर खा रहा था, उसके कलेजेकी धड़कन बन्द-सी हो गयी थी। उसे ऐसा मालूम पड़ता था मानों धीरे-धीरे बेहोशी उसे अपनी गोदकी ओर खींच रही थी। सचमुच, वह क्षणभर बाद वहीं, कटे रूखकी तरह, धम्मसे गिर पड़ी। बगीचेका नौकर अभी वहीं खड़ा था और माली उन दुष्टोंको बाहर कर फाटक बन्द करने गया था। जब नौकरने राधाको गिरते देखा तब घबरा उठा और जल्दीसे पुकारा उसने मालीको। उसके आ जानेपर दोनोंने सहारेसे राधाको उठाकर कमरेमें उसके पलंगपर लिटा

दिया। माली समझदार था, उसने नौकरको बतलाया कि थोड़ा गुलाब-जल माथेपर सींचनेसे उसकी संज्ञा शीघ्र ही लौट सकेगी। सुगन्ध और इत्रोंकी वहाँ कुछ कमी तो थी ही नहीं। फ़ौरन राधाके माथे पर गुलाब-जल डाला गया। माली पंखा झलने लगा।

इस बार आंखें खोलते ही, रुखाई-भरी शीघ्रतासे, उसने नौकरोंको वहांसे भाग जानेको कहा। उसकी आज्ञाका पालन तुरन्त ही हुआ। एकबार वह बंगला एकान्त हो गया। एकबार वह पुनः अपने और अपने प्रियतमके प्रेम-पुराणका उद्धरण करने लगी। ऐसे हैं घनश्याम—वह विचारने लगी—यह इस तरह सीधी-सादी मुझ-सी-स्त्रियोंको ठगा करते हैं। इन्हें दो-रुखा नाटक खेलनेका ऐसा भीषण अभ्यास है! ऊपरसे प्रेम करनेका दम भरते थे, मानों दुनियामें मेरे सिवा उनका कोई था ही नहीं और भीतर यह मल छिपा था? वे इतनी रात तक उस—उस मुंह-जलीके साथ शराब-कबाब करते रहे! तो इस दरमियानमें जब-जब वह यहां नहीं आये तब-तब यही काम करते

रहे यही उनका वह व्यापार है जिसका नाम लेकर मुझे नीचा-ऊंचा समझाया करते थे। उफ़! इन्होंने इस तरह मुझे ठगा।

इसी समय एकाएक इसे गुलाब और उसके घण्टे भर पूर्वके दुर्व्यवहारका ध्यान आया। ओह! कैसा पाजी था वह राक्षस। कितना अपमानित किया उसने मुझे। और किस तरह सस्ते वह, ऐसा अनर्थ करनेपर भी, छूट गया। उस समय यहां ऐसा एक भी आदमी नहीं था जिसने उस शैतानपर पिस्तौलका वार कर उसकी जिन्दगी का बेड़ा ग़र्क कर दिया होता। उसने मुझे बाज़ारु औरत समझा, उसने मुझे आवारा समझा, तभी तो उसकी ऐसी हिम्मत पड़ी! आह! आज मैं इस धोखेबाज़ पुरुषके प्रेममें पड़नेके कारण आवारा हो गयी—वेश्या हो गयी। मैं—जिसके बापने अपनी औरतपर ज़रा आँच आते ही दो-दो खून कर डाले थे! हाय! न हुए आज मेरे फ़ादर। वह बूढ़े थे तो क्या, दुर्बल थे तो क्या और इन पापियोंके मुकाबलमें निर्धन थे तो

क्या ; यदि उनके सम्मुख मेरा ऐसा अपमान हुआ होता तो इस गयी-गुज़री अवस्थामें भी वह क्या न कर गुज़रते। हायरे मैंने ऐसे बापको छोड़ और ऐसे पापको अपनाकर कितनी बड़ी भूल की।

अब वह आँचलमें मुहं छिपाकर फूट-फूट कर रोने लगी। जितना ही वह विचारती उस दिनकी घटना पर और जितना ही उसे घनश्यामकी प्रतिज्ञाओं और कुछ दिन पूर्वके प्रेमोपचारोंकी याद आती, वह उतनाही अधिक व्यग्र और व्यथित होकर आँसू बहाती। देखते-देखते आँचल भींग गया, तकिया तर हो गया और हिचकियोंका तांता बंध गया। उसे ऐसा मालूम पड़ने लगा मानो यही रोदन उसके लिये चिर रोदन है।

जिस समय राधा इस तरह बिलखने लगी उससे थोड़ा पूर्व ही घनश्यामजीके होश ठिकाने आ गये थे। शायद पिछली रातकी काँपती हवाने उनकी बेहोशीके पैर भी कँपा दिये। जो हो, होशमें आते ही धूर्त घनश्यामकी समझमें सारी परिस्थिति आ गयी।

वह समझ गये कि आजकी उनकी बेहोशीने उनके सीधे शिकारके होश ठिकाने कर दिये होंगे। उन्होंने एक बार ज़रा उचक कर उस प्रकाश पूर्ण कमरेमें राधाके पलङ्गकी ओर देखा। देखा उन्होंने कि वह पलंग पर इस तरह तड़प रही है जैसे फूलकी थालीमें पारा। उनकी समझमें सारा रहस्य आ गया। वह सोचने लगे कि, बस, अब गयी यह चिड़िया हाथसे। मगर, कितना सुख दिया इसने। यह जबतक यहाँ पड़ी रहती है मुझे ऐसा जान पड़ता है मानों कोई ज़र-ख़रीद बाँदी पड़ी है—अभी जो हुआ, दालमण्डी न जाकर, यहीं चला आता हूं। अभी यदि कुछ दिन यह और इसी मृगमरीचिकामें रहती—अभी एकबार और इसे फंसा रखनेकी कोशिश करूं।

वह धीरेसे उठे अपने पलंगसे। उन्हें अनुभव हुआ कि अब भी उनके माथेमें नशेकी भागती सेनाके कुछ लड़खड़ाते सैनिक थे। मगर, कोई चिन्ता जनक बात नहीं थी। अब उन्हें होश काफ़ी था।

बिलखती और तड़पती राधाने एकाएक अनुभव किया मानों पीछेसे किसीने उसे अपनी छातीमें चिपका लिया हो। वह एक बार फिर उत्तेजित होने हीको थी—गुलाबका स्मरण कर—कि, उसके कपोलोंपर, कुछ परिचित अंगुलियाँ, उसके गर्म आँसुओंको चूमने लगीं। अबकी वह, उस घोर व्यथामें भी, झन्न-से बज उठी। उसे रोमाञ्च हो आया। पर, यह सब केवल एक ही क्षणके लिये हुआ। उस रोमाञ्चके पीछे ही, उन प्यारी अंगुलियोंके उस धूर्त सञ्चालकके विरुद्ध— घृणाकी सेना भी उमड़ आयी।

इसीके कारण तो आज मैं इस व्यथामें लपेटी गयी हूं। इसीके कारण तो मेरा घर द्वार और प्यार-भरा संसार मेरी पहुंचके उस पार हो गया है। इसीके कारण तो उस हरामज़ादेने, थोड़ा पहले, मेरा घोर अपमान किया था, इसीके कारण तो वह वेश्या मुझे अपनी सौत पुकार गयी है—आह!—यह पापी, यह छलिया!

वह चमककर चम्मसे उठ बैठी और धम्मसे पलंगके नीचे आ रही—

"दूर रहो!" उसने क्रोधसे कहा—"तुम्हारे मुहंसे शराबकी बू आती है। तुम्हारे बदनसे व्यभिचार की बू आती है।"

घनश्यामने सोचा यह तो हमेशाहीकी तेज़तर्रार है। इस तेज़ीको भी 'मान' ही की लाइनमें रखना चाहिये। वह बनावटी चापलूसी कर चले—

"ऐसी नाराज़ी...बापरे! तुम तो काटने दौड़ रही हो। आख़िर इसका सबब?"

"सबब?" राधाने रोते-रोते कहा—"तुम्हीं मुझसे सबब पूछते हो? इसका सबब अपनी धोकेबाज़ीसे, झूठबाज़ीसे, शराबबाज़ी और रण्डीबाज़ीसे क्यों नहीं पूछते? मेरी माँ! ऐसे पापी तुम निकले घनश्याम! ऐसा तुमने मुझे लूटा घनश्याम! ऐसे मतलबी, ऐसे दुराचारी और ऐसे मीठे ठग हो तुम घनश्याम! आह! तुमने तो मेरी दुनियाँ ही में आग लगा दी!"

शराबके उतारके पीछे घनश्यामने अनुभव किया कि राधा गम्भीरतासे बातें कर रही है। क्यों? इतना गम्भीर होनेकी क्या ज़रूरत है? मैंने इसके प्रति दुर्व्यहार किया ही क्या है? भंगिनकी लड़कीको अपने बाप-दादोंके बाग़में—आधी दुनियाँसे झूठ बोल कर—लाकर टिकाये हूं, रानियों-सी रखता हूं और इसका पुरस्कार यह मिल रहा है कि मैं ठग हूं। मुझे यह ठग कहती है। यह होती मेरी कौन है। मैं इसे समझता ही क्या हूं।

"ज़्यादे टिर्र-टिर्र न करो!" उन्होंने पुरुष और ज़बरदस्तके स्वरमें कहा—"क्या मैंने तुम्हें ठगा है? कौन-सा बैंक अपने पर्समें रखकर तुम आयी थीं कि मैंने ठग लिया? मैं शराब पीता हूं—पीता हूं। तुमसे मतलब? मेरी और भी वेश्याएं हैं—हों। तुम कौन हो बोलनेवाली?"

"ठीक कहा तुमने," अब उसने रोना बन्द कर दिया—"ठीक कहा तुमने; मैं कौन हूं बोलनेवाली। ग़रीबको बोलनेका क्या अधिकार है, लुटोंको बोल-

नेका क्या अधिकार है—बापरे!—ये तुम्हारी वही मीठी और रसीली आंखें हैं जिन्होंने मेरी आंखोंकी किरनोंको चूम-चूमकर वफ़ादार रहनेकी प्रतिज्ञाएं की हैं? ऐसी आंखें भी बना सकता है पाजी पुरुष। ऐसा तोतेचश्म भी होता है नीच पुरुष। बस, बस, मैं कौन हूं—हायरी मां!—मैं कौन हूं!"

इसके बाद वह बिजलीकी तरह कमरेके बाहर दौड़ गयी। घनश्यामने भी उसे रोकने या बुलानेकी चेष्टा नहीं की। वह उठे ही नहीं उस पलंगसे। सुबह हो गया, धूप निकल आयी, कमरेका वातावरण गर्म हो चला। फिर भी, न तो उस कमरेमें वह ग़रीब औरत ही आयी और न वह अमीर पुरुष ही उस पलंग और कमरेके बाहर हुआ।

४२

घोषणा !

दलितोंके आन्दोलनके सिलसिलेमें लगातार आठ-दस महीनेतक घोर परिश्रम करनेके कारण और पूरे आठ महीनेसे अपनी रधियाके लिये दिनरात लंबी साँसे लेते रहनेके कारण, बुधुआ उसी समय बुरी तरह बीमार पड़ गया जिस समय, उस आन्दोलनके लिये, वह बुरी तरह आवश्यक था।

वह बनारसके भंगियोंकी हड़तालका बीसवाँ दिन था। सन्ध्या होनेमें अभी दो घण्टेकी देर थी। अछूताश्रमके भंगियोंमें भरपूर हलचल थी। अभी तक कोई समझौता नहीं हो सका था। एक जगह कुछ भंगी खड़े आपसमें दूनकी ले रहे थे। मगर, इनसे परिचित होनेके कारण ही कोई अब इन्हें भंगी कह सकता है। नहीं तो, इनके बाल साफ़ कटे हुए हैं,

इनकी कमरमें साफ़ धोती या पायजामा है, और शरीर पर मोटे गाढ़ेका कुरता। इनके चेहरेसे ऐसा भी प्रकट होता है मानो यह रोज़ ही स्नान करते हैं। इधर-उधर आते-जाते बच्चों और माताओंकी ग़रीबी भी पवित्र और स्वच्छ दिखाई पड़ती थी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह सब मनस्वी मनुष्यानन्द और अछूताश्रम और सत्यवान स्वयंसेवकदल और उस अमीर दाताके रुपयोंका प्रताप था। पर कैसी सुखद थी उन सदियोंके अपवित्रोंकी वह पवित्रता।

"अब तो," एक भंगीने दूसरेसे कहा—"चाहे हमारी सारी शर्तें स्वीकार भी कर ली जायं, पर, मैं तो झाड़ू और टोकरीके नज़दीक नहीं जाऊंगा। मुझे तो बस एक ही महीनेमें बेतकी कुर्सी बनानी आ जायगी। ख़ूब जल्द-जल्द सीख रहा हूं। और जब हमें एक अच्छी कारीगरी आ जायगी तब भला मैला कौन 'भकुआ' फेकेगा।"

"मगर ऐसा नहीं भाई" एक दूसरेने कहा—"यह सब जो हुआ या हो रहा है वह ऊँच जात

वालों ही की कृपासे तो ? ऐसी हालतमें हमें अत्याचार न करना चाहिये। अब लक्षण ऐसे दिखाई पड़ रहे हैं कि एक-दो को छोड़ हमारी शेष सभी शर्तें यहाँके ऊँच और अफ़सर मान लेंगे और अगर हमारी शर्तें मान ली गयीं तो ज़रूर हमारे बहुतसे कष्ट दूर हो जायंगे।"

"क्यों नहीं दूर होंगे," तीसरेने कहा—"अब तो आधेसे ज्यादा शहर हमें तिगूनी मज़दूरी देनेको, म्युनिसिपैलिटी सातकी जगह सोलह रुपये महीने देनेको और हमारे बच्चोंको स्कूल तथा हमारे लिये घर तक बनवा देनेको तैयार है। कहाँका कम है यह। अब हमें मान जाना चाहिये और शहरवालोंका वातावरण पवित्र कर डालना चाहिये।"

"अभी नहीं," पहलेने कहा—"लोहा जब ख़ूब गर्म हो तभी उसे भरपूर ठोंक-पीट कर सीधा कर लेना चाहिये। अभी हमारे लिये मन्दिरोंके द्वार तो वे खोलना ही नहीं चाहते, और क्यों नहीं चाहते ? इसी लिये न कि, हम उनके पाख़ाने साफ़ करते हैं ?

आग लगे इन पापियोंके पाख़ानोंमें। नष्ट हो जायँ इनकी विषमता-भरी गलियाँ और सड़क। प्रलय हो जाय शंकरकी इस काशीमें, पर, हम कदापि पाख़ानोंके पास न जायगे। क्यों साफ़ करे आदमीका पाख़ाना आदमी? जिसका मल हो वही उसको फेंकता भी क्यों नहीं? अपने पापोंकी गठरी दूसरेके सिर पर लाद कर आदमी किस अधिकारसे सुखी होना चाहता है। हम अब मैला नहीं फेकेंगे—छिः! छिः!! बड़ा गन्दा काम है। इसीसे हमारा लोक और परलोक दोनों बिगड़ता है। हम अघोड़ी बाबा के चेले हैं—उनके कथनानुसार हम अनजाने देशों में जाकर और कुलीका काम कर रोज़ी पैदा करेंगे और साफ़ और ईमानदार और 'पवित्र'—वही पवित्र जो हमें ईश्वरके निकट तक नहीं जाने देते, मानो परमात्माको उन्होंने अपने ही लिये रिज़र्व कर लिया है—रहा करेंगे।"

इसी समय एक भंगिनने आकर उन बातूनियों को सूचना दी कि—"ज़रा चौधरीकी झोपड़ीकी

ओर तो चलो। उनकी हालत ख़राब है। उन्हें बाई चढ़ आयी है।"

जबतक वे भंगी बुधुआकी अछूताश्रमवाली झोपड़ीके पास पहुचे-न-पहुचे तबतक उसे दूसरे दलितोंने घेर लिया। वह भीतर और बाहरसे ठसा-ठस भर गयी। अपने अगुआकी वह हालत देख सभी व्यग्र भी हो उठे और रो भी पड़े। बुधुआ एक खाट पर पड़ा न जाने क्या-क्या—बेहोशीकी हालतमें—बक रहा था। फ़ौरन कई दलित, अघोड़ी की झोपड़ीकी ओर, दौड़े जो आश्रमके दूसरे सिरे पर थी। जब औघड़ राज वहाँ आये उस समय बुधुआ बेहोशीमें रो रहा था और बक रहा था—

"मेरे पाप—मेरे पाप! कितने पाप और भोगने को हैं स्वामी! यह क्या है? रधियाकी मांका सतीत्व-हरण? उफ़ यह क्या इसका और उस पुरुषका ख़ून है—क्यों? क्यों? क्यों? ये शकलें क्यों इस तरह मेरी ओर गुरेर रही हैं?

"अरे! अरे!! यह तो नैनी जेल है। और यह

कौन है ? मैं ही तो—? बुधुआ ही न—? कैदी नंबर ३६५ ही न ? अरे मैं जेलमें सोया भी हूं और अपने को देख भी रहा हूँ—कैसा तमाशा है ? रधिया ; राधे ! मैं पागल हो गया हूँ मेरी बेटी। तू कहाँ है— ज़रा मेरे गुरू अघोड़ी बाबाको तो बुला ! मैं मर रहा हूं मेरी रानी। अरे तू तो सुनती ही नहीं, कहाँ भागी जाती है—कहाँ भाग गयी री ? अरे भगवान, इस बूढे, इस अनवलम्ब और असहाय हृदयको उजाड़ कर तू कहाँ भाग गयी बेटी ! क्या तेरे इस भागनेके लिये ही मैं जेलसे, एक पाप कर, छूट भागा था। तेरे लिये मैं पाप कर जेलसे दौड़ा-दौड़ा प्यारी दुनियामें आया और तू ठगिनी मेरी सारी दुनियांमें आग लगाकर भाग गयी ! हे भगवान ! मैंने तेरे लिये पाप क्यों किया ?

"मेरा पाप !...बैरकमें सन्नाटा था, क़ैदी 'नाइट वाचमैन' ऊँघता-ऊँघता सो गया था, बाहर वार्डर भी निश्चिन्त भावसे 'अरगड़े' से टिककर नाक बजा रहा था। आह ! उस समय सभी सो रहे थे, पर,

मुझ पापी प्रेमवंचित प्राणीकी आँखोंमें नींद नहीं थी। मैं तो परमात्माको भूल उस लड़कीको सोच रहा था जो बाहरको दुनियासे मुझे अपनी ओर खींच रही थी। उसी समय—उसी समय—उसी समय! किधरसे खर्र-खर्रकी आवाज़ आयी? मैंने क्यों देखा उठकर—कुछ सोच कर मैं क्यों काँप उठा एक बार?

"बापरे! मैंने क्यों हल्ला मचाया—क़ैदी भाग रहा है? मैंने क्यों वार्डरको दिखलाया कि देखो 'झिरी' कटी है– भागनेके लिये सेंध लगी है। क्यों 'पगली' बजी, क्यों वार्डरोंकी पलटन टूट पड़ी सारे जेलपर, क्यों मेरी बैरक बन्दूकोंसे घेर ली गयी?

"आह! आह!! किस बेदर्दीसे उस क़ैदी और उसके साथियोंको—मुक्तिके उस प्रयत्नके लिये—दूसरे क़ैदी और जमादार पीट रहे हैं। डण्डे ऐसे बरस रहे हैं मानो वह प्राणी नहीं पत्थर हैं! वे गट्ठर-की तरह इधर-से-उधर लुढ़का-लुढ़काकर पीटे जा

रहे हैं ! आह ! मैंने यह क्या किया—मेरा कलेजा क्यों काँप रहा है ?

"मैं छोड़ दिया गया—किस लिये ?—इसलिये कि मैंने उन ग़रीबोंको, इसी छोड़ दिये जानेके लिये, बुरी तरह फसा दिया ! और किस लिये वैसा किया मैंने—अपने कर्त्तव्यके लिये ? नहीं, नहीं, नहीं, अपनी प्यारी रधियाको गोदमें लेनेके लिये, छातीसे लगानेके लिये—अपने हृदयके सिंहासनपर रानी बनाकर बैठानेके लिये। इसी खूबसूरत—पर हाय व्यर्थ !—सुखके लिये उन मुर्दोंको और भी मरवा। डाला हाय ! कहाँ गया मेरा वह सुख ? कहाँ गयी मेरी वह रानी ! भगवान ! वह क्यों मुझे छोड़कर चली गयी ? मैंने उसे कितने महँगे दामोंमें पाया था ?"

बुधुआ फिर बिलखने और तड़पने लगा। उसके आसपास खड़ी औरतें और बच्चे भी अपने चौधरीके लिये कलप उठे। अघोड़ीका भी आसन हिला। वह करुणभावसे उसकी ओर बढ़ा। एकाएक उसकी

आँखें ज्योतिर्मयी हो उठीं। उसने व्यथित बुधुआपर अपना रूखा हाथ फेरा।

आश्चर्य ! उसका तड़पना बन्द हो गया। अघोड़ीके इशारेपर किसीने उसके मुहमें थोड़ा जल डाला। उसने आँखें खोल दीं—

"गुरु महाराज !"

"बुद्धू—बुधराम—बुधुआ ?"

"ज़रा चरन दो स्वामी ! अब मैं जानेवाला हूं।"

"तेरी मुक्तिमें और भी कोई इच्छा बाधक हो रही है ? हो तो बोल वह क्या है ?"

बुधुआकी आँखें फिर भर आयीं—"महाराज, रधियाको एकबार...!" वह अपनी बात पूरी न कर सका।

"अच्छा, आवेगी रधिया। और कुछ ?"

"और एकबार विश्वनाथ बाबाके दर्शन करना चाहता हूं स्वामी ! कभी उन्हें भर आँख नहीं देख सका हूं—बड़ी इच्छा है, बड़ा लोभ है।"

दलितोंका दल स्तब्ध होकर अघोड़ीराजका मुह ताकने लगा। भला चौधरीकी इस बातपर 'बाबा' क्या कहते हैं ? विश्वनाथ मन्दिरमें घुस जाना कोई बाबाके हाथकी बात तो है नहीं।

मगर, अघोड़ीराजका तेजस्वी और भयानक मुख, बुधुआकी इस इच्छाके पक्ष हीमें खुला। उन्होंने जलद गम्भीर स्वरसे कहा—

"एवमस्तु !"

४३

बाबा विश्वनाथकी जय !

"किधर जा रहे हो ? किधर जा रहे हो ?"

"मोगल सरायँ,"

"अरे ! तुम मोगल सरायँ जा रहे हो ? कौन-सा ज़रूरी काम है वहाँ जो आज अछूतोंका जुलूस छोड़कर भागे जा रहे हो ?"

"कैसा जुलूस ? मुझे तो कोई पता नहीं। इधर तीन दिनोंसे मुझे अछूतोंकी हड़तालकी कोई ख़बर नहीं। कोई फ़िक्र भी नहीं मुझे। पक्के मुहालमें रहता हूं, पाख़ाने बहौवे हैं। रहे घर और दरवाज़ा और अपने सामनेकी गली, सो उसे हम अपने ही हाथसे साफ़ कर लेते हैं। कूड़ा कम-से-कम उत्पन्न होने देता हूं और जो होता ही है उसे तीन दिन इकट्ठा करता हूं और चौथे दिन स्वयं, बोरेमें बन्द कर, माता गंगाकी बीच धारामें प्रवाहित कर आता हूं। शहरके बोलते मलहरों (भङ्गियों) ने हड़ताल की है, मगर, वह मूक भव-मल-हारिणी तो ऐसी अनोखी है जो रीझ-खीझके फेरमें पड़ अपनी पवित्र गति कभी बदलती ही नहीं। मगर, ख़ैर, तुम जुलूसकी बात कह रहे थे।"

"अरे हाँ—आश्चर्यकी बात तो यही है कि शहर की इस गर्म चर्चाका तुमको अभीतक पता नहीं। यही तो भंग भवानीके उपासकोंकी विशेषता या 'घर-के-जाने-मर-गये-और-आप-नशे-के-बीच'-ता है।

और सुनो। शहरमें आज बड़ा तहलका है। कहा जाता है कि अछूतोद्धारकों और अघोड़ी मनुष्यानन्दके उद्योगसे आज प्रातः १० बजे अछूतोंका एक बड़ा भारी जुलूस गाजे-बाजेसे निकलेगा। क्योंकि, मरणोन्मुख भंगी सरदार बुधुआ, बाबा विश्वनाथके दर्शन करना चाहता है; और क्योंकि, अघोड़ीने, अपने बाहु-बल पर, उसे दर्शन करा देनेका वरदान दिया है। पुरोहित और पण्डे और सनातनी और ब्राह्मण दल इस विषयपर ऐसा क्षुब्ध है जैसा समुद्र तूफ़ानके वक्त होता है।

"मगर अघोड़ीसे कौन लड़ेगा? चाहे लोग उसका समर्थन न करें; मगर, उसके प्रतापसे तो हज़ारोंका भला हुआ है इस काशीमें। मैंने स्वयं देखा है, वह अग्निकी तरह तेजस्वी महात्मा है। उसकी इच्छाके विरुद्ध उसके सामने जाना कम-से-कम सबका काम नहीं हो सकता।"

"लोगोंने मैजिस्ट्रेट और पुलीस तक यह बात पहुंचा दी है, सुना है आज दल-बल सहित सुप्रें-

टेण्डेण्ट पुलीस और कोतवाल बाबाके मन्दिर और घाटों पर पहरा देंगे।"

"क्यों?"

"क्यों? इसलिये कि, यदि अछूत-दल मन्दिरमें घुसनेकी चेष्टा करे और मार-पीटकी नौबत आवे तो, सरकारा सुधारघाती, सारी रामायण हो जानेके बाद, 'कथा विसर्जन...' का कार्य वीरतासे सम्पादित कर सकें।"

"लक्षण कैसे हैं—बात तो तुमने अजीब ही सुनायी—अब मैं भी मुगलसराय न जाऊंगा, यही तमाशा देखूंगा; मगर, पहले छान लूंगा तब। हाँ, क्या लड़ाई-दंगेकी सम्भावना भी है?"

"अरे है क्यों नहीं? कोई खेलवाड़ थोड़े ही है, यहांके 'तीर्थ रक्षकों' के रहते मन्दिरोंको 'मनुष्यों' के लिये खोल देना। कई सौ आदमी, अछूतों और उनके उद्धारकोंकी खोपड़ी शुद्ध कर देनेके लिये कल शामहीसे डण्डे माँज रहे हैं।"

"अच्छा!"

सचमुच उस दिन, सुबहसे ही, शहरमें केवल इसी अछूतोंके जुलूसकी चर्चा थी। कई हज़ार काशीय जनता घाटोंपर, विश्वनाथ मन्दिरके आस-पासकी गलियोंके नुक्कड़ोंपर, और सड़कों पर, कोलाहलकी कराही कड़कड़ा रही थी। शहरके नये और पुराने दोनों दलोंके नेता अपनी एड़ीका पसीना चोटी तक पहुंचा रहे थे, इसलिये कि, युद्ध न हो या युद्ध ज़रूर हो। जुलूसके संयोजकोंकी ओरसे विज्ञापन बाँटा गया था कि दस बजे अछूताश्रमसे चलकर अछूत-दल दशाश्वमेध घाट जायगा। वहाँ अघोड़ोंके साथ बुधुआ और सारा जुलूस गङ्गा स्नान करेगा और तब मन्दिरकी ओर प्रस्थान करेगा। डेढ़सीके पुलके पास पचासों पण्डोंका दल, डण्डोंसे लैस, जुलूसका प्रतीक्षामें खड़ा था। ज़रा उनकी भी मानसिक परछाहीं का निरीक्षण कीजिये—

"अरे, यह तो ग्यारह बज गये! अभी जुलूसका पता नहीं।"

"शोर न करो! सुनो! बाजा-सा तो सुनायी

पड़ रहा है। वह अघोड़िया मानेगा नहीं। ज़रूर आवेगा।"

"अरे ; तो आज लाशें भी उठ जायगी। हम अपने जीते-जी बाबाके मन्दिरको अशुद्ध न होने देंगे। यह हमारी रोज़ीकी समस्या है। इसी तरह अगर समाजके सभी धुनिये-जुलाहे हमारे तीर्थों पर कब्जा कर मनमानी करने लगेंगे तो हमारी तो लुटिया ही डूब जायगी। ऐसे मौके पर अघोड़ी तो अघोड़ी है, परमात्मा भी आवें तो, बिना दो-चार डण्डे लगाये हम माननेवाले नहीं।"

एक ओर बाबू-तमाशबीन गुरचों-गुरचों कर रहे थे—

"देखते हो ; ये डण्डे लेकर आये हैं।"

"इस लिये कि एक मरते हिन्दूको ईश्वरके मन्दिरमें अपनी मुक्तिके लिये प्रार्थना करने न जाने दें। मानों भगवानने अपने धर्मके क्रय-विक्रयका इन्हें 'सोल एजेण्ट' बना दिया है। इस तरहके हिंसावादी क्यों ऐसे पवित्र संस्थाओंकी छाती पर कोदो दला करते हैं?"

"अरे भाई ; उनका भी एक दल है और उनके भी समर्थक हैं। इस शहरमें ऐसों ही की अधिकता है जो इन्हीं पण्डोंके स्वर-में-स्वर मिलावेंगे। और, यह बेचारे भी क्या करें ; इधर सदियोंसे, हमारे धर्मकी परिभाषा ही अधार्मिक हो गयी है।"

"होगा इनका दल शहरमें ; मगर, मुझे तो ऐसा लक्षण दिखाई पड़ता है कि, यदि इन पण्डों और पुरोहितों और ब्राह्मणोंके कारण भंगियोंकी हड़ताल जारी रहेगी, तो, शहरके अन्य लोग भी अछूतोंके पक्षमें हो जायंगे। क्यों न उन्हें पवित्रताकी शर्तपर मन्दिरमें जाने दिया जाय? यहांके अनेक घाटस्थ मन्दिरोंके महादेवोंपर कुत्ते बिहार किया करते हैं। तो क्या मनुष्य कुत्तेसे भी गया बीता है जो उसे देवताके दर्शनोंसे वञ्चित रखा जाता है? नाश हो इस ढोंगका! पर...अभी जुलूस नहीं आया। आठ बजे हीसे भीड़ और पण्डे और सनातनी और पुलीस वाले डटे हैं। मार डाला आज इस अघोड़ीने भूखों, इन बेचारोंको। ज़रा घड़ी तो दिखाओ—ओह! तीन बज रहे हैं!"

इसी समय डेढ़सीके पुलवाली गलीके भीतरसे बाजे और जैकार और बम्. बम् की आवाज़ सुन पण्डे सजग होकर खड़े हो गये। थोड़ी देर बाद उन सबने और उत्तेजित भीड़ने देखा, अनेक स्वयंसेवकोंके साथ, दलके आगे, भंगी बुधुआको कन्धेपर चढ़ाये, रुद्र रूपसे, औघड़ मनुष्यानन्द बम्! बम्!! करते चले आ रहे थे। उनके और बुधुआके और स्वयंसेवकोंके माथेपर भस्म शोभा पा रहा था।

पण्डे वाले सनातनी और तीर्थरक्षक दहल गये उस भयानकके उस वेश और भावको देखकर! उसकी आँखोंसे मानों तेजकी चिनगारियाँ बरस रही थीं। मानों स्वयं भगवान शङ्कर, बुधुआको कन्धेपर चढ़ाये, उस जुलूसके साथ भीड़की ओर आ रहे थे। देखने वाले उस नज़ारेको इस तरह स्तब्ध होकर देखते रह गये मानों काठके पुतले हों। धीरे-धीरे जुलूस उस गलीके बाहर आया और गोदौलियासे चौक और अलईपुरकी ओर बढ़ा।

"मामला क्या है?" जुलूसके निकल जानेपर

बुधुआ कोवेटी

—उत्तेजित भीड़ने देखा, अनेक स्वयंसेवकोंके आगे, भंगी बुधुआको कन्धेपर चढ़ाये, रुद्र-रूपसे, औघड़ मनुष्या-नन्द बम्. बम् करते चले आ रहे थे।

एक डण्डाधारीने आँखें मिलमिलाकर पूछा—"नोटिस तो यह न थी कि वे पहले दशाश्वमेध नहाने जायंगे और फिर इधर ही से विश्वनाथके दर्शन करने। मगर, यह तो बाबाके मन्दिरहीकी ओरसे आये। तो क्या बहुतोंको धोकेमें रखकर इन पापियोंने दर्शन कर लिये? उफ़! कैसा भयानक था वह अघोड़ी। उसकी भुजाएं ऐसी कसी थीं कि शायद उनपर लोहेके डण्डे भी पड़ते ही मुड़ जाते! मैं तो, सच कहता हूं, एक बार झाईं खाकर रह गया।"

इसी समय मन्दिरकी ओरसे अनेक तीर्थ पुरोहित घबराये-से आये। पूछनेपर उन्होंने बताया कि—

"एकाएक सरस्वती फाटककी ओरसे, लोगोंको अश्चर्यमें डालता हुआ, अछूतोंका जुलूस मन्दिरमें घुस गया और क्षणभर तक वहाँके रक्षक और पण्डे ऐसे हतबुद्धि रहे कि, उन्हें कुछ कर्त्तव्याकर्त्तव्य सूझा ही नहीं। वह होशमें आये और सँभले तब, जब जुलूस वहाँसे ग़ायब हो गया। मगर, मन्दिर ज्यों-का-त्यों है। वहां पर एक भी चीज़ न घटी है और

न बढ़ी है। फ़र्श जैसे का तसा स्वच्छ है मानों उसपर किसीके पैर पड़े ही नहीं। बड़ी हलचल मची है वहाँ पर, पण्डोंमें, इसी बातको लेकर कि, मन्दिर अपवित्र हो गया या नहीं। कुछ लोगोंका कहना है कि, अघोड़ीने मन्दिरकी बाहरी परिक्रमाके झरोखेसे बुधुआको दर्शन कराये थे।"

उसी दिन रातको ज्ञात हुआ कि यद्यपि यह निश्चय नहीं हो सका कि, अघोड़ी और अछूतोंका दल मन्दिरमें घुस गया था, फिर भी, तमाम मन्दिर गोबरसे और गोमूत्रसे और न जाने किससे-किससे अनेक बार धुलवाया गया है। पूजा-पाठ और होम-जाप भी किये गये हैं; और, अभीतक, सैकड़ों सना-तनी, ईश्वरको पवित्र करनेके लिये, एक स्वरसे रुद्रीका पाठ कर रहे हैं।

जो हो, सारे शहरको यही विश्वास हो गया कि ज़रूर ही अघोड़ीने बुधुआको बाबाके दर्शन कराये हैं। उसके तप और तेजके आगे किसीकी भी न चल सकी। अब यह पवित्रताकी पुकार और देवा-

लयकी शुद्धि केवल झेंप मिटाना है। अघोड़ी योगी है—योगी। वह कुछ न करे, यह और बात है; मगर, इच्छा करते ही कर सकता है सब कुछ। साधारण संसारी उसके पथ पर, रोड़ा तो दूर, तिनका भी नहीं डाल सकते!

४४

यह कौन है?

तेज़ीसे कमरेके बाहर आकर वह बावलियोंकी तरह बाग़के फाटककी ओर झपटी। मशीनकी तरह फाटककी छोटी खिड़कीको खोला और दूसरी साँस तब ली जब वह अपने उस हृदयहीन ठगके बाग़के बाहर हो गयी। बाहर आकर भी वह रुकी नहीं, बिना सोचे-विचारे एक ओर बढ़ पड़ी। कोई एक घण्टा तक उस समय उसके माथेमें केवल एक बात नाचती रही और वह यह कि, जहांतक

हो सके वहाँतक जल्द, उस स्थान, उस वातावरण, उस शहरसे वह दूर भाग जाय; जिसमें उसकी सुकुमार आकांक्षाओंका इस तरह निर्दय पददलन हुआ है। जहाँ पर उसका नन्हा-सा हृदय इस तरह मींड़ा गया है। तेज़ीसे चलनेके कारण भारतीय ढंगसे पहनी हुई उसकी सारी रह-रह कर उसके नंगे पैरोंमें फसने लगी। एक बार तो वह उलझकर गिर भी पड़ी, उससे उसके घुटनोंको कुछ पीड़ा भी हुई, पर, उसका उस ओर ध्यान नहीं; वह फिर उठी—वह फिर उसी तरह आगे बढ़ी।

बहुत देर चलती रहनेके बाद उसे ऐसा मालूम पड़ा मानों सवेरा हो रहा है। अबतक चतुर्दिक्का शान्त वातावरण अब चिड़ियोंके कलरवसे मुखरित हो चला। नक्षत्रोंकी मण्डली एक-एक कर नील-नभके अञ्चलसे विलुप्त हो गयो। वह—अब तो, पूरबसे, प्रकाशकी धारा अन्धेरे विश्वकी ओर फूट चली। अब तो सड़क पर यत्र-तत्र पथिक भी दिखाई पड़ने लगे जो उसके सामने आते ही एक बार

सिरसे पैरतक उसके विचित्र रूप और वेशको देखने लगते। आख़िर, एक पेड़की छायामें खड़ी हो, वह प्राण-पीड़क चिन्ताओंमें डूबने-उतराने लगी। घनश्याम और उनकी बड़ी-बड़ी प्रतिज्ञाओंको स्मरण कर वह फूट-फूट कर रोने लगी। क्या सोचा था उसने उस शरीफ़ प्रेमीको और कैसा विकट रूप उसका दिखाई पड़ा। उसके सारे हवाई किले, गत रात्रिकी घटनाओंके झंझावातमें, इस तरह ढह गये जिस तरह बालूकी भीत। कहाँ उसने सोचा था कि घनश्याम अपनी सारी सम्पत्ति और सारा हृदय-राग उसके प्रेम मन्दिरके द्वार पर सजा देंगे। ज़िन्दगी भर उसके कोमल और भावुक हृदयकी, उसके वीर राजाकी तरह, रखवाली करेंगे। उसे लेकर कहीं दूर देशमें शरीफ़ोंकी तरह जा बसेंगे जहाँ उनके प्रेममें घृणा या वियोगकी काली रेखा देखने और ढूंढ़ने वाला कोई होगा ही नहीं। मगर, आह! उसे कैसा धोका दिया गया।

उस पेड़के नीचे खड़ी-खड़ी उसने घनश्याम-प्रेम

की एक-एक बातको स्मरण कर अपनी आँखोंके ख़ज़ानेके जीवन मोती बहाये; फिर भी, उसका कलेजा हलका नहीं हुआ। अब वह बैठ गयी वहीं; और आँचलमें मुँह छिपा कर बिलखने लगी। इसी समय एकाएक उसके नंगे पैरोंमें किसी ठंढी चीज़के स्पर्श-का अनुभव हुआ। उसने आँसुओंसे भींगी अपनी लाल-लाल आखोंको आँचलके बाहर कर और चौंक कर जो सामने देखा, तो उस का प्यारा स्पाई उसके चरणों पर, प्रेम-विह्वल भावसे कों-कों करता, लोटता और नाचता और कूदता दिखाई पड़ा। उस विपत्तिकालमें स्पाईको और उसके उस मूक प्रेमको देखकर उसका गला भर आया। उसने उसे ज़बर-दस्ती पकड़ कर अपनी गोदमें छिपा लिया और फिर रोने लगी।

"अरे तू कहांसे आ गया रे!" उसने पूछा उससे—"तुझे मेरी विपत्तिका पता कैसे लगा? स्पाई, स्पाई! बोलता क्यों नहीं? तू कहांसे भागा आ रहा है? फ़ादर कहां है?"

मगर, सिवा दुम हिलाने और राधाके अंगोंको जीभसे चाटने और नाचने कूदनेके उस मूक पशुके पास और कोई भी उत्तर नहीं। हाँ, यदि वह बोल सकता तो ज़रूर अपनी सखीको विरह-व्यथित-स्वरसे बताता कि, जबसे वह लापता हुई तभीसे उसका हृदय पागल है। अब वह दुर्गाकुण्ड पर बुधुआके साथ न रह कर इधर-उधर चारों ओर घूमा और मानों किसी भूली या खोयी वस्तुको सूंघ-सूंघ कर ढूंढ़ा करता है।

धूप निकल आयी। राधाने सोचा अब यहां बैठ रहना ठीक न होगा। फिर वह कहां जाय? पापाके यहां? ना, वहां वह कौन-सा मुहं लेकर जायगी? इतने दिनों तक ग़ायब रहनेके लिये कौन-सा बहाना पेश करेगी? मगर, फ़ादरके यहां तो वह जा सकती है। वह उसे पाते ही इतना प्रसन्न हो उठेगा कि, कुछ पूछ-ताछ करनेका विचार भी उसके मनमें न उठेगा। पर नहीं, फ़ादर और पापा दो

की एक-एक बातको स्मरण कर अपनी आँखोंके ख़ज़ानेके जीवन मोती बहाये; फिर भी, उसका कलेजा हलका नहीं हुआ। अब वह बैठ गयी वहीं; और आँचलमें मुँह छिपा कर बिलखने लगी। इसी समय एकाएक उसके नंगे पैरोंमें किसी ठंढी चीज़के स्पर्श-का अनुभव हुआ। उसने आँसुओंसे भींगी अपनी लाल-लाल आखोंको आँचलके बाहर कर और चौंक कर जो सामने देखा, तो उस का प्यारा स्पाई उसके चरणों पर, प्रेम-विह्वल भावसे कों-कों करता, लोटता और नाचता और कूदता दिखाई पड़ा। उस विपत्तिकालमें स्पाईको और उसके उस मूक प्रेमको देखकर उसका गला भर आया। उसने उसे ज़बर-दस्ती पकड़ कर अपनी गोदमें छिपा लिया और फिर रोने लगी।

"अरे तू कहांसे आ गया रे!" उसने पूछा उससे—"तुझे मेरी विपत्तिका पता कैसे लगा? स्पाई, स्पाई! बोलता क्यों नहीं? तू कहांसे भागा आ रहा है? फ़ादर कहां है?"

मगर, सिवा दुम हिलाने और राधाके अंगोंको जीभसे चाटने और नाचने कूदनेके उस मूक पशुके पास और कोई भी उत्तर नहीं। हाँ, यदि वह बोल सकता तो ज़रूर अपनी सखीको विरह-व्यथित-स्वरसे बताता कि, जबसे वह लापता हुई तभीसे उसका हृदय पागल है। अब वह दुर्गाकुण्ड पर बुधुआके साथ न रह कर इधर-उधर चारों ओर घूमा और मानों किसी भूली या खोयी वस्तुको सूंघ-सूंघ कर ढूंढ़ा करता है।

धूप निकल आयी। राधाने सोचा अब यहां बैठ रहना ठीक न होगा। फिर वह कहां जाय? पापाके यहां? ना, वहां वह कौन-सा मुहं लेकर जायगी? इतने दिनों तक ग़ायब रहनेके लिये कौन-सा बहाना पेश करेगी? मगर, फ़ादरके यहां तो वह जा सकती है। वह उसे पाते ही इतना प्रसन्न हो उठेगा कि, कुछ पूछ-ताछ करनेका विचार भी उसके मनमें न उठेगा। पर नहीं, फ़ादर और पापा दो

की एक-एक बातको स्मरण कर अपनी आँखोंके ख़ज़ानेके जीवन मोती बहाये; फिर भी, उसका कलेजा हलका नहीं हुआ। अब वह बैठ गयी वहीं; और आँचलमें मुँह छिपा कर बिलखने लगी। इसी समय एकाएक उसके नंगे पैरोंमें किसी ठंढी चीज़के स्पर्श-का अनुभव हुआ। उसने आँसुओंसे भींगी अपनी लाल-लाल आखोंको आँचलके बाहर कर और चौंक कर जो सामने देखा, तो उस का प्यारा स्पाई उसके चरणों पर, प्रेम-विह्वल भावसे कों-कों करता, लोटता और नाचता और कूदता दिखाई पड़ा। उस विपत्तिकालमें स्पाईको और उसके उस मूक प्रेमको देखकर उसका गला भर आया। उसने उसे ज़बर-दस्ती पकड़ कर अपनी गोदमें छिपा लिया और फिर रोने लगी।

"अरे तू कहांसे आ गया रे!" उसने पूछा उससे—"तुझे मेरी विपत्तिका पता कैसे लगा? स्पाई, स्पाई! बोलता क्यों नहीं? तू कहांसे भागा आ रहा है? फ़ादर कहां है?"

मगर, सिवा दुम हिलाने और राधाके अंगोंको जीभसे चाटने और नाचने कूदनेके उस मूक पशुके पास और कोई भी उत्तर नहीं। हाँ, यदि वह बोल सकता तो ज़रूर अपनी सखीको विरह-व्यथित-स्वरसे बताता कि, जबसे वह लापता हुई तभीसे उसका हृदय पागल है। अब वह दुर्गाकुण्ड पर बुधुआके साथ न रह कर इधर-उधर चारों ओर घूमा और मानों किसी भूली या खोयी वस्तुको सूंघ-सूंघ कर ढूंढ़ा करता है।

धूप निकल आयी। राधाने सोचा अब यहां बैठ रहना ठीक न होगा। फिर वह कहां जाय? पापाके यहां? ना, वहां वह कौन-सा मुहं लेकर जायगी? इतने दिनों तक ग़ायब रहनेके लिये कौन-सा बहाना पेश करेगी? मगर, फ़ादरके यहां तो वह जा सकती है। वह उसे पाते ही इतना प्रसन्न हो उठेगा कि, कुछ पूछ-ताछ करनेका विचार भी उसके मनमें न उठेगा। पर नहीं, फ़ादर और पापा दो

की एक-एक बातको स्मरण कर अपनी आँखोंके ख़ज़ानेके जीवन मोती बहाये; फिर भी, उसका कलेजा हलका नहीं हुआ। अब वह बैठ गयी वहीं; और आँचलमें मुँह छिपा कर बिलखने लगी। इसी समय एकाएक उसके नंगे पैरोंमें किसी ठंढी चीज़के स्पर्श-का अनुभव हुआ। उसने आँसुओंसे भींगी अपनी लाल-लाल आखोंको आँचलके बाहर कर और चौंक कर जो सामने देखा, तो उस का प्यारा स्पाई उसके चरणों पर, प्रेम-विह्वल भावसे कों-कों करता, लोटता और नाचता और कूदता दिखाई पड़ा। उस विपत्तिकालमें स्पाईको और उसके उस मूक प्रेमको देखकर उसका गला भर आया। उसने उसे ज़बर-दस्ती पकड़ कर अपनी गोदमें छिपा लिया और फिर रोने लगी।

"अरे तू कहांसे आ गया रे!" उसने पूछा उससे—"तुझे मेरी विपत्तिका पता कैसे लगा? स्पाई, स्पाई! बोलता क्यों नहीं? तू कहांसे भागा आ रहा है? फ़ादर कहां है?"

मगर, सिवा दुम हिलाने और राधाके अंगोंको जीभसे चाटने और नाचने कूदनेके उस मूक पशुके पास और कोई भी उत्तर नहीं। हाँ, यदि वह बोल सकता तो ज़रूर अपनी सखीको विरह-व्यथित-स्वरसे बताता कि, जबसे वह लापता हुई तभीसे उसका हृदय पागल है। अब वह दुर्गाकुण्ड पर बुधुआके साथ न रह कर इधर-उधर चारों ओर घूमा और मानों किसी भूली या खोयी वस्तुको सूंघ-सूंघ कर ढूंढ़ा करता है।

धूप निकल आयी। राधाने सोचा अब यहां बैठ रहना ठीक न होगा। फिर वह कहां जाय? पापाके यहां? ना, वहां वह कौन-सा मुहं लेकर जायगी? इतने दिनों तक ग़ायब रहनेके लिये कौन-सा बहाना पेश करेगी? मगर, फ़ादरके यहां तो वह जा सकती है। वह उसे पाते ही इतना प्रसन्न हो उठेगा कि, कुछ पूछ-ताछ करनेका विचार भी उसके मनमें न उठेगा। पर नहीं, फ़ादर और पापा दो

की एक-एक बातका स्मरण कर अपनी आँखोंके ख़ज़ानेके जीवन मोती बहाये; फिर भी, उसका कलेजा हलका नहीं हुआ। अब वह बैठ गयी वहीं; और आँचलमें मुँह छिपा कर बिलखने लगी। इसी समय एकाएक उसके नंगे पैरोंमें किसी ठंढी चीज़के स्पर्श-का अनुभव हुआ। उसने आँसुओंसे भींगी अपनी लाल-लाल आखोंको आँचलके बाहर कर और चौंक कर जो सामने देखा, तो उस का प्यारा स्पाई उसके चरणों पर, प्रेम-विह्वल भावसे कों-कों करता, लोटता और नाचता और कूदता दिखाई पड़ा। उस विपत्तिकालमें स्पाईको और उसके उस मूक प्रेमको देखकर उसका गला भर आया। उसने उसे ज़बर-दस्ती पकड़ कर अपनी गोदमें छिपा लिया और फिर रोने लगी।

"अरे तू कहांसे आ गया रे!" उसने पूछा उससे—"तुझे मेरी विपत्तिका पता कैसे लगा? स्पाई, स्पाई! बोलता क्यों नहीं? तू कहांसे भागा आ रहा है? फ़ादर कहां है?"

मगर, सिवा दुम हिलाने और राधाके अंगोंको जीभसे चाटने और नाचने कूदनेके उस मूक पशुके पास और कोई भी उत्तर नहीं। हाँ, यदि वह बोल सकता तो ज़रूर अपनी सखीको विरह-व्यथित-स्वरसे बताता कि, जबसे वह लापता हुई तभीसे उसका हृदय पागल है। अब वह दुर्गाकुण्ड पर बुधुआके साथ न रह कर इधर-उधर चारों ओर घूमा और मानों किसी भूली या खोयी वस्तुको सूंघ-सूंघ कर ढूंढ़ा करता है।

धूप निकल आयी। राधाने सोचा अब यहां बैठ रहना ठीक न होगा। फिर वह कहां जाय? पापाके यहां? ना, वहां वह कौन-सा मुहं लेकर जायगी? इतने दिनों तक ग़ायब रहनेके लिये कौन-सा बहाना पेश करेगी? मगर, फ़ादरके यहां तो वह जा सकती है। वह उसे पाते ही इतना प्रसन्न हो उठेगा कि, कुछ पूछ-ताछ करनेका विचार भी उसके मनमें न उठेगा। पर नहीं, फ़ादर और पापा दो

की एक-एक बातको स्मरण कर अपनी आँखोंके ख़ज़ानेके जीवन मोती बहाये; फिर भी, उसका कलेजा हलका नहीं हुआ। अब वह बैठ गयी वहीं; और आँचलमें मुँह छिपा कर बिलखने लगी। इसी समय एकाएक उसके नंगे पैरोंमें किसी ठंढी चीज़के स्पर्श-का अनुभव हुआ। उसने आँसुओंसे भींगी अपनी लाल-लाल आखोंको आँचलके बाहर कर और चौंक कर जो सामने देखा, तो उस का प्यारा स्पाई उसके चरणों पर, प्रेम-विह्वल भावसे कों-कों करता, लोटता और नाचता और कूदता दिखाई पड़ा। उस विपत्तिकालमें स्पाईको और उसके उस मूक प्रेमको देखकर उसका गला भर आया। उसने उसे ज़बर-दस्ती पकड़ कर अपनी गोदमें छिपा लिया और फिर रोने लगी।

"अरे तू कहांसे आ गया रे!" उसने पूछा उससे—"तुझे मेरी विपत्तिका पता कैसे लगा? स्पाई, स्पाई! बोलता क्यों नहीं? तू कहांसे भागा आ रहा है? फ़ादर कहां है?"

मगर, सिवा दुम हिलाने और राधाके अंगोंको जीभसे चाटने और नाचने कूदनेके उस मूक पशुके पास और कोई भी उत्तर नहीं। हाँ, यदि वह बोल सकता तो ज़रूर अपनी सखीको विरह-व्यथित-स्वरसे बताता कि, जबसे वह लापता हुई तभीसे उसका हृदय पागल है। अब वह दुर्गाकुण्ड पर बुधुआके साथ न रह कर इधर-उधर चारों ओर घूमा और मानों किसी भूली या खोयी वस्तुको सूंघ-सूंघ कर ढूंढ़ा करता है।

धूप निकल आयी। राधाने सोचा अब यहां बैठ रहना ठीक न होगा। फिर वह कहां जाय? पापाके यहां? ना, वहां वह कौन-सा मुहं लेकर जायगी? इतने दिनों तक ग़ायब रहनेके लिये कौन-सा बहाना पेश करेगी? मगर, फ़ादरके यहां तो वह जा सकती है। वह उसे पाते ही इतना प्रसन्न हो उठेगा कि, कुछ पूछ-ताछ करनेका विचार भी उसके मनमें न उठेगा। पर नहीं, फ़ादर और पापा दो

थोड़ेही हैं। अब उसका मुँह इस योग्य नहीं रहा कि वह उनमेंसे एकका भी सामना करे।

"तू जा रे!" उसने रुपाईको गोदसे अलग कर, सड़क पर आकर, आगे बढ़ते हुए कहा—"मैं तो अब मरने जा रही हूं। सिवा आत्म-हत्याके मेरे लिये और कोई पथ नहीं। तू कहांतक चलेगा मेरे साथ।"

लेकिन रुपाईने इसबार अपनी सखीका साथ छोड़ा नहीं। वह बराबर उसी तरहसे नाचता-कूदता दुम हिलाता कों-कों करता और दौड़ता रहा। बहुत देर बाद राधाको मालूम पड़ा मानों वह राजघाट स्टेशनके पास आ गयी। उसने देखा बहुतसे राहगीर और एक्केवाले प्रश्नभरी विचित्र आंखोंसे उसकी ओर निहार रहे थे। मानों वह उन पुरुषोंकी उन आंखोंसे डर गयी। उसने अपनी गति तीव्र की, लाइन लांघ कर वह स्टेशनके उस पार, उस पुराने क़िलेके खंडहरों और भयानक जङ्गलमें, आ रही। उसी जङ्गलकी ऊभड़-खाभड़ पगडंडी पर वह तबतक आगे बढ़ती

रही जबतक एक टूटे खंडहरके पास नहीं पहुंच गयी। वहां वह रुकी; क्योंकि, उसके भीतरसे किसीके रोने और तड़पनेकी आवाज़ उसके कानोंमें आयी। उसने सोचा यह दूसरा कौन विपत्तिका मारा बिलख रहा है? ज़रा देखना चाहिये। यद्यपि वह खंडहर भयानक था, यद्यपि राधाका हृदय सुकुमार था, फिर भी, उस करुण-रोदनके आगे वह एककी भयानकता और दूसरेकी सुकुमारता भूल गयी। बढ़ी उसकी ओर।

अरे! उसने देखा कोई अन्धा, चिथड़ोंके एक बिस्तर पर पड़ा, तड़प रहा था। वह बिस्तर उसी खंडहरकी एक अर्ध-टूटी कोठरीमें पड़ा था। उसमें अन्धे और बिस्तरके सिवा मिट्टीके कई बर्तन और उनमें कुछ खाद्य सामग्री—आटा, दाल, चांवल आदि—भी थी। अन्धेके सिर और दाढ़ीके बाल घुएकी तरह सुफ़ैद थे, उसकी देहमें हड्डी-ही-हड्डी दिखाई पड़ती थी। और, अरे—यह क्या! उसकी नाक भी कटी थी। वह केवल अन्धा ही नहीं, नकटा भी था। वह तड़पते-तड़पते चिल्ला रहा था—

थोड़ेही हैं। अब उसका मुँह इस योग्य नहीं रहा कि वह उनमेंसे एकका भी सामना करे।

"तू जा रे!" उसने रुपाईको गोदसे अलग कर, सड़क पर आकर, आगे बढ़ते हुए कहा—"मैं तो अब मरने जा रही हूं। सिवा आत्म-हत्याके मेरे लिये और कोई पथ नहीं। तू कहांतक चलेगा मेरे साथ।"

लेकिन रुपाईने इसबार अपनी सखीका साथ छोड़ा नहीं। वह बराबर उसी तरहसे नाचता-कूदता दुम हिलाता कों-कों करता और दौड़ता रहा। बहुत देर बाद राधाको मालूम पड़ा मानों वह राजघाट स्टेशनके पास आ गयी। उसने देखा बहुतसे राहगीर और एक्केवाले प्रश्नभरी विचित्र आंखोंसे उसकी ओर निहार रहे थे। मानों वह उन पुरुषोंकी उन आंखोंसे डर गयी। उसने अपनी गति तीव्र की, लाइन लांघ कर वह स्टेशनके उस पार, उस पुराने क़िलेके खंडहरों और भयानक जङ्गलमें, आ रही। उसी जङ्गलकी ऊभड़-खाभड़ पगडंडी पर वह तबतक आगे बढ़ती

रही जबतक एक टूटे खंडहरके पास नहीं पहुंच गयी। वहां वह रुकी; क्योंकि, उसके भीतरसे किसीके रोने और तड़पनेकी आवाज़ उसके कानोंमें आयी। उसने सोचा यह दूसरा कौन विपत्तिका मारा बिलख रहा है? ज़रा देखना चाहिये। यद्यपि वह खंडहर भयानक था, यद्यपि राधाका हृदय सुकुमार था, फिर भी, उस करुण-रोदनके आगे वह एकाकी भयानकता और दूसरेकी सुकुमारता भूल गयी। बढ़ी उसकी ओर।

अरे! उसने देखा कोई अन्धा, चिथड़ोंके एक बिस्तर पर पड़ा, तड़प रहा था। वह बिस्तर उसी खंडहरकी एक अर्द्ध-टूटी कोठरीमें पड़ा था। उसमें अन्धे और बिस्तरके सिवा मिट्टीके कई बर्तन और उनमें कुछ खाद्य सामग्री—आटा, दाल, चाँवल आदि—भी थी। अन्धेके सिर और दाढ़ीके बाल घुएकी तरह सुफ़ैद थे, उसकी देहमें हड्डी-ही-हड्डी दिखाई पड़ती थी। और, अरे—यह क्या! उसकी नाक भी कटी थी। वह केवल अन्धा ही नहीं, नकटा भी था। वह तड़पते-तड़पते चिल्ला रहा था—

"अब ख़त्म करो ! ए मेरे ख़ुदा ; इस दोज़ख़ी ज़िन्दगीका क़िस्सा अब ख़त्म करो। बेशक—बेशक, मेरे गुनाह बहुत बड़े-बड़े हैं, बेशक मुझे घुल-घुलकर और तड़प-तड़प कर मरना चाहिये। मैंने सैकड़ों भोले दिलवालोंको, अपने मनके शैतानके लिये, ठगा है—मगर, मेरे मालिक ! अब तो बहुत सासतें हो चुकीं मेरी। उन गुनाहोंके लिये मुझे चार बरसों तक जेलमें रहना पड़ा—वही कहांका कम था। इसके बाद जबसे बाहर आया हूं तबसे मुसीबतही तो झेल रहा हूं। मेरे भाई मर गये, उनकी दूकानें नष्ट हो गयीं। हमारा वह गुनाहोंका अड्डा मकान भी नेस्त-नाबूद हो गया ! अब मेरा कोई सुध लेवा नहीं। अब मैं इधर कई बरसोंसे भीख पर गुज़र कर रहा हूं। इतने पर भी तुम पसीजे नहीं मेरे आक़ा ! तुमने मेरी आँखें भी छीन लीं और मुझे उस भिखारी लड़केका गुलाम बना दिया जो चार दिनोंसे मुझे बीमार छोड़कर न जाने कहाँ ग़ायब है। हाय ! अब मैं क्यों जी रहा हूँ ? आह ! कहाँ है मेरी मौत ?"

उस बूढ़े, अन्धे, कमज़ोर और नकटेके कष्टोंको देखकर, उसका रोना सुनकर, राधा अपने दुखोंको क्षण भरके लिये भूल गयी। उसे बड़ी दया आयी उस बेचारे पर। उसने पुकार कर कहा—

"बाबा! रोओ मत! एक दूसरी दुखिया और भिखारिन तुम्हारी ख़िदमतके लिये भगवानकी इच्छा से आगयी है। बोलो! तुम क्या चाहते हो? तुम्हें क्या कष्ट है?"

राधाकी मीठी बातें ज्योंही उस बेचारेके कान में पड़ीं त्योंही उसने रोना और तड़पना बन्द कर दिया। उसकी जान-में-जान आयी। मानो उसके ख़ुदाने उसकी सहायता की। उसने काँपते कण्ठसे पूछा—

"तुम कौन हो बेटा! मुझ नापाक गुनाही पर अपनी मिहरबानियोंकी ऐसी ठण्ढी नदी बहानेवाले फ़रिश्ते! ज़रा मेरे पास आकर बताओ तुम कौन हो?"

"अब ख़त्म करो ! ए मेरे खुदा ; इस दोज़ख़ी ज़िन्दगीका क़िस्सा अब ख़त्म करो । बेशक—बेशक, मेरे गुनाह बहुत बड़े-बड़े हैं, बेशक मुझे घुल-घुलकर और तड़प-तड़प कर मरना चाहिये । मैंने सैकड़ों भोले दिलवालोंको, अपने मनके शैतानके लिये, ठगा है—मगर, मेरे मालिक ! अब तो बहुत सासतें हो चुकीं मेरी । उन गुनाहोंके लिये मुझे चार बरसों तक जेलमें रहना पड़ा—वही कहांका कम था । इसके बाद जबसे बाहर आया हूं तबसे मुसीबतही तो झेल रहा हूं । मेरे भाई मर गये, उनकी दुकानें नष्ट हो गयीं । हमारा वह गुनाहोंका अड्डा मकान भी नेस्त-नाबूद हो गया ! अब मेरा कोई सुध लेवा नहीं । अब मैं इधर कई बरसोंसे भीख पर गुज़र कर रहा हूं । इतने पर भी तुम पसीजे नहीं मेरे आक़ा ! तुमने मेरी आँखें भी छीन लीं और मुझे उस भिखारी लड़केका गुलाम बना दिया जो चार दिनोंसे मुझे बीमार छोड़कर न जाने कहाँ ग़ायब है । हाय ! अब मैं क्यों जी रहा हूँ ? आह ! कहाँ है मेरी मौत ?"

उस बूढ़े, अन्धे, कमज़ोर और नकटेके कष्टोंको देखकर, उसका रोना सुनकर, राधा अपने दुखोंको क्षण भरके लिये भूल गयी। उसे बड़ी दया आयी उस बेचारे पर। उसने पुकार कर कहा—

"बाबा! रोओ मत! एक दूसरी दुखिया और भिखारिन तुम्हारी ख़िदमतके लिये भगवानकी इच्छा से आगयी है। बोलो! तुम क्या चाहते हो? तुम्हें क्या कष्ट है?"

राधाकी मीठी बातें ज्योंही उस बेचारेके कान में पड़ीं त्योंही उसने रोना और तड़पना बन्द कर दिया। उसकी जान-में-जान आयी। मानो उसके खुदाने उसकी सहायता की। उसने काँपते कण्ठसे पूछा—

"तुम कौन हो बेटा! मुझ नापाक गुनाही पर अपनी मिहरबानियोंकी ऐसी ठण्ढी नदी बहानेवाले फ़रिश्ते! ज़रा मेरे पास आकर बताओ तुम कौन हो?"

४५

मिलन और प्रयाण

"कैसी खुशीका दिन है आज !" एक अछूता-श्रम वासीने अपने मित्रोंके आगे प्रसन्नता प्रगट की—"आज ही समझौता भी हो गया और आज ही बुधराम चौधरीकी लड़कीका पता भी चल गया !"

"अच्छा ; कब समझौता हुआ ?" दूसरेने दरियाफ़्त किया—"मैं तो अभीको स्टेशनसे आ रहा हूँ। आज वहाँ सत्याग्रह करनेके लिये जो दल गया था उसमें मैं भी भेजा गया था। आज तो पुलीस वालोंने हम लोगों पर खूब ही ज़ुल्म किये। अनेक स्वयंसेवक और सत्याग्रही पीटे भी गये और पकड़े भी। मगर, जो हो, हमने तो अपना काम किया ही। बाहरसे जो भंगी बुलाये गये थे वह हमारी पुकार सुनते ही भड़क गये और फिर शहरमें काम करने

के लिये नहीं ही गये। इसीसे अब ऊँचोंके और सरकारके बिगड़े दिमाग़ दुरुस्त हुए हैं। हाँ, क्या समझौता हुआ?"

"यह तय हो गया कि, अब हम अपनी हड़ताल रोक देंगे। कलसे सब लोग काम पर जायँगे और इसके बदलेमें हमारी तनख़ाह म्युनिसिपैलिटी सात रुपयेसे चौदह रुपये करेगी। हमें रहने योग्य और जाड़ा-बरसात काटने योग्य मकान दिये जायंगे। जब-तक म्युनिसिपैलिटीके मकान तैयार नहीं होते तबतक हम इसी अछूताश्रममें रहेंगे और इसके बाद अछूताश्रमका वर्त्तमान रूप नष्टकर दिया जायगा और यह दलित-विद्यालय बना दिया जायगा, जहाँ, ऊँच-नीच सबके बच्चे एक भावसे पढ़ेंगे। उन्हें विद्याभ्यासके साथ-ही-साथ हस्तकौशल भी सिखाया जायगा। हमारे लिये दशाश्वमेध घाटपर फ़िलहाल एक देवमन्दिर, शहरके सुधारकों द्वारा, बनवाया जायगा जिसमें हम बिना रोक-टोकके जा सकेंगे।"

"और दूसरे मन्दिरोंमें—?"

४५

मिलन और प्रयाण

"कैसी खुशीका दिन है आज !" एक अछूता-श्रम वासीने अपने मित्रोंके आगे प्रसन्नता प्रगट की— "आज ही समझौता भी हो गया और आज ही बुधराम चौधरीकी लड़कीका पता भी चल गया !"

"अच्छा ; कब समझौता हुआ ?" दूसरेने दरियाफ़्त किया—"मैं तो अभीको स्टेशनसे आ रहा हूँ। आज वहाँ सत्याग्रह करनेके लिये जो दल गया था उसमें मैं भी भेजा गया था। आज तो पुलीस वालोंने हम लोगों पर खूब ही ज़ुल्म किये। अनेक स्वयंसेवक और सत्याग्रही पीटे भी गये और पकड़े भी। मगर, जो हो, हमने तो अपना काम किया ही। बाहरसे जो भंगी बुलाये गये थे वह हमारी पुकार सुनते ही भड़क गये और फिर शहरमें काम करने

के लिये नहीं ही गये। इसीसे अब ऊ चोंके और सरकारके बिगड़े दिमाग़ दुरुस्त हुए हैं। हाँ, क्या समझौता हुआ ?"

"यह तय हो गया कि, अब हम अपनी हड़ताल रोक देंगे। कलसे सब लोग काम पर जायँगे और इसके बदलेमें हमारी तनख़ाह म्युनिसिपैल्टिी सात रुपयेसे चौदह रुपये करेगी। हमें रहने योग्य और जाड़ा-बरसात काटने योग्य मकान दिये जायंगे। जबतक म्युनिसिपैल्टिीके मकान तैयार नहीं होते तबतक हम इसी अछूताश्रममें रहेंगे और इसके बाद अछूताश्रमका वर्त्तमान रूप नष्टकर दिया जायगा और यह दलित-विद्यालय बना दिया जायगा, जहाँ, ऊँच-नीच सबके बच्चे एक भावसे पढ़ेंगे। उन्हें विद्याभ्यासके साथ-ही-साथ हस्तकौशल भी सिखाया जायगा। हमारे लिये दशाश्वमेध घाटपर फ़िलहाल एक देवमन्दिर, शहरके सुधारकों द्वारा, बनवाया जायगा जिसमें हम बिना रोक-टोकके जा सकेंगे।"

"और दूसरे मन्दिरोंमें—?"

"उनमें भी, यथा सम्भव, हमारे लिये सुविधा कर दी जायगी। मगर, अभी मन्दिरके प्रश्न पर 'पुराने' ज्यों-के-त्यों दृढ़ हैं। अघोड़ी बाबा तो सभी मन्दिरोंमें अछूतोंको जाने देनेके लिये लड़ रहे थे। उन्होंने अन्तमें यह भी कहा कि अगर ईश्वरके सभी बच्चोंके लिये उनका दरबार न खोला जायगा, तो, एक दिन ईश्वरकी सत्ता उठ जायगी, मन्दिरोंकी मर्यादा नष्ट हो जायगी। मगर, लोगोंने बहुत हाथ-पैर जोड़-जाड़ कर उन्हें अन्तमें मना लिया।"

"बुधराम चौधरीकी क्या राय थी?"

"वह तो बिलकुल बेहोश पड़े हैं। जबसे विश्वनाथ बाबाके दर्शन करके आये तबसे उनका बकना-झकना तो बन्द है, मगर, बेहोशी नहीं गयी। अब वह चलाचलीके फेरमें हैं। कैसे धर्मात्मा हैं बुधाराम चौधरी। उन्हींके कारण तो आज हमारा इतना उद्धार हुआ है। इसीसे भगवानने भी उनकी सुध ली। दो घंटे हुए उनकी खोयी लड़की राधा भी मिल गयी।"

"कहां मिली? कैसे मिली भाई?"

"आज सुबहकी बात है। अघोड़ी बाबा चौधरीके पास खड़े उनकी तबीयतका हाल पूछ रहे थे। चौधरी धीरे-धीरे उनसे प्रार्थना कर रहे थे कि, अब उनका अन्त निकट है, पर, एक बार वह अपनी राधाको देखना चाहते हैं।

"उसी समय तो, महीनोंसे कहीं खोया हुआ, चौधुरीका कुत्ता वहां आया। वह उन लोगोंके आगे कों-कों कर नाचने और फिर उनकी झोपड़ीके बाहर दौड़ने लगा। उसकी यह लीला देख कर न जाने क्या समाया अघोड़ीके मनमें जो वह उसके पीछे लग गये ओर ग़ायब हो गये कई घण्टोंके लिये। कुत्ता उन्हें लेकर क़िलेवाले खंडहरोंमें गया जहां राधा, एक भिखमंगेके साथ, कई महीनेसे रहती थी। ज़रा संयोग देखो; उस भिखमंगेको भी बाबाजी राधाके साथ आश्रममें ले आये हैं और वह बेचारा दूसरा कोई नहीं, मौलवी लियाक़तअली है; जिसने राधाकी मांको बरबाद किया था और जिसकी नाक चौधुरीने काट ली थी!"

"उनमें भी, यथा सम्भव, हमारे लिये सुविधा कर दी जायगी। मगर, अभी मन्दिरके प्रश्न पर 'पुराने' ज्यों-के-त्यों दृढ़ हैं। अघोड़ी बाबा तो सभी मन्दिरोंमें अछूतोंको जाने देनेके लिये लड़ रहे थे। उन्होंने अन्तमें यह भी कहा कि अगर ईश्वरके सभी बच्चोंके लिये उनका दरबार न खोला जायगा, तो, एक दिन ईश्वरकी सत्ता उठ जायगी, मन्दिरोंकी मर्यादा नष्ट हो जायगी। मगर, लोगोंने बहुत हाथ-पैर जोड़-जाड़ कर उन्हें अन्तमें मना लिया।"

"बुधराम चौधरीकी क्या राय थी?"

"वह तो बिलकुल बेहोश पड़े हैं। जबसे विश्वनाथ बाबाके दर्शन करके आये तबसे उनका बकना-झकना तो बन्द है, मगर, बेहोशी नहीं गयी। अब वह चलाचलीके फेरमें हैं। कैसे धर्मात्मा हैं बुधाराम चौधरी। उन्हींके कारण तो आज हमारा इतना उद्धार हुआ है। इसीसे भगवानने भी उनकी सुध ली। दो घंटे हुए उनकी खोयी लड़की राधा भी मिल गयी।"

"कहां मिली? कैसे मिली भाई?"

"आज सुबहकी बात है। अघोड़ी बाबा चौधरीके पास खड़े उनकी तबीयतका हाल पूछ रहे थे। चौधरी धीरे-धीरे उनसे प्रार्थना कर रहे थे कि, अब उनका अन्त निकट है, पर, एक बार वह अपनी राधाको देखना चाहते हैं।

"उसी समय तो, महीनोंसे कहीं खोया हुआ, चौधुरीका कुत्ता वहां आया। वह उन लोगोंके आगे कों-कों कर नाचने और फिर उनकी झोपड़ीके बाहर दौड़ने लगा। उसकी यह लीला देख कर न जाने क्या समाया अघोड़ीके मनमें जो वह उसके पीछे लग गये ओर ग़ायब हो गये कई घण्टोंके लिये। कुत्ता उन्हें लेकर क़िलेवाले खंडहरोंमें गया जहां राधा, एक भिखमंगेके साथ, कई महीनेसे रहती थी। ज़रा संयोग देखो; उस भिखमंगेको भी बाबाजी राधाके साथ आश्रममें ले आये हैं और वह बेचारा दूसरा कोई नहीं, मौलवी लियाक़तअली है; जिसने राधाकी मांको बरबाद किया था और जिसकी नाक चौधुरीने काट ली थी!"

"ओहो! हे भगवान! वह अभीतक जीता है?"
"जीता क्या नरक भोग भोगता है। ज़रा संयोगका तमाशा तो देखो। जिसकी स्त्रीकी हत्याका वह कारण बना उसीकी बेटी, गांव-गांवमें घूम कर, उस पापीके लिये भीख मांगा करती थी और उसकी सेवा किया करती थी।"

"इतने दिनों तक वह उसी मुसलमान ही के साथ रही? वह भाग कर गयी ही क्यों थी?"

"अभी तो वह आयी है। धीरे-धीरे सब बातें मालूम होंगी—पर, सुनो तो! उधरसे रोनेकी आवाज़ कैसी आ रही है?"

"हाँ—क्या—क्या—चौधुरीकी झोपड़ी ही से तो आवाज़ आ रही है। ज़रा चलो देखा तो जाय। वह विदा तो नहीं हो गये?"

इसी समय एक घबराया हुआ युवक आकर कहने लगा—"अरे जरा चलकर देखो तो! चौधुरी तो अपनी राधाको पाते ही डेरा कुच कर गये! उनकी झोपड़ीमें भीड़ लगी है। अघोड़ी भी हैं, पादरी भी

हैं और पादरीके साथ विलायतसे आये हुए दो साहब भी हैं। वह राधा अपने बापकी देह से लिपट-लिपट कर रो रही है। आह! कैसे अच्छे थे चौधुरी बुधराम। हमारे उद्धारके लिये उन्होंने क्या क्या कष्ट नहीं उठाये!"

४६

होमवर्ड बाउराड

पिछली घटनाओंके महीने भर बादकी बात है, बंबईके अलेक्ज़ेंड्रा डाकपर, दो अंग्रेज़ी समाचार पत्रोंके रिपोर्टर आपसमें बातें कर रहे थे—

"क्या पता चला?" एकने दूसरेसे पूछा—"वह भयानक साधु उन पादरियों और उस अंग्रेज के साथ क्यों है? वह लड़की तो भारतीय मालूम पड़ती है। उसका नाम भी, जहाज-यात्रियोंकी लिस्ट में, उन अंग्रेजोंके साथ क्यों है?"

"ओहो ! हे भगवान ! वह अभीतक जीता है ?"
"जीता क्या नरक भोग भोगता है। ज़रा संयोगका तमाशा तो देखो। जिसकी स्त्रीकी हत्याका वह कारण बना उसीकी बेटी, गांव-गांवमें घूम कर, उस पापीके लिये भीख मांगा करती थी और उसकी सेवा किया करती थी।"

"इतने दिनों तक वह उसी मुसलमान ही के साथ रही? वह भाग कर गयी ही क्यों थी ?"

"अभी तो वह आयी है। धीरे-धीरे सब बातें मालूम होंगी—पर, सुनो तो ! उधरसे रोनेकी आवाज़ कैसी आ रही है ?"

"हाँ—क्या—क्या—चौधुरीकी झोपड़ी ही से तो आवाज़ आ रही है। ज़रा चलो देखा तो जाय। वह विदा तो नहीं हो गये ?"

इसी समय एक घबराया हुआ युवक आकर कहने लगा—"अरे जरा चलकर देखो तो ! चौधुरी तो अपनी राधाको पाते ही डेरा कुच कर गये ! उनकी झोपड़ीमें भीड़ लगी है। अघोड़ी भी हैं, पादरी भी

हैं और पादरीके साथ विलायतसे आये हुए दो साहब भी हैं। वह राधा अपने बापकी देह से लिपट-लिपट कर रो रही है। आह! कैसे अच्छे थे चौधुरी बुधराम। हमारे उद्धारके लिये उन्होंने क्या क्या कष्ट नहीं उठाये!"

४६
होमवर्ड बाउण्ड

पिछली घटनाओंके महीने भर बादकी बात है, बंबईके अलेकज़ेंड्रा डाकपर, दो अंग्रेज़ी समाचार पत्रोंके रिपोर्टर आपसमें बातें कर रहे थे—

"क्या पता चला?" एकने दूसरेसे पूछा—"वह भयानक साधु उन पादरियों और उस अंग्रेज के साथ क्यों है? वह लड़की तो भारतीय मालूम पड़ती है। उसका नाम भी, जहाज-यात्रियोंकी लिस्ट में, उन अंग्रेजोंके साथ क्यों है?"

"बड़ा विचित्र क़िस्सा मुझे बताया गया है उस लड़की, उस साधु और उस अंग्रेज़का..." दूसरे ने उत्तर दिया—"तुमने पढ़ा होगा, महीने भर पूर्व बनारसके भंगियोंने ज़बरदस्त हड़ताल की थी। उनकी वह हड़ताल ऐसी सफल रही कि, वहांके अधिकारियों और जनताको उनके आगे झुकना पड़ा। उनकी अधिकांश शर्तें माननी पड़ीं। यह लड़की उन्हीं भंगियोंके सरदार बुधराम चौधरीकी पुत्री है। यह भयानक साधु बुधरामका गुरू है और पादरी जानसनने तो यहाँ तक कहा है कि वह महान शक्तिशाली भारतीय योगी है। उनका कथन है कि पश्चिम में चाहे सायन्सका चरम विकास क्यों न हो गया हो, पर, इस तरहके साधु उधर हैं ही नहीं—शायद होही नहीं सकते उस तामसी वातावरणमें। वह अंग्रेज़ एक पुराने भारतीय जज हैं जो उस भयानक साधुकी शक्तिसे परिचित और उसके क़ायल हैं। इस लड़कीको पादरी जानसनने अपने साथ पाला पोसा और पढ़ाया-लिखाया है। और अब—यह अंग्रेज़

सज्जन—मिस्टर यङ्ग—इसे अपनी पोष्य-पुत्री बनाकर, लाखोंकी सम्पत्तिकी अधीश्वरी बनानेके लिये, स्वदेश लिये जारहे हैं।"

"ऐसा क्यों करते हैं मिस्टर यंग?" पहलेने साश्चर्य पूछा—"क्या वह अविवाहित हैं? क्या स्वयं उनकी कोई सन्तति नहीं?"

"अविवाहित तो नहीं, पर, वह रडुए हैं। उस साधुसे उनका दर्जनों वर्षों पूर्वका परिचय है। उसके उपदेशोंका प्रभाव भी उनपर बहुत है। वह तो उसका मुहँ इस तरह जोहा करते हैं जिस तरह हमारे मास्टर (क्राइस्ट) के शिष्य उनका मुख जोहा करते थे। उनके मनमें भी विरागने जगह कर लिया है और उन्होंने अब यही निश्चय किया है कि इस लड़कीको अपनी उत्तराधिकारिणी बनाकर लण्डनके समाजको सौंप देंगे तथा स्वयं एकान्त सेवन करेंगे। ठहरो! जहाज़का भोंपा बज रहा है। यात्री पुकारे जा रहे हैं। चलो ज़रा उसका प्रयाण तो देखा जाय और उस भयानक साधुका एक चित्र तो लिया

"बड़ा विचित्र क़िस्सा मुझे बताया गया है उस लड़की, उस साधु और उस अंग्रेज़का..." दूसरे ने उत्तर दिया—"तुमने पढ़ा होगा, महीने भर पूर्व बनारसके भंगियोंने ज़बरदस्त हड़ताल की थी। उनकी वह हड़ताल ऐसी सफल रही कि, वहाँके अधिकारियों और जनताको उनके आगे झुकना पड़ा। उनकी अधिकांश शर्तें माननी पड़ीं। यह लड़की उन्हीं भंगियोंके सरदार बुधराम चौधरीकी पुत्री है। यह भयानक साधु बुधरामका गुरू है और पादरी जानसनने तो यहाँ तक कहा है कि वह महान शक्ति शाली भारतीय योगी है। उनका कथन है कि पश्चिम में चाहे सायन्सका चरम विकास क्यों न हो गया हो, पर, इस तरहके साधु उधर हैं ही नहीं—शायद होही नहीं सकते उस तामसी वातावरणमें। वह अंग्रेज़ एक पुराने भारतीय जज हैं जो उस भयानक साधुकी शक्तिसे परिचित और उसके क़ायल हैं। इस लड़कीको पादरी जानसनने अपने साथ पाला पोसा और पढ़ाया-लिखाया है। और अब—यह अंग्रेज़

सज्जन—मिस्टर यङ्ग—इसे अपनी पोष्य-पुत्री बनाकर, लाखोंकी सम्पत्तिकी अधीश्वरी बनानेके लिये, स्वदेश लिये जारहे हैं।"

"ऐसा क्यों करते हैं मिस्टर यंग?" पहलेने साश्चर्य पूछा—"क्या वह अविवाहित हैं? क्या स्वयं उनकी कोई सन्तति नहीं?"

"अविवाहित तो नहीं, पर, वह रडुए हैं। उस साधुसे उनका दर्जनों वर्षों पूर्वका परिचय है। उसके उपदेशोंका प्रभाव भी उनपर बहुत है। वह तो उसका मुहँ इस तरह जोहा करते हैं जिस तरह हमारे मास्टर (क्राइस्ट) के शिष्य उनका मुख जोहा करते थे। उनके मनमें भी विरागने जगह कर लिया है और उन्होंने अब यही निश्चय किया है कि इस लड़कीको अपनी उत्तराधिकारिणी बनाकर लण्डनके समाजको सौंप देंगे तथा स्वयं एकान्त सेवन करेंगे। ठहरो! जहाज़का भोंपा बज रहा है। यात्री पुकारे जा रहे हैं। चलो ज़रा उसका प्रयाण तो देखा जाय और उस भयानक साधुका एक चित्र तो लिया

उग्र-लिखित

[...]चन—(नाटक) इसमें उग्रजीकी अनोखी लेखनीने, [...]तके, स्त्री जातिपर किये हुए, अत्याचारोंका ऐसा सुन्दर [...]किया है, इसका प्लाट ऐसा मनोरम और अद्भुत है, [...]न ऐसे सुन्दर हैं कि, आप पढ़ कर फड़क उठेंगे। [...] यह रचना ऐसी है कि, इसे आरम्भसे अन्ततक क्रान्ति-[...]कहा जा सकता है। इसकी छपाई, इसके दर्जनों चित्र [...]ज़ भी निरालेही हैं। आप इस ग्रन्थरत्नको ज़रूर मंगावें [...]ा आनन्द लें। मूल्य २) दो रुपये।

[...]र बेचारे—(प्रहसन) इसमें उग्र-लिखित चार [...]क प्रहसनोंका सुन्दर संग्रह है जिन्हें पढ़कर आप हँसते-[...]स्पोट हो जायंगे। इस पुस्तककी बहुत दिनोंसे लोगोंको [...]थी। यह भी सचित्र है। मूल्य १॥) डेढ़ रुपये।

[...]त्कार—(गल्प-संग्रह) इसमें उग्र-लिखित ६ [...] कहानियोंका संग्रह है। एक-एक कहानी आपकी [...]बजली दौड़ा देगी। समाजकी ऐसी-ऐसी पोल खोली [...]इन कहानियोंमें कि, पढ़नेवाला दाँतों अंगुली दाब कर रह [...] छपाई सुन्दर है, पन्ने ढाई सौ के करीब हैं, पुस्तक [...] और मूल्य है १॥) डेढ़ रुपये।

पता—बीसवीं सदी पुस्तकालय,

३६, शंकरघोष लेन, कलकत्ता।

उग्र-लिखित

ज्वन—(नाटक) इसमें उग्रजीकी अनोखी लेखनीने, तके, स्त्री जातिपर किये हुए, अत्याचारोंका ऐसा सुन्दर किया है, इसका प्लाट ऐसा मनोरम और अद्भुत है, न ऐसे सुन्दर हैं कि, आप पढ़ कर फड़क उठेंगे। यह रचना ऐसी है कि, इसे आरम्भसे अन्ततक क्रान्ति-कहा जा सकता है। इसकी छपाई, इसके दर्जनों चित्र ज़ भी निरालेही हैं। आप इस ग्रन्थरत्नको ज़रूर मंगावें ा आनन्द लें। मूल्य २) दो रुपये।

र बेचारे—(प्रहसन) इसमें उग्र-लिखित चार क प्रहसनोंका सुन्दर संग्रह है जिन्हें पढ़कर आप हँसते-फोट हो जायंगे। इस पुस्तककी बहुत दिनोंसे लोगोंको थी। यह भी सचित्र है। मूल्य १॥) डेढ़ रुपये।

त्कार—(गल्प-संग्रह) इसमें उग्र-लिखित ६ कहानियोंका संग्रह है। एक-एक कहानी आपकी जली दौड़ा देगी। समाजकी ऐसी-ऐसी पोल खोली इन कहानियोंमें कि, पढ़नेवाला दाँतों अंगुली दाब कर रह छपाई सुन्दर है, पन्ने ढाई सौ के करीब हैं, पुस्तक और मूल्य है १॥) डेढ़ रुपये।

पता—बीसवीं सदी पुस्तकालय,

३६, शंकरघोष लेन, कलकत्ता।

दूसरा संस्करण